नाम	:	पं. लालचन्द्र जैन 'राकेश'
जन्म	:	01 जुलाई 1934 ग्राम-सिलगन, जिला-ललितपुर (उ.प्र.)
जनक	:	धर्म निष्ठ श्री कालूराम जैन
जननी	:	श्रमती कौशाबाई जी जैन
बाल्यकाल	:	किसलवास
शिक्षा स्थान	:	गुरखौरा, बड़नगर, बीना, इन्दौर
शिक्षा	:	बी.ए., बी.एड., शास्त्री एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी) साहित्य रत्न
सम्प्रति प्रवास	:	भोपाल, अयोध्या नगर (म.प्र.)
साहित्य सृजन	:	क्षेत्र परिचय, पूजन, आरती, चालीसा, मुनि/ आचार्यों की जीवनी आदि चालीस कृतियाँ
रुचि	:	अध्ययन, मनन, लेखन, प्रवचन

हमारी परंपरा के प्रथमाचार्य

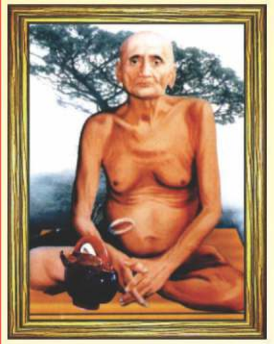

चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री 108 शांतिसागरजी महाराज

हमारे दीक्षा गुरु

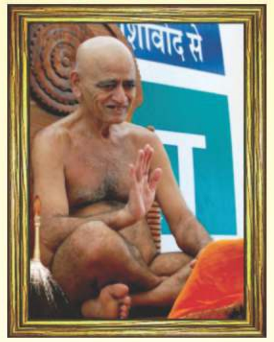

संत शिरोमणी आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज

आचार्य पद प्रदाता

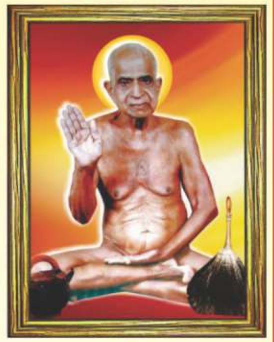

आचार्यश्री 108 सीमंधरसागरजी महाराज

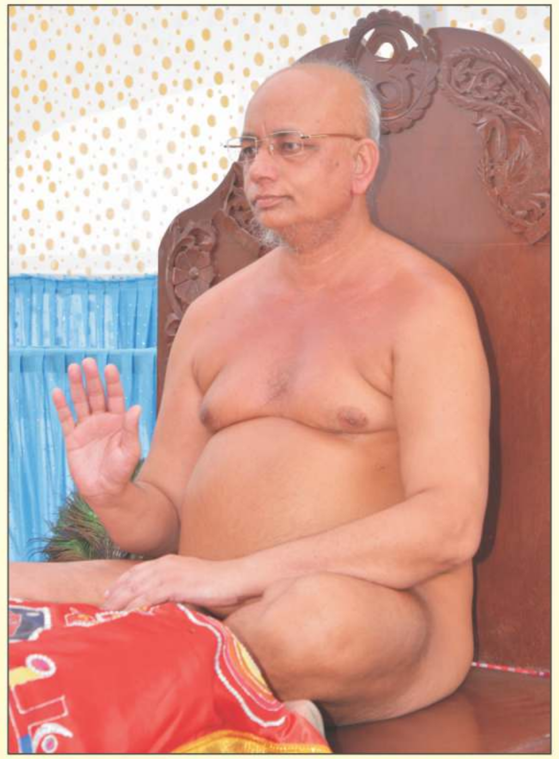

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज

जन्म : 11.09.1967, मुनिदीक्षा : 31.03.1988

आचार्य पद : 25.01.2015

आध्यात्मिक संत-आर्जवसागर

कृतिकार-रचयिता
पं. लालचन्द 'राकेश'

आध्यात्मिक संत-आर्जवसागर

कृतिकार-रचयिता

पं. लालचन्द 'राकेश'

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का जीवन परिचय

पूर्व नाम	-	पारसचंद जैन
पिता जी	-	श्री शिखरचंद जैन
माता जी	-	श्रीमती मायाबाई जैन
जन्मतिथि	-	११.९.१९६७, भाद्र शु. अष्टमी
जन्म स्थल	-	फुटेरा कलाँ, जिला- दमोह
बचपन बीता	-	पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.) में
शिक्षण	-	बी.ए. (प्रथम वर्ष) डिग्री कॉलेज, दमोह (म.प्र.)
ब्रह्मचर्य व्रत	-	१९.१२.१९८४, अतिशय क्षेत्र, पनागर (म.प्र.)
सातवीं प्रतिमा	-	१९८५, सिद्धक्षेत्र, अहारजी
क्षुल्लक दीक्षा	-	८.११.८५, सिद्धक्षेत्र, अहारजी
ऐलक दीक्षा	-	१०.७.१९८७, अतिशय क्षेत्र, थूवोनजी
मुनि दीक्षा	-	३१.३.१९८८, सिद्धक्षेत्र, सोनागिरजी, महावीर जयन्ती सन् १९८८
दीक्षा गुरु	-	आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज
आचार्यपद	-	२५.०१.२०१५ (माघ शुक्ल षष्ठी) को (समाधि पूर्व आचार्यश्री सीमंधरसागर जी द्वारा इंदौर में)
कृतियाँ व रचनाएँ	-	धर्म-भावना शतक, जैनागम-संस्कार, तीर्थोदय- काव्य, परमार्थ-साधना, बचपन का संस्कार, सम्यक्-ध्यान शतक, आर्जव-वाणी, पर्यूषण-पीयूष, आर्जव-कविताएँ, जिनवर-स्तुति, साम्य-भावना एवं आगम-अनुयोग।
पद्यानुवाद	-	गोमटेशथुदि, जिनागम-संग्रह (वारसाणुवेक्खा, इष्टोपदेश, समाधितन्त्र, द्रव्य-संग्रह), तत्त्वसार एवं प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका।

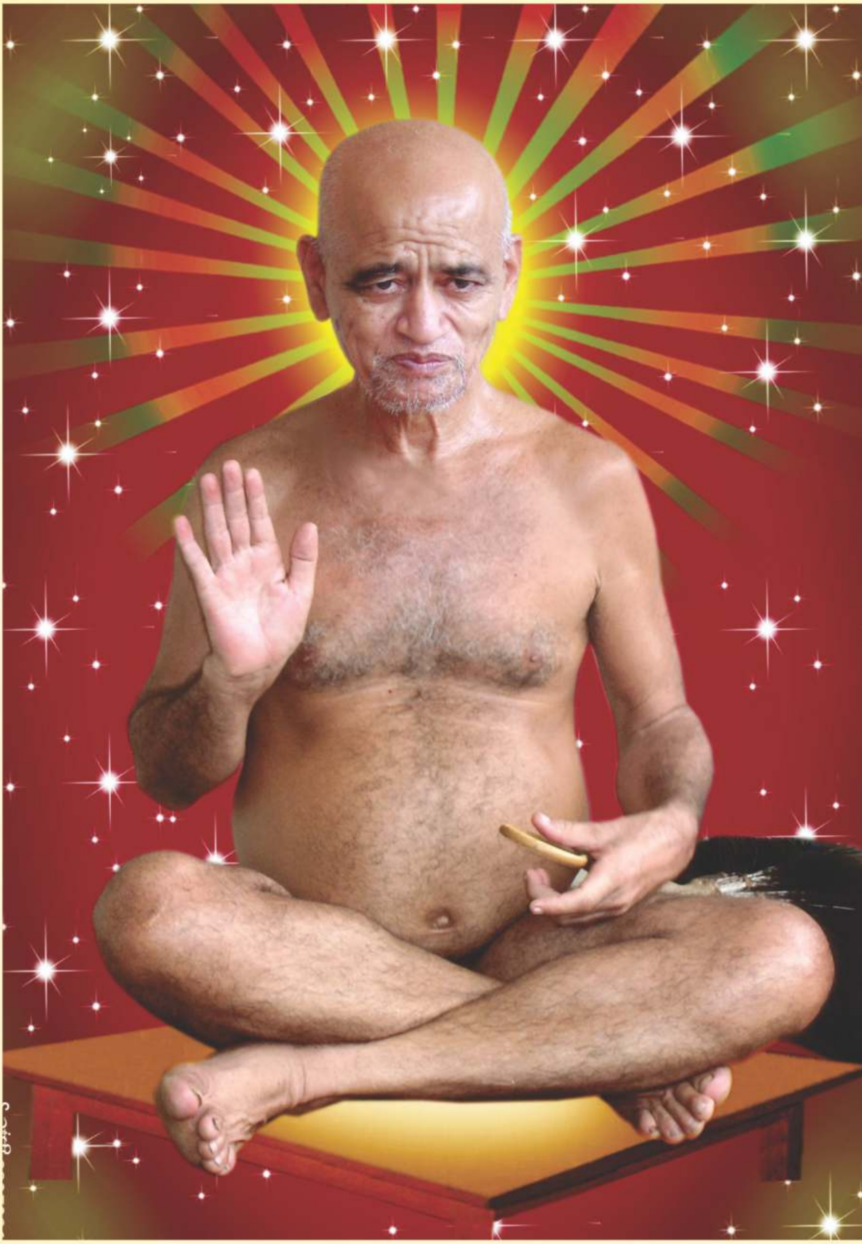

आचार्य प्रवर प.पू. १०८ विद्यासागरजी महाराज

पारस से आर्जवसागर तक का सफर.............

ब्र. पारस की क्षु. दीक्षा के पहले किया
शृंगार सन् १९८५

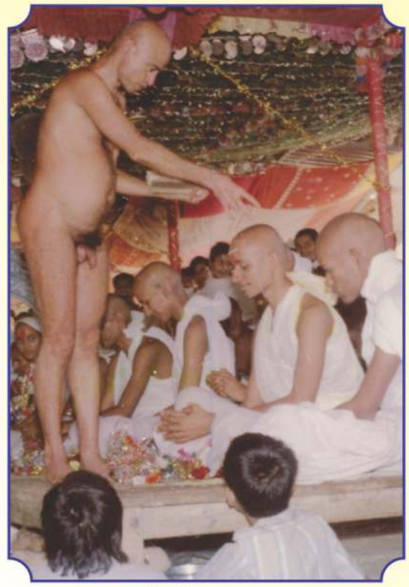

आचार्य श्री विद्यासागर क्षुल्लक
दीक्षा के संस्कार
प्राप्त करते हुए आर्जवसागरजी

क्षुल्लक दीक्षा के उपरान्त आर्जवसागर जी

क्षुल्लक आर्जवसागर जी

पारस से आर्जवसागर तक का सफर.............

ऐलक आर्जवसागर जी

सन्-१९८८ सोनागिरि में आर्जवसागर जी की
मुनि दीक्षा का पावन प्रसंग

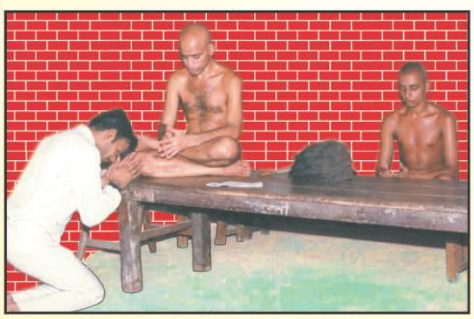

सन् 1989 जबेरा में आचार्य श्री एवं
मुनि श्री आर्जवसागर जी

प.पू. मुनिश्री १०८ आर्जवसागरजी महाराज

सन् 1984 में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज (आ.श्री के पीछे मोक्षमार्ग पर चलते ब्र. पारस, वर्तमान आ.श्री आर्जवसागर)

सन् 1985 में सिद्धक्षेत्र आहारजी के जिनालय से आहार को निकलते हुये क्षु.श्री आर्जवसागरजी महाराज।

सन् 1988 में सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में दीक्षा के समय बीचों-बीच ध्यान में लीन मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज।

सन् 1988 में सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में दीक्षा के समय दूसरे नम्बर पर ध्यान में लीन मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज।

हरदा के पास सन् 2014 में संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजीमहाराज से मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के मिलन का पावन दृश्य।

सन् 2015 में सल्लेखना के समय 90 वर्ष की उम्र में आचार्यश्री सीमंधरसागरजी महाराज मुनिश्री अर्जवसागरजी महाराज को आचार्य पद एवं आशीर्वाद प्रदान करते हुए

पारस से आर्जवसागर तक का सफर............

आचार्यश्री विद्यासागरजी, मुनिश्री स्वभावसागरजी, मुनिश्री समाधिसागरजी, मुनिश्री आर्जवसागरजी, मुनिश्री पवित्रसागरजी, मुनिश्री उत्तमसागरजी, मुनिश्री पावनसागरजी, मुनिश्री सुखसागरजी,ऐलक दयासागरजी, ऐलक अभयसागरजी, ऐलक निर्भयसागरजी, ऐलक उदारसागरजी, क्षुल्लक गम्भीरसागरजी, क्षुल्लक धैर्यसागरजी आदि साधुसंघ

सन् 2007, मुनि आर्जवसागरजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये अंतर्राष्ट्रीय शाकाहार विशेषज्ञ डॉ. के .एम. गंगवाल, पूना

सन्-२००७ पूर्व ग्रहस्थ जीवन के गृह पर आहार ग्रहण करते हुए मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज

पारस से आर्जवसागर तक का सफर............

मुनि श्री द्वारा रचित साहित्य ग्रहण करते हुए रांची राजधानी के डी.जी.पी. महापात्रा जी

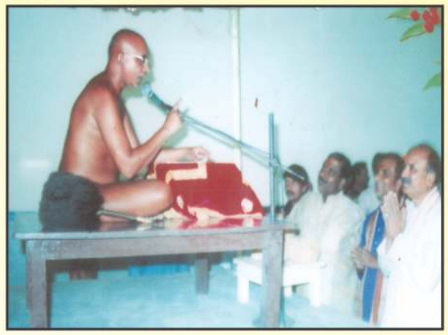

सन् 2006, गिरडीह में प्रवीण तोगड़िया, राष्ट्रीय महासचिव विश्व हिन्दु परिषद् मुनि श्री से आशीर्वाद लेते हुए।

सन् 2004 भोपाल ऐशबाग में हुए गजरथ के समय मुनि श्री आर्जवसागर जी से मिले मुनि श्री विशुद्धसागर जी

सन् 2004 भोपाल उमरावबाग दूल्हा में पञ्च कल्याणक के समय गजरथ में सारथी बने सोहनलाल जी सेलम

सन् २००४, ऐशबाग भोपाल के पञ्चकल्याण में शिखरचंद जैन पथरिया का सम्मान

सन् 2006, मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज से जैन साहित्य प्राप्त करते हुए सांसद श्री अजय मारू, रांची।

पारस से आर्जवसागर तक का सफर.............

भोपाल की विद्वत संगोष्ठी में उपस्थित विद्वत्गण

विद्वत् संगोष्ठी में मुनि श्री के समक्ष डॉ. एल.सी. जैन जबलपुर का सम्मान अध्यक्ष टोंग्या जी द्वारा

सन् २००४, मुनि आर्जवसागर जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये म.प्र. के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर

सन् 2004, श्री उमाशंकर गुप्ता, तत्कालीन परिवहन मंत्री मुनि श्री का आशीर्वाद लेतु हुए

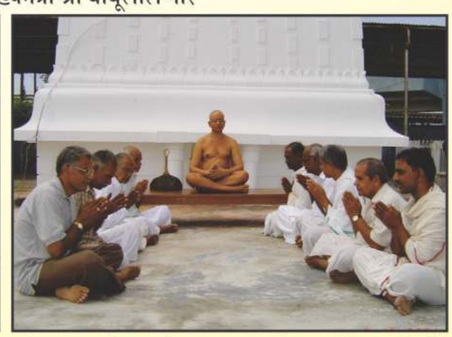

तमिलनाडु से पधारे भक्तगण भोपाल में आशीर्वाद प्राप्त करते हुये

पारस से आर्जवसागर तक का सफर.............

पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर
दमोह का जन समुदाय

रथोत्सव में मुनि आर्जवसागरजी का
ससंघ सान्निध्य

श्री आर्जवसागरजी महाराज गजरथ के
अवसर पर में सांसद श्री चन्द्रभान सिंह,
उद्योग मंत्री श्री जयंत मलैया,
आदि को आशीर्वाद प्रदान करते हुये

पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर प्रतिष्ठाचार्य
श्री गुलाबचंद्र जी ''पुष्प'' एवं डॉ. भागचंद जी ''भागेन्दु''
आदि भाव विज्ञान पत्रिका का विमोचन करते हुये।

सन् २००७, मुनि आर्जवसागरजी से
आशीर्वाद प्राप्त करते हुये म.प्र. के उद्योग
मंत्री श्री जयंत मलैया

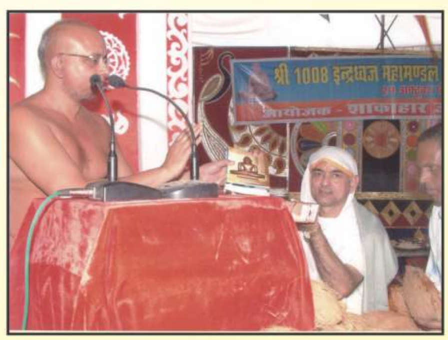

सन् 2007, डॉ. सुशी मैनपुरी मुनिश्री का
आशीर्वाद लेतु हुए

आध्यात्मिक संत-आर्जवसागर

कृतिकार-रचयिता: पं. लालचन्द 'राकेश'

कृति- आध्यात्मिक संत-आर्जवसागर

कृतिकार -पं. लालचन्द 'राकेश'

पावन संदर्भ - धर्मप्रभावक आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के पच्चीसवें मुनिदीक्षा (संयम रजत वर्ष) के उपलक्ष्य में।

संकलन - भगवान महावीर आचरण संस्था समिति, भोपाल

अर्थ सहयोगी - **1.** श्रीमती संगीता धर्मपत्नी डॉ. अश्विनी कुमार जैन, ''आर्जव'', एमआईजी-7, जयप्रकाश नारायण नगर, पी.के. स्कूल के पीछे, सिरमौर चौराहा, रीवा-486001 मो.: 9425846414

2. स्व.श्रीमती चमेलीबाई ध.प. नेमीचंद जैन की स्मृति में उनकी पुत्रवधु श्रीमती रेखा ध.प. विपिन जैन और प्रपौत्र उदित एवं चहक जैन, पशु आहार वाला परिवार, उदित एग्रो इण्डस्ट्रीज, ए-788, न्यू अशोका गार्डन, भोपाल, मो. 9301151142

प्रथम संस्करण -2019

प्रतियाँ -1000

प्राप्ति स्थान - भगवान महावीर आचरण संस्था समिति
एम 8/4, गीतांजली काम्पलैक्स,
कोटरा सुलतानाबाद, भोपाल (म.प्र.)-462 003
मो. : 7222963457, 9425601161, 7049004653, 9425601832, 9425011347

मुद्रक -पारस प्रिंटर्स, भोपाल
207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1
एम.पी.नगर, भोपाल
फोन : 0755-4260034, 9826240876

मूल्य -स्वयं पढ़ें, दूसरों को पढ़ाएँ

अंतस् के मोती

मैं एक मुनि-भक्त श्रा-व-क हूँ उनके दर्शन मुझे मयूर को मेघ दर्शन की तरह आनन्ददायक हैं। मैं उनके मुखचन्द्र को चकोरवत् घण्टों निहारता रहता हूँ। उनके चरणों की पावन रज मुझे चन्दन से भी अधिक शीतलता प्रदान करती है, उनके वचन मुझे अमृतादपि मिष्ठ प्रतीत होते हैं। उनकी कृपादृष्टि यदि मुझ पर पड़ जाती है तो मैं अपने जीवन को धन्य मानता हूँ, उनके दिव्य चरित्र मुझे शुभता के सागर में निमग्न कर देते हैं, उनको सुनना, पढ़ना या लिखना मेरे लिये प्राणवायु है। मैं घण्टों-घण्टों उनमें डूबा रहता हूँ, महीने और वर्ष बीत जाते हैं। मैं उनकी भक्ति में लीन रहता हूँ। उसी श्रा-व-कत्व का फल है - यह रचना।

श्रमण संस्कृति के सर्वोत्तम शिखर पुरुष, रत्नत्रय रत्नाकर, चारित्रचूड़ामणि, सिद्धान्तमहोदधि, बहुश्रुतपारगामी, बहुभाषाविद्, महाकवि, कालजयी साहित्यश्रृष्टा, सुष्ठु अनुवादक, महोपदेशक, महोपकारी, करुणानिधान, जीवन्ततीर्थ, समाधि सम्राट, विश्व में जैन धर्म की ध्वजा फहराने वाले परम पूज्य 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आज कोटि-कोटि जनता के मन मंदिर में आराध्य के रूप में विराजमान हैं। पूज्यश्री वर्तमान के वर्द्धमान हैं। सुदीर्घ भविष्य आपके मंगलाशीष के लिए लालायित है तथा मानवता रक्षा के लिए आपकी ओर कातर दृष्टि से निहार रही है।

परम पूज्य आचार्य श्री का विशाल शिष्योद्यान है, जिसमें सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान एवं सम्यकचारित्र से सिंचित, उत्तम क्षमादि दशधर्मों की सुरभि से सौरभित, अनुशासन के रक्षाकवच से सुरक्षित तीन सौ से भी अधिक शिष्य हैं। सभी शिष्य बाल ब्रह्मचारी, ज्ञान-ध्यान-तपोरक्त एवं भारतीय संस्कृति की शोभा बढ़ाने वाले हैं। उन शिष्यों में एक परम प्रभावक शिष्य रत्न हैं प.पू. 108 मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज; यह काव्य उनके

लिए ही समर्पित है।

यह काव्य उस परम संत की चरित कथा है जिसने पथरिया के पत्थरों को पिघला दिया और गृह छोड़ पथरिया से मोक्ष का पथ लिया यह उस महासंत की जीवन सरिता है जिसमें अवगाहन कर मिथ्यामोह का अनादिकालीन मल घुल जाता है, यह उस संत की जीवनी है जिसकी सम्यग्दर्शन-ज्ञान एवं चारित्र की त्रिवेणी में स्नान करने से व्यक्ति का मोक्षमार्ग प्रशस्त होता है, यह उस संत का चरित्र है जिसने तमिलनाडु में लगातार सप्त वर्षों तक विहार कर पूर्वाचार्यों के कार्य को गति प्रदान की है। यह उस संत की जीवन गाथा है जिसमें सिंह जैसी निर्भयता है। जिसके बलबूते पर उसने गोपाचल की भित्तियों की अत्यंत भव्य, विशाल, सर्वांगपूर्ण जिनप्रतिमाओं की सिंधिया स्कूल के सीवर के मल से होने वाली अविनय को रोकने के लिए समाज को जाग्रत किया एवं शासन तथा प्रशासन को त्वरित कार्यवाही करने के लिए प्रभावकारी प्रयास किया ऐसे वे संत हैं प.पू. 108 मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज।

प.पू. मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज सुदर्शनीय, अत्याकर्षण व्यक्तित्व के पुंज हैं। आपका बाह्यव्यक्तित्व जितना मनोरम है अंतरंग भी उतना ही निर्मल और पावन है। आप श्री के दर्शन करते ही मन-नयन अमिततोष पाते हैं और कहने लगते हैं नमोऽस्तु महाराज, त्रिकाल नमोऽस्तु।

आपके दर्शन करते ही ऐसा लगता है जैसे कोई देवता धरती पर उतर आया हो। अतः आपको धरती के देवता सम्बोधन करना मुझे अच्छा लगता है। आपका व्यक्तित्व कविता की तरह रम्य है।

प.पू. मुनिश्री में अदम्य साहस, अपूर्व निर्भयता विलक्षण चिन्तन शक्ति है। आपका वैराग्य कई भवों की साधना स्वरूप गहरी अन्तश्चेतना का फल है। वह क्षणिक भावुक मनोदशा का उफान नहीं अपितु गहनचिंतन का सुपरिणाम है।

आप भव्यों को सम्यक्तव उत्पत्ति के समर्थकारक, सम्यग्ज्ञान के प्रसारक, सम्यत्वाचरण के प्रचारक, करुणा-दया-मैत्री के विस्तारक हैं। आप जिनशासन के प्रभावक प्रकाशलंभ एवं श्रमण संस्कृति के आदर्श हैं।

आपमें जैन धर्म की प्रभावना के लिए भट्ट अकलंक देव जैसी समर्पणवृत्ति, आचार्य समन्तभद्र जैसी वाग्मिता एवं आचार्य कुन्दकुन्द जैसी रचनाधर्मिता पायी जाती है। आप जगद्वन्द्य हैं, जगप्रणम्य हैं।

आप परम आध्यात्मिक संत, सरल हृदय, कठोर साधक, उत्तम लेखक, महाकवि, श्रेष्ठ प्रवचनकार, प्रशान्तमूर्ति, वात्सलता के सागर, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, चतुर्थकालवत् निरतिचार, मुनिचर्या के पालक सिंह वृत्ति अटल-अचल संकल्प के धनी, सुव्रत के सागर, उपसर्गजयी, समता परिणामी मोक्ष के आकांक्षी, वीतरागी पथ के पथिक, उपाधियों से अलिप्त एवं उत्तरोत्तरसाधनारत बालब्रह्मचारी अनगार हैं।

आज से लगभग पैंतालीस वर्ष पूर्व 11.09.1967 तद्नुसार पावन माह भाद्रपद शुक्ल के शाश्वत पर्व अष्टमी को मध्यप्रदेशान्तर्गत दमोह जिले के फुटेराकलां ग्राम में प्रातः चार बजे एक सूरज का जन्म हुआ, नाम रखा गया - पारस चन्द।

पारसचन्द ने सुसंस्कृत एवं धार्मिक अणुव्रती दम्पत्ति ''श्री शिखरचंद-मायादेवी की कुक्षी को पवित्र किया'' श्री शिखरचंद जी मध्यप्रदेश के उच्च माध्यमिक शिक्षा विभाग में शिक्षक थे। आपका स्थानान्तर ''फुटेराकलां'' से ''पथरिया'' हो गया। अतः पारस का बचपन पथरिया में बीता, शिक्षा भी यहीं पर हुई।

जिस प्रकार एक कुशल माली एक सुकुमार पौधे को सुन्दर ढंग से देख-रेख कर बड़ा करता है, उसी प्रकार बालक 'पारस' का लालन-पालन सुरीत्या किया गया। जैसे एक पौधे के चतुर्मुखी विकास के लिए उसके आस-पास की खरपतवार को निदाई-गुड़ाई द्वारा हटाकर स्वस्थ वातावरण प्रदान

किया जाता है, उसी प्रकार 'पारस' के माता-पिता ने 'पारस' को संस्कारवान, गुणवान एवं चरित्रवान बनाने का सफल प्रयास किया।

जैसे एक कुम्हार एक मिट्टी के लौंदे को देवमूर्ति का सुन्दर आकार प्रदान कर, उसमें चित्र-विचित्र रंगों के धर्म संस्कार डालकर, आग में पकाकर उसमें पूज्यता की भूमिका तैयार कर देता है वैसे ही माता-पिता ने 'पारसचन्द' को 'पारसमणि' बनने की सुदृढ़ भूमिका/पात्रता तैयार कर दी। यह लिखना आवश्यक नहीं हैं कि सुदृढ़ नींव पर ही सुन्दर और मजबूत भवन तैयार किया जाता है।

माता-पिता द्वारा प्रदत्त प्रशस्त संस्कारों ने पारसचन्द को 'पारसमणि' बनने की अन्तः प्रेरणा दी। फलतः कौमार्यकाल व्यतीत होने के पूर्व ही, मात्र सत्रह वर्ष की उम्र में आपका मन और मस्तिष्क वैराग्य के अप्रतिम आलोक से आलोकित हो उठा। जैसे वेगवती पहाड़ी सरिता के गतिमान प्रवाह को कोई रोक नहीं पाता वैसे ही जगत के आकर्षक एवं मोही माता-पिता द्वारा कृत शताधिक अवरोधी प्रयत्न उन्हें रोक नहीं पाये। किसी कवि ने सच ही तो कहा है -

कौन वहाँ बाधक हो सकता, जहाँ अटल संकल्प महान।
खड़ा हिमालय भी हो पथ में, हट जाता है दे व्यवधान ।।

माता-पिता के प्रबल मोहावृतमन को, जो पथरिया के पत्थरों से भी कठोर थे, उन्होंने अपने वैराग्यपूर्ण संवादों से पाथस् पानी जैसा कोमल और निर्मल बना दिया अन्ततः माता-पिता ने वैराग्य को जीवन का सार समझकर, पारस को 'पारसमणि' बनने के लिए गृहत्याग की स्वीकृति देकर अपने पितृत्व को धन्य माना। उन्होंने कहा -

जाते हो लाल जाओ, पर इतना ध्यान रखना।
जिस पथ पर कदम रक्खा, आगे ही बढ़ते जाना ।।

- मुक्तिपथ के गीत से सभार।

माता-पिता की स्वीकृति पाकर पारस को ऐसा लगा जैसे पिंजड़े में बन्द पक्षी को मुक्ताकाश मिल गया हो। अब वे ''घर कारागृह.... परिजन हैं रखवारे की पराधीनता के बन्धन से छुटकारा पाकर वि:शल्य एवं निराबाध हो साधना के लिए चल दिये। फिर न ठिठके..... न मुड़े और प.पू. 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की शरण में पहुंच गये।''

जैसे एक कुशल शिल्पी अनगढ़ पाषाण में भी एक सुन्दर-सर्वांगपूर्ण मूर्ति के दर्शनकर अपना लेता है वैसे ही कुशल पारखी आचार्यश्री ने पारसचन्द में एक भावी और प्रभावी मुनि की पात्रता देखकर अपना लिया। यहां से आप की संयमयात्रा प्रारंभ होती है जिसने उन्हें पारसचन्द से प.पू. 108 मुनिश्री आर्जवसागर जी बना दिया। यह तो एक पड़ाव है, पारस से पारसमणि की यात्रा का प्रारंभ है। आप साधना के पथ पर बढ़ते हुए 'पारसमणि' बनकर एक दिन सिद्धशिला पर अवश्य ही विराजमान होंगे।

आपने प.पू. आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज से 19.12.1984 को श्री अतिशय क्षेत्र पनागर में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया सन् 1985 में श्री सिद्धक्षेत्र आहारजी में सातवीं प्रतिमा धारण की और वहीं 08.11.1985 को क्षुल्लक दीक्षा प्राप्त की। दिनांक 10.07.1987 को श्री अतिशय क्षेत्र थोवोन जी में ऐलक हुए तथा 31.03.1988 श्री महावीर जयंती के शुभदिन मुनि दीक्षा प्राप्त कर महावीर के लघुनन्दन बन गए। इस प्रकार आप संयम के विभिन्न सोपानों को क्रमशः पार करते हुए पारस चन्द से मुनिश्री आर्जवसागर जी हो गए।

आपका दिव्य जीवन एक महापुरुष की गौरव गरिमा से मंडित है। यौवन की देहलीज पर खड़े युवक में संसार-शरीर एवं भोगों के प्रति तीव्र आसक्ति देखी जाती है किन्तु जन्म से भगवान पार्श्वनाथ के नाम की मुद्रा से अंकित आपने उनकी तरह ही बालब्रह्मचारी रह, मुनिदीक्षा धारण कर नाम को सार्थक्य प्रदान किया। यह किसी एक भव का नहीं अपितु कई भवों की कठिन साधना के संस्कारों का फल है। आप धन्य हैं, आपको कोटिशः प्रणाम हैं।

आप श्री ने अपने गुरु प.पू. सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी का आदेश और आशीष प्राप्त कर तेरह वर्ष तक महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडू आदि दक्षिण प्रान्तों में विहार किया। आपने तमिलनाडु में सात चातुर्मास किए। यह वही तमिलनाडु हैं जहां वैदिक, बौद्ध एवं जैन धर्मों में महान संघर्ष रहा। ''किसी समय जैन संस्कृति पर हुए हमलों में'' क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि हमारे दिगम्बर साधुओं को तेल निकालने वाली घानी में पेल दिया गया। जैन ग्रन्थों की होली जलाई गई जो छः माह तक जलती रही। जैन श्रावकों को भालों पर कीलित कर मार डाला गया और न जाने क्या-क्या क्रूरतम अत्याचार जैन संस्कृति को विलापित करने के लिए किए गये।

धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर किया गया। दक्षिण भारत में लगभग सभी लिंगायत धर्मी पहले जैन थे ऐसा प्रसिद्ध हैं। तमिलनाडू में आज कितने ही हिन्दू ऐसे हैं जिनके पूर्वज जैन थे। यहाँ कुछ ''नैनार'' जाति के ऐसे भी लोग हैं जो पहले जैन ही है। यहाँ अनेक भव्य, कलात्मक एवं विशाल मंदिर व गुफाएँ हैं। कई जीर्ण-शीर्ण हो रहे हैं। यहाँ पर अत्यधिक विखरी बेदी पुरासम्पदा को देखकर इसके पूर्व स्वर्णकालीन वैभव की कल्पना सहज की जा सकती है। यहाँ जैन आबादी बहुत थी किन्तु अब अल्प है। मंदिर तो हैं मगर पूजक कम हैं। फिर भी आज लगभग एक सौ आठ गावों जैनियों के निवास विद्यमान हैं।

पहले यहां जैन मुनि आ नहीं पाते थे। सम्भवतः प.पू. मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज ऐसे पहले दिगम्बर जैन संत हैं जो श्रावकों के निवेदन पर तमिलनाडु पहुँचे और जिन्होंने लगातार तेरह वर्ष तक दक्षिण भारत में विहार कर जैन संस्कृति का परचम लहराया।

यह तो सर्वविदित ही है कि उत्तर भारत तीर्थंकरों का जन्म स्थल है तो दक्षित भारत तीर्थकरों की देशना का प्रचार-प्रसार करने वाले भ्रदबाहु, कुन्दकुन्दाचार्य, आचार्य समन्तभद्र, आचार्य विद्यानन्द, आचार्य पूज्यपाद आदि महान् सन्तों की साधना एवं कार्यस्थल है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि पूर्व

जैनधर्म का जो प्रचार-प्रसार उन महाचार्यों ने किया उसे प.पू. मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज ने इस काल में आगे बढ़ाया है। आपने वहाँ शैल गुफाओं में बैठकर तपस्या की, ग्रन्थों की रचना की। मुनिश्री का श्रेष्ठ तीर्थोदय महाकाव्य कन्नलम् व पौन्नूरमलै की शैलगुफाओं की ही दैन है। आपने दक्षिण भारत के विहार काल में ''जैनागम संस्कार'' ग्रंथ की रचना की। वहाँ भाषाओं को न केवल सीखा अपितु उनमें प्रवचन किए तथा कविताएँ भी लिखीं। आपने दक्षिण भारत में पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ कराईं, प्राचीन जिनालयों का जीर्णोद्धार एवं नवीन मंदिरों का निर्माण कराया। पाठशालाओं की स्थापना की, ''नैनार'' जाति के जैन लोगों को अपनेपन के साथ उन्हें मूलधारा में दृढ़ता से जुड़े रहने का प्रयास किया। आपकी निरतिचार चर्या से प्रभावित होकर अनेक मुमुक्षुओं ने दिगम्बर जैन धर्म में दृढ़ होकर ब्रह्मचर्यव्रत, प्रतिमाएं, क्षुल्लक, ऐलक व मुनि दीक्षा भी धारण की। उनमें से कई साधक आचार्यश्री से जुड़कर मुनि/आर्यिका के रूप में साधना कर रहे हैं। आपके विहारकाल में अनेक उपसर्ग भी आये उन्हें आपने समतापूर्वक सहन किया। आप पर हुए उपसर्गों की याद कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं एवं पौराणिक कथायें याद आ जाती हैं।

एक प्रत्यक्ष दृष्टा के अनुसार ''मुनिश्री आर्जवसागर जी ने जैन संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए जो कार्य तेरह वर्षों में 1990 से 2003 तक किए और जो उनका प्रभाव देखने में आया, वह विगत हजार वर्षों में भी किसी एक भी समूह ने नहीं किया।'' प.पू. मुनिश्री आर्जवसागर जी का, दक्षिण भारत का तेरहवर्षीय विहार जैन संस्कृति का एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। जो सदा सबके लिए आदर्श और अनुकरणीय रहेगा।

दक्षिण भारत से लौटकर सन् 2004 का चातुर्मास मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल नगर के टी.टी. नगर, टीन शैड जिनालय में हुआ और तत्कालीन मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर आपके दर्शन को आये और आपने शासन की ओर से स्कूलीय मेंढ़कों आदि की चीड़फाड़ बंद करवा दी। संत तो अतिथि होते हैं और उनके पावन चरण अविराम बढ़ते हुए जन-जन का कल्याण करते

रहते हैं। वैसे तो पूज्यश्री के सभी चातुर्मास अनेक उपलब्धियों से सहित है किन्तु फिर भी आपका सन् 2008 का ऐतिहासिक चातुर्मास ग्वालियर में हुआ। गोपाचल-गोपागिरि क्या है? मानों वह सुमेरुपर्वत की प्रतिकृति ही है। जैसे सुमेरु पर्वत के चारों और जिनालय होते हैं वैसे ही गोपाचल के चारों ओर सुंदर विशाल जिनविम्ब है। किन्तु खेद है कि उनके ऊपर सिंधिंया स्कूल के सीवर की गंदगी बहती रहती है जिससे प्रतिमाओं की घोर अविनय कई दशकों से हो रही है। प.पू. मुनिश्री ने जब यह देखा तो उनका हृदय विदीर्ण हो गया। इस अविनय को रोकने के लिए उन्होंने समाज को जाग्रत किया, गोपाचल पर ही विशाल स्तर पर विधान का आयोजन कराया तथा विरोध की बुलंद आवाज को श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया तक पहुँचाया। फलस्वरूप श्री सिंधिया जी मुनिश्री के दर्शनार्थ आये, आशीर्वाद लिया तथा शीघ्र ही प्रतिमाओं की अविनय को रोकने का वचन दिया। मुनिश्री का वहाँ प्रतिमाओं के जीर्णोद्धार का यह पावन प्रयास इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

आप अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी साधु हैं, जो वैराग्य की वृद्धि करने, संयम साधना को निर्दोष बनाने, समय का सदुपयोग करने, आगमानुकूल चर्या बनाए रखने के लिए सतत स्वाध्याय में लीन रहते हैं। आपने आगम का मात्र स्वाध्याय ही नहीं किया है अपितु जैसे सूर्य समुद्र के जल को अपनी ऊर्जा से पीकर और सरस बनाकर वर्षा के रूप में उसे जग जीवों के कल्याण के लिए वापस कर देता है वैसे ही मुनिश्री आर्जवसागर जी आगम को आत्मसात कर उसे विस्तृत से संक्षिप्त कठिन से सरल बनाकर रचनाओं के माध्यम से उसे समाज के कल्याणार्थ सौंप देते हैं।

आप ऐसे प्रखर श्रमण सूर्य हैं कि जिनके प्रवचन प्रकाश से जगज्जनों का प्रबल मोहान्धकार नष्ट होकर सम्यगदर्शन की प्राप्ति हो जाती है। आपके शुभाशीष से प्रकाशित पत्रिका भावविज्ञान भी ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अच्छा काम कर रही है।

प.पू. 108 मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज को संयम की निरतिचार साधना करते हुए पच्चीसवर्ष पूर्ण हो चुके हैं। सन् 2012 ''संयम का रजत जयंती'' वर्ष है। सम्पूर्ण देश पूर्ण उत्साह और श्रद्धा के साथ आपका संयम-महोत्सव मना रहा है। ऐसे पावन अवसर पर मुझ श्रा-व-क ने भी अपनी भरवाञ्जलि इस महाकाव्य के रूप में मुनिश्री को श्रद्धावनत हो समर्पित की है।

इस महाकाव्य में संयम के पच्चीस वर्षों के प्रतीक स्वरूप पच्चीस अध्याय हैं जिनमें मुनिश्री के दिव्य जीवन का जन्म से लेकर सूरत सन् 2012 तक के चातुर्मास का लगभग **चौदह सौ ग्यारह पद्यों** में वर्णन किया गया है। मुनिश्री का जीवन फलक बहुत विस्तृत एवं बहुआयामी है। उनके बाल्यकाल की जीवन सरिता समतल में बहने वाली नदी के समान मनोरम और शान्त प्रवाही है जिस पर संस्कारों के सुन्दर घाटों का निर्माण किया गया है। यौवन के आते-आते उसके प्रवाह में तीव्रता आ जाती है, उसमें वैराग्य की उत्ताल तरंगें उठने लगती है, अब वह गृहबंधनों से मुक्त हो प्रशान्त रूप सागर में समाहित होना चाहती है। पारस ने वैराग्य के रस को पा लिया है इसलिए वे कई बार माता-पिता से कहे बिना घर से निकल कर आचार्यश्री विद्यासागर जी की शरण में पहुंचना चाहते हैं, किन्तु पिताजी उन्हें वापस ले जाते हैं। यह क्रम कई बार दुहराया जाता है किन्तु अंत में उन्हें सफलता मिल ही जाती है वे गृहबंधन से मुक्त हो जाते हैं।

अब जीवन सरिता को खुलकर बहने और बढ़ने का अवसर मिलता है। क्रमशः संयम के सोपान चढ़ते हुए मुनि दीक्षा प्राप्त कर लेते हैं, मानों स्वर्ण शिखर पर पहुंच गये हों। अब सरिता, सामान्य सरिता नहीं रहती परम पावनी गंगा बन जाती है। आन्तरिक गौरव, और प.पू. आचार्यश्री का चरण सान्निध्य। एक साधु को साधना के लिए सब कुछ मिल गया। वे आत्मप्रेरणा से व्रत, नियम, त्याग, साधना, स्वाध्याय में निरत रहते हुए विचारों को निर्मलता एवं ऊर्ध्वारोहण करने में लग जाते हैं।

मुनि दीक्षा लेते ही एक वर्ष का मौनव्रत धारण कर लेते हैं, आचार्य श्री के समक्ष खड़े होकर कई घण्टों तक सामायिक करना, चित्त की एकाग्रता के लिए भित्ति की ओर मुखकर एकान्त में बैठ स्वाध्याय करना, कभी छै माह के लिए सम्पूर्ण फलों का त्याग तो कभी घी, कभी गेहूँ, कभी कुछ और। आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेने के साथ ही आपने जीवन पर्यन्त के लिए नमक का एवं क्षुल्लक अवस्था से आजीवन खोवा, काजू, पिस्ता, बादाम एवं मीठे का त्याग कर दिया था।

सन् 1984 से 1990 तक आचार्यश्री की चरण छाया में रहकर स्वयं को मुनिचर्या की निकष पर खूब परखा, गुरुमुख से धर्म, दर्शन, न्याय, व्याकरण, सिद्धांत एवं अध्यात्म का न केवल अध्ययन किया अपितु अहर्निश मनन-चिंतन द्वारा आत्मसात भी किया। इसके अतिरिक्त स्वयं के द्वारा भी अनेक सैद्धान्तिक ग्रन्थराजों के स्वाध्याय वाचन और पाचन के साथ-साथ चलता रहा।

जब आचार्य श्री ने देख लिया कि मुनिश्री आर्जवसागरजी में समस्त योग्यताओं का निवास हो गया है। उनकी मुनिचर्या निर्दोष है, ज्ञान में परिपक्वता आ गई है, प्रवचन में निष्णात हैं, धर्म के प्रचार-प्रसार की पूर्ण क्षमता आपमें हैं तब आचार्य श्री ने अहिंसा-सत्य-अचौर्य-ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का डंका बजाने आपको दक्षिण भारत में पृथक् विहार करने की आज्ञा प्रदान की । बुखार के कारण आयी आँखों की कमजोरी में स्वास्थ्य लाभ हेतु अ.क्षे. भातकुली और अमरावती नगर में गुरु आज्ञा लें वहाँ ठहरे। पूज्य मुनिश्री आर्जवसागर जी के दक्षिण भारत के विहारकाल में मुनिश्री योग सागर जी, मुनिश्री स्वभाव सागर जी आदि 5 मुनियों के साथ सन् 1993 में श्रवण वेलगोला में चातुर्मास एवं वहाँ अनेक प्रतिकूलताओं में रहकर समता धारण कर प्रभावक रूप से जैन धर्म का प्रचार करना उनके साधु जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं। तमिलनाडु में मुनिश्री द्वारा किए गए कार्य उन्हें भट्ट अकलंकदेव आ. समन्तभद्र, आ. कुन्दकुन्द आदि की पंक्ति में खड़ा कर देते

हैं। धन्य हैं मुनिश्री और धन्य हैं उनका अदम्य साहस तथा क्षमाशीलता जब तमिलनाडु में विहार करते समय कुछ अन्य जाति के लोग तलवार लेकर सामने आ गये। यह आया हुआ उपसर्ग रक्षाबन्धन की कथा की याद दिला देता है। पुण्य योग से उपसर्ग टल गया। नग्न दिगम्बर वेश देखकर, क्योंकि वहाँ मुनियों को विहार बहुत समय से नहीं हुआ, अन्य जाति के लोगों द्वारा अज्ञानतावश उन पर कंकड-पत्थर फेंकना तो साधारण बात थी। पहुँचाने वाले भी साधु के साथ विहार करने में कतराते थे। भय खाते थे। भोजन, पानी, रहन-सहन, बोली भाषा सब कुछ भिन्न होने पर भी, उपसर्ग आने पर भी मुनिचर्या का निर्दोष पालन करने वाले और जैन धर्म का प्रचार-प्रसार एवं ''मित्ती मे सव्व भूदेसु, वेरं मज्झंण केणवि'' एवं जनकल्याण के गीत गाते हुए तेरह वर्ष अनेक उपलब्धियों सहित विहार करने वाले मुनिश्री आर्जवसागर जी को कोटि-कोटि प्रणाम है। दक्षिण भारत, मुख्यतः तमिलनाडु का विहारकाल मुनिश्री की जीवन सरिता को सर्वोत्कृष्ट एवं उत्कर्ष काल है। प.पू.मुनिश्री की प्रगतिशील जीवन सरिता संयमवृद्धि एवं कलाजयी साहित्य रचना के क्षेत्र में नितमूलक कीर्तिमान गढ़ती हुई यावत चन्द्र दिवाकर सम प्रवहमान रहे तावत् हम सबका कल्याण करती रहे, यह मंगल भावना है। सादर नमोऽस्तु।

प.पू. 108 मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के पावन चरण कमलों में बारम्बार प्रणाम कि भोपाल में प्रथम दर्शनमात्र से उनके दिव्य जीवन से अपनी लेखनी पवित्र करने की भावना मेरे मन में जाग्रत हुई। मैं सन् 2004 भोपाल चातुर्मास से सन् 2012 सूरत चातुर्मास तक (नौ वर्ष तक) मुनिश्री के मार्ग दर्शन, परोक्ष सम्पर्क में रहा पर मुनिश्री सदाकाल मेरे मन मंदिर में विराजमान रहे। पूज्यश्री का मंगल आशीष भी मुझे सदा मिलता रहा। और मेरा हृदय उनके चरण कमलों में लीन रहा। एक बार श्रीयुत डॉ. सुधीर कुमार जी जो दो कूलों के सेतुबंध हैं ने मुझे मुनिश्री पर काव्यरचना की प्रेरणा भी दी यद्यपि उनके विचार मेरे अनुकूल थे किन्तु कुछ कार्य नहीं बना। काललब्धि का भी अपना महत्व है।

सन् 2011 में रामगंजमंडी में प.पू. मुनिश्री के मंगल सानिध्य में एक कवि सम्मेलन हुआ। श्रीमान् डॉ. अजित कुमार जी ने मुझसे उस कवि सम्मेलन में चलने का अनुग्रह किया। मैंने भी स्वीकृति दे दी और पूरा ''भाव विज्ञान'' परिवार मुनिश्री के चरणों में पहुँच गया। प्रातः काल प.पू. मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के लगभग 8 वर्ष पश्चात् दर्शन किए। मैं अपने सौभाग्य की किन शब्दों में सराहना करूँ। मैं मुनिश्री के मुखचन्द्र को अपलक बहुत देर तक निहारता रहा, फिर उनके चरणों में चंचरीरवत् लोटता/मंडराता/गुनगुनाता रहा - नमोऽस्तु, नमोऽस्तु/शुभाशीष प्राप्त हुआ, जैसे सब कुछ मिल गया। आठ वर्ष पूर्व आये विचार मुनिश्री के दर्शन कर जाग्रत हो गए। साथ में गये मुनिभक्त श्री श्रीपाल जी 'दिवा' श्री अजित कुमार जी एवं हमारे परिवार में जुड़े डॉ. श्री सुधीर कुमार जी जैन ने भी प्रेरक सहमति प्रदान की। संघस्थ आदरणीय व्रतियों ने भी कुछ सूत्र लिखकर भेजने की स्वीकृति प्रदान की। तात्पर्य यह कि कार्य सम्पन्नता के सभी समवाय एक साथ मिल गये। मैंने मन ही मन काव्य रचना का संकल्प ले प.पू. मुनिश्री के चरणों में नमोऽस्तु अर्पित करते हुए अपना मन्तव्य प्रकट किया किन्तु यह क्या? मुनिश्री ने कोई रुचि नहीं दिखाई, दिखाते भी क्यों? वीतरागी जो ठहरे। उनके मुख पर सदा की तरह शांति-सौभ्यता समता जो अंतरंग की उज्ज्वलता से प्रकाशमान थी। खेलती रही उनके करुणा और आशीष मेरे नयनों के पलक उठे, मेरी और दृष्टिपात कर शुभाशीष दिया, बस! मुनिश्री की इस कल्याणी मुद्रा को मैं आँखों के कैमरे से क्लिक करके मनोवेदिका पर विराजमान कर घर ले आया जो काव्यरचना के समय हर पल, हर क्षण मुझे सम्बल प्रदान करती रही।

मैं जीवन के अंतिम पड़ाव पर हूँ। शारीरिक शिथिलता एवं अन्य अनेक विषमताएँ विचलित कर रही हैं, ऐसे में काव्य रचना करना असंभव सा ही था किन्तु मुनिश्री का शुभाशीष एवं जिनवाणी का उपदेश ''पथ की प्रत्येक

विषमता को मैं समता से स्वीकार करूँ'' मुझे सान्त्वता एवं सम्बल प्रदान करते रहे और मैं लगभग एक वर्ष तक चित्त की एकाग्रता को बनाये हुए शुभता में डूबकर काव्य रचना करता रहा। श्रावण शुक्ला सप्तमी भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण दिवस पर यह रचना पूर्ण हुई। मैं मुनिश्री के श्रीचरणों में सादर प्रणाम कर काव्य रचना से विराम लेता हूँ।

''मुनिवर! तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाय सहज, संभाव्य है'' को स्मरण करता हुआ मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि इस काव्य में जो कुछ सौन्दर्य, चारुता, मनोरमता और श्रेष्ठता है वह सब कुछ प.पू. मुनिश्री के विस्मृत विशाल दिव्य जीवन का ही प्रसाद एवं सुफल है और जो न्यूनताएँ हैं वे सब मेरी अक्षमता के कारण हैं क्योंकि ''सागर कहाँ............ कहाँ मैं बालक''। अतः जहाँ एक और मैं न्यूनताओं के लिए प.पू. मुनिश्री से क्षमा याचना करता हूँ वही सुधी पाठकों से निवेदन है कि कृपया आप इसमें पूर्णता प्रदान करें। परम पूज्य मुनिश्री के चरणों में प्रणाम, आपका शुभाशीष मुझ अकिंचन पर सदा बना रहे।

अब मैं अपनी अंतिम अभिलाषा भी प्रकट करना चाहता हूँ और वह यह है कि मैंने अपने सन्तों के दिव्य जीवन चरित लिखें हैं। मैं चाहता हूँ कि अब मेरा अंतिम समय ''पंडित मरण'' के रूप में उन संतों की चरण-शरण में या उनके निर्यापकत्व में ही पूर्ण हो। यह मेरे श्रा-व-कत्व की हार्दिक अभिलाषा है।

इस काव्य रचना में मुझे जिन महानुभावों का सहयोग मिला है उन सबके प्रति मैं अपना हार्दिक आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। प.पू. मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के वरदायी संवेदनशील, कृपालु, चरण कमल में बारम्बार कोटिशः प्रणाम जिनके कारण मेरा एक वर्ष का समय 'काव्य रचना' में व्यतीत हुआ। मैं अशुभ से बचा रहा एवं शुभता में संलग्न रहा। संघस्थ आदरणीय व्रतीगण जिन्होंने मुनिश्री से सम्बंधित जीवन सूत्र दिये

उनके प्रति सविनय प्रणमामि।

डॉ. श्री सुधीर जैन, जिनकी पुनः पुनः प्रेरणाओं ने मेरे मानस में पड़े काव्य रचना के सुसुप्त बीज को जाग्रत एवं नेत्रोन्मीलित किया तथा ''भाव विज्ञान'' के आद्यन्त अंक प्रदान कर काव्य को पुष्ट करने में सहयोग दिया, के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। श्री डॉ. अजित कुमार जी एवं श्री श्रीपाल जी दिवा के माध्यम से प.पू. मुनिश्री से लगातार साहित्यिक सम्बन्ध बना रहा, तथा वर्तमान में भी उनके सहयोग से प.पू. मुनिश्री के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ, फलस्वरूप काव्य का जन्म हुआ। आप दोनों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

पारिवारिक समायोजन एवं सहयोग के बिना साहित्य साधना असंभव ही है। मैं अपनी पत्नी श्रीमती भगवती बाई, सुपुत्र श्री अनिल कुमार जैन, पुत्रवधु श्रीमती रेखा जैन, पौत्र श्री अनिरुद्ध एवं अरिहंत के प्रति हार्दिक वात्सल्य- आशीष प्रकट करता हूँ जिनकी प्रेरणा एवं सहयोग मुझे विषम परिस्थितियों में भी देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अपने श्रा-व-कत्व निर्वहन की क्षमता प्रदान करता रहा है। अस्तु! मुनिश्री से बने युवाचार्यश्री आर्जवसागरजी के चरणों में सादर नमोऽस्तु।

पं. लालचन्द्र जैन ''राकेश''
36, अमृत एन्क्लेव, अयोध्या वायपास रोड़, भोपाल (म.प्र.)
मोक्ष सप्तमी दि. 25.07.2012

अन्तर्ध्वनि

डॉ. (प्रो.) सुधीर जैन, भोपाल

(सम्पादक-भावविज्ञान)

अन्तर्ध्वनि शब्द ''आत्मा की आवाज'' का पर्यायवाची है। जी हाँ! मैं आज इसके माध्यम से अपने मन की बात कहने जा रहा हूँ।

संत शिरोमणि परम पूज्य १०८ आचार्यश्री विद्यासागर जी से दीक्षित परम प्रभावक प.पू. आचार्यश्री आर्जवसागरजी, मुनिपद की अवस्था में, दक्षिण भारत, तमिलनाडू आदि को अपने मंगलविहार, धर्माचरण एवं धर्मोपदेश से जैनधर्म की अनुपम प्रभावना करते हुये १२ वर्ष पश्चात् मध्यप्रदेश में प्रवेश कर सन् २००४ में देश के दिन की धड़कन, ताल-तलैयों एवं प्राकृतिक संपदा से समृद्ध भोपाल नगर में पधारे तो जैनियों में किसी भेद-भाव से ऊपर उठकर जनता ने प.पू. मुनिश्री आर्जवसागर जी ससंघ का वैसे ही स्वागत किया जैसे तृषातुर पपीहों का समूह सजल मेघों का करता है। नगर के प्रमुख जिनालयों के दर्शन लाभ लेते हुये श्री १००८ महावीर दि. जैन मंदिर, टीन शेड में पूज्यश्री विराजमान हुये, यहीं आपका सन् २००४ का चातुर्मास सम्पन्न हुआ।

परम पूज्य १०८ आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज और व्यक्तित्व

जिनका जीवन दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत हो, जो कहने की अपेक्षा करके बताये और जो मनुष्य पर्याय में 'करणीय' को आत्मसात कर सतत विकासोन्मुख हो, वास्तव में वही जीवन है, अन्यथा जीवन की घड़ियाँ तो सभी की बीतती ही हैं। ज्ञान-ध्यान में निरत, महापंडित, निस्पृह, साधना में कठोर, वात्सल्य में सुकोमल, सरल प्रवृत्ति, तेजस्वी, विशयाशाविरक्त, बस यही है इनका अंतर आभास।

विद्वत्ता और चारित्र परस्पर पूरक हैं। श्रद्धा इनको दृढ़ता प्रदान करती है और इन तीनों का सामंजस्य जीवन का लक्ष्य-रत्नत्रय बन जाता है। इनका

सतत साधन एक दिन साधक को मुक्ति, निर्वाण, सिद्धावस्था तक पहुँचाता है।

वर्तमान में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित, ऐसे ही साधकों में एक नाम है-

आचार्यश्री आर्जवसागरजी, यथा नाम तथा गुण।

सन् १९६७ में कुण्डलपुर के बड़े बाबा, दमोह (म.प्र.) के निकट पथरिया ग्राम में पुण्यशाली श्रावक श्री शिखर चन्द-मायादेवी के घर एक बालक ने जन्म लिया और नाम पाया "पारसचंद" परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य थी, पिताश्री स्कूल अध्यापक थे, अपने तीन भाइयों में सबसे बड़े पारसचंद ने जैसे ही कॉलेज में तो प्रवेश लिया परन्तु उनका मन तो हमेशा आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी के पास लगता था और अपने स्कूली जीवन में ही तीन चार बार उनके पास जाकर रहने लगे थे। परन्तु माता-पिता अपने मोहवश उनको बार-बार घर वापिस ले आते थे। पारसचंद का स्वभाव सरल था, बुद्धि प्रखर थी, व्यवहार विनम्र था इसलिए उन्हें धर्म वस्तु परिज्ञान शीघ्र हो जाता था और एक दिन ऐसा भी आया कि घर से निकले पारसचंद फिर घर नहीं आये और उनकी रुचि परम वैराग्य की ओर बढ़ती गयी। छःढाला, रत्नकरंडक श्रावकाचार, मोक्षशास्त्र आदि का अध्ययन करने के बाद आखिरकार गुरुवर से ब्रह्मचर्य व्रत ले ही लिया। पहले क्षुल्लक फिर ऐलक और अंतिम परिणति में सन् १९८८ में सोनागिरि सिद्ध क्षेत्र में प.पू. गुरुवर संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के करकमलों से मुनि दीक्षा सम्पन्न हुई।

पूज्यश्री के मंगल सान्निध्य में धर्मोपदेश के साथ ही अनेक सफल आयोजन हुये अखिल भारतीय विद्वत्संगोष्ठी भी संपन्न हुई जिसमें लगभग २० विद्वानों ने अपने विद्वाताक्ष आलेखों का वाचन किया। पंडित लाल चंद्र जी 'राकेश', गंजबासौदा ने भी उस विद्वत् संगोष्ठी में आलेख वाचक विद्वान के रूप में सहभागिता की। आपको संत शिरोमणि प.पूज्य आचार्यश्री

विद्यासागरजी महाराज के जीवन पर ''सदलगा के संत'' नाम के महाकाव्य की प्रथम रचना करने वाले कवि का गौरव प्राप्त है। सन् २००४ की संगोष्ठी में ही आपने प्रथम बार पूज्यश्री आर्जवसागरजी मुनि महाराज, वर्तमान आचार्यश्री, के मंगल दर्शन किये। आप पूज्यश्री के दर्शन कर, तात्विक प्रवचन सुन, इतने प्रभावित हुये तथा उनकी हर चर्या को गौर से देखने लगे। प्रतिदिन दर्शन करना और प्रथम पंक्ति में बैठकर दत्तचित हो प्रवचन सुनना उनकी दैनदिंनी का अनिवार्य अंग बन गया। चातुर्मास काल में होने वाले कार्यक्रम में सक्रियता से भागीदारी निभाने लगे। चातुर्मास समाप्ति उपरांत भी समाज में विशेष आग्रह पर पूज्यश्री के मंगल सान्निध्य एवं आशीष की छत्र-छाया में अनेक आयोजन हुये जिनमें समाज के आमंत्रण पर वहाँ भी आना-जाना बना रहा तथा पूज्यश्री का मंगल आशीष एवं वात्सल्य प्राप्त होता रहा, अनेक बार भोपाल से बाहर भी पूज्यश्री के मंगल सान्निध्य में संगोष्ठियों में गये जिनके कारण पं. लालचन्द्र 'राकेश' जी के मन में हर किसी परिस्थिति में ''आध्यात्मिक संत आर्जवसागर'' नाम से ऐसे महाकाव्य लिखने की भाव-भूमि बनी।

प.पू. मुनिश्री आर्जवसागरजी के जीवन आदि की जानकारी देने की सूत्रहार का दायित्व संघस्थ ब्रह्मचारी दीदी, जो अब संघस्थ आर्यिका हैं, ने सम्हाला। मैं भी प्रेरक बन आपसे जुड़ा रहा। सतत सम्पर्क के कारण मुनिश्री के व्यक्तित्व, श्रुतसाधना, श्रमणचर्या धर्मोपदेश, वात्सल्य, आदि से प्रभावित हो आपका मन गाने लगा-

मुनिवरश्री आर्जवसागर का, नवीन स्वयं वृहत् है काव्य।
मुझ जैसों का कवि बन जाना, अचरज नहीं, सहज संभाव्य॥
सागर में तो नीर बहुत है, मेरे पास मात्र गागर।
मनमंदिर में सहाविराजें, मुनिवर श्री आर्जवसागर॥

यद्यपि हूँ अल्पज्ञ, नहीं है छन्दशास्त्र का कोई ज्ञान।
मैं क्या जानूँ रस क्या होता, भाषा-शैली से अनजान॥
शब्दकोश कवि का धन होता, वह भी मेरे पास नहीं।
लेकिन भक्तिलीनता से मन, होता कभी निराश नहीं॥
गुरुभक्ति मुक्ति का साधन, उभयलोक सुखकारी है।
मूल्य त्रिलोकी रत्न हैं दुर्लभ, सब संकट-दुःखहारी है॥
श्री गुरुवर के शुभाशीष से, हो जायेगा कार्य सफल।
यही सोचकर शुरु किया है, लिखना उनका चरित विमल॥

'आध्यात्मिक संत : आर्जवसागर'' इस काव्य कृति के रचनाकार पं. लालचन्द्र जैन ''राकेश'' हैं। ''राकेशजी'' एक सपुल राष्ट्रकवि की श्रेणी के महाकवि हैं। सहजता और विनम्रता उनके जीवन के अभिन्न अंग है। उन जैसा कवि ही ''आध्यात्मिक संत : आर्जवसागर'' जैसा महाकाव्य लिख सकता है। आप आशु कवि हैं, द्रुतगति से लिखते हैँ, उनकी प्रतिभा स्मरणीय है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय वह कम है।

माँ भारती के लाल कविवर लालचन्द्रजी 'राकेश' ने मुनिश्री के प्रति अपने भावों को पच्चीस गुण सौरभित सुमनों से काव्यहार की रचना कर माँ शारदा के कोष की श्रीवृद्धि तो की ही है, मुनिश्री के प्रति श्रद्धा का जो महा-अर्घ्य समर्पित किया वह अनुपम और अप्रतिम है। इस महाकाव्य 25 अध्याय, 410 शीर्षक तथा लगभग 1500 पद्य हैं। ये कविवर 'राकेशजी' के मनविप्प से खिले-खिले या हँसते-मुस्कराते-से शब्द-पुष्प हैं, जो श्रद्धा और भक्ति से सुसगंधित, जिनमें लोकमंगल के अनेक इन्द्र धनुष सौन्दर्य विखेर रहे हैं।

इस महाकाव्य में प.पू. आचार्यश्री आर्जवसागरजी के जन्म से लेकर सन् 2012 सूरत चातुर्मास तक का वर्णन अत्यंत कौशल के साथ किया गया है। पूज्यश्री के जीवन की झाँकियाँ इतनी सजीव है कि निहित भावों को दर्पणवत उजागर कर रही है। ऐसा लगता है कि हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं।

बालक पारसचन्द के बाल्यसौन्दर्य, वैराग्य होने पर माता-पिता से वैराग्य संवाद, अभीक्ष्ण ज्ञानों-पयोग एवं व्यक्तित्व का परिचयात्मक वर्णन अत्यंत सुन्दर है। जैसे-

झलक रहा था मुखमंडल पर, एक अलौकिक दिव्य प्रकाश।
मुख की सुन्दरता में होता, बालसुधाकर का आभास॥
आँखें नीलकमल-सी सुन्दर, छोटी सी पलकें मृदुतम।
अंग-अंग से फूट रही थी, सुन्दरता-शोभा-अनुपम॥

-बालक का सौन्दर्य

कोई सगा न साथी कोई, सब सदाय के पथिक यहाँ।
आकर मिले, चले जाते हैं, जिसका जब गंतव्य जहाँ॥
इसीलिए रे पारस अब तो, निज आतम का रस पाले।
घर-कारा को छोड़ बाबरे, जाकर जिनवर दीक्षा ले॥

-पारस का वैराग्य चिंतन

''बेटे! जब वर्षा आयेगी, बिजली चमके, बरसे घन।
शीत फुहारें लगें देह में, सह न सकोगे कोमल तन॥''
''माते! ध्यानारूढ़ हुआ मैं, आतम में छुप जाऊँगा।
भेद विज्ञानी चादर ओढ़े, तन की शीत मिटाऊँगा॥''

-माता-पिता से वैराग्य संवाद

गुरुवरश्री आर्जवसागर का, चतुर्मुखी व्यक्तित्व महान्।
चन्द सम मुखमंडल ऊपर, क्रीड़ा करती मधु मुस्कान॥
हृदय सरल मक्खन-सा मृदुतम, दयामूर्ति करुणा अवतार।
वह थल तीरथ बन जाता है, मुनिवर करते जहाँ विहार॥

-आर्जवसागरजी का व्यक्तित्व

बहुत क्या कहें? आचार्यश्री आर्जवसागरजी का जैसा व्यक्तित्व एवं कृतित्व महान् है वैसा ही कवि ने उसे यथावत चित्रित करने का सफल प्रयास

किया है। परम पूज्य आचार्यश्री यावच्चन्द्र दिवाकरौ जयवंत एवं जीवंत रहें हम सब को धर्मामृतपान कराते हुए मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर करते रहें ऐसी शुभभावना के साथ उनके चरणों सादर नमोऽस्तु करता हूँ वहीं कविवर श्री लालचन्द्र जी 'राकेश' को ''अध्यात्मिक संत आर्जवसागर'' काव्य रचना के लिए साधुवाद देते हुए उनके मंगलमय दीर्घ जीवन की प्रभु से प्रार्थना करता हूँ। जो इस महाकाव्य के रूप में परिणत हो हम सबके हाथों में है। हम उनके इस अथक प्रयास के लिए भावविज्ञान परिवार की ओर से भूरि-भूरि बधाई देते हैं।

11.10.2019

85, डी.के. कॉटेज,
बावड़िया कला, भोपाल

अनुक्रमणिका

विवरण		पृष्ठ सं.
अन्तस् के मोती		iii
अन्तर्ध्वनि		xvii
समर्पण		xv
गुरुभक्ति–आशीष–सफलता		xxvi
प्रथम सोपान–	कथानायक का बाल्य जीवन	1–18
द्वितीय सोपान–	पारसचंद को वैराग्य	19–31
तृतीय सोपान–	पारसचंद की ब्रह्मचर्य दीक्षा	32–45
चतुर्थ सोपान–	सिद्धक्षेत्र अहारजी में क्षुल्लक दीक्षा	
	थोबोनजी में ऐलक दीक्षा	46–55
पंचम सोपान–	श्री सिद्धक्षेत्र सोनागिरि में मुनि दीक्षा	56–66
षष्ठम सोपान–	मढ़ियाजी में चातुर्मास–1988	
	कुण्डलपुर में चातुर्मास–1989	67–79
	मुक्तागिरि में चातुर्मास–1990	
सप्तम सोपान–	कोपरगाँव चातुर्मास–1991–2003	80–90
अष्टम सोपान–	सांगली चातुर्मास–1992	91–95
नवम सोपान–	श्रवणबेलगोला चातुर्मास–1993	96–102
दशम सोपान–	दावणगेरे चातुर्मास–1994	103–106
एकादश सोपान–	पोन्नूरमलै चातुर्मास–1995,1996	107–124
द्वादश सोपान–	कन्नलम चातुर्मास–1997	
	विशाखाचार्य तपोनिलय–1998, 2000	
	नल्लवन पालैयम्–1999	
	आरनी चातुर्मास–2001	
	शिवमोग्ग चातुर्मास–2002	125–136

त्रयोदश सोपान–	भोपाल चातुर्मास–2004	137–151
चतुर्दश सोपान–	अशोकनगर चातुर्मास 2005	152–159
पंचदश सोपान–	रांची चातुर्मास–2006	160–174
षोड्ष सोपान–	दमोह चातुर्मास–2007	175–191
सप्तदश सोपान–	ग्वालियर चातुर्मास–2008	192–207
अष्टादश सोपान–	अजमेर चातुर्मास–2009	208–220
नवदर्श सोपान–	जयपुर चातुर्मास–2010	221–231
विंशतितम सोपान–	रामगंजमंडी चातुर्मास–2011	232–277
	औद्योगिक एवं धार्मिक नगरी सूरत केआहुरा नगर श्री शान्तिनाथ जिनालय में चातुर्मास 2012	
एकविंशतितम सोपान–	मुनिश्री का व्यक्तित्व	278–290
द्वाविंशतितम सोपान–	मुनिश्री का सृजित साहित्य	291–306
त्रयोविंशतितम सोपान–	मुनिश्री की चारित्र सर्जना एवं धर्मप्रभावना	307–311
चतुर्विंशतितम सोपान–	सृजित साहित्य का भावपक्ष एवं कला पक्ष	312–316
पंचविंशतितम सोपान–	संयम के पच्चीसवर्ष की पच्चीस उपलब्धियाँ	317–324
आ. सीमंधरसागर से आचार्य पद पर कविता		325–327
कवि परिचय		328–331
गुरु श्री आर्जवसागराष्टकम्		332–333

।। श्री आदिनाथाय नमः ।।
।। श्री आर्जवसागराय नमः ।।

समर्पण

(श्री) विद्यासागर के उपवन में
शोभित पुष्प अनेकानेक ।

ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग सभी में,
रखता है महत्त्व प्रत्येक ।।

उन सुमनों में एक सुमन हैं,
मुनिवर श्री आर्जवसागर ।

उन ही के पावन कर कमलों,
अर्पित यह श्रद्धा गागर ।।

- पं. लालचन्द्र जैन 'राकेश'

गुरु-भक्ति....... गुरु आशीष.....सफलता

❋

महाकठिन है गहरे सागर, से रत्नों को ले आना ।
महाकठिन है उच्च हिमालय, के शिखरों पर चढ़ जाना ।।
महाकठिन है विस्तृत नभ के, तारा-गण को गिन पाना ।
महाकठिन है तरणी द्वारा, विस्तृत सागर तिर पाना ।। १।।

❋

इसी तरह से किसी श्रमण की, दिव्य जीवनी या वृत्तान्त।
महाकठिन है लेखन करना, सुष्ठु-सुन्दर-आद्योपान्त ।।
यह विचार कर बैठे रहना, बुद्धिमान का काम नहीं ।
पुरुषार्थी बढ़ते ही रहते, लेते हैं विश्राम नहीं ।। २।।

❋

यद्यपि हूँ अल्पज्ञ, नहीं है छन्द-शास्त्र का कोई ज्ञान ।
मैं क्या जानूँ रस क्या होता, भाषा-शैली से अनजान ।।
शब्द-कोष कवि का धन होता, वह भी मेरे पास नहीं ।
लेकिन भक्तिलीनता से मन, होता कभी निराश नहीं ।। ३।।

❋

गुरु-भक्ति मुक्ति का कारण, उभय लोक सुखकारी है।
मूल्यत्रिलोकी रत्न है दुर्लभ, सब संकट-दुखहारी है।।
श्री गुरु के आशीर्वाद से, हो जाते हैं कार्य सफल ।
यह विचार कर शुरू किया है, लिखना उनका चरित विमल।। ४।।

प्रथम - सोपान
(कथानायक पारसचन्द्र का बाल्य जीवन)

१. मंगलाचरण

२. कथावतार

३. फुटेराकलाँ में धार्मिक दम्पत्ति 'शिखरचन्द-मायाबाई' का निवास

४. कथानायक पारसचन्द का जन्म

५. बालक का व्यक्तित्व एवं क्रीड़ाएँ

६. बगिया के चार सुमन

७. बालक का देव-दर्शन संस्कार

८. बालक का नामकरण

९. पथरिया ग्राम नहीं तीर्थ क्षेत्र

१०. संस्कार और पारस

११. पारस का विद्यालय प्रवेश

१२. होनहार बालक पारस

१३. पारस का पिकनिक पर जाना

१४. पारस का धार्मिक जीवन

१५. पारस का युवावस्था में प्रवेश

ॐ

।। श्री आदिनाथाय नमः ।।
।। श्री आर्जवसागराय नमः ।।

प्रथम सोपान

मंगलाचरण

❋

जिनने धर्म धनुष धारण कर, मोहमल्ल संहार किया ।
जिनने दिव्य देशना द्वारा, मैत्री का उपहार दिया ।।
जिनके चरणों में रहता है, सकलसिद्धि का अक्षय वास ।
जिनके नाम मात्र सुमरन से, हो जाता कर्मों का नाश ।।
जिनकी कृपा कोर से कटते, जगज्जनों के भव बंधन ।
कुण्डलपुर के आदिनाथ को, कवि करता सादर वंदन ।। १।।

❋

जिनके पद प्रक्षालन करता, वर्द्धमान सागर का जल ।
जिनकी स्तुति में रत रहते, तोता-मैना-पिक अविरल ।।
सूरज-चाँद अर्चना करते, ताराओं के पुंज चढ़ा ।
कुण्डलनग करते प्रणाम हैं, शाखाओं के हाथ हिला ।।
प्रकृति नदी के रोम-रोम में, बड़ा हो रहा स्पंदन ।
कुण्डलपुर के आदिनाथ को, कवि करता सादर वंदन ।। २।।

❋

जिनके वचनसुमन सुन्दरतम, धर्म-सुगन्धी वाले हैं ।
जिनवचसूत्र ग्रथित मणिमुक्ता, अनुपम आभा वाले हैं ।।
जिनकी पावनतम पदरज से, हुआ तिरस्कृत है चन्दन ।
श्री मुनिवर आर्जवसागर को, कवि करता सादर वंदन ।। ३।।

कथा अवतरण

अखिल विश्व में देश हमारा, मुकुट-मणी-सा शोभावान ।
सोने की चिड़िया कहलाता, जड़-चेतन रत्नों की खान ।।
आदि तीर्थंकर ऋषभनाथ के, भरत चक्रवर्ती सुत नाम ।
उनसे सम्पोषित होने से, पड़ा देश का भारत नाम ।। ४।।

❁

एक देश में कई प्रदेश हैं, कहने को हैं अलग - अलग ।
किन्तु एक हैं, जड़े हों जैसे, एक मुद्रिका में कई नग ।।
सकल नगों में जो चमकीला, नाम है उसका मध्यप्रदेश ।
प्रकृति-सम्पदा, भौतिक सुविधा, धर्म-संस्कृति पुष्ट अशेष ।। ५।।

❁

मध्यप्रदेश देश का दिल है, दिल का है विन्ध्याचल भाल ।
भूमि उर्वरा, नदी नर्मदा, इसको रखती मालामाल ।।
कविता-न्याय-वीरता-गायन, स्वर, सौरभ, विज्ञान-कला ।
विपुल, सघन वन, रत्न सम्पदा, का इसको उपहार मिला।। ६।।

❁

मध्यप्रदेश में कई जिले हैं, उनमें एक 'दमोह' जिला ।
इसके निकट क्षेत्र 'कुण्डलपुर' का अतिसुन्दर कमल खिला ।।
आदि तीर्थंकर ऋषभदेवजी, यहाँ विराजे पद्मासन ।
भगवन् के दर्शन से होता, निधत्त-निकाचित कर्म क्षरण।। ७।।

❁

आचार्य श्री विद्यासागर की, रही क्षेत्र पर अधिक कृपा ।
मंदिर-मूरत-क्षेत्र-पहाड़ी, का सुरूप अतिशय निखरा ।।
अतिशय-सिद्धक्षेत्र दोनों यह, परम प्रसिद्धि पायेगा ।
अखिल देश का यह सर्वोत्तम, तीर्थक्षेत्र बन जायेगा।। ८।।

❋

देकर स्वप्न एक श्रावक को, प्रकट हुई यह मूर्ति बड़ी ।
तब-तब हुए सहायक भगवन, जब भक्तों पर पीर पड़ी ।।
कुण्डलपुर है सिद्धक्षेत्र भी, इसकी महिमा रही महान ।
'श्रीधर स्वामी' ज्ञान दिवाकर, प्राप्त यही से पद निर्वाण।। ९।।

❋

मूर्ति बड़ी है, बड़े हैं अतिशय, बड़ा पुराना तीर्थ बड़ा ।
इन कारण से आदिनाथ का, 'श्री बड़ेबाबा' नाम पड़ा ।।
बड़े बाबा के भा-मंडल से, सिक्त 'फुटेराकलाँ' है ग्राम ।
रहे वहाँ पर धार्मिक दम्पति, 'शिखरचन्द-मायावती' नाम।। १०।।

❋

शिखरचन्द जी कर्म से शिक्षक, शिष्ट आचरण वाले हैं ।
कर्मठ-कुशल-कर्त्तव्य परायण, क्षमाशील गुण पाले हैं ।।
सादा जीवन, उच्च विचारों, से मंडित व्यक्तित्व धनी ।
कवि-धार्मिक-जिनभक्त, आपकी है समाज में छवि बनी।। ११।।

❋

प्रधान अध्यापक शिखरचन्द जी, हिन्दी-इंग्लिश में व्युत्पन्न ।
ईश्वर दत्त कवित्वशक्ति से, आपश्री प्रतिभा सम्पन्न ।।
रचा आप साहित्य महत्तम, कविता-भजन, गेय-स्वर-ताल ।
शास्त्र-पुराण पठन-पाठन में, अधिक बिताते अपना काल।।१२।।

❋

मातुश्री श्रीमायादेवी, प्रकृति धर्म से ओतप्रोत ।
हृदय उदार, विशाल आपका, सतत प्रवाहित करुणा-स्रोत ।।
वाणी सरस-मधुर-कल्याणी, ममता, मैत्रीभाव सदा ।
आपश्री से कभी किसी का, हुआ न आहत चित्त कदा।। १३।।

❋

द्रव्य-क्षेत्र-काल आदिक का, परिणामों पर पड़े प्रभाव ।
जैसा जन करते हैं भोजन, वैसे ही बनते हैं भाव ।।
सात्त्विक-शाकाहार-दिवस ही, करते दम्पति शुद्धग्रहण ।
वस्त्रपूत जल प्रासुक लेते, करते प्रतिदिन जिन दर्शन।। १४।।

❋

पंच अणुव्रत पालन करते, तजते हिंसक तीन मकार ।
सप्त व्यसन नहिं पास फटकते, साधुजनों को दें आहार ।।
अशन निशा में कभी न करते, रखते भक्ष्याभक्ष्य विवेक ।
त्याग हरी का कर देते थे, चारों पर्व माह प्रत्येक।। १५।।

❋

शैय्या को तजने से पहले, करते णमोकार का जाप ।
शैय्या पर जाने से पहले, करते प्रभु सुमरन चुपचाप ।।
पाठ आलोचन, बारह भावन, दम्पति पढ़ते यथा समय ।
षट् आवश्यक पालन करके, करते रहते कर्मक्षय।। १६।।

❋

धार्मिक दम्पत्ति करें वंदना, यथा समय कुण्डलपुर जा ।
इस कारण से उनके मन में, सदा बनी रहती शुभता ।।
पास-दूर के तीरथ जो भी, किये युगल हो भाव विभोर ।
हे भगवन्! आ जाय किसी विधि, दम्पति के भटकन का छोर।। १७।।

❋

नाथ! आपके चरण कमल में, जो भी आया हुआ निहाल ।
भगवन् हम भी श्रीचरणों में, श्रद्धा सहित नमाते भाल ।।
हाथ जोड़कर करें प्रार्थना, प्रभु तव चरणों पास रहें ।
जब तक मोक्षपुरी न पावें, तुम स्वामी, हम दास रहें।। १८।।

पुत्ररत्न की प्राप्तिः पारस का जन्म

❋

महापुरुष आने से पहले, शुभ संकेत दिखाते हैं ।
सपने देकर जगज्जनों को, आनंदित कर जाते हैं ।।
स्वप्न देखती मायादेवी, मुनिगण को देतीं आहार ।
तीर्थक्षेत्र की यात्रा करतीं, जिनवर दर्शन बारम्बार।। १९।।

❋

योग्य समय माता की कुक्षी, पुण्य जीव आगमन हुआ ।
सुख-समृद्धि-वृद्धि के कारण, घर-आँगन सब चमन हुआ ।।
जैसा जीव गर्भ में आता, माँ के बनते तथा विचार ।
माता यथा आचरण करती, तथा शिशु पड़ते संस्कार।। २०।।

❋

सुश्राविका माता माया, रखतीं सदा गर्भ का ध्यान ।
सात्त्विक-उत्तम खान-पान से, उत्तम होती है सन्तान ।।
दर्शन-पूजन-प्रवचन सुनना, श्रुताभ्यास स्वाध्याय करें ।
रखतीं चित्त प्रसन्न सदा ही, नहिं क्रोधादि कषाय करें।। २१।।

❋

शाश्वत पर्व भाद्रपद शुक्ला, तिथि अष्टमी आयी है ।
सन् उन्नीस शतक सड़सठ में, बजने लगी बधाई है ।।
दिन एकादश, माह सितम्बर, शुभता का संकेत दिया ।
सुष्ठु श्रावक शिखरचन्द गृह, पुत्र रत्न ने जन्म लिया।। २२।।

❋

बन्धु! अष्टमी पर्व है शाश्वत, सबको मंगलकारी है।
भादों सुदी अष्टमी उसमें, शुचिता की बलिहारी है ।।
पावन पर्व पर्यूषण आठें, ब्रह्ममुहूर्त्त में चार बजे ।
हुआ आगमन पुत्र रत्न का, अति खुशियों के वाद्य बजे।। २३।।

❋

शिखरचन्द्र जी-मायादेवी, फूले नहीं समाये हैं ।
महिलाओं ने जच्चा गाये, बाँटे खूब बधाये हैं ।।
बहुत दिनों तक रहा निरन्तर, पुत्ररत्न उत्सव का क्रम ।
भजन-बुलौआ-भाग्य प्रशंसा, दान-धर्म चलते हर दम।। २४।।

❋

था शिशु का व्यक्तित्व अलौकिक, सुन्दर जैसे देवकुमार ।
सभी चाहते उसे देखना, परिजन-पुरजन-सह परिवार ।।
अपलक नयन बने रहते थे, भूल गये करना टिमकार ।
एक बार में तृप्त न होते, अतः देखते बारम्बार।। २५।।

❋

झलक रहा था मुखमंडल पर, एक अलौकिक दिव्य प्रकाश ।
मुख की सुन्दरता में होता, बाल सुधाकर का आभास ।।
आँखें नीलकमल-सी सुन्दर, छोटी-सी अलकें मृदुतम ।
अंग-अंग से फूट रही थी, सुन्दरता-शोभा-अनुपम।। २६।।

❋

जैसे चन्द्र दोज का प्रतिदिन, कला-वृद्धि को पाता है ।
वैसे क्रमशः बड़कर शिशु भी, हृष्ट-पुष्ट हो जाता है ।।
देख-देख बालक की शोभा, माँ का मन होता प्रमुदित ।
जैसे ज्वार उदधि में आता, जब भी होता चन्द्र उदित।। २७।।

❋

गौरवर्ण-पुष्ट तन बालक, अंग-अंग सौन्दर्य निधान ।
कमलोपम मुख-नयन, नासिका-पाती है चम्पक उपमान ।।
कर-पग कंज सदृश अति कोमल, तल नव पल्लव से छवि धाम ।।
लगता ऐसे, जैसे आया, सुन्दर बाल रूप घर काम ।। २८।।

❋

माता माया, पिता शिखर जी, निज सौभाग्य मनाते थे ।
पुनः-पुनः गोद में लेकर, बालक नित्य खिलाते थे ।।
नजर बचाने सुत को माता, डठूला रोज लगाती थी ।
लेकिन उससे शिशु की शोभा, और अधिक बढ़ जाती थी।। २९।।

❋

बालक की क्रीड़ायें लखकर, मात-पिता रस लेते थे ।
मन-रंजन करने बालक को, विविध खिलौने देते थे ।।
बड़ी-बड़ी आँखें बालक की, मन को सुख पहुँचाती थीं ।
किलक-किलक जाता था बालक, जब माँ ताल बजातीं थी।। ३०।।

❋

बालक अति ही नटखट चंचल, कार्य नहीं कर पाती माँ ।
अतः सुला देती झूले में, मीठी-मीठी लोरी गा ।।
शुद्ध-बुद्ध हो, बनो निरंजन, जगज्जाल से मुक्त बनो ।
तुम आतम अक्षय-अविनाशी, संत-शिव-सुन्दर युक्त बनो।। ३१।।

❋

जिनवच संजीवन औषध को, माता रोज पिलाती थी ।
भवाताप हर गीतों द्वारा, बालक मन बहलाती थी ।।
इसी घुटी ने पारस का मन, पारस के सँग जोड़ दिया ।
आगे चलकर जगत् उदासी, पारस ने घर छोड़ दिया।। ३२।।

❋

शिखरचन्द-मायादेवी की, बगिया सुमन खिले हैं चार ।
पारसचन्द-संजयकुमार जी, तृतीय पुत्र अरविन्द कुमार ।।
तथा योग्य थी पुत्री सन्ध्या, त्रय गृहस्थ आचरण पवित्र ।
बड़े सदा बड़े ही रहते, उनका है यह दिव्य चरित्र।। ३३।।

प्रथम देव-दर्शन संस्कार

❋

माता-पिता पारिवारिक जन, गये जिनालय मन उत्साह ।
शिशु को अंक लिये माताश्री, दिये सुरक्षा आँचल छाँह ।।
श्रीफल भेंट किया प्रभु चरणों, शिशु को सम्मुख लिटा दिया ।
प्रभु-पद पावन रज से शिशु ने, जीवन सुखमय बना लिया।।३४।।

❋

तदनन्तर अभिमंत्रित जल से, कारित शिशु अमृत स्नान ।
उत्तम अंग लगा गंधोदक, किया गया नैर्मल्य प्रदान ।।
तिलक लगा, पुष्प क्षेपण कर, मंत्र सुनाया श्री णमोकार ।
डेढ़ माह पश्चात् शिशु का, हुआ देवदर्शन संस्कार।।३५।।

❋

श्रीफल-मंगल द्रव्य-वेष्टन, बर्तन-शास्त्र-यथोचित धन ।
किया पिताश्री मंदिर जी को, श्रद्धा-हर्ष-सहित अर्पण ।।
जननी-जनक हुये संकल्पित, आगे रखें स्वयं ही ध्यान ।
आठ वर्ष तक पाप-बंध से, करें सुरक्षित निज संतान।।३६।।

बालक का नामकरण

श्रीमत् शिखरचन्द जी पहुँचे, एक दिवस जयोतिषी घर ।
"पुत्ररत्न की जन्म कुण्डली", आप बनादें विद्वद्वर ।।
क्या भविष्य होगा बालक का, जिज्ञासा है सबके मन ।
ग्रह-नक्षत्र बताते हैं क्या, क्या होगा इसका जीवन।।३७।।

❋

भाग्य पुरुष का कोई न जाने, क्या से क्या हो जाता है ।
वट का एक बीज छोटा-सा, बड़ा वृक्ष बन जाता है ।।
कहकर ग्राम ज्योतिषी बोला, ग्रह-नक्षत्र बताते हैं ।
इस जातक में महापुरुष के, लक्षण पाये जाते हैं।।३८।।

❋

निज-पर का न भेद करेगा, इसका होगा हृदय उदार ।
सारा जग इसको पूजेगा, होगा जग इसका परिवार ।।
यह बालक आगे चल करके, मोक्ष-मार्ग अपनायेगा ।
भव-तन-भोग विरागी होकर, महासंत बन जायेगा।।३९।।

❋

नाम बतायें श्रीमन् इसका, नाम मनुज की है पहचान ।
मात्र नाम के सुन लेने से, गुण का लग जाता अनुमान ।।
बहुत देर तक गुणा भागकर, पंडित जी ने बतलाया ।
पन्ना के अनुसार पुत्र का "पारसचन्द" नाम आया।।४०।।

❋

पाठकवृंद! ध्यान दें इस पर, शिखरचन्द जी नाम पिता ।
पारसचन्द पुत्र हैं उनके, क्या अनुपम संयोग रचा ।।
वर्तमान चौबीसी राजित, तीर्थंकर श्री पारसनाथ ।
मोक्ष पधारे क्षेत्र शिखरजी, हम सब युगल नमाते माथ ।।४१।।

फुटेराकलाँ से पथरिया

शासकीय सेवा में होता, कोई निश्चित ठौर नहीं ।
वंद लिफाफा पहुँचा देता, आज यहाँ, कल और कहीं ।।
शिक्षक श्रीमन् शिखरचन्द जी, गये 'पथरिया' किया निवास ।
धीरे-धीरे लगे बीतने, दिन-सप्ताह-पक्ष और मास।।४२।।

❋

अहो! पथरिया ग्राम न केवल, इसको समझो तीर्थ महान ।
यहाँ सुशोभित कई जिन मंदिर, राजित चौबीसी भगवान ।।
श्री 'अरविन्द-विराग' जन्म से, हुई पथरिया भी पावन ।
शोभित व्रतीजनों से नगरी, मुनिजन को है मनभावन।। ४३।।

❋

बाल्यकाल में श्री पारस ने, इसी पथरिया क्रीड़ा की ।
इसी पथरिया में प्रारम्भिक हुई आपकी शिक्षा भी ।।
श्री मुनिवर आर्जवसागर जी, इसी पथरिया की हैं दैन ।
उनके अमृत उपदेशों से, आज धरा पाती सुख-चैन।। ४४।।

❋

धन्य पथरिया जिसकी रज में, जन्मे-खेले मोक्ष-पथिक ।
जिनने निज कल्याण किया ही, परोपकार भी किया अधिक ।।
अहो! पथरिया ने पाथस् बन, दिया जगत् को जीवन दान ।
ऐसी तीर्थक्षेत्र-सी पावन, पुण्य धरा को नम्र प्रणाम।।४५।।

❋

दमोह जिले में ग्राम पथरिया, रहा इलाका पथरीला ।
किन्तु यहाँ के लोगों का मन, रहता करुणा से गीला ।।
जल का नाम रहा इक पाथस्, प्रगतिशीलता जल का काम ।
पारस ने पाथस् से सीखा, सिद्धशिला हो अंत मुकाम।। ४६।।

संस्कार और शिक्षा

कलाँ फुटेरा जन्म हुआ है, पथरिया में बचपन बीता ।
गये यही पाठशाला में, पढ़ा-लिखा जीना सीखा ।।
संस्कार पाता है बालक, सबसे पहले गर्भ में आ ।
तदनन्तर पाता है शिक्षा-संस्कार विद्यालय जा।। ४७।।

❋

विद्यालय संस्कार केन्द्र हैं, मानवता का देते ज्ञान ।
ज्ञान पूज्य है, बिना ज्ञान के, मानव रहता पशु समान ।।
नर-जीवन उद्यान एक है, संस्कार हैं उसके फूल ।
जीवन में सौरभ भर देते, गुण-गरिमा देते अनुकूल।। ४८।।

❋

देह देवालय अगर मानलें, संस्कार हैं मूर्ति समान ।
देह नहीं पूजी जाती है, संस्कार हैं पूज्य महान् ।।
संस्कार मानव की शोभा, आभूषण, सर्वोत्तम धन ।
नर भी वानर जैसा रहता, अगर नहीं संस्कारित मन।। ४९।।

❋

बिन संस्कार न पूजा जाता, नर होवे अथवा पाषाण ।
संस्कारित होकर के पत्थर, हो जाता है पूज्य, महान् ।।
जो संस्कार मिले बचपन में, पाया जीवन में विस्तार ।
देव-शास्त्र-गुरु प्रति समर्पण, विनयशीलता, शिष्टाचार।।५०।।

❋

समय व्यतीते देर न लगती, पारस पहुँचे अष्ठम् वर्ष ।
तदा गिरनार सुत को लेकर, गये प्रभु के निकट सहर्ष ।।
इसके पहले करी वंदना, नेमिनाथ जिन-दर्श किये ।
श्रीफल-पुंज चढ़ाने पैदल, चढ़े टोंक, पद स्पर्श किये।। ५१।।

ग्यारह वर्ष में आचार्यश्री का दर्शन

आचार्य श्री विद्यासागर जी, पथरिया नगर पधारे हैं ।
बाँझल-सदन विराजे स्वामी, 'पारस' दर्शन पाये हैं ।।
प्रथम बार ही दर्शन करते, ऐसी छोड़ी गहरी छाप ।
सदा-सदा को आन विराजे, पारस के हृदयासन आप।। ५२।।

❋

पिता शिखर जी के संग पारस, पहुँचे गुरु के युगल चरण ।
गुरु को देख किया पारस ने, नमस्कार का उच्चारण ।।
"जो भी बालक आये अब तक, नहीं किसी का उक्त प्रयास ।
यह कोई विशेष बालक है, संस्कार हैं जिसके पास"।। ५३।।

❋

नीचे से ऊपर तक बालक, गुरु ने देखा कइ-कइ बार ।
है व्यक्तित्व मनोरम जैसा, वैसा ही मन और आचार ।।
किसी मनुज की उत्तमता की, वाणी ही होती पहचान ।
होते हैं कौआं ओ कोयल, रंग-रूप में एक समान।। ५४।।

❋

होनहार वृक्ष यदि होता, होते हैं चिकने पत्ते ।
पलने में दिखने लगते हैं, बालक में गुण हैं अच्छे ।।
बोलचाल लखकर बालक का, गुरु को हुआ यही अनुमान ।
"यह बालक आगे चलकर के, बनेगा निश्चित पुरुष महान"।।५५।।

❋

नाम तुम्हारा क्या है? पारस, पिता? शिखर जी कहते हैं ।
माताजी? श्री मायादेवी, ग्राम? पथरिया रहते हैं ।।
जाति? जैन है, धर्म? दिगम्बर, मातृभूमि? भारतमाता ।
प्रान्त? हमारा मध्यप्रदेश है, पिता सदृश आश्रय दाता।। ५६।।

❋

जाने लगे रोज विद्यालय, विद्या का पाते वरदान ।
पढ़ते, लिखते, क्रीड़ा करते, अर्जन करते सब विध ज्ञान ।।
शिक्षा का उद्देश्य न केवल, पुस्तक को प्राधान्य मिले ।
पाठ्येतर हैं कार्य बहुत से, उनको भी सम्मान मिले।। ५७।।

❋

कविता-भजन-राष्ट्रगीतादि, बालसभा में गाते थे ।
फलस्वरूप करतल ध्वनियों से, खूब सराहे जाते थे ।।
वाह! वाह! कह उठते शिक्षक, जो कुछ दिया सुनाया सब ।
माता-पिता पूछते जो कुछ, यथा तथ्य कह देते सब।। ५८।।

❋

शिक्षित होना अत्यावश्यक, मनुज मात्र का है कर्त्तव्य ।
ज्ञान साथ में बुद्धि भी हो, उज्ज्वल बन सकता भवितव्य ।।
है विवेक बुद्धि का मंत्री, उसको देता सही सलाह ।
जो विवेक से काम न लेते, वे जन हो जाते गुमराह।। ५९।।

❋

श्री पारस ने विद्यार्जन में, निज विवेक से काम लिया ।
सत्-संगति, श्रमशील, सरलता, सदाचार अंजाम दिया ।।
समवयस्यक मित्रों के संग में, क्रीड़ा करते विविध प्रकार ।
खेल भावना मन में रहती, करते सभी सहज स्वीकार।। ६०।।

❋

गेंद खेलते, गिल्ली-डंडा, कैरम, दौड़ लगाते थे ।
शारीरिक व्यायाम के द्वारा, तन-मन-स्वस्थ बनाते थे ।।
पढ़ने में भूगोल आपके मन को अतिशय भाता था ।
ड्राइंग अथवा चित्र बनाना, खूब प्रशंसा पाता था।। ६१।।

❋

स्कूल या कि पाठशाला में, रखते सदा समय का ध्यान ।
जिसने समझी समय की कीमत, वे ही बनते पुरुष महान ।।
नहीं किसी से झगड़ा करना, नहीं तोड़ना अनुशासन ।
दत्त चित्त करते थे अध्ययन, करके गुरू आज्ञा पालन।। ६२।।

❋

शिक्षा-क्षेत्र बहुत व्यापक है, स्कूली सीमा के पार ।
पिकनिक-एक्सकर्शन-यात्रायें, शिविर इत्यादि विविध प्रकार ।।
पृथक-पृथक सबका महत्त्व है, अतः कहे शिक्षा के अंग ।
पारस के स्कूली जीवन, आया पिकनिक हेतु प्रसंग।। ६३।।

❋

आज नहीं है मन में कोई, भय-आतंक पढ़ाई का ।
होमवर्क-कक्षाशिक्षक या, माता-पिता बड़ भाई का ।।
आज का दिन पिकनिक का दिन है, मस्ती-मौज मनाने का ।
खेल खेलने, गाना गाने, हँसने और हँसाने का।। ६४।।

❋

जब सूरज शिर पर चढ़ आया, चूहों ने उत्पात किया ।
पंक्तिबद्ध सामूहिक भोजन, सबने मिल प्रारम्भ किया ।।
लेकिन पारस किया न भोजन, आलू-प्याज-अनछना जल ।
किया शुद्ध भोजन घर का ही, पानी छना, मौसमी फल।। ६५।।

❋

हुए प्रशंसित सन्मित्रों से, हुए प्रभावित शिक्षक गण ।
तन-मन सदा स्वस्थ रहता है, किया गया सात्विक भोजन ।।
कैसा होगा व्यक्ति कि उसकी, संगति ही होती पहचान ।
सुरा-दुग्ध जिसके कर होते, बस वैसा ही व्यक्ति जान।। ६६।।

❋

संजय-विजय-रवीन्द्र-कमलजी, राजेश (रज्जन) जैन-सुभाष ।
रही आपकी मित्र मंडली, धर्म-समाज क्षेत्र का खास ।।
लौकिक शिक्षा साथ आपने, धार्मिकता का रक्खा ध्यान ।
इसही कारण उनके जीवन, आता गया क्रमिक उत्थान।। ६७।।

❋

दीनों-हीनों, असहायों की, पारस करते सदा सहाय ।
निर्धन को धन अथवा भोजन, देने के रखते शुभ भाव ।।
भूला-भटका पथिक बेचारा, पा जाता था अपनी राह ।
वृद्धों की सेवा करने की, पारस मन रहती नित चाह।। ६८।।

❁

धार्मिकता में पगा हुआ था, पारस का पवित्र जीवन ।
पूजन-भजन-आरती-गाना, से अनुरंजित रहता मन ।।
संतों-क्षेत्रों दर्शन करते, धार्मिक नाटक लेते भाग ।
कुण्डलपुर बाबा के चरणों, रहता आप अधिक अनुराग।। ६९।।

❁

जैसे जहाँ के नद्दी-नाले, वैसे वहाँ के भरका जान ।
जैसे जाके बाप-मतारी, होती है वैसी संतान ।।
धार्मिक दम्पत्ति के जीवन का, बालक ऊपर पड़ा प्रभाव ।
जिनवर दर्शन, पूजन-प्रवचन, का बालक मन रहता चाव।। ७०।।

❁

पहले गोदी में ले माता, मंदिरजी ले जाती थीं ।
श्री जिनवर के चरण कमल में, तीन प्रणाम कराती थीं ।।
माथे तिलक लगातीं, चंदन, गंधोदक देतीं शिरधार ।
इस प्रकार बालक को माता, बाल्यकाल देतीं संस्कार।। ७१।।

❁

बड़ा हुआ तो पूज्य पिताजी, अंगुली पकड़ चलाते थे ।
धीरे-धीरे चला बाल्य को, मंदिरजी ले जाते थे ।।
णमोकार उच्चार कराते, दण्डक पाठ पढ़ाते थे ।
पुंज हाथ में धारण करना, क्रम-क्रम से सिखलाते थे।। ७२।।

❁

जैसे कच्चे घट के ऊपर हैं संस्कार लिखे जाते ।
वे पकने पर कभी न मिटते, किन्तु अमिट हैं हो जाते ।।
होकर बड़े सामने आये, और अधिक दृढ़ता के साथ ।
जो संस्कार गये थे डाले, बाल्यकाल बालक के माथ।। ७३।।

❋

बिना देव दर्शन के पारस, जल तक करते नहीं ग्रहण ।
नहिं अभक्ष्य का भक्षण करते, हरित भक्ष्य का सीमांकन ।।
निशिभोजन की बात न पूछो, करें रसी-व्रत विविध प्रकार ।
जीवन के प्रभात भी पारस, करते त्याग शक्ति अनुसार।।७४।।

❋

जैसा कार्य किया जाता है, उसकी होती वैसी ड्रेस ।
वस्तु अगर हो टेढ़ी-सीधी, वैसा ही होता है केस ।।
भिन्न-भिन्न ड्रेस होती है, सैनिक-सेठ-कृषक-विद्वान् ।
भाव व्यक्ति के कैसे होगे, ड्रेस करा देती अनुमान।। ७५।।

❋

यथा वस्त्र हम धारण करते, तथा हमारे बनते भाव ।
वस्त्र सिपाही-सैनिक के हों, मन में आ जाता है ताव ।।
तत्क्षण मन कहता है ले लो, कर असि-भाला-तीर-कमान ।
इस प्रकार वस्त्र करते हैं, भावों में अवनति-उत्थान।। ७६।।

❋

धोती और दुपट्टा पीला, तिलक-मुकुट-हार हो शुद्ध ।
प्रभु पूजन उत्साह उमड़ता, मन में उठते भाव विशुद्ध ।।
पारसचन्द पिता संग जाकर, श्री जिनेन्द्र करें अभिषेक ।
इस प्रकार से मात-पिता ने, दिए संस्कार एक बढ़ एक।। ७७।।

❋

हम हैं रोगी, जिनवच औषध, तीर्थंकर हैं वैद्य प्रवर ।
नादिकाल से सता रहा है, महामोह मिथ्यात्वी ज्वर ।।
देव-शास्त्र-गुरु करें जो पूजन, भव-भव दुख मिट जाते हैं ।
पारसचन्द पिता संग जाकर, पूजन रोज रचाते हैं।। ७८।।

❋

संस्कारित होने पर वन भी, हो जाते अतिशय रमणीय ।
वृक्ष-लतायें संस्कारित हो, वृद्धिंगत होतीं कमनीय ।।
बिन संस्कार पुरुष की टोपी, सहसा लेते वृक्ष उतार ।
टाँग पकड़ कर धूलि चटातीं, बढ़ीं लतायें बिन संस्कार।।७९।।

❋

नहीं समय रोके से रुकता, जैसे अंजलि का पानी ।
इसी तरह घटती जाती है, जग-जीवों की जिन्दगानी ।।
समय किसी का दास नहीं है, जो रोके से रूक जाये ।
वह तो अपने पंख पसारे, क्षण-क्षण उड़ता ही जाये।। ८०।।

❋

खेल-कूद, पढ़ने-लिखने में, अधिक नहीं लगता था मन ।
अतः पास कर पाये केवल, बस बी.ए. की वर्ष प्रथम ।।
लेकिन धार्मिकता में उनने, झटपट कदम बढ़ाये हैं ।
वर्ष सत्तरह जाते-जाते, कठिन प्रश्न सुलझाये हैं।। ८१।।

❋

यह था समय कि जब पारस थे, दोराहे पर खड़े हुए ।
योग-भोग दोनों ही, अपनी-अपनी जिद पर अड़े हुए ।।
एक खींचता दक्षिण कर को, द्वितीय पकड़ लेता था वाम ।
तदा योग पारस मन भाया, भोगों पर दी बांध लगाम।। ८२।।

❋

भोगों को ललकार भगया, सेवक तन को साध लिया ।
ब्रह्मचर्य की दृढ़ रज्जु से, मन मतंग को बाँध लिया ।।
मैं हूँ कौन, कहाँ से आया, सुकरणीय कौन-सा काम ।
चिन्तन करके समझ लिया सब, करना है सार्थक निज नाम।। ८३।।

द्वितीय - सोपान
(पारसचन्द को वैराग्य)

१. वैराग्य का कारण : संस्कार

२. आचार्य श्री विद्यासागर पथरिया शुभागमन : दर्शन

३. कुण्डलपुर के बड़े बाबा के पुनः पुनः दर्शन

४. धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय

५. 'मेरी जीवन गाथा' की छाप

६. चारित्र चक्रवर्ती का प्रभाव

७. छहढाला, रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं मोक्षशास्त्र का प्रभाव

८. पारसचन्द का वैराग्य चिन्तन

९. गृह त्याग का निर्णय

१०. गुरु की शरण जा, दीक्षा लेने के विचार।

११. पारसचन्द का माता-पिता से वैराग्य संवाद ।

१२. पारसचन्द का बार-बार छोड़ना और पिताजी द्वारा वापस लाना।

१३. आचार्यश्री की अनुमोदना

१४. माता-पिता द्वारा गृहत्याग की अनुमति और पारस द्वारा गृहत्याग ।

द्वितीय - सोपान
वैराग्य के कारण

जैसे वृक्ष तने के ऊपर, हम अंकित करते आकार ।
ज्यों-ज्यों वृक्ष बड़ा होता है, त्यों-त्यों बढ़ता वही प्रकार ।।
वैसे ही पारसचन्द की, देह हुआ यौवन का भान ।
संस्कार बचपन के बोले, हम भी तो हो गये जवान।। १।।

❋

बार-बार गिर जल की बूँदे, मिट्टी में कर देतीं छेद ।
बारम्बार रगड़कर रस्सी, पत्थर तक देती है भेद ।।
यदि सातत्य रहे संतों का, मन वैराग्य उपजता है ।
और एक दिन वृक्ष रूप में, खूब फूलता-फलता है।। २।।

❋

आचार्य श्री विद्यासागर जी, जब दमोह नगर पधारे हैं ।
नन्हें मंदिर विराजे जहँ भी, पारस ने गुरु पाये हैं ।।
द्वितीय बार के दर्शन से यह, ऐसा गहरा हुआ प्रभाव ।
सदा-सदा को रह जाऊँ मैं-गुरु चरण में ऐसा भाव।। ३।।

❋

पारसजी ने अपलक घण्टों, आचार्यश्री के दर्श किए ।
चुम्बक जैसे खिंचे, निकट जा, मंगल चरण स्पर्श किए ।।
श्री गुरुवर ने दक्षिण कर से, हितकर शुभ आशीष दिया ।
भवकानन में भटके मृग को, शिवसुख मारग दिखा दिया।। ४।।

❋

मात-पिता के संग में जाकर, करें वन्दना बारम्बार ।
घण्टों ध्यान लगाये बैठें, चरण सरोज आदि दरबार ।।
बाबा बड़े क्षेत्र कुण्डलपुर, हमको दें ऐसा वरदान ।
बाहर-भीतर त्याग परिग्रह, बन जाऊँ मैं आप समान।। ५।।

❋

पारस जी के निर्मल मन में, दृढ़ संस्कार पड़ जाते हैं ।
भले भूलना चाहें पारस, उन्हें भुला न पाते हैं ।।
कभी बड़े बाबा सपने में, आकर उन्हें जगाते हैं ।
और कभी छोटे बाबा, आकर दर्शन दे जाते हैं।। ६।।

❋

लौकिक विषयों के पढ़ने में, पारस का लगता ना मन ।
लेकिन धार्मिक ग्रन्थ आपको, लगते अति ही मनभावन ।।
अतः आप शतकार्य छोड़कर, करते थे नियमित स्वाध्याय ।
सत् ग्रन्थों का सम्यक् अध्ययन, आत्म निरीक्षण हेतु उपाय।। ७।।

❋

स्वाध्याय मस्तिष्क रसायन, अतिशय पुष्टि प्रदाता है।
निज का, निज में, निज के द्वारा, साक्षात्कार कराता है ।।
यथा दवाग्नि प्रकट न होती, काष्ठ परस्पर रगड़ बिना ।
तथा ज्ञान दीपक न जलता, सतत, सुष्ठु स्वाध्याय बिना।। ८।।

❋

स्वाध्याय मन की खुराक है, होते हैं परिणाम विमल ।
मन में शांति, चित्त में शुद्धि, स्वाध्याय में अमृत फल ।।
जिनवाणी संजीवनि औषध, जन्म-जरा-मृत्यु का उपचार ।
सम्यक्रीत्या स्वाध्याय से, खुलता मुक्तिपुरी का द्वार।। ९।।

❋

सबसे पहले पारस जी ने, प्रथमनुयोगी पढ़े पुराण ।
वर्णी जी की जीवन गाथा, से पाया सम्यक् श्रद्धान् ।।
आचार्य श्री शांतिसागर का, चरित चारित्र चक्रवर्ती ।
पढ़कर हुए प्रभावित पारस, ठानी बनने महाव्रती।। १०।।

❋

'छहढाला' जी पढ़ी आपने, रत्नत्रय की 'दौलत' है ।
चतुर्गति में भटक रहे सब, यह मिथ्यात्व बदौलत है ।।
छहढाला को हिन्दी का, लघु समयसार कह सकते हैं ।
उमास्वामि के मोक्षशास्त्र की, पूर्ण झलक पा सकते हैं।। ११।।

❋

समन्तभद्र कृत रत्नकरण्ड के, इसमें अनुपम रत्न भरे ।
इसको आत्मसात् जो करले, वह निश्चित भव-सिन्धु तिरे ।।
पारस जी ने स्वाध्याय कर, प्राप्त किया यह तत्त्वज्ञान ।
तन नश्वर है, अमर आत्मा, दोनों एक यही अज्ञान।। १२।।

वैराग्य चिन्तन

सुख के दिन कट जाते झटपट, पता नहीं चल पाता है ।
बालक पारसचन्द एक दिन, पुष्ट युवक हो जाता है ।।
सत्रह वर्षीय बैठे थे जब, सामायिक में ध्यान लगा ।
बारह भावन के चिन्तन में, भव-तन-भोग विराग जगा।। १३।।

❋

गहरे चिन्तन डूब-डूब कर, पाया उसका अमृत फल ।
करलो कार्य आज ही अपना, पता नहीं आये ना कल ।।
कल की बात व्यर्थ है चेतन, कल को किसने जाना है ।
कल के विश्वासी अज्ञों को, शेष रहा पछताना है।। १४।।

❋

झूठे जग के नाते-रिश्ते, झूठा है नश्वर संसार ।
मैं हूँ किसका, कौन है मेरा, किसका घर, किसका परिवार ।।
पूछ रहे हैं प्रश्न स्वयं से, लगा-लगाकर बुद्धि प्रखर ।
भूल रहा हूँ मैं अपने को, मुझे न अपनी खोज-खबर।। १५।।

❋

मानव मन की बात निराली, मन मर्कट-सा चंचल है ।
एक जगह टिकता न पल भर, उसमें वन-गज-सा बल है ।।
इसने खींचा पारस जी को, झोंक दिया राग की आग ।
जलने लगे छोड़ समता को, ममता आग उठी तब जाग।। १६।।

❋

इक दम माता की ममता का, पारस के मन आया ध्यान ।
बारम्बार सोचने लगते, माता है सब सुख की खान ।।
लाड़-प्यार से पाला-पोषा, अपनी भूख-प्यास को भूल ।
पढ़ा-लिखा गुणवान बनाया, जग बगिया का सुन्दर फूल।।१७।।

❋

मुझे सुलाया था, सूखे में, खुद गीले में सोई थी ।
जब संकट में मुझको देखा, व्याकुल होकर रोई थी ।।
तभी पिता के उपकारों की, याद सताती है आकर ।
भाई-बहन के नाते-रिश्ते, उन्हें जकड़ लेते कसकर।।१८।।

❋

कि कर्त्तव्य हुये तब पारस, हार गये जीती पारी ।
माता-पिता, भाई-बहनों का, पलड़ा हुआ यहाँ भारी ।।
कोई दिव्य शक्ति आकर तब, देती मन विरक्ति सन्देश ।
देखो! धोखे में मत आना, यह दुनिया मायावी देश।। १९।।

❋

मृगतृणावत् समझो जग को, सुधी न इसमें रमता है ।
जान अहितकर तजता इसको, जिसे चाहिए समता है ।।
चिन्तन कर निष्कर्ष निकाला, इस दुनिया में दुख ही दुख ।
सुख का इसमें नाम नहीं है, लेकिन सागर जैसे दुख।। २०।।

❁

ज्यों घनघोर तमिस्रा में, विद्युत् प्रकाश होता क्षण को ।
ज्यों सागर की लहरों का, जीवन होता है पल भर को ।।
त्यों ये मानव का जीवन है, जो करना आज, अभी करले ।
यह जग तो दुःख का सागर है, इसमें सुख-बिन्दु नहीं पगले।।२१।।

❁

मैं क्या करूँ? समझ नहिं आता, होनहार क्या है भवितव्य ।
एक तरफ कल्याण स्वयं का, तरफ दूसरी है कर्त्तव्य ।।
लेटे रहे चटाई ऊपर, निशि भर नींद नहीं आयी ।
निज कल्याण ही सर्वोत्तम हैं, आगम-सूक्ति याद आयी।। २२।।

❁

फिर क्या था? पारस के मन में, लगे उमड़ने वही विचार ।
यह जग दुखमय वा अनित्य है, अशरण रूप तथा निस्सार ।।
जन्म-मृत्यु का रोग लगा है, जग जीवों को दुखदायी ।
लख चौरासी योनि भटकते, विविध रूप धर, पर्यायी।। २३।।

❁

जीव अकेला पैदा होता, एक अकेला करे मरण ।
कोई साथ नहीं देता है, स्वारथ भरे कुटुम्बीजन ।।
यह शरीर जो संग चेतन के, नादिकाल से मिला हुआ ।
वह तो इससे भिन्न है वैसे, ज्यों खड्ग से म्यान हुआ।। २४।।

❁

कोई सगा न साथी कोई, सब सराय के पथिक यहाँ ।
आकर मिले, चले जाते हैं, जिसका जब गन्तव्य जहाँ ।।
इसीलिए रे पारस! अब तो, निज आतम का रस पाले ।
घरकारा को छोड़ बाबरे, जाकर जिनवर दीक्षा ले।। २५।।

❁

आचार्य श्री विद्यासागर जी, संत शिरोमणि करुणाकर ।
मैं नरभव को सफल बनाऊँ, उनकी चरण-शरण जाकर ।।
क्षमासिन्धु, वत्सलतासागर, प्राणिमात्र करते उपकार ।
आशा-सह विश्वास है पूरा, कर लेंगे गुरुवर स्वीकार।। २६।।

वैराग्य संवाद

क्षण भर पारस सो न पाये, माह दिसम्बर लम्बी रात ।
सूरज निकला, पक्षी चहके, सुमन खिले हो गया प्रभात ।।
हो निवृत्त दैनिक कृत्यों से, देव-शास्त्र-गुरु करी विनय ।
पहुँचे मात-पिता चरणों में, नमन किये युग-पद सविनय।।२७।।

❁

मुख मनुष्य का दर्पण होता, कह देता है मन की बात ।
बन्द लिफाफा देख दूर से, भाँप लिया मजबूर है तात ।।
फिर भी बोले क्या है बेटा, कहो बात, क्यों हो उन्मन ।
संयम धारण चाह रहा है, भव-तन-भोग उदासी मन।। २८।।

❁

आचार्य श्री विद्यासागर की, चरण शरण में जाऊँगा ।
शुभाशीष ले मोक्षमार्ग पर, क्रमशः कदम बढ़ाऊँगा ।।
जिनवर दीक्षा धारण करके, करके अष्टकर्म का क्षय ।
पाऊँ अंतिमलक्ष्य जीव का, सुख अनन्त, अनुपम, अक्षय।।२९।।

❁

बोले बेटा! हम दोनों ने, कितने स्वप्न सजाये हैं ।
निशदिन महल बनाये कितने, कितने मोदक खाये हैं ।।
लेकिन यह क्या किया है तूने, असमय में मुख मोड़ लिया ।
हाथ थामने के मौके पर, साथ हमारा छोड़ दिया।। ३०।।

❋

जरा जर्जरित देह हमारी, तव आलम्बन चाह रही ।
बेटा! तुमने कुछ न सोचा, यह विराग की राह गयी ।।
सबसे बड़े पुत्र हो बेटा, सबसे ज्यादा तुमसे प्यार ।
बिना तुम्हारे जी न सकेंगे, तुम विन है सूना संसार।। ३१।।

❋

मैं तो सोच रही थी तेरे, माथे मुकुट बँधाऊँगी ।
जैसा तू सुन्दर है वैसी, पुत्रवधु घर लाऊँगी ।।
पोता-पोतिन की किलकारी, से गूँजेगा घर आँगन ।
वंशवेलि के सुमन खिलेंगे, अतिशय हर्षित होगा मन।। ३२।।

❋

आँखे छलक उठीं माता की, बोली अति ही गदगद् स्वर ।
लेकिन लेश न रोम पसीजा, निर्मोही-निर्मल पारस ।।
मात-पिता के सुन वचनों को, पारस अतिशय करी विनय ।
बोले मधुर वचन, पूर्व में, चरण स्पर्श किये सविनय।। ३३।।

❋

हे माताजी! पूज्य पिताजी, बात तुम्हारी अच्छी है ।
लेकिन इस दुनिया से मेरी, ममता बिल्कुल कच्ची है ।।
माते! तुमने लाड़-प्यार से, पाला-पोषा बड़ा किया ।
सब कुछ किया समर्पित तुमने, पैरों के बल खड़ा किया।।३४।।

❋

तुमने जितने कष्ट सहे हैं, वर्णन को हैं शब्द नहीं ।
मात-पिता के उपकारों से, हो सकता जग उऋण नहीं ।।
पितरौ सेवा परम धर्म है, इससे कुछ इंकार नहीं ।
लेकिन जगत उदासी मनको, घर रहना स्वीकार नहीं।। ३५।।

❋

स्वर्ण तुल्य वैराग्य भाव ही, मन में उठते बारम्बार ।
भव-तन-भोग महा दुखदायी, घर लगता है कारागार ।।
व्रत-संयम धारण करना ही, मानुष भव का अमृतफल ।
इसके बिना एक क्षण को भी, मुझको पड़ती नहीं है कल।। ३६।।

❋

माता समझ गयीं, वचनों से, अब है तिल में तेल नहीं ।
फिर भी बोली "संयम-पालन, है बच्चों का खेल नहीं ।।
कोमलतन पर सहोगे कैसे, परिषह औ उपसर्ग कठिन ।"
माते! तन से कार्य न होता, करता कार्य मनुष का मन।। ३७।।

❋

अगर मनुष्य का मन पक्का है, दिल में है संकल्प महान् ।
मार्ग छोड़कर हट जाते हैं, बड़े-बड़े आये व्यवधान ।।
चींटी तो छोटी-सी होती, कर लेती है योजन पार ।
किन्तु प्रमादी वैनतेय भी, जाता है मंजिल से हार।। ३८।।

❋

बेटे! जब वर्षा आयेगी, बिजली चमके, बरसें घन ।
शीत फुहारें लगें देह में, सह न सकोगे कोमल तन ।।
"माते! ध्यानारूढ़ हुआ मैं, आतम में छुप जाऊँगा ।
भेदविज्ञानी चादर ओढ़े, तन की शीत मिटाऊँगा"।। ३९।।

❋

"बेटे! अभी उम्र ही क्या है, पूरा जीवन शेष बड़ा ।"
"बूँद-बूँद के रिसते-रिसते, हो जाता है रितु घड़ा ।।
समय के जाने देर न लगती, जैसे अंजलि का पानी ।
बिन संयम के समय बिताना, यह तो होगी नादानी"।। ४०।।

❋

“हाड़ कँपाती शीत ऋतु में, कैसे ध्यान लगाओगे ।
दाँत किटाकिट किट्‌ट करेंगे, कष्ट नहीं सह पाओगे ।।”
“माते! जितने कष्ट है घर में, वन में उतने कष्ट नहीं ।
अगर कहीं घर में सुख होते, तीर्थंकर तजते ही नहीं”।। ४१।।

❋

संयम औषध सब कष्टों की, ऋषि-मुनि शास्त्र बताते हैं ।
जो संयम को धारण करते, परम सुखी हो जाते हैं ।।
द्वादश तप की अग्नि जलाकर, तन की शीत मिटाऊँगा ।
समता-शमता-क्षमता द्वारा, आतम बल प्रकटाऊँगा।। ४२।।

❋

ग्रीष्म ऋतु में गर्म थपेड़े, तन में आग लगायेंगे ।
भीषण तृषा सतायेगी जब, प्राण कंठगत आयेंगे ।।
कैसे धीर-धरोगे बेटे! मुझे तो रोना आता है ।
शक्ति और रुचि से सहने पर, कष्ट मिष्ट हो जाता है।। ४३।।

❋

फिर माते! यह तन है नश्वर, अस्थिर बहु रोगों का घर ।
साधक इसको वश में रखते, हो सवार इसके ऊपर ।।
काँणा पौंड़ा भोग्य नहीं है, किन्तु बहुत उपयोगी है ।
इसके द्वारा फसल मोक्ष की, उपजा लेता योगी है।। ४४।।

❋

कंकड़, काँटे, पथ पथरीले, गिरि-वन में जब करो विहार ।
कोमल पग तलियाँ छिल करके, होगी लहूलुहान सुकुमार ।।
कैसे बेटे! पार करोगे, बीहड़ जंगल सिंह दहाड़ ।
तेरा जाना सुनकर मुझपै, गिरा दुःखों का टूट पहाड़।। ४५।।

❋

हे माते! जो कहा आपने, यह तो मोह की माया है ।
मैं तो हूँ चेतन, अशरीरी, जड़-पुद्गल यह काया है ।।
मैं ना इसका, ये ना मेरी, इससे कोई न नाता है ।
आत्मा तो अक्षय-अविनाशी, तन ही आता जाता है।। ४६।।

❋

बहुत क्या कहें, आग राग की, बुझने का ना लेती नाम ।
उधर विरागी पारस मन ने, लिया और दृढ़ता से काम ।।
माता-पिता-भ्रात-भगिनी सब, मोह रज्जु का डाला पाश ।
लेकिन पारसचन्द हृदय पर, असर हुआ ना कोई खास।।४७।।

❋

जैसे पक्षी पंख फैलाये, दूर गगन में उड़ जाता ।
अथवा कोई कारागृह से, कैदी गुपचुप भग जाता ।।
वैसे पारस चल देते हैं, विद्यासागर चरण शरण ।
माता-पिता पकड़ गृह लाते, बार-बार कह मृदुलवचन।। ४८।।

❋

पारसचन्द लौट घर आते, केवल तन से, मन उन्मन ।
मन रहता आचार्यश्री के, चरण कमल में भौरा बन ।।
आँख मिचौनी की यह क्रीड़ा, चलती रही बहुत से दिन ।
लेकिन पारस ने निर्णय में, आया कोई न परिवर्तन।। ४९।।

❋

मात-पिता ने समझ लिया अब, रुकने का है काम नहीं ।
सच है महापुरुष बढ़ जाते, फिर करते विश्राम नहीं ।।
फिर भी जा फरयाद लगाये, आचार्य श्री के चरणों आन ।
मोक्षमार्ग में बनो न बाधक, करने दो अपना कल्याण।। ५०।।

❋

अनेक भवों के संस्कार है, वहीं प्रेरणा देते हैं ।
जिनवर दीक्षा कोई विरले, महावीर ही लेते हैं ।।
इस नरभव का इससे बढ़कर, अन्य नहीं कोई उपयोग ।
देव तरसते हैं नर तन को, किन्तु नहीं मिलता है योग।। ५१।।

❋

आचार्य श्री के इन वचनों का, मात-पिता पर पड़ा प्रभाव ।
हर्षे पारस, चरण स्पर्शे, प्रकट किया अति श्रद्धा भाव ।।
क्षमायाचना कर व्रत धारण, अनुमति माँगी द्वय कर जोर ।
मोह तमिस्रा बीत गई अब, हुआ युगल मन स्वर्णिम भोर।।५२।।

❋

दोनों के मन परम शांति थी, आशीष मिला आचार्य श्री ।
चढ़ा विरागी रंग राग पर, जो उतरेगा नहीं कभी ।।
शिर पर हाथ रखे दोनों ने, मुखाशीष निकला सुतराम ।
मंगलमय हो पंथ तुम्हारा, हो भविष्य उज्ज्वल अभिराम।।५३।।

❋

पूज्य पिताश्री शिखरचन्द जी, हिन्दी-इंग्लिश कवि उत्कृष्ट ।
आपश्री ने दिया पुत्र को, काव्यात्मक उपदेश विशिष्ट ।।
जिस पथ पर है कदम बढ़ाया, उससे हटना लेश नहीं ।
बस, आगे ही बढ़ते जाना, मन लाना संक्लेश नहीं।। ५४।।

❋

चन्दन के पलने में झूले, मखमल पर है शयन किया ।
कंकरीले-पथरीले पथ पर, कभी न तुमने गमन किया ।।
अब तुमने जो पथ अपनाया, काँटों से है भरा हुआ ।
त्यागे सुख को याद न करना, मन मत रखना भरा हुआ।।५५।।

❁

बचपन में लोरी को गाकर, माता तुम्हें सुलाती थी ।
शुद्ध-बुद्ध हो, नित्य निरंजन, घुटी विराग पिलाती थी ।।
तप त्याग साधना पथ में, अब उसको कर लेना याद ।
आत्म जागरण तूर्य बजाकर, दूर भगाना दुख अवसाद।।५६।।

❁

परिषह औ उपसर्ग बहुत से, बन पहाड़ मग आयेंगे ।
क्षुधा-पिपासा-सर्दी-गर्मी-तूफां तुम्हें सतायेंगे ।।
लेकिन समता का प्याला पी, मन विरागता को लाना ।
स्वीकृत पथ से कभी न डिगना, आगे ही बढ़ते जाना।।५७।।

❁

जाते हो तो जाओ बेटा, हम न बनेंगे पथ व्यवधान ।
लक्ष्य तिरोहित हो न पाये, इतना बस रखना तुम ध्यान ।।
साधु का घर दूर बहुत है, जैसे होता पेड़ खजूर ।
चढ़े तो मीठे फल पाओगे, गिरे तो सब कुछ चकनाचूर।।५८।।

तृतीय - सोपान
(पारसचन्द की ब्रह्मचर्य दीक्षा - १९८४-८५)

१. पनागर में आचार्य श्री का पदार्पण

२. पारसचन्द का आचार्य श्री से ब्रह्मचर्य व्रत हेतु निवेदन : आचार्य श्री का शुभाशीष

३. आचार्य श्री का ब्रह्मचर्य पर प्रवचन

४. ब्र. पारसचन्द आचार्य श्री संघ में शामिल हुए ।

५. शाहपुरा एवं गंजबासौदा में पञ्चकल्याणक।

६. आचार्य संघ का ईशुरवारा में शुभागमन।

७. ब्र. पारसचन्द द्वारा ईशुरवारा में प्रथम केशलुंच ।

८. संघ का पपौराजी आगमन ।

९. आहार जी में ब्र. पारसचन्द ने सप्तम प्रतिमा धारण की १९८५

१०. आचार्य श्री का उद्बोधन

११. आहार जी चातुर्मास में आचार्यश्री से स्वाध्याय किया ।

१२. ब्र. पारसचन्द जी द्वारा मोक्ष शास्त्र का वाचन ।

१३. आचार्य श्री के प्रवचन

तृतीय - सोपान
आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण,
पनागर १९.१२.१९८४

आचार्य श्री विद्यासागर जी, चतुर्थकाल चर्या युगसंत ।
जहाँ विराजित हो जाते हैं, आ जाता है वहीं बसंत ।।
पर्व दशहरा-होलि-दिवाली, सभी सुशोभित उनके साथ ।
वर्तमान के वर्द्धमान को, सविनय सभी नमाते माथ।। १।।

❋

नहीं अतिथि की तिथि है कोई, गमना-गमन न कहते आर्य ।
नगर 'पनागर' में पधराये, विद्यासागर जी आचार्य ।।
गौरवशाली नगर जबलपुर के अंचल यह क्षेत्र बसा ।
तीर्थक्षेत्र की अतिशयता लख, झुक जाता मस्तक सहसा।। २।।

❋

बृहद् जिनालय, बहुत वेदिका, शोभित हैं जिनबिम्ब अनेक ।
प्रतिमा मुख परिवर्तन करती, ऐसी है, प्रतिमा यहँ एक ।।
किसी दिशा कर दें मुख प्रतिमा, स्वयं बदलती मुख अपना ।
एक बार की बात नहीं यह, कई बार की श्रुत घटना।। ३।।

❋

शरद पूर्णिमा को सालाना, मेला भरता है भारी ।
दूर-दूर से बहु संख्या में, आते हैं नर औ नारी ।।
खड्गासन श्री शांतिनाथ का, होता है मंगल अभिषेक ।
प्रबन्धकारिणी समिति, पनागर, करती आयोजन सविवेक।। ४।।

❋

आचार्य श्री विद्यासागर की, पावन सान्निधि विदित सभी ।
क्षेत्र वन्दना, मुनि दर्शन की, अभिलाषा मन में उमड़ी ।।
ग्राम पथरिया रहने वाले, पारसचन्द यहाँ आये ।
ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने, संग श्रीफल भी लाये।। ५।।

❋

क्षेत्र निकट पाण्डाल बृहद में, जुड़ी हुई थी धर्मसभा ।
उठा युवक, गुरु चरणों पहुँचा, चमक रही मुख पर आभा ।।
सबसे पहले किया नमोस्तु, सादर शीस झुकाया है ।
श्री गुरुवर मुख चंचरीक बन, श्रीफल चरण चढ़ाया है।। ६।।

❋

भटक रहा हूँ मैं अनादि से, चतुर्गति दुख भोग रहा ।
मिले आप जैसे पथदर्शक, यह भी अनुपम योग रहा ।।
चाह रहा हूँ ब्रह्मचर्यव्रत, आजीवन पालन करना ।
कृपया दें आशीष परम गुरु, बने सरल भवदधि तरना।। ७।।

❋

'नाम' तुम्हारा पारसचन्द है, 'पिता' श्री शिखरचन्द जैन ।
'ग्राम', पथरिया में रहते हैं, आये ब्रह्मचर्यव्रत लैन ।।
'शिक्षा' बी.ए. प्रथम वर्ष तक, 'जैन धर्म' प्रारम्भिक ज्ञान ।
आगे धर्म आचरण करके, करना है अपना कल्याण।। ८।।

❋

श्रीगुरुवर हैं महा पारखी, एक दृष्टि सब जान लिया ।
होनहार है, भव्य, जिज्ञासु, भावी मुनि पहचान लिया ।।
जैसा नाम मिला है इसको, वैसे शुचि आचार-विचार ।
दोनों हाथ उठा गुरुवर ने, शुभ आशीष किया उच्चार।। ९।।

❋

ज्यों ही शब्द सुने जनता ने, कर-तल-ध्वनि गूँजा पाँडाल ।
ब्रह्मचारी श्री पारसचन्द जी, श्री गुरुचरण हुए नत भाल ।।
सन् तो था उन्नीस-चौरासी, उन्नीस दिसम्बर सुखकारी ।
आचार्य श्री ने सम्बोधे फिर, धर्मसभा-सह ब्रह्मचारी।। १०।।

❋

आचार्य श्री विद्यासागर जी, ब्रह्मचर्य का अर्थ किया ।
"ब्रह्मचर्य चेतन का भोग है" शीर्षक से स्पष्ट किया ।।
"ब्रह्म" शब्द का अर्थ आत्मा, आत्म का आतम से योग ।
ब्रह्मणिचर्या संज्ञा पाती, ब्रह्मचर्य चेतन का भोग।। ११।।

❋

केवल स्पर्शन वश करना, ब्रह्मचर्य है नाम नहीं ।
पंचइंद्रियों, मन के जीते, बिना बनेगा काम नहीं ।।
रागिक भोग रोग है प्राणी, आतम भोग परम औषध ।
बाहर का पथ छोड़ बाबरे, अन्तर पंथ धरों प्रोषध।। १२।।

❋

अठ प्रकार स्पर्श को त्यागो, रसना इंद्रिय कसो लगाम ।
मीठे-चिकने-तजो चटपटे, सात्त्विकता से लेना काम ।।
खुशबू छोड़ो, बन्द सिनेमा, टी.वी., के सिर रोग बड़े ।
मन बंदर को ध्यान से बाँधो, भव-तन-भोग हो दूर खड़े।। १३।।

❋

अप्रमत्तता रहे देह मैं, करो एकाशन या उपवास ।
स्वाध्याय, सत्संगति द्वारा, हो मन में शुचिता का वास ।।
चटकीले-भड़कीले कपड़े, मन चंचलता लाते हैं ।
तेल-फुलेल, श्रृंगार देह के मन को मलिन बनाते हैं।। १४।।

❋

ब्रह्मचर्य का पालन करना, चलना मानों असि की धार ।
कहना तो आसान बहुत है, लेकिन धारण दुष्कर कार ।।
जितनी भी हैं कला जगत में, ब्रह्मचर्य ही श्रेष्ठ कला ।
सब धर्मों में सबसे उत्तम, ब्रह्मचर्य ही धर्म बड़ा।। १५।।

❋

ब्रह्मचर्य में आवश्यक हैं, करें पलँग, गद्दों का त्याग ।
प्रभु पूजन-सामायिक द्वारा, निर्मल चित्त करें बड़भाग ।।
पंचअणुव्रत-गुण-शिक्षा-सह, धारें योग्य श्रावकाचार ।
देव-शास्त्र-गुरु सम्यक् श्रद्धा, सब समझाया भली प्रकार।। १६।।

❋

कहें धर्म को यदि हम मंदिर, ब्रह्मचर्य है कलश समान ।
ब्रह्मचर्य मंडित मुख मंडल, बनता सूरज का उपमान ।।
यह करना आसान नहीं है, यह है महावीर का पथ ।
सोच-विचार लिया पारस ने, होगा कार्य यहीं से अथ।। १७

❋

कर नमोऽस्तु आचार्यश्री को, किया कृतज्ञता का ज्ञापन ।
ब्रह्मचर्य ले, नमक त्याग भी, किया धर्म का बीज वपन ।।
ब्रह्मचारी के मुखमंडल पर, मनस्तोष का झलक रहा ।
लेकिन आगे भी बढ़ने को, मन भीतर से ललक रहा।। १८

❋

मन में था उत्साह अपरिमित, बड़े भाग्य से मिले गुरु ।
अक्षय-अनंत-शाश्वत्-सुख पाने, संयम यात्रा हुई शुरू ।।
शीतकाल पनागर बीता, तदनन्तर गुरु गमन किया ।
ब्रह्मचारी श्रीपारसचन्द ने, आचार्य श्री अनुगमन किया।। १९।।

❋

पंचकल्याणकहेतु गुरु का, शहपुरा को गमन हुआ ।
पाटन-रहली-त्योंदा हो फिर, बासौदा आगमन हुआ ।।
मंगलकारी सब सुयोग थे, हर मन में उत्साह उमंग ।
उमड़ा आँखों में गंगाजल, नगर प्रविष्ट हुआ जब संघ।। २०।।

❋

सद्गुरुओं की चरणोपासना, भाग्यवान ही पाते हैं ।
भाग्यहीन तो उपलनाव चढ़, भव-भव व्यर्थ गँवाते हैं ।।
महाव्रती, निर्ग्रन्थ महागुरु, का शुभ दर्शन संगति योग ।
पुण्योदय का संसूचक है, पाप-निशा-नाशक संयोग।। २१।।

❋

बासौदा धर्मेतिहास में, तीन रथों का आयोजन ।
अश्रुतपूर्व प्रथम अवसर यह, अतिशय, अद्भुत संयोजन ।।
पंचकल्याणक, गजरथ उत्सव, कलशारोहण आदि सभी ।
कार्य हुए निर्विघ्नपूर्ण सब, गमन किया आचार्य श्री।। २२।।

❋

करके विहार बासौदा से, बीना में आगमन हुआ ।
तदनन्तर खिमलासा होकर, 'ईशुरवारा' गमन हुआ ।।
ईशुरवारा ग्राम न केवल, वह है तीरथ क्षेत्र महान् ।
ऊगा शांतिशरण में तारा, जयकुमार था जिनका नाम।। २३।।

❋

आचार्य श्री विद्यासागर से, मुनि दीक्षा ली आपश्री ।
नाम सुधासागर जी पाया, अखिल देश कीरत बिखरी ।।
पावन हुआ विद्यासिन्धु से, तीर्थक्षेत्र ईशुरवारा ।
नाम भला है ईश्वर जैसा, जैसे शुभ है ध्रुवतारा।। २४।।

❋

विद्या-ज्ञान युगल गुरुओं का, किया आपने रोशन नाम ।
अनुपमेय व्यक्तित्व के धनी, द्वय मुनिवर को कोटि प्रणाम ।।
तीर्थक्षेत्र श्री ईशुरवारा, अति ही क्षेत्र महत्तम है ।
धर्म-कला-संस्कृति-सुन्दरता, प्रकृति-पुण्य का संगम है।। २५।।

❋

श्री गिरिवर के पादमूल में, बसा ग्राम ईशुरवारा ।
उसमें है इक भव्य जिनालय, लगता है मन को प्यारा ।।
शोभित तीन वेदिकाएँ हैं, देती रत्नत्रय उपहार ।
उनमें राजित समवशरण को, नमन हमारा बारम्बार।। २६।।

❋

विन्ध्याचल की शिखर-शिखरियाँ, यहाँ है फैली इधर-उधर ।।
क्षेत्र-जिनालय बना हुआ है, उसकी एक प्रशाखा पर ।।
इस मंदिर के भीतर राजित, शांति-कुन्थु-अरनाथ जिनेश ।
शांति-सौम्यता खेल रही है, अविरल मुखमंडल परमेश।। २७।।

❋

शांतिनाथ के श्री चरणों में, नमन किया आचार्य श्री ।
"भगवन्! भव सागर से तारो, मोह नींद न आये कभी ।।"
ब्रह्मचारी श्रीपारसचन्द भी, चरणों शीस नमाया है ।
"तुम जैसा बनने को भगवन्, संयम पथ अपनाया है"।। २८।।

❋

अतिशय क्षेत्र ईशुरवारा ने, अपना अतिशय दिखलाया ।
ब्रह्मचारी पारस मन में, भाव विशुद्धि उमड़ आया ।।
अन्तर्मन ने पुनः-पुनः बस, एक ही ध्वनि सुनाई है ।
केशलुंच करना ही उत्तम, मन में यही समाई है।। २९।।

❋

कर नमोऽस्तु आचार्य श्री को, किया निवेदन बारम्बार ।
केशलुंच मन चाह रहा है, अनुमति दें गुरु करुणाधार ।।
सस्मित मुख आचार्यश्री ने, सकल संघ को समझाया ।
केशलुंच का क्या महत्व है, क्या आगम में बतलाया।। ३०।।

❋

"धर्म अहिंसा रक्षा करना, देह हटाना मूर्च्छा-भाव ।
इन्द्रिय संयम, भाव विशुद्धि, कषाय मंदता पड़े प्रभाव ।।
अतः केशलुंच करने का, आगम में आता उल्लेख ।
नया सूर्य आया धरती पर, लगता है साधक को देख"।। ३१।।

❋

केशलुंच साधु आवश्यक, निश्चित समय, नहीं स्थान ।
किन्तु क्षेत्र पर भाव विशुद्धि, कर्म निर्जरा दीर्घ प्रमाण ।।
देव-शास्त्र-गुरु साक्षी पूर्वक, जो भी कार्य किया जाता ।
अशुभ कर्म की अधिक निर्जरा, अतिशय पुण्य निकट आता।। ३२।।

❋

हाथ-पैर-मन-नयन करो वश, तदनन्तर लुंचन का क्रम ।
सार्थक-सफल साधना होती, उसके बिना साधना भ्रम ।।
करुणाकर आचार्य श्री ने दक्षिण कर आशीष दिया ।
विधिवत् पढ़ी भक्तियाँ पारस, केशलुंच फिर शुरू किया।। ३३।।

❋

यद्यपि पहला केशलुंच यह, पर होता ऐसा आभास ।
कई जन्मों से किया आपने, केशलुंच करना अभ्यास ।।
यथा घास उत्पाटन करने, होता कृषक शुद्धि तत्पर ।
तथा मुहूर्त्त में श्री पारस ने, किए उत्पाटित कच सत्त्वर।। ३४।।

❋

एक बाल तोड़ होने पर, आ जाती है नानी याद ।
लेकिन निर्दय ब्रह्मचारी ने, सुनी न तन की कुछ फरयाद ।।
यत्र-तत्र मुखमंडल ऊपर, लगे भुलकने रक्तिम कण ।
लेकिन उत्साहित मन पारस, रोका नहीं हस्त इक क्षण।। ३५।।

❋

पहले जो मुख शोभ रहा था, शरद श्वेत चन्द्र उपमान ।
केशलुंच उपरान्त हुआ वह, लालचन्द्र सा आभावान ।।
जैसे युद्ध क्षेत्र में घायल, वीर अधिक पाता सम्मान ।
तथा रक्त -रंजित-मुख पारस, हुआ अधिकत्तर शोभावान।। ३६।।

❋

गमन हुआ ईशुरवारा से, खुरई नगर आगमन हुआ ।
षट्खंडागम वाचन द्वारा, ग्रीष्मकाल सम्पन्न हुआ ।।
खुरई नगर से कर विहार फिर, खिमलासा पहुँचे रजवांस ।
ग्राम खजुरिया-टीकमगढ़ हो, अतिशय क्षेत्र पपौरा खास ।।३७।।

❋

पपोरा में जिनालयों के, निर्मित सुन्दर सौ-सौ हार ।
ब्रह्मचारी श्री पारसचन्द भी, संघ साथ कर रहे विहार ।।
लुंचित केश ब्रह्मचारी जी, आचार्य श्री संग चलें बगल ।
लगते ऐसे, दो-दो सूरज, जैसे धारें एक शकल ।।३८।।

❋

बुन्देलखंड तीर्थों का उपवन, धर्म सुगंधित चले बयार ।
गमन किया आचार्यश्री ने, क्रमशः पहुँच गये आहार ।।
श्री अहार जी सिद्धक्षेत्र है, मोक्ष पधारे मदन-अनंग ।
अतिशय क्षेत्र प्रसिद्धि प्राप्त यह, विश्रुत इसके कई प्रसंग ।।३९।।

संयम यात्रा : तृतीय सोपान, भाग २, १९८५
श्री दि. जैन सिद्धक्षेत्र अहार जी, सप्तम प्रतिमा ग्रहण

मध्यप्रदेश जिला टीकमगढ़, सुस्थित क्षेत्र श्री आहार ।
प्रकृति गोद में बसा हुआ है, रहा सरोवर चरण पखार ।।
देवपत-खेवपत पाड़ाशाह का, टॉगा हुआ छत्र चाँदी ।
शांति-कुन्थु-अरनाथ श्री की, यहाँ विराजित प्रतिमा जी।।४०।।

❋

हुई सल्लेखना सिद्धक्षेत्र पर, मुनिवर श्री वैराग्यनिधि ।
ब्रह्मचारी श्री पारसचन्द ने, वैयावृत्ति की यथाविधि ।।
जागरूक रहकर करवाते, मल-मूत्रादिक का परिहार ।
शयनासन-आहार क्रियाएँ, सभी कराते थे सुविचार।।४१।।

❋

यथा समय स्वाध्याय कराते, वाचन करके ग्रंथ अनेक ।
पढ़ स्तुतियाँ श्रवण कराते, साथ नहीं तनते क्षण एक ।।
प्रथमनुयोगी कथा सुनाकर, साहस-धैर्य बंधाते थे ।
पुराण पुरुष के उद्धरणों से, पुनः-पुनः समझाते थे।।४२।।

❋

भव-तन-भोगों की असारता, सम्बोधन दिखलाते थे ।
मृत्यु हमारा परम मित्र है, ग्रंथ प्रमाण बताते थे ।।
सल्लेखन के इस अवसर पर, पारस भाव विशुद्धि बढ़ी ।
आचार्य श्री से किया निवेदन, सीढ़ी सप्तम आप चढ़ी।। ४३।।

❋

बहुत सरल है ध्वज फहराना, लेकिन रक्षा बहुत कठिन ।
तथा सरल व्रत धारण करना, किन्तु कठिन उसका पालन ।।
अतः चाहिए व्रतधारी को, लेवे अपनी शक्ति सम्हाल ।
तदनन्तर व्रत को स्वीकारे, जीवन सुखी बने व्रत पाल।। ४४।।

❋

ब्रह्मचारी को आवश्यक है, कठिन भूमि पर करे शयन ।
पहले की छै प्रतिमाओं का, करे सुदृढ़ता से पालन ।।
सादा-सात्त्विक भोजन करना, नहीं बढ़ाना अपने बाल ।
स्वाध्याय, सत्संग बिताये, सप्तम प्रतिमाधारी काल।। ४५।।

❁

धोबी-धुले वस्त्र न पहने, ऊनी-कपड़े त्याग करें ।
चरणानुयोग निर्देशित चर्या, दृढ़ता से अनुसरण करें ।।
ब्रह्मचारी जी करी प्रतिज्ञा, सम्यक् रूप त्रियोग सम्हाल ।
आचार्य श्री विद्यासागर की, पद-रज किया अलंकृत भाल।।४६।।

❁

हाथ जोड़ बोले गुरुवर से, पामर का उपकार करें ।
संयम पथ पर कदम बढ़ाने गुरुवर! सप्तम प्रतिमा दें ।।
करुणाधन आचार्यश्री ने, पारस घिसा, परीक्षा ली ।
ब्रह्मचारी जी श्री पारस को, श्रावक सप्तम प्रतिमा दी।। ४७।।

❁

पंचेन्द्रियों में दो इन्द्रियाँ, वश में करना बहुत कठिन ।
प्रथम रही स्पर्शन इन्द्रिय, दूजा है रसना का क्रम ।।
ब्रह्मचर्यव्रत पालन करने, इनको वश करना शुभकार ।
अगर नहीं तो पाँचों मिलकर, व्रती को देती गर्त उतार।। ४८।।

❁

जो रसना के वश में रहते, उन्हें न आता व्रत में रस ।
शक्कर का तब त्याग कर दिया, जीवन भर को श्रीपारस ।।
मन्दस्मिति आचार्यश्री ने, दक्षिण कर आशीष दिया ।
बढ़ो सदा साधना पथ पर, गुरु प्रेरक संकेत किया।। ४९।।

❁

यथा समय आचार्यश्री का, हुआ स्थापित चातुर्मास ।
ब्रह्मचारी जी पारसचन्द, रहते गुरुवर चरणों पास ।।
कातंत्र रूप माला के संग, कार्तिकेय अनुप्रेक्षा ग्रंथ ।
साधु संघ स्वाध्याय कराया, विद्यासागर जी निर्ग्रंथ।। ५०।।

❋

पारसचन्द ब्रह्मचारी जी, सब कुछ सुनते ध्यान लगा ।
स्वाध्याय पीयूष रसायन, हर क्षण रहता चित्त पगा ।।
आचार्य श्री से शुभाशीष पा, पद्मपुराण को स्वयं पढ़ा ।
पुण्यचरित्रों के जीवन से, अपना जीवन आप गढ़ा।। ५१।।

❋

चातुर्मास हुआ स्थापित, पर्व पर्यूषण आया है ।
तीर्थक्षेत्र के विस्तृत प्रांगण, मंडप बृहद् बनाया है ।।
मंडल भीतर मंच बना है, लम्बा-चौड़ा-उच्च-उदार ।
सकल संघ था रहा विराजित, मध्य सुशोभित गुरु शुभकार।।५२।।

❋

संघ मध्य में राजित गुरुवर, अतिशय शोभा पाते थे ।
तारा मंडल बीच चन्द्र-सम, रजत छटा बिखराते थे ।।
श्रोता चातक जैसे प्यासे, प्रवचन आश लगाये थे ।
मोक्ष शास्त्र-तत्त्वार्थ सूत्र का, अमृत पीने आये थे।। ५३।।

❋

धर्म सभा में सबसे पहले, होगा मूल सूत्र वाचन ।
तदनन्तर आचार्य श्री का होगा मंगलमय प्रवचन ।।
साधु संस्था के होने पर, मिलता उन्हें उचित सम्मान ।
वाचन भी उनसे ही होगा, जिनको संस्कृत भाषा ज्ञान।। ५४।।

❋

ऐसे गरिमामय अवसर पर, आचार्य श्री आदेश दिया ।
ब्रह्मचारी जी मोक्ष शास्त्र का, अवरिल वाचन शुरू किया ।।
किया मंगलाचरण प्रथम ही, सच्चे देव गुणों की खान ।
चरण कमल आचार्य श्री के, सादर-सविनय किया प्रणाम।। ५५।।

❋

ब्रह्मचारी श्री पारसचन्द जी, मोक्ष शास्त्र किया वाचन ।
शब्द-शब्द का किया आपने, शुद्ध-सुसंस्कृत उच्चारण ।।
श्रोतागण सब दत्त चित्त हो, किया पूर्णतः अमृतपान ।
की कृतज्ञता ज्ञापित गुरुप्रति, आज मिला जो पुण्य महान्।। ५६।।

❋

मोक्ष शास्त्र तत्त्वार्थ सूत्र का, जब सम्पन्न हुआ वाचन ।
ब्रह्मचारी श्री पारसचन्द ने, आचार्य श्री को किया नमन ।।
दक्षिण कर आचार्यश्री से, पारस पाया शुभ आशीष ।
सुन्दर वाचन कर लेते हो, शब्द प्रशंसा कहे मुनीश।। ५७।।

❋

आचार्य श्री के अमृत वचनों, हुआ आह्लादित पारस मन ।
प्रोत्साहित हो किया आपने, प्रतिदिन मोक्षशास्त्र वाचन ।।
तदनन्तर आचार्यश्री के, प्रवचन होते अति गंभीर ।
लगता जैसे-चौथे काल में, खिरती दिव्यध्वनि महावीर।। ५८।।

❋

आचार्य उमास्वामी प्रणीत यह, मोक्षशास्त्र है ग्रंथ महान ।
प्रथम शताब्दी की यह रचना, सकल समाज प्राप्त सम्मान ।।
संस्कृत भाषा प्रथम कृति यह, सूत्रीय शैली प्रथम निबद्ध ।
अद्वितीय अनुपम रचना है, सप्ततत्त्व वर्णन सम्बद्ध।। ५९।।

❋

सागर-सा गंभीर ग्रंथ यह, रहा गगन जैसा विस्तार ।
उत्तरवर्ती आचार्यों ने, किया इसे तद्वत् स्वीकार ।।
कोई पंडित याकि समीक्षक, एकाक्षर भी परिवर्तन ।
किया न इसमें, किन्तु किया है, कथित वर्ण्य का अनुमोदन।।६०।।

❋

सभी जीव चाहते सुख हैं, सुख का रहा मोक्ष में वास ।
मोक्षशास्त्र नाम है इसका, वर्ण्य विषय मोक्ष ही खास ।।
जीवादिक जो सात तत्त्व हैं, उनका हैं इसमें वर्णन ।
कथन हुआ सूत्र शैली में, तत्त्वार्थ सूत्र है नामांकन।। ६१।।

❋

दस अध्याय, तीन सौ त्रेपन, सूत्र ग्रथित यह मुक्ताहार ।
पढ़ता-सुनता या जो सुनाता, उसका होता है उद्धार ।।
यह अमृत है आदिनाथ जिन, किया है इसका उद्घाटन ।
परम्परा से प्राप्त हुआ यह, उमास्वामि सिद्धान्त कथन।। ६२।।

❋

प्रथम चार अध्यायों वर्णन, जीव तत्त्व का किया गया ।
अजीव पांच, छै-सात-आस्रव, बन्ध आठवें लिया गया ।।
संवर-निर्जरा नवम ध्याये, दसमें मोक्ष कथन आया ।
जिसने इसको समझ लिया है, उसने मोक्ष तत्त्व पाया।। ६३।।

चतुर्थ - सोपान

(ब्र. श्री पारसचन्द की क्षुल्लक एवं ऐलक दीक्षा)

१. तीर्थक्षेत्र आहार जी में क्षुल्लक दीक्षा ८.११.८५
क्षुल्लक जी नाम श्री आर्जवसागर रखा गया ।

२. क्षुल्लक जी की शीतकालीन साधना

३. आचार्य संघ का पपौरा में चातुर्मास - १९८६

४. क्षुल्लक जी के प्रवचन

५. शीतकाल में समाधि विषय पर नयनागिरि में प्रवचन

६. ललितपुर में सर्वार्थ सिद्धि की वाचना,
क्षुल्लक जी द्वारा चातकवत् ज्ञान ग्रहण

७. आचार्य श्री का थूवौन में चार्तुमास - १९८७
क्षुल्लक जी की ऐलक दीक्षा

८. "समयसार" की वाचना

९. आचार्यश्री की अस्वस्थता

१०. ऐलक श्री आर्जवसागर द्वारा सकल संघ की वैयावृत्ति

चतुर्थ - सोपान

क्षुल्लक दीक्षा - ८.११.८५ एवं ऐलक दीक्षा

समय व्यतीते देर न लगती, गया दिवस तो आयी रात ।
आँख मिची तो संध्या आयी, आँख खुली हो गया प्रभात ।।
पर्व पर्यूषण बीत गया फिर, माह नवम्बर आया है ।
ब्रह्मचारी जी पारसचन्द को, प्रगति सन्देशा लाया है।। १।।

❋

प्रातः काल सुनहरी किरणें बिखर रही थीं चारों ओर ।
दीक्षा उत्सव आज हो रहा, समाचार फैले सब ओर ।।
उमड़ा जन सैलाब देखने, यह विरागमय आयोजन ।
ब्रह्मचारी श्री पारसचन्द ने, आचार्यश्री को किया नमन।। २।।

❋

आचार्य प्रवर के श्रीचरणों में, ब्रह्मचारी श्रीपारसचन्द ।
पहुँचे हस्तकमल श्रीफल सह, हृदय प्रफुल्लित अमित अमंद ।।
श्रीफल चरण समर्पण पूर्वक, किया नमोऽस्तु बारम्बार ।
बोले गुरुवर काट रहा है, मुझ को यह दुखमय संसार।। ३।।

❋

अतः कृपाकर मुझे बचालें, ले लें अपनी चरण-शरण ।
जिन दीक्षा लेकर मैं काटूँ, कर्म बेड़ियाँ जनम-मरण ।।
ऊब चुका हूँ इस दुनिया से, मुक्ति चाहता हूँ सत्वर ।
पंच परम पद राजित गुरुवर, दे जिनदीक्षा कृपा कर।। ४।।

❋

शुभ आशीष प्राप्त दीक्षार्थी, निज कचलुंचन शुरू किया ।
भव-तन-भोग विरागी साधक, सब ममता को त्याग दिया ।।
यथा घास उत्पाटन करने, होता कृषक शुद्धितत्पर ।
तथा मुमुक्षु श्री पारस ने, किए उत्पाटित कच सत्वर।। ५।।

❋

आठ नवम्बर, सन् पिच्यासी, मंडल भव्य, मंच मनहार ।
एक साथ नौ-नौ दीक्षार्थी हुए विराजित क्रम अनुसार ।।
सब के शिर पर बना सॉथिया, किया आचार्य श्री संस्कार ।
स्वस्ति पाठ, पुष्पार्जलि क्षेपण, सकल क्रिया सह मंत्रोच्चार।। ६।।

❋

पिच्छी-कमंडलु-शास्त्र सभी को, तदा समर्पित किए गए ।
नाम पुरातन छूटे सबके, नव नामांकन किए गये ।।
ब्रह्मचारी श्री पारसचन्द ने, क्षुल्लक का पद पाया है ।
क्षुल्लक श्री आर्जवसागर की, जय से गगन गुँजाया है।। ७।।

❋

आठ नवम्बर पिच्यासी को, प्राप्त हुई उपलब्धि महान् ।
ब्रह्मचारी श्री पारसचन्द को, क्षुल्लक दीक्षा हुई प्रदान ।।
वर्षों करी प्रतीक्षा पारस, तब पायी यह धन्य घड़ी ।
क्षुल्लक की दीक्षा को पाकर आयी मन में तृप्ति बड़ी।। ८।।

❋

आचार्य श्री विद्यासागर ने, सन्निधि अतिशय क्षेत्र अहार ।
नव क्षुल्लक दीक्षाएँ देकर, किया संयमी कुल विस्तार ।।
क्षुल्लक दीक्षा के पाते ही, की साधना आप कठिन ।
शीतकाल के आने पर भी, बिना चटाई किया शयन।। ९।।

❋

गुरुवर श्री विद्यासागर से, प्राप्त रहा आशिष इस ओर ।
साधु-संघ सब हुआ अचंभित, देख साधना कठिन-कठोर ।।
कहाँ रजाई-गद्दे का तन, कहाँ काष्ठ का अब पाटा ।
कहाँ बर्फ की सर्द हवायें, दीर्घ निशा का सन्नाटा।। १०।।

❋

लेकिन क्षुल्लक आर्जवसागर, की न शीत की कुछ परवाह ।
जो है असंभव, होता संभव, अगर रहे मन में दृढ़ चाह ।।
हाड़ कँपाने वाली सर्दी, दाँत किटाकिट करते थे।
लेकिन क्षुल्लक आर्जवसागर, कठिन तपस्या करते थे।। ११।।

❋

नव दीक्षित सुकुमार देह पर, सहें शीत पड़ रहा तुषार ।
धन्य-धन्य श्री आर्जवसागर, श्रावक करते जय जयकार ।।
विरले ही होते हैं ऐसे, नव दीक्षित क्षुल्लक महाराज ।
बिना चटाई शीत बिताते, सहते कठिन परीषह आज।। १२।।

❋

क्षुल्लक श्री आर्जवसागर जी, दृढ़ प्रतिज्ञा यह लिया नियम ।
दीक्षा दिन से जीवन भर को, खोवा, पूड़ी तजते हम ।।
बादाम, काजू, किशमिश, पिस्ता, छोड़े, गुरु को नमोस्तु कर ।
युगल करों से मंगल आशीष, दिया गुरु विद्यासागर।। १३।।

श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र पपौरा चातुर्मास-१९८६

संत चरण चलते ही रहते, जब तक मंजिल ना आये ।
आचार्य श्री नैनागिरि होकर, "टड़ाकेसली" पधराये ।।
कर विहार 'शाहपुर' पहुँचे, फिर 'सानौदा' ग्राम मंझार ।
क्षुल्लक श्री आर्जवसागर जी, संघ-साथ कर रहे विहार।।१४।।

❋

जैनाजैन सकल जनता ने, किया संघ का अभिवंदन ।
चरण पखारे, करी आरती, किया धन्य अपना जीवन ।।
उमड़ा जन सैलाब देखने, यह विरागमय आयोजन ।
क्षुल्लक श्री आर्जवसागर जी ने, आचार्यश्री को किया नमन।।१५।।

❁

मुनिवर देश, कुलभूषण का, चरित बना करके आधार ।
ब्रह्मचर्य महिमा बतलाई, कहे मदन के दोष अपार ।।
किया तप वैराग्य धारकर, किया कर्म अरि का संहार।
कुंथलगिरि से मोक्ष पधारे, हुए पूज्य भवोदधि पार।।१६।।

❁

जिस स्तर के श्रोता होवें, उस स्तर का कथन करें ।
भाषा शैली-शब्द योजना, सब का वैसा चयन करें ।।
क्षुल्लक श्री आर्जवसागर जी, ज्ञाता हैं मानस विज्ञान ।
पौराणिक उल्लेखों द्वारा, दिया सभा में उत्तम ज्ञान।। १७।।

❁

ब्रह्मचर्य की पावनता से, अग्निकुण्ड में खिले कमल ।
अब भी सबके कण्ठ विराजित, सीताजी का चरित विमल ।।
वहीं दूसरी ओर देखलो, रावण का हो गया मरण ।
अतः वासना विष को त्यागे, ब्रह्मचर्य का करो धरण।। १८।।

❁

आचार्यसंघ वनमार्ग चला, क्षेत्र नवागढ़ रहा प्रवास ।
क्षेत्र पपौरा ग्रीष्म वाचना, सह सन् छियासी चातुर्मास ।।
चातुर्मासिक सूर्यवार को, हुआ क्षुल्लक का प्रवचन ।
विषय रहा सर्व उपयोगी, शीर्षक था सम्यग्दर्शन।। १९।।

❁

'सर्वार्थसिद्धि' की हुई वाचना, अतिशय क्षेत्र पपौरा जी ।
मोक्षशास्त्र पर पूज्यपाद ने, अतिशय सुन्दर टीका की ।।
जैसे टीका के लगने से, है व्यक्तित्व निखर जाता ।
वैसे टीका के पढ़ने से अर्थ समझ में आ जाता।। २०।।

❋

ज्यों चकोर अपलक नेत्रों से, चन्द्र-सुधा का करता पान ।
त्यों विद्या-मुख-चन्द्र से 'आर्जव' पीते धर्म सुधा अम्लान ।।
जैसे चातक स्वाति बिन्दु हित, प्यासा-प्यासा रहता है ।
वैसे मन आर्जवसागर जी, और - और नित कहता है।। २१।।

❋

क्षुल्लक जी एकाग्रचित्त हो, गुरुकृत प्रवचन करें श्रवण ।
सामायिक-स्वाध्याय काल में, घण्टों उसका करें मनन ।।
सुनना है पर्याप्त न केवल, किन्तु जरूरी साथ मनन ।
बिना मनन के हो नहिं पाता, वस्तु तत्त्व का पूर्ण ग्रहण।। २२।।

❋

सच है, मेंहदी जितनी पिसती, उतना ही रंग लाती है ।
पीसन हारे हाथों गहरी, छाप छोड़कर जाती है ।।
क्षुल्लक श्री आर्जवसागर जी, श्री गुरुवर को साक्षी कर ।
करते निशदिन जिनवाणी का, पाठन-पठन-मनन सादर।।२३।।

❋

गये पपौरा से 'नैनागिरि' शीतकाल में ठहरा संघ ।
सोत्साह त्रय गजरथ उत्सव, सन् सत्यासी में सम्पन्न ।।
नैनागिरि में 'आर्जवनिधि' का, विषय 'समाधि' हुआ प्रवचन।
सुकुमाल चरित आधार बनाया, करी तपस्या घोर विपिन।।२४।।

❋

पुराण पुरुष सुकुमाल चरित की, हुई प्रस्तुति भली प्रकार ।
फलतः हर श्रोता, नेत्रों से, वहने लगी अश्रु की धार ।।
मणिमय ज्योति, कमलपुट तंदुल, मखमल पर सोने वाले ।
चले महल तज, पैदल वन, मग, पगतल पड़े विपुल छाले।। २५।।

❋

बहने लगा रक्त चरणों से, चिन्हित हुआ मार्ग कानन ।
पूर्व जन्म की वैरिन भावज, भक्षण किया तपस्वी तन ।।
लेकिन मुनि सुकुमाल न किंचित्, डिगे ध्यान में रहे अचल ।
मैं हूँ शुद्ध-अजर-अविनाशी, ध्याकर पहुँचे मोक्ष महल।। २६।।

❋

अधि-व्याधि-उपाधि बिना ही, जलती समाधि की ज्योति है ।
भय और निद्रा के जीते बिन, सच्ची समाधि न होती है ।।
जिसने रह एकान्त में किया, शयन आदि आसन अभ्यास ।
प्रमाद और निद्रा ये दोनों, आ नहिं सकते उसके पास।। २७।।

❋

नैनागिरि से पहुँच ललितपुर, ग्रीष्मकाल का आया योग ।
षट्खंडागम के वाचन का, सबको मिला सुफल संयोग ।।
चन्देरी की चौबीसी का, कर सकता है वर्णन कौन ।
भाव सहित वन्दना करते, आचार्य संघ पहुँचा थूवौन।। २८।।

श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र थूवौन में ऐलक दीक्षा एवं चातुर्मास-१९८७

संत चरण चलते ही रहते, जैसे बहता गंगा जल ।
सुबह यहाँ है, शाम वहाँ पर, कहीं पहुँच जाते हैं कल ।।
क्षुल्लक श्री आर्जवसागर जी, आचार्य संघ-सह करें गमन ।
तीर्थ क्षेत्र 'थूबौन' में हुआ, आचार्य श्री का शुभागमन।। २९।।

❋

धर्मकला का संगम स्थल, पुण्य-प्रकृति का अक्षयवास ।
तपोभूमि 'थूवौन' में हुआ, आचार्य श्री का चातुर्मास ।।
साधु-सकल रत हुये साधना, ज्ञानयज्ञ भी लाया रंग ।
मुनि-आर्यिका-ऐलक-क्षुल्लक-भैयाजी पढ़ते सँग-सँग।।३०।।

❋

विन्ध्याचल की श्रृंग-श्रृंखला, बनी प्राकृतिक पहरेदार ।
इसके बीचों-बीच सुशोभित, विस्तृत सुन्दर एक पठार ।।
उस पर स्थित तपोभूमि यह पावन-पुण्य मनोहारी ।
उत्तर में गतिमान 'उर्वशी' दक्षिण 'लीलावती' प्यारी।। ३१।।

❋

घेरे में पच्चीस जिनालय, सबका मनहर बाना है ।
शांतिनाथ जिनवर का मंदिर, सबसे अधिक पुराना है ।।
पाणाशाह बन्धुओं ने यह, धर्म ध्वजा फहराई है ।
उनकी सब बुन्देलखण्ड में, कीर्ति-कौमुदी छायी है।।३२।।

❋

हर देवालय, हर जिन प्रतिमा, मन को हरने वाली है ।
मूर्तिकला तो श्रमणबेल की, याद दिलाने वाली है ।।
आदितीर्थंकर ऋषभदेवजी, तीर्थक्षेत्र के नायक हैं ।
तीस फीट तुंग खड्गासन, अतिशय शांतिप्रदायक हैं।।३३।।

❋

क्षुल्लक श्री आर्जवसागर जी, चाह रहे थे बढ़ें कदम ।
चादर भार छोड़कर सत्त्वर, ऐलक दीक्षा पा ले हम ।।
परम पूज्य आचार्य श्री से, किया निवेदन बारम्बार ।
पूर्ण पात्रता देख शिष्य की, गुरुवर किया परम उपकार।।३४।।

❋

दस जुलाई, उन्नीस सतासी, परम पूज्य आचार्य श्री ।
धर्ममार्ग पर किया अग्रसर, आर्जवसागर क्षुल्लक जी ।।
ऐलक श्री आर्जवसागर जी, गुरुवर नाम पुकारा है ।
जन समूह ने गगन गुँजाया, लगा खूब जयकारा है।।३५।।

❋

जग में प्रदीप करने वाला, ग्रन्थराज श्री मूलाचार ।
आचार्य श्री विद्यासागर जी का वाचना पूर्ण प्रकार ।।
कैसी, क्या होती मुनि चर्या, किया गया है ग्रन्थ कथन ।
ऐलक श्री आर्जवसागर ने, ध्यान लगा सब किया श्रवण।।३६।।

❋

'समयसार' ग्रन्थ आध्यात्मिक, कुन्दकुन्द आचार्य श्री ।
आचार्य श्री विद्यासागर जी, सम्यक् सुष्ठु वाचना की ।।
निश्चय व्यवहारी शैली में, आत्मतत्त्व का उद्घाटन ।
किया गया है ग्रन्थराज में, जगत्मूल का उत्पादन।।३७।।

❋

श्री ऐलक आर्जवसागर जी, सुनी वाचना चित्त लगा ।
आत्मा अजर-अमर-अविनाशी, अनंत चतुष्टय नित्य पगा ।।
अगर बन्धुवर! तुम्हें चाह है, भव समुद्र से होना पार ।
ग्रन्थराज यह नाव सदृश है, निश्चय नय उसकी पतवार।। ३८।।

❋

सुख-दुख, हर्ष-विषाद, असाता-साता, सबको आते हैं ।
लेकिन धीरजवान स्वयं में, साम्यभाव ही लाते हैं ।।
आचार्य श्री अस्वस्थ हो गये, तीव्र ताप तन में छाया ।
पर, चर्या-व्यवधान न कुछ भी, कर्म असाता कर पाया ।।३९।।

❋

सकल संघ बीमार हो गया, दुष्ट महाज्वर ने घेरा ।
डेंगू फीवर या मलेरिया, ने डाला अपना डेरा ।।
ऐलक श्री आर्जवसागर जी, वैयावृत्ति समर्पित संत ।
सदा काल मुस्काता उनमें, सेवा का उत्कृष्ट बसंत।। ४०।।

❋

कोई मुनि-ऐलक या क्षुल्लक, उनसे छूट न पाता था ।
यथा समय सेवा का मरहम, समुचित हो लग जाता था ।।
उनका सेवाभाव, समर्पण, वैयावृत्ति विविध प्रकार ।
देख-देख कर साधु-श्रावक, करने लगते जय-जयकार ।। ४१ ।।

❋

ऐलक श्री आर्जवसागर जी, छायाबन आचार्य श्री ।
वैयावृत्ति आदि के द्वारा, बहु सेवा सुश्रूषा की ।।
स्वस्थ्य हुए आचार्यश्री जब, आर्जव निधिजी कहे वचन ।
भगवन्! स्वस्थ आपको लखकर, हुआ प्रफुल्लित मेरा मन ।। ४२ ।।

❋

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन ।
आचार्य श्री विद्यासागर का, थूबौन क्षेत्र से हुआ गमन ।।
जैसे गंगा प्रवहमान रह, करती जाती जग उपकार ।
वैसे नगर ग्राम को उपकृत, करता जाता संघ विहार ।। ४३ ।।

पंचम - सोपान
(श्री सिद्धक्षेत्र सोनागिरि में मुनिदीक्षा ३१.०३.८८)

१. आचार्य संघ का सोनागिरि में शुभागमन

२. सोनागिरि क्षेत्र का परिचय

३. सोनागिरि की शोभा

४. दीक्षा काल में ऐलक श्री आर्जवसागर जी का शुभचिन्तन

५. दीक्षा पूर्व आचार्य श्री द्वारा धर्म सभा को सम्बोधन

६. आचार्य श्री का दीक्षार्थियों का उद्‌बोधन

७. एक साथ आठ मुनिदीक्षाएँ सम्पन्न

८. दीक्षोपरान्त मुनि आर्जवसागर की मनस्थिति

९. आचार्य सेवा का गमन, मुनि आर्जवसागर की मनस्थिति

१०. सोनागिरि से ललितपुर की ओर

११. ग्रीष्म ऋतु का प्रकोप

१२. मुनिश्री आर्जवसागर जी को आहार में अन्तरायों का आधिक्य

१३. समाताधारी मुनि आर्जवसागर

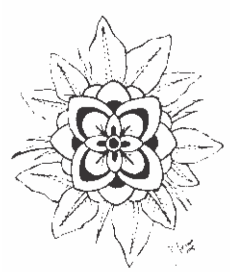

पंचम - सोपान
श्री सिद्धक्षेत्र सोनागिरि में मुनिदीक्षा, ३१.३.८८

बुन्देलखंड तीर्थों का उपवन, रहा चतुदिक में विस्तार ।
चन्देरी-सेरौन-देवगढ़-पवा-करगुवाँजी खंदार ।।
मिले मार्ग में जो भी तीरथ, सादर शीस झुकाएँ हैं ।
आचार्य संघ-सह आर्जव निधि भी, सोनागिरि पधराये हैं।। १।।

❋

मध्यप्रदेश देश का दिल है, 'दतिया' उसका एक जिला ।
इसके ही पावन अंचल में, क्षेत्र श्रमणगिरि कमल खिला ।।
धरती पर सोने का पर्वत, अहो! अहो! आश्चर्य महान् ।
साढ़े पाँच कोटि मुनिवर को, प्राप्त यहाँ से पद निर्वाण।। २।।

❋

सोनागिरि अथवा स्वर्णाचल याकि श्रमणगिरि एकहि नाम ।
चन्द्रप्रभ आभा मंडल से, उर्जस्थित यह क्षेत्र महान् ।।
जो जन यहाँ साधना करते, दर्शन-वन्दन करते हैं ।
लगता है चैतन्यपुरुष, चन्द्रप्रभ यहीं विहरते हैं।। ३।।

❋

शतकाधिक जिन मंदिर राजित, विन्ध्याचल के उच्च शिखर ।
सूर्य-चन्द्रसे उनकी आभा, अतिशय जाती निखर-निखर ।।
रेल मार्ग से यात्रा करते, जो जन तत्र गुजरते हैं ।
लगते हैं चांदी के मन्दिर, सुरगण वंदन करते हैं।। ४।।

❋

यह अतिशय प्राचीन क्षेत्र है, चतुर्थकाल जाता इतिहास ।
अतिशय-सह निर्वाण-क्षेत्र यह, अतुलित प्रकृति सम्पदा पास ।।
लगभग सत्रह बार यहाँ पर, प्रभु का आया समवशरण ।
सुन दिव्यध्वनि चन्द्रप्रभ की, मिटे भव्यजन जनम-मरण।। ५।।

❁

आचार्य श्री विद्यासागर का, रहा संघ-सह यहाँ प्रवास ।
नदियाँ चलीं सन्देशा देने, पवन लुटाने लगी सुवास ।।
नग शिखरों पर संस्थित तरुवर, सबको निकट बुलाते हैं ।
खगकुल कूजें, आनन्दित हों, फुदकें हर्ष मनाते हैं।। ६।।

❁

जहाँ विराजित होते गुरुवर, चतुर्थकाल आ जाता है ।
जीवन्त तीर्थ को पाकर जंगम, महातीर्थ हो जाता है ।।
चहल-पहल बढ़ गई यहाँ पर, सब में आई रवानी है ।
पावन संघ चरण-रज छूकर, प्रकृति हुई दीवानी है।। ७।।

❁

सूरज लगने लगा सुहाना, चन्दा मनको भाता है ।
वेदी प्रतिमा सह हर मंदिर, लगता हमें बुलाता है ।।
आदि-अंत सब जिनेश्वरों का वर्षा करती है अभिषेक ।
मोर-नाचती, कोयल गाती, गौ-सिंह, शावक मिलकर एक।। ८।।

❁

सोनागिरि के हर मंदिर पर, लगीं ध्वजाएँ लहराने ।
स्वर्णकलश दिनकर आभा से, लगे चमकने मुस्काने ।।
गली-गली में हुई सजावट, जैसे नई नवेली हो ।
बीन अल्पनाएँ द्वारों पर, खुशियाँ ज्यों दीवाली हो।। ९।।

❁

कारण, महा मार्च हैं आया, तिथि इकतीस, अठासी सन् ।
सोनागिरि मंदिर समूह के, शीर्ष जिनालय के प्रांगण ।।
आचार्य श्री विद्या निधि द्वारा, है जिनदीक्षा आयोजन ।
मंच विनिर्मित हुए विराजित, बहु संख्यक दीक्षार्थीगण।। १०।।

❋

जिस प्रकार प्रावृष के बादल, नभ में करते चहल-पहल ।
वैसे ही मानव के मन में, भावों की रहती हलचल ।।
दीक्षाकाल आपके मन में, शुभता के ही रहते भाव ।
आत्मसाधना, गुरु उपासना, स्वाध्याय रहता नित चाव।। ११।

❋

प्रायः मौन साधना करते, या अध्ययन, अध्यापन योग ।
काव्य रूप में आगम प्रस्तुति, या लेखन रखते उपयोग ।।
आत्मशुद्धि आरोहण करने, बैठें घण्टों ध्यान लगा ।
देह आत्मा भिन्न-भिन्न हैं, मन चिन्तन में रहे पगा।। १२।।

❋

हो निर्विघ्न क्षेत्र यात्राएँ, सभी धर्म में अनुरागी ।
सम्यग्दर्शन प्राप्त करें सब, कोई न हो दुख का भागी ।।
रूढ़िवाद से दूर रहें सब, तजे मूढ़ता आठों मद ।
षोडसकारण भावन भाकर, प्राप्त करें सब आतम पद।। १३।।

❋

ऐलक श्री आर्जवसागर की, मुनि दीक्षा होनी है आज ।
विंशति एक वर्ष है आयु, अंग-अंग यौवन साम्राज्य ।।
संगम भरी देह आपकी, गई तरासी मूर्ति समान ।
क्या उपमा दें शब्द न कोई, रहे आप खुद ही उपमान।। १४।।

❋

घर में कोई कमी नहीं थी, लाड़-प्यार, लक्ष्मी का वास ।
सब कुछ पाकर सब कुछ छोड़ा, होकर भव-तन-भोग उदास ।।
श्लाघनीय है यही साधना, श्रमण संस्कृति का आधार ।
उन्हें देखकर किया सभी ने, धन्य-धन्य सह जय-जयकार।। १५।।

❁

आचार्य प्रवर विद्यासागर जी, प्रमुदित मन पधराये हैं ।
जयकारों से गगन गुँजाते, संघ चतुर्विध आये हैं ।।
आते ही आचार्यश्री के, वैराग्योत्सव शुरू हुआ ।
मानों दिनकर के आते ही, स्वर्ण दिवस आगमन हुआ।। १६।।

❁

सर्वप्रथम आचार्यश्री ने, धर्मसभा को सम्बोधा ।
लक्ष्य रहे भव्य दीक्षार्थी, सुकरणीय हित उद्बोधा ।।
क्या कर्त्तव्य आपके बनते, अकरणीय हैं अब क्या कार्य ।
अतिविस्तृत, स्पष्टरूप से, समझाये भगवन् आचार्य।। १७।।

❁

विषय-प्रमाद भरा जीवन जब, संयम से जुड़ जाता है ।
पावनता-गुणता आ जाती, मोहतिमिर भग जाता है ।।
मन-इन्द्रिय हो जातीं वश में, कषाय मन्दता आती है ।
गुरु सम्मुख संस्कारित चर्या, ही दीक्षा कहलाती है।। १८।।

❁

दीक्षा माने जयन इन्द्रियों, शमन कषायों का करना ।
क्षमा आदि धर्मों का पालन, पंच महाव्रत आचरणा ।।
समिति-गुप्ति-आवश्यक धारण, मूलगुणों का परिपालन ।
श्री गुरुवर पद-कमल-विहरना, शिरोधार्य कर अनुशासन।। १९।।

❁

असन-वसन के परित्याग से, होता नहिं व्यक्तित्व महान् ।
अथवा गृह परिवार छोड़ना, नहीं महत्ता की पहचान ।।
केशलुंच भी नहीं कारगर, जब तक लुंची नहीं कषाय ।
पाप-वासना-मोह-महामद-,यदि त्यागे नहिं मन-वच-काय।। २०।।

❋

अति उत्कृष्ट महान् साधना, जिनवर-दीक्षा का धारण ।
नग्न दिगम्बर जिन मुद्रा ही, मारग-मोक्ष तरण-तारण ।।
एक भवी पुरुषार्थ नहीं यह, भव अनेक साधना फल ।
इसके निरतिचार पालन से, हो जाता नरजन्म सफल।। २१।।

❋

एक बार जो कदम बढ़ाया, फिर रुकने का नाम नहीं ।
यह मारग चलने का मारग, किचिंत भी विश्राम नहीं ।।
हस्तिदंत जैसे बाहर आ, फिर भीतरे नहिं जाते हैं ।
वैसे जिनवर दीक्षाधारी, मोक्ष लक्ष्य ही पाते हैं।। २२।।

❋

सिंहवृत्ति अतिवीर मार्ग यह, शूर-वीर ही अपनाते ।
अप्रमत्त-निर्भय-निर्मोही, ही इस पर हैं चल पाते ।।
भव्यों! इससे हानि न कुछ भी, उभयलोक कल्याण सभी ।
पा जाते हैं चलने वाले, इसमें नहिं संशय कुछ भी।। २३।।

❋

संयम बिना मनुष का जीवन, निन्दनीय है, पशु समान ।
संयम ही देता जीवन को, मानव जीवन की पहचान ।।
विन संयम का जीवन समझो, बट्टे खाते गया-गया ।
दीक्षा से आरम्भ है होता, साधक जीवन नया-नया।। २४।।

❋

अभी समय है, खूब सोच लो, निर्विकल्पता लाओ मन ।
ताकि पश्चात्ताप रहे ना, मंगलमय होवे जीवन ।।
अभी खड़े तुम उस देहरी पर, आगे स्वर्ण सबेरा है ।
चूक गए तो चौरासी का, दुर्गति-कूप अँधेरा है।। २५।।

❋

आचार्य श्री का सुन उद्‌बोधन, सब दीक्षार्थी बोले यों ।
है प्रशस्त जब मोक्षमार्ग तो लख-चौरासी डालें क्यों ।।
हे गुरुवर! हम चाह रहे हैं, जिनवर-दीक्षा का वरदान ।
दीक्षा दें, उपकार करेंप्रभु, करुणासागर दयानिधान।। २६।।

❋

ऐलक श्री आर्जवसागर जी, किया नमोऽस्तु बारम्बार ।
बोले भगवन्! नादिकाल से, भोगे बहुविधि दुःख अपार ।।
ऊब चुका हूँ भव-भटकन से, दुःख सहे ना जाते हैं ।
याद करें तो सिहरन आती, रोम खड़े हो जाते हैं।। २७।।

❋

अतः श्रीगुरु कृपा करके, दीक्षा हमें प्रदान करें ।
भवसागर से हमें बचालें, दुःखों से परिमाण करें ।।
सुना निवेदन दीक्षार्थी जन, गुरुवर शुभ आशीष दिया ।
यथा विधि आचार्य श्री ने, दीक्षा क्रम प्रारम्भ किया।।२८।।

❋

मुनि दीक्षाएँ शुरू हुईं अब, लुंचे पंचमुष्टि में केश ।
तदनन्तर प्रासुक जल द्वारा, हुआ दीक्षार्थी का अभिषेक ।।
फिर स्वस्तिक शिर पर श्री अंकन, पुष्पों-क्षेपण मंत्रोच्चार ।
और अंत में दीक्षार्थी ने, भूषण वस्त्र सब दिये उतार।। २९।।

❋

दृश्य अनोखा कभी न देखा, हुआ विरागी सबका मन ।
करतल ध्वनि से कहा सभी ने, धन्य-धन्य मानव जीवन ।।
सब ही युवा, बालब्रह्मचारी, दमक रहे मुख सूर्य समान ।
चकाचौंध आँखों में आई, नयन कैमरे के उपमान।। ३०।।

❋

चद्रंप्रभ अष्टम तीर्थंकर, दीक्षित अष्ट मुनीश यहाँ ।
कर्म अष्ट नष्ट करने को, हुए सभी कटिबद्ध यहाँ ।।
आर्जव-उत्तम-पवित्र-प्रमाण, मार्दव-सुख-चिन्मय-पावन ।
इक्तिस मार्च, अठासी सन् में, सोनागिरि में हुए श्रमण।। ३१।।

❋

चन्द्रप्रभ अष्टम तीर्थंकर, यहाँ पधारे सत्रह बार ।
धर्म सभायें जुड़ी अलौकिक, संघ चतुर्विध कहे हजार ।।
जैसा अक्षय पुण्य उस समय, गया कमाया भक्त सुजन ।
वैसी ही सुकृत उर्जन की, तुष्टि समाई सबके मन।। ३२।।

❋

आर्जवसागर मुनि दीक्षा पा, अतिशय मन संतुष्ट हुआ ।
गुरु के चरणों अप्रमत्त रह, निरतिचार व्रत पुष्ट हुआ ।।
मानव तन का लक्ष्य, महत्तम, मुक्तिपुरी को गमन करें ।
तपस्त्याग से कर्म जलाकर, मानव जीवन सफल करें।। ३३।।

❋

जैसे पक्षी दाना चुनकर, फिर नभ में उड़ जाते हैं ।
उन्हें किसी से मोह न होता, आगे बढ़ते जाते हैं ।।
किस दिशि में आचार्य श्री का, सोनागिरि से होय गमन ।
नवदीक्षित आर्जव निधि सोचें, मुनि बन मेरा प्रथम गमन।। ३४।।

❋

ज्यों गजराज के पीछे-पीछे है गजरथ चला करता ।
वैसे ही आचार्य श्री के, पीछे संघ गमन करता ।।
श्री मुनिवर आर्जवसागर जी, रहे सदा गुरुवर्य शरण ।
ब्रह्मचारी-क्षुल्लक-ऐलक-मुनि, कभी न छोड़े गुरुचरण।। ३५।।

ॐ

आर्जवसागर से अन्तरायसागर
सोनागिरि से ललितपुर की ओर विहार काल-१९८८

साधु-चरण चलते ही रहते, करते रहते सदा विहार।
तीर्थंकर सम निरत रहे वे, प्राणिमात्र करते उपकार॥
चन्द्रप्रभ के श्रीचरणों में, वंदन करके संघसहित।
नगर ललितपुर चले पूज्यवर, जन-जन का शुभ करने हित॥३६॥

❋

कर विहार श्री सोनागिरि से, नगरी ''दतिया'' पधराये।
कर प्रभावना जैनधर्म की, उत्तरप्रदेश में फिर आये॥
क्षेत्र 'करगुवाँ' पार्श्वनाथ के, दर्शन कर मन सुमन खिला।
दौड़ पड़ी झांसी की जनता, संघ दर्शन सौभाग्य मिला॥३७॥

❋

झाँसी-बबीना-पावागिरि में, पार्श्वनाथ के दर्शन कर।
आचार्यश्री गद्गद् स्वर बोले, ''है यह क्षेत्र बहुत सुन्दर''
निजकल्याण हेतु साधक को, जो आवश्यक है साधन।
सब कुछ प्राप्त यहाँ पर उसको, ''एकान्त-प्रकृति व जिनवर दर्शन''॥३८॥

❋

फिर कड़ेसरा-तालबैट हो, विहरते-ललितपुर पधराये।
अभिनन्दन प्रभु दर्शन करके, रोम-रोम थे हर्षाये॥
कामधेनु के पीछे-पीछे, वत्स चला करता जैसे।
आचार्यश्री के पीछे-पीछे, आर्जवनिधि शोभित वैसे॥ ३९॥

❋

ग्रीष्मऋतु के गर्म थपेड़ों, ने उत्पात मचाये थे।
दसक दिनों में विहारकाल में, अन्तराय अठ आये थे॥
भोजन-पानी नाम मात्र को, खाली पेट, क्षीण काया।
प्यास सताती, कंठ सूखता, कर्म उदय ऐसा आया॥ ४०॥

❋

मुनिवर श्री आर्जवसागरजी, करें एषणा का पालन।
सम्यक् शोधित किए ग्रास को, पुनि-पुनि शोधें, करें ग्रहण॥
उदय असाता का जब आता, अन्तराय हो जाता है।
कभी भूल श्रावक हो जाती, कच उड़कर आ जाता है॥ ४१॥

❋

ऐसे में मुनि आर्जवसागर, समता रस का पान किया।
क्षुधा-तृषादिक कई परीषह, सहे, न उन पर ध्यान दिया॥
जो कुछ कर्म किये हैं पूरब, वे तो उदय में आते हैं।
वीतराग भाव अपना कर, उनको विज्ञ खिराते हैं॥ ४२॥

❋

अन्तराय की जब घटनायें, मुनि-संघ में आती हैं।
श्रावकजन से छुपी न रहतीं, आगे को बढ़ जातीं हैं॥
''इनको कल अन्तराय हुआ था, अन्तराय न आये आज।
रुका नहीं क्रम, संज्ञा पायी, ''अन्तरायसागर'' महाराज''॥४३॥

❋

एक ओर तो ऋतु ग्रीष्म की, दूजे चलती गर्म बयार।
तीजे अन्तराय सन्ततता, चौथे प्रतिदिन दीर्घ विहार॥
लेकिन वीर जहाँ पग रखते, पीछे नहीं हटाते हैं।
मुनिवर श्रीआर्जवसागरजी, आगे बढ़ते जाते हैं॥ ४४॥

❋

कष्ट उन्हें कष्ट देते हैं, जो उनकी करते परवाह।
वे ही उन्हे मिष्ट हो जाते, जिन्हें नहीं उनकी परवाह॥
कार्य एक ही, बोझ है उसको, जिसके मनसि उमंग नहीं।
किन्तु सरल उसको लगता है, उसे समझता बोझ नहीं॥ ४५॥

❋

अन्तराय दिन आर्जवनिधिजी, मन ही मन हर्षाते थे।
क्योंकि अपने अशुभ कर्म से, वे छुटकारा पाते थे॥
यथा ऋणी निर्भार समझता, कर्ज अदा हो जाने पर।
तथा आप हर्षित होते थे, कर्मों के खिर जाने पर॥ ४६॥

❋

विकटशीत से नहीं डरे वे, शान्त चित्त सब सहन किया।
तीव्र-ताप ग्रीष्म ऋतु लायी, साम्यभाव से शमन किया॥
कई अष्टमी औ चतुर्दशी, मुनिश्री कृत निर्जल उपवास।
कठोर साधना ही करनी है, पूर्वबद्ध कर्मों का नाश॥ ४७॥

❋

नेमिचन्द आचार्य रचित है, 'द्रव्यसंग्रह' जी लघुकृति।
आकार-प्रकार में भले लघु हो, पर उपयोगी है महती॥
ग्रीष्मकाल आचार्यश्री से, हुआ अध्यापित ग्रंथ सकल।
आर्जवनिधिजी-श्रवण-मनन कर, किया हृदयंगम अमृतफल॥ ४८॥

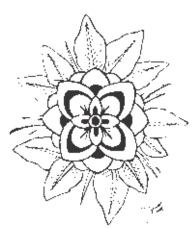

षष्ठ-सोपान

मढ़ियाजी-कुण्डलपुर-मुक्तागिरि चातुर्मास १९८८, ८९, ९०

1. आचार्यसंघ का मढ़ियाजी पदार्पण: चातुर्मास
2. मढ़ियाजी : एक परिचय
3. मुनिश्री आर्जवसागर जी की विशिष्ट साधना
4. गुरुमुख से धवला-समयसार आदि का स्वाध्याय किया
5. एकान्त में स्वाध्याय
6. आर्जवसागर बनाम मौनी बाबा
7. आचार्य संघ का सिरोंज आगमन १९८९
8. मुक्तागिरि में चातुर्मास १९९०
9. मुनिश्री की साधना
10. मुनिश्री को आचार्यश्री द्वारा अध्यापित ग्रंथ
11. मुक्तागिरि से विहार

ॐ

षष्ठ-सोपान

श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र पिसनहारी की मढ़िया, जबलपुर १९८८

सोनागिरि के चन्द्रप्रभ को, करके बारम्बार नमन।
संघ सहित आचार्यश्री ने, ललित नगर को किया गमन॥
ग्रीष्मकाल सिद्धांत वाचना, ''पंचास्तिकाय'' ग्रंथ बढ़िया।
पूर्ण किया पहुँचे फिर गुरुवर, क्षेत्र ''पिसनहारी मढ़िया''॥ १॥

❋

यह क्या हिमगिरि जैसा उन्नत, अमल-धवल-सुषमा का घर।
उतर पड़ा क्या अमरलोक ही, इसी बहाने से भूपर॥
अथवा सृष्टि विधाता की है, ये रचना इतनी बढ़िया।
अहो! दिगम्बर जैन तीर्थ ये, नाम पिसनहारी मढ़िया॥ २॥

❋

नहीं जरूरी कुछ करने को, अमित द्रव्य हो नर के पास।
अपितु चाहिए लगन शीलता, एक लक्ष्य साहस-विश्वास॥
लेखनीय है इस प्रसंग में, यह प्रमाण विस्मयकारी।
मढ़िया जैसा क्षेत्र बना सकती है एक पिसनहारी॥ ३॥

❋

उन्नत-शामलगिरि के ऊपर, स्वच्छ-श्वेत जिनभवन विमल।
लगते मानों पाषाणों को, फोड़ खिले हों श्वेत कमल॥
अथवा नीलम गिरि के ऊपर, बहती गंगा-धार धवल।
या जैन समाज जबलपुर का यश, फैल रहा इतना उज्ज्वल॥ ४॥

❁

यहाँ द्वीप श्रीनन्दीश्वर की, रचना अतिशयकारी है।
कलाकार ने आगमोक्त छवि, क्या ही खूब उतारी है।
पंचमेरु, बाबन जिन मंदिर, सबके मन को भाते हैं।
जो श्रद्धालु भीतर जाते, सचमुच ही तर जाते हैं॥ ५॥

❁

सन् अट्ठासी आचार्यश्री का, हुआ मढ़ियाजी चातुर्मास।
आर्जवनिधि मौनी बाबा का, वहीं साथ में रहा प्रवास॥
आचार्यश्री के कक्ष में जाकर, करें साधना खड़े-खड़े।
होरात्रय मध्याह्न काल में, सहें परीषह बड़े-बड़े॥ ६॥

❁

श्रीगुरुवर की साक्षीपूर्वक, करें सामायिक पूज्यश्री।
सावधान-अप्रमत्त अवस्था, सदाकाल रहते मुनिजी॥
मनमर्कट को ध्यान खंभ से, बाँधे रखने का अभ्यास।
करते-करते श्रीमुनिवर ने, सफल बिताया चातुर्मास॥ ७॥

❁

यह तो रही बात प्रतिदिन की, लेकिन जब करते उपवास।
उस दिन तो श्रीमुनिवर करते, होरा सप्त साधना खास॥
प्रातः साढ़े सात बजे से, ढाई बजे अपराह्न तलक।
ध्यान मग्न दृढ़ासन रहते, रख नासाग्र दृष्टि अपलक॥ ८॥

❁

स्वाध्याय को कहा परं तप, करें तपस्वी पुनः-पुनः।
जिसने यह आभूषण पहना, बढ़ती शोभा सहसगुना॥
नहीं जरूरी पढ़ें ग्रंथ सौ, लेकिन एक पढ़ें सौ बार।
खूब चबाबें, निगल जुगाली, करें पचाने बारम्बार॥ ९॥

❋

वर्षावास अठासी 'मढ़िया', 'धवला' टीका भाग प्रथम।
प्रातः गुरुमुख सुना आपने, दत्तचित्त हो किया ग्रहण॥
'समयसार' स्वाध्याय गुरुजी, करवाया अपराह्न समय।
कुन्दकुन्द का यह अमृत पी, पाया निजानंद अतिशय॥ १०॥

❋

श्रीधरसेनाचार्य साधना, का अमृतफल यह 'आगम'।
निसृतमूल श्रुत स्कंध से, कर्मज्ञान का ग्रंथ आगम॥
श्रुत था अबतक रहा कंठगत, सर्वप्रथम लिपिबद्ध हुआ।
पुष्पदन्त-भूतबलि द्वारा जु, ताड़पत्र उत्तीर्ण हुआ॥ ११॥

❋

सिद्धान्तग्रंथ गंभीर महा जो, अप्रवेश्य जो बना हुआ।
उसके प्रथम भाग का पाठन, का उद्घाटन यहाँ हुआ॥
आचार्यश्री अपने श्रीमुख से, हृदयंगम करवाते थे।
जटिल-कठिन-रसहीन विषय को, सुष्ठुसरस-बनाते थे॥ १२॥

❋

कुन्दकुन्द के तीन रतन हैं, उनमें प्रमुख समय का सार।
प्रति अपराह्न पढ़ाते गुरुवर, हिन्दी अर्थ सहित विस्तार॥
साधुसंघ-सह आर्जवनिधिजी, अन्य सकलजन पाते बोध।
गुरुमुख से गंभीर विषय का, भासन करता आतम बोध॥ १३॥

❋

उत्तरपुराण का किया स्वयं ने, स्वाध्याय इस वर्षावास।
रही प्रेरणादायक सबको, स्मरणीय साधना खास॥
बड़े कक्ष के एक कोण में, भित्ति तरफ को मुख करके।
स्वाध्यायरत रहते मुनिवर, आत्मा का अनुभव करते॥ १४॥

❁

आया कौन? गया है कोई, रहता मनसि विकल्प नहीं।
अति परिचयता स्वाध्याय में, बाधक ना बन जाय कहीं॥
मनस्थैर्य लाने को मुनिवर, स्वाध्याय की कसी लगाम।
तन को साधा एकासन से, कसीं कूर्मवत् अक्ष तमाम॥ १५॥

❁

अक्ष अश्व है, मन है मालिक, हरपल दौड़ लगाता है।
पता है सब कुछ, कौन गया है, कौन कहाँ से आता है॥
जिनवाणी राजित चौकी पर, पाटे पर है स्वाध्यायी।
पूरा दिन तो बीत गया, पर बात समझ कुछ ना आई॥ १६॥

❁

बन्धु! यह स्वाध्याय नहीं है, यह तो है स्वाध्यायी भ्रम।
मन-पंचेन्द्रिय वश करके ही, स्वाध्याय का आता क्रम॥
बाहर से कोई न नाता, साधक भीतर जाता है।
अपने में अपने को पाकर, स्वाध्याय हो जाता है॥ १७॥

आर्जवसागर बनाम मौनी बाबा

चातुर्मास-८८, ८९, ९०

मुनि दीक्षोपरान्त श्री महावीर जयंति १९८८ से श्री महावीर जयंति १९८९ तक आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से मौनव्रत धारण किया। श्री दि. जैन क्षेत्र पिसनहारी की मढ़िया-८८, कुण्डलपुर-८९, मुक्तागिरि-९० में वर्षावास

दीक्षानन्तर आर्जवनिधि जी, आचार्यश्री को किया नमन।
श्रीगुरु का आशीर्वाद ले, किया 'मौनव्रत' को धारण॥
क्या है मौन, लाभ क्या इससे, गुरुवर ने सब समझाया।
श्रीमुनिवर ने सम्यक्ता से, निजचर्या में अपनाया॥ १८॥

❁

मौन मुक्ति का मार्ग महत्तम, मौन महामंत्रों में मंत्र।
आत्मा के ऊर्ध्वारोहण को, मौन रहा सर्वोत्तम यंत्र॥
कर्म निर्जरा का भी उत्तम, साधन गुरु बतलाया मौन।
बिना मौन के कोई बता दे, अब तक शिवपद पाया कौन ॥१९ ॥

❁

केवल वचन नियंत्रण करना, इसको कहते मौन नहीं।
नहीं बोलते हैं स्थावर, इसे जानता कौन नहीं॥
हिंसा-ईर्ष्या-मान-छल-कपट, राग-द्वेष का जिनको त्याग।
अन्तर्शुचिता जिनको होती, वे ही मौनव्रती बड़भाग॥ २० ॥

❁

मौन मोक्ष का मूल बताया, मौन बिना व्रत व्यर्थ सभी।
धर्म अहिंसा पले मौन से, हो पाते न अनर्थ कभी॥
अहो! मौनव्रत कल्पवृक्ष है, करता इच्छित फल प्रदान।
विषय-कषायों को जय करके, देता विशद शास्त्र का ज्ञान ॥२१ ॥

❁

मौन न केवल धर्म अकेला, स्वास्थ्य लाभ भी देता है।
मन-वच-काया की विकृति को, औषध बन हर लेता है॥
घर-परिवार समन्वय-शांति, सामाजिक आर्थिक उत्थान।
राजनीति में शुचिता लाने, रहा मौन-उत्तम अवदान॥ २२ ॥

❁

वाद-विवाद, कलह-दु:ख-संकट, सकल आपदायें हरता।
शांति-सुख-समता प्रदान कर, है मन को वश में करता॥
यह विचार कर एक वर्ष को, लिया आप मौन व्रत धार।
मौन साधना बहुत कठिन है, मौन सकल साधना सार॥ २३ ॥

❁

अगर धर्म का नाश हो रहा, धार्मिक क्रिया बिगड़ती हो।
समचीन सिद्धान्तलोप हो, कोई घटना घटती हो॥
स्वाध्याय, सन्देह, जिज्ञासा, वा प्रश्नोत्तर धर्मोपदेश।
महाव्रती भी मौन तोड़कर, करते प्रवचन, वचन विशेष ॥२४॥

❁

श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, मोक्षमार्ग अपनाया है।
हरपल कठिन तपस्या करके, आगे और बढ़ाया है॥
सन् अट्ठासी मौन काल में, त्यागे सब प्रकार के फल।
छः माहों तक किया आपने, त्याग सतत अभ्यास सफल ॥२५॥

❁

धन्य-धन्य मुनिराज आप हैं, किया नियंत्रण मन-वच-काय।
की अविपाक निर्जरा प्रतिपल, रोकी साम्प्राय की आय॥
निरतिचार-निर्दोष साधना, किया निर्वहण आप श्री।
अप्रमत्त हो कभी न आयी, कोई बाधा मौन व्रती॥ २६॥

❁

रही विशिष्ट साधना गुरुवर, अतः हुई पहचान विशिष्ट।
''मौनीबाबा'' का व्रत पालन, करता था सबको आकृष्ट॥
दिखते अलग, संघ में न्यारे, आत्मलीनता उत्तम काम।
प्रणत हुआ हर दर्शक कहता, ''मौनी भगवन् तुम्हें प्रणाम'' ॥२७॥

❁

जो भी श्रावक मढ़िया आता, दर्शन बिना न जाता था।
सहजरूप मुनिराजश्री से, मंगल आशीष पाता था।
मौनव्रती आशीर्वाद में, करती सकलसिद्धियाँ वास।
हुए सुपरिचित, श्रद्धालुजन, मढ़ियाजी के चातुर्मास॥ २८॥

❁

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
'मढ़िया' से ग्रामीण मार्ग हो, तीव्र ठण्ड में किया गमन॥
शीत पनागर कर्मकाण्ड पढ़, ग्रीष्म मढ़िया प्रवचनसार।
आर्जवनिधि भी रहे संघ में, पहुँचे फिर कुण्डलपुर द्वार॥ २९॥

❁

इसी बीच में गये कटंगी, और जबेरा, नोहटा भी।
चंडिचौपरा, बनवार होकर, तथा घाटपिपरिया भी॥
जंगल में इकरात ठहरकर, वृक्ष तले था ध्यान किया।
वर्षा बूंदों में समता रख, प्रातः जा प्रभु दर्श लिया॥ ३०॥

❁

न्याय दीपिका, दशभक्ति का चला अध्ययन वर्षायोग।
गुरु मुख से जिनवाणी रस का, पान किया यह पुण्य सुयोग॥
पूर्णमति आदिक की दीक्षा, इसी काल सम्पन्न हुई।
बड़े बाबा पर कविता भी रच, पूर्ण भावना सफल हुई॥ ३१॥

❁

चातुर्मास नवासी सन् का, कुण्डलपुर सम्पन्न हुआ।
कर विहार आचार्यसंघ का, नगर 'सिरोंज' आगमन हुआ॥
इसी बीच में दमोह भी जा, गढ़ाकोटा गुरु हुआ गमन।
सागर खुरई से नदी पारकर, सुधा सिन्धु से हुआ मिलन॥ ३२॥

❁

कवि का रहा सिरोंज जहं, टौरी मंदिर जीर्णोद्धार।
हुआ संघ के सन्निधान में, कवि निर्मित वेदी संस्कार।
नगर मंदिरों को शिर नाया, जिनवर वीतराग लखकर।
अशुभ कर्म का क्षय भी कीना, पुण्य खजाना भर-भर कर॥ ३३॥

❋

आचार्यश्री ने कवि लक्ष्य कर, शुभाशीष में शब्द कहे।
''घर तो सभी बना लेते हैं, मंदिर रचते हैं विरले॥''
पंचकल्याणक-गजरथ विधान, सन्निधान आचार्यश्री।
यत्र-तत्र करते प्रभावना, पधराये गुरु मुक्तागिरि॥ ३४॥

❋

इसी बीच जब चले सिरोंज से, खुरई से सागर पधराये।
मंगलगिरि का नामकरण कर, टड़ा से तारादेही आये॥
तेदूखेड़ा कोनी, पाटन, जहाँ कोटि जप नियम लिया।
णमोकार से कर्म खपाने, बाद जबलपुर गमन किया॥ ३५॥

❋

मुक्तागिरि पृथ्वी पर निर्मित, प्रकृति-धर्म की झाँकी है।
देवों ने केशर-मोती से, बढ़कर कीमत आँकी है॥
पर्वत-मंदिर-झरना मिलकर सुन्दरता विखराते हैं।
कोटित्रय मुनियों की गाथा, तीनों मिलकर गाते हैं॥ ३६॥

❋

द्विपंचाशत भव्य जिनालय, पारसनाथ-शांति दो खास।
यहाँ हुआ आचार्यश्री का, सन् नब्बे का चातुर्मास॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागर ने, इसका लाभ लिया भरपूर।
डूबे रहते आत्म उदधि में, रह पर-द्रव्य-भाव से दूर॥ ३७॥

❋

सर्वार्थसिद्धि-प्रमेयरत्नमाला, पूज्यश्री पढ़ाते थे।
श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, नियमित लाभ उठाते थे॥
पाठस्मरण, दैनिकचर्या, निरतिचार करते पालन।
मोक्षमार्ग पर हरदम बढ़ते, कर कर्म का प्रक्षालन॥ ३८॥

❋

पूरा चातुर्मास आप श्री, किया मौनव्रत का पालन।
करते थे स्वाध्याय निरन्तर, या सामायिक, प्रतिक्रमण॥
कभी-कभी जाते पहाड़पर, धारण करते प्रतिमा योग।
पद्मासन, खड्गासन करते, घण्टों तक चेतन का भोग॥ ३९॥

❋

सन् चौरासी से नब्बै तक, मुनिश्री गुरुवर संग रहे।
अहार-पपौरा-थोबन-मढ़िया-कुण्डल-मुक्तागिरि कहे॥
आचार्यश्री की चरण सन्निधि, पाये थे जो अमृत फल।
हृदय मंजूसा रखे सुरक्षित, आपश्री ने वे अविकल॥ ४०॥

❋

मुनिवर श्री आर्जवसागर को, गुरु का हृदय उदार मिला।
गुरु के संग-साथ रहने का, रात्रि-दिवस सौभाग्य मिला॥
किरण-किरण आभा मंडल को, उन्हें प्रभावित करती थी।
शयनासन चर्या को लखकर, प्रबल प्रेरणा मिलती थी॥ ४१॥

❋

आचार्यश्री की चरण सन्निधि, मुनिवर बीता अधिक समय।
मुनिचर्या कैसी होती है, जाना-समझा यथा समय।
तद्वत् ही अपनी चर्या को, अग्निसाधना ढाली है।
इसलिए अबतक न किसी ने, कोई चूक निकाली है॥ ४२॥

❋

ऐसा नित श्री आर्जवनिधि ने, ज्ञानोदधि अवगाह किया।
आचार्यवर ने दीक्षा से सह, आगम का सुज्ञान दिया॥
दिया पिया वह कर्णाञ्जलि से, हृदय उतारा किया मनन।
तब तक, जब तक हो न पाया, प्राप्त तत्त्व सम्यक् पाचन॥ ४३॥

❋

आचार्यश्री ने आर्जवनिधि को, अध्यापन संपूर्ण किया।
सिद्धान्त-व्याकरण के ग्रन्थों का, प्रातः नियमित ज्ञान दिया॥
जब आता मध्याह्न काल तब, फिर स्वाध्याय कराते थे।
पूर्व पठित की पृच्छा करके, आगे को बढ़ जाते थे॥ ४४॥

❋

समन्तभद्र की प्रकट भद्रता, रत्नकरण्ड श्रावकाचार।
इसमें वर्णित सकल रूप से, श्रावक के आचार-विचार॥
कातन्त्र व्याकरण, रूपमालिका, बृहद् द्रव्यसंग्रह सुग्रंथ।
जैन सिद्धान्त के सब ग्रन्थों को, किया अध्यापित गुरु निर्ग्रंथ॥ ४५॥

❋

तत्त्वार्थसूत्र, आत्म-अनुशासन, इष्टोपदेश अष्टपाहुड़।
सर्वार्थसिद्ध, आलापपद्धति, दशभक्ति, कषायपाहुड़॥
प्रमेयरत्न, स्तोत्र-स्वयंभू, गोम्मटसार, पंचास्तिकाय।
मूलाचार, वारसाणुवेक्खा, ज्ञानार्णव का दिया स्वाध्याय॥ ४६॥

❋

प्रवचन-समयसार-जयधवला-समाधितंत्र-मूकमाटी।
शुभाशीष-सह हृदय पिलाया, आर्जवनिधि को शिक्षा दी॥
आर्जवनिधि स्वाध्याय रसिक हैं, प्रथमानुयोग के कई पुराण।
किया स्वतंत्र अध्ययन ग्रन्थों का, एक चित्त होकर अम्लान॥ ४७॥

❋

अध्ययनशील रहे बचपन से, अद्यापि वैसा उत्साह।
पढ़े-पढ़ावें धर्मग्रन्थ हम, मन में भी कुछ ऐसी चाह॥
श्रीगुरुवर से आज्ञा माँगी, सम्यक् बिखराये मोती।
विशाल हृदय गुरुवर ने सुनकर, विरलों की भावन होती॥ ४८॥

❁

कर आशीष दिया गुरुवर ने, प्रतिदिन साधु पठन करें।
तथा निशा में सावधान हो, पाठित का मन-मंथन करें॥
वाचन मात्र नहीं आवश्यक, आवश्यकता है पाचन की।
बिना पचाये अनुपयोगिता, हो जाती है वाचन की॥ ४९॥

❁

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
दो-दो अथवा तीन-तीन में, उपसंघों का किया गठन॥
आचार्यश्री ने शुभाशीष दे, निर्देशित कर शुभस्थान।
कहा सभी से यथा समय सब, करें यहाँ से निज प्रस्थान॥५०॥

❁

नहीं चाहता पुत्र, पिता से, क्षण भर को भी दूर रहे।
नहीं चाहता पिता, पुत्र को, क्षण भर को भी दूर रहे॥
किन्तु स्व-पर कल्याण सोचकर निर्णय ऐसा लिया गया।
धर्म-कर्म-रण विजयेच्छा से, तत्क्षण पालन किया गया॥५१॥

❁

श्री मुनिवर आर्जवसागरजी, सभी तरह परिपक्व हुए।
ज्ञान-ध्यान-सह तपस्त्याग में, प्रवचनादि में दक्ष हुए॥
हो प्रभावना रत्नत्रय की, श्रीगुरुवर आशीष लिया।
मुनिवर ने आज्ञापालन सह, अनियत सतत विहार किया॥५२॥

❋

आचार्यश्री के इस निर्णय से, हुआ देश का महदोपकार।
गेही-श्रावक हुए संस्कृत, नगर-ग्राम में धर्म प्रचार॥
एक दीप ने सौ दीपों को, किया प्रकाशित ज्योति प्रजार।
सौ से सौ-सौ ज्योतित होकर, करें जैन धर्म का उजयार॥५३॥

❋

जो कई वर्ष रहा छायावत्, गुरु के पीछे, साथ चला।
लेकिन आज छोड़कर उनको, वह कैसे रह सके भला॥
पर, मुनिश्री ने सब चिन्ताएँ, छोड़ी लुंचित केश तथा।
स्वीकृत पथ पर बढ़े निरन्तर, बढ़े बांकुरे वीर यथा॥५४॥

सप्तम-सोपान

कोपरगाँव-चातुर्मास-१९९१-२००३

१. मुक्तागिरि से दक्षिण भारत के लिए विहार।

२. दक्षिण भारत-तमिलनाडु : एक परिचय।

३. मुनिश्री का कोपरगाँव में चातुर्मास स्थापना।

४. सभी वर्ग के लिए अध्यापन प्रारम्भ।

५. प्रति रविवार विशेष प्रवचन।

६. सभी पर्व यथा समय मनाये गये।

७. भ. आदिनाथ सम्बन्धी भ्राँतियाँ दूर की।

८. शाकाहार सम्मेलन का आयोजन।

९. मुनिश्री के प्रवचन।

१०. अहिंसा-रैली का आयोजन।

११. ''शाकाहार फैडरेशन'' की स्थापना।

१२. कोपरगाँव के भक्तों द्वारा आचार्यश्री के दर्शन।

नँ

सप्तम-सोपान

कोपरगाँव चातुर्मास-१९९१-२००३

''श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, दक्षिण भारत करें विहार।
पुरासंस्कृति बिखर रही है, सम्यक् रूप करें उद्धार॥
मंदिर-मूर्ति-शैल-गुफायें, शिलालेख, चित्रों के रूप।
पुरातत्त्व को संरक्षण दें, यथा योग्य शक्ति अनुरूप''॥ १॥

❁

आचार्यश्री विद्यासागरजी, दक्षिण के ही रत्नमहान्।
जैन-संस्कृति, पुरातत्त्व का, गुरुवर को उत्तम परिज्ञान॥
अहो! पुरातन जैन संस्कृति, देश-समाज अमित है छाप।
निज प्रवचन-पुरुषार्थ लगाकर, उसे सम्हालो मुनिवर आप॥ २॥

❁

कर्नाटक औ' तमिलनाडु में, जैन संस्कृति है कब से।
पता नहीं कबसे है फैली, कौन प्रवर्तक हैं उसके॥
पर, यह तो निश्चित ही समझो, कर्नाटक जैनों का देश।
कर्नाटक औ तमिलनाडु में, जैन धर्म अनादि निवेश॥ ३॥

❁

शिलापट्ट हैं उसके साक्षी, ईसा पूरब चार शती।
भद्रबाहु पहुँचे दक्षिण में, कहते हैं निर्ग्रंथ यती॥
प्राण प्रेरणा भद्रबाहु की, उनके शिष्य विशाखाचार्य।
चेर-चोल-पाण्ड्य देशों में, संघ सहित पहुँचे वे आर्य॥ ४॥

❋

कुन्दकुन्द आचार्यश्री वा, स्वामी समन्तभद्र-अकलंक।
पूज्यपाद-सिंहनंदी का, दक्षिण से गहरा सम्बन्ध॥
पिछले दो हजार वर्षों तक, फूली-फली संस्कृति जैन।
साहित्य-संस्कृति हुई प्रभावित, तमिलनाडु 'जैनों' की देन॥ ५ ॥

❋

तमिल-तैलु-कर्नाटक-केरल, दक्षिण अंग कहे हैं चार।
केरल-तैलगु-वर्तमान में, जैन धर्म का कमी प्रचार॥
महावीर निर्वाण अनन्तर, तमिलनाडु में जैन धरम।
पुष्पित-फलित हुआ सन्तों से, पायी स्थिति तदा चरम॥ ६ ॥

❋

महावीर स्वामी का आया, द्रविड़ देश भी समवशरण।
अत: सिद्ध है महावीर से, पहले था यहाँ जैन धरम॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागर ने, आचार्यश्री को नमन किया।
सस्मित वदन युगल हस्तों से, गुरुवर ने आशीष दिया॥ ७ ॥

❋

बिगुल बजाया जैन धर्म का, रत्नत्रय का किया प्रसार।
समन्तभद्र-अकलंक की तरह, हुई धर्म की जय-जयकार॥
भव बिजांकुर मिथ्यातम का, मुनिवर प्रवचन किया विनाश।
रूढ़ि-अंधता-परम्परा को, नाशा; बनकर सूर्यप्रकाश॥ ८ ॥

❋

जल को जीवन कहा गया है, प्रगति रही जिसकी पहचान।
साधक कभी न रुकते पथ में, करते प्रगति, रहें गतिमान॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, मुक्तागिरि से हुआ विहार।
''कोपरगाँव'' विराजे मुनिवर, करते जन-जन का उपकार॥९ ॥

❋

इसी मध्य परतवाड़ा में, स्वास्थ लाभ वश ले आशी।
गुरु से, गुरु संग भातकुलि तक, पहुँचे थे वश आप ऋषि॥
अमरावती कुछ मास ठहरकर, की प्रभावना प्रथम जहाँ।
कारंजा फिर गये अकोला, सिरपुर पार्श्वजी लखे महा॥ १०॥

❋

नेमिगिरि जिन्तूर, जालना, कई इक दिन का रहा प्रवास।
प्रवचन कक्षा प्रभावनाकर, कचनेर, पैठन, दर्शन खास॥
औरंगाबाद से एलोरा के, पार्श्व प्रभो लख गुफा लखी।
कन्नड, नांदगांव होकर के, कोपरगांव की राह चली॥११॥

❋

श्रीमुनिवर के दर्शन करके, रोम-रोम हर्षाये जन।
श्रीफल चरणों किये समर्पित, जैनाजैन सकल सज्जन॥
सुन आशीष वचन मुनिवर के, श्रोता हो गए, भावविभोर।
हुए सभी गद्‌गद्, सम्मोहित, लगे नाचने मन के मोर॥ १२॥

❋

यद्यपि भारत एक राष्ट्र है, उसका 'महाराष्ट्र' इक प्रान्त।
कौन पराया, कौन है अपना, उदार हृदय गाँव यह शान्त॥
सब समाज एकत्रित होकर, किया निवेदन गुरुवर पास।
यहीं करे स्थापित मुनिवर, सन् इक्यानवे चातुर्मास॥ १३॥

❋

करुण कलित हृदय यतिवर ने, सुना निवेदन ध्यान लगा।
स्वीकृति देकर सबके मन में, दिया ऋषिवर उत्साह जगा॥
अषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को, पूर्ण हुई जन-जन की आश।
जब गुरुवर आर्जवसागरजी, किया स्थापित चातुर्मास॥ १४॥

❁

श्रीमुनिवर ने युवा वर्ग को, जैन धर्म को देने ज्ञान।
प्रातःकाल कक्षाएँ लेने, का छेड़ा सुन्दर अभियान॥
कार्तिकेयस्वामी की रचना, ''कार्तिकेय अनुप्रेक्षा'' जी।
समन्तभद्रजी ''रत्नकरण्डक'', दौलतनिधि ''छहढाला'' जी॥ १५॥

❁

युवावर्ग की भीड़ लग गई, सबका मानस कमल खिला।
जिसका जितना बौद्धिक स्तर, उतना उसको वहाँ मिला॥
पहले मुनिवर वाचन करते, फिर शिष्यों से कराते थे।
जब तक शुद्ध नहीं हो जाता, पुनः-पुनः करवाते थे॥ १६॥

❁

पृच्छा करके, सभी साथ में, मिलकर गाथा गाते थे।
हो जाते सन्तुष्ट, बाद में अन्वय-अर्थ बताते थे॥
कवि क्या कहना चाह रहा है, समझाते निहितार्थ सकल।
आतमसात् करा देते थे, बतलाकर भावार्थ सरल॥ १७॥

❁

'कार्तिकेय अनुप्रेक्षा' में है, भाओ भावना बारम्बार।
समन्तभद्र के 'रत्करण्डक' श्रावक के आचार-विचार॥
'छहढाला' रचना छोटी-सी, किन्तु बड़े काम की है।
यह सुबुद्धि का अमृतफल है, पंडित दौलतराम की है॥ १८॥

❁

बालक-वृद्ध-अशिक्षित-शिक्षित, है रचना सबको हितकार।
जितने बार पियोगे अमृत, पाओगे संतुष्टि अपार॥
श्री छहढाला दौलतराम की, रत्नत्रय की अनुपम खान।
सन् इक्यानवे चातुर्मास में, पायी यह उपलब्धि महान्॥ १९॥

❁

प्रति रविवार हुआ करते थे, मुनिश्री के विशेष प्रवचन।
जैनाजैन सभी आते थे, धर्मशाला व्यापारी भवन॥
प्रवचन के आधार प्रश्न ले, रहे परीक्षा हर रविवार।
पात्र जनों को वितरित होते, पुरस्कार अगले रविवार॥ २० ॥

❁

'कोपरगाँव' के हर कोने में, दौड़ी धार्मिक हर्ष हिलोर।
लगे फुदकने पक्षी जैसे, लगे कुहुकने जैसे मोर॥
विनत हृदय सब नगर निवासी, गुरुवर चरणों किया नमन।
एकीभाव एकत्रित होकर, किया कर्मपथ सुष्ठु गमन॥ २१ ॥

❁

जो-जो पर्व सामने आये, किया गया सबका सत्कार।
गुरु पूर्णिमा, रक्षाबंधन, गये मनाये श्रद्धाधार॥
शासनवीर जयंति हो या, पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस।
गया मनाए गुरुवर सन्निधि, पाया सबने पुण्य-सुयश॥ २२ ॥

❁

पर्वराज पर्यूषण आया, मनाया भर उत्साह अती।
हुए प्रभावक प्रवचन प्रतिदिन, आर्जवसागर महायती॥
शरद पूर्णिमा के आने पर, आचार्यश्री अवतरण दिवस।
याद किया जीवन दर्शन को, सबने गाया गुरुवर यश॥ २३ ॥

❁

महावीर निर्वाण महोत्सव, जोरशोर चहुँओर मना।
श्रीगुरुवर के शुभाशीष से, आयोजन प्रारूप बना॥
श्रीमुनिवर आशीष में कहा, उत्सव का उद्देश्य महान्।
वीर अंत, शुरु ऋषभ देव की, वाणी, हमारी है पहचान॥ २४ ॥

❋

जन-जन को परिचित करवाना, याद दिलाना स्वर्ण अतीत।
भारतीय संस्कृति संस्थापक, हो गए कोटि वर्ष व्यतीत॥
फैल रही भ्रांतियाँ जन में, उसको हमें मिटाना है।
जैनधर्म के संस्थापक हैं, ऋषभदेव समझाना है॥ २५॥

❋

पाठ्यपुस्तकें महावीर को संस्थापक बतलाती हों।
गलत जानकारी देती हैं, सच्चाई झुठलाती हों॥
श्रीमुनिवर के प्रवचन सुनकर, सबके मानसकंज खिले।
"आर्जवसागर जैसे गुरुवर, बड़े भाग्य से हमें मिले"॥ २६॥

❋

मुनिश्री ने जनजागृत लाने, करने शाकाहार प्रचार।
किया सम्मेलन विद्वानों का, देखे सकल उत्कृष्ट विचार॥
विकृत मन-विचार, पागलनर, कहते अंडा शाकाहार।
लेकिन यह तो झूठ सरासर, नहिं विज्ञान करे स्वीकार॥ २७॥

❋

पैदा होते नहीं खेत में, जैसे गेहूँ-गन्ना हैं।
नहीं निकलते हैं खदान में, जैसे हीरा-पन्ना हैं॥
नहीं पेड़ पर वे फलते हैं, जैसे केला-आम-अनार।
और लता पर नहीं लटकते, जैसे दाख-बदाम-अचार॥ २८॥

❋

ये प्राणी से पैदा होते, होते इनमें प्राण सभी।
अंडा शाकाहार नहीं है, कहता है विज्ञानी भी॥
वह है हाड़-माँस का पुतला, फल-मेवा आधार नहीं।
अतः बन्धुओं! निश्चित समझो, अंडा शाकाहार नहीं॥ २९॥

❋

अंडा-मदिरा-माँस आदि तो, हैं अनेक रोगों के मूल।
अतः बन्धुवर! कभी न करना, माँसाहार करने की भूल॥
सभी धर्मग्रन्थ कहते हैं, कभी न करना मांसाहार।
क्योंकि मदिरा-मांस आदि सब, हैं साक्षात् नरक के द्वार॥ ३०॥

❋

हाथी-घोड़ा शाकाहारी, लेकिन होते अतिबलवान।
दूध-दही-मेवा-फल-सब्जी, होते सभी विटामिंस खान॥
सभा अंत में श्रीमुनिवर ने, किया विषय कलशारोहण।
"सात्विक शाकाहार से मिला, मन-वच-काया को पोषण"॥ ३१॥

❋

है प्राचीन सूक्ति यह बन्धु! भोजन मन-वच-पड़े प्रभाव।
जैसा हम भोजन करते हैं, वैसे ही बनते हैं भाव॥
जितने भी हैं जीव जगत् में, सबको प्राण हि प्यारे हैं।
फिर क्यों हम हैं उन्हें मारने, बन जाते हत्यारे हैं॥ ३२॥

❋

मनुज प्रकृति से शाकाहारी, मांसाहार नहीं अनुकूल।
धर्म अहिंसा परम धर्म है, उसको गया मनुज है भूल॥
अंडा-मांस-शराब, मनुष के, बने पतन के हैं कारण।
करुणाकलित हृदय संतजन, कैसे करें शांति धारण॥ ३३॥

❋

जो औरों को आज सताये, कल वह भी सताया जायेगा।
जो भी जैसा कर्म करेगा, वह वैसा फल पायेगा॥
जो औरों को कष्ट है देता, सुखी नहीं रह पायेगा।
दुष्कर्मों के विषफल खाकर, तड़प-तड़प मर जायेगा॥ ३४॥

❋

श्रीमुनिवर के प्रवचन सुनकर, क्रूर जनों में आयी दया।
हाथ उठा संकल्प लिया सब, मद्य-मांस का त्याग किया॥
मुनिश्री के चरणों में आकर, पद रज शिर पर धारी है।
शाकाहार ही ग्रहण करेंगे प्रतिज्ञा यही हमारी है॥ ३५॥

❋

अहिंसा-रैली का आयोजन, दत्त प्रेरणा मुनिवर की।
किया गया अति ही गरिमामय, रैली पहुँची गली-गली॥
जियो और जीने दो सबको, प्राण सभी को प्यारे हैं।
बैनर-तख्ती-चौक-चौराहे, लिखे अहिंसक नारे हैं॥ ३६॥

❋

जो व्यवहार तुम्हें न रुचता, नहीं अन्य से करें कभी।
कोई मरना नहीं चाहता, जीवन चाहें जीव सभी॥
हाथी-घोड़ों लिखा हुआ था, हम करते हैं शाकाहार।
निर्बल-अल्प आयु के होते, जो करते हैं माँसाहार॥ ३७॥

❋

अनेक झाँकियाँ साथ चल रहीं, धर्म अहिंसा दें उपदेश।
गाय-सिंह संग-संग जल पीते, झाँकी रुचिकर लगी विशेष॥
मुनिराज को सर्प काटता, कालकूट-विष जिसके दाँत।
हाथ उठाकर उसे दे रहे, मुनिराज जी आशीर्वाद॥ ३८॥

❋

मुर्गी माँ हैं, अण्डा बेटा, जो अण्डे को खाते हैं।
मानों वो माँ के बेटे, नीच दुष्ट खा जाते हैं॥
मुर्गी कहती पापी तूने, तो खाया है मेरा मल।
अच्छा होता, नर न होकर, शूकर पाता अगर शकल॥ ३९॥

❋

रैली सँग चल रहे मुनिश्री, धर्म अहिंसा के अवतार।
गली-गली, कूचे-कूचे में, हुई धर्म की जय-जयकार॥
हुआ समापन जब रैली का, धर्म-सभा का आयोजन।
''धर्म अहिंसा परम धर्म'' पर, हुए मुनिश्री के प्रवचन॥ ४०॥

❋

धर्म अहिंसा वीर बनाती, कायरता स्थान नहीं।
कहे अहिंसा को कायरता, उसको सम्यक् ज्ञान नहीं॥
रागादिक का पैदा होना, नाम इसी का हिंसा है।
रागादिक पैदा न होना, इसका नाम अहिंसा है॥ ४१॥

❋

शाकाहार दिनों-दिन फैला, मिले कार्यक्रम प्रोत्साहन।
अतः स्थापित हुआ यहाँ पर, ''शाकाहार-फैडरेशन''॥
नगर-नगर औ गाँव-गाँव में, शाकाहार का किया प्रचार।
सबसे उत्तम जीवन शैली, करना भाई शाकाहार॥ ४२॥

❋

आचार्यश्री विद्यासागर से, रचित हुआ साहित्य महान्।
''तीर्थंकर चौबीस जिनों'' का, किया आप स्तुति-गुणगान॥
रही सर्वजन हितकर रचना, हुई प्रकाशित कोपरगाँव।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर से, प्राप्त प्रेरणा, आशीष छाँव॥ ४३॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागर से, हुई प्रभावना चातुर्मास।
आचार्यप्रवर के शुभाशीष से, प्राप्त हुआ यह अवसर खास॥
आचार्यश्री के चरण कमल में, ''मुक्तागिरि'' करने दर्शन।
दो बस लेकर गये भक्तजन, किया कृतज्ञता का ज्ञापन॥ ४४॥

❋

आपश्री तो श्रमणसूर्य हैं, सकल शिष्य हैं दिव्य किरण।
जगत् ज्ञान उजयाला करते, महामोहतम करें हरण॥
उन किरणों में एक किरण है, मुनिवर श्रीआर्जवसागर।
प्रतिदिन अमृतपान कराते, छलकाते प्रवचन गागर॥ ४५॥

❋

आचार्यश्री को भक्तजनों ने, श्रीमुनिवर का चित्र दिया।
'नेत्रज्योति क्या सुधर गई?' 'ना, गुरुभक्ति का पोज लिया॥'
आचार्यश्री की स्मृति उत्तम, शिष्य के चश्मे तक का ध्यान।
रखते हैं वात्सल्य पुत्रवत्, देते आशिष मंगल धाम॥ ४६॥

❋

"मयूर पंख लेकर के जाना, हेतु पिच्छिका का निर्माण।"
"मंगा लिए हैं," कोई बात ना, "वे तो आजायेंगे काम॥"
लाये, मुनिवर पिच्छि बनाकर, आचार्यश्री को भिजवाई।
गुरु वात्सल्य, शिष्य की भक्ति, यहाँ देखने में आयी॥ ४७॥

❋

आचार्यश्री आर्यनंदी जी, एक पिच्छिका चाहिए है।
ज्ञात हुआ मुनि आर्जव निधि को, उन्हें बनाकरके दी है॥
शांतिलाल लुहाड़िया हस्ते, आचार्यश्री तक पहुँचाए।
यहाँ फिर ब्रह्मचर्य व्रत लिया, मुम्बई पिच्छि दे आये॥ ४८॥

❋

एक दिवस भी नहीं बीतता, जिस दिन हो कुछ काम नहीं।
कर्मशील गुरुवर के जीवन, आलस या विश्राम नहीं॥
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, 'कोपरगाँव' से हुआ गमन॥ ४९॥

अष्टम-सोपान

सांगली चातुर्मास-१९९२

१. सांगली में चातुर्मास की स्थापना

२. रत्नकरण्डश्रावकाचार पर प्रवचन माला प्रारम्भ

३. सर्वार्थसिद्धि का स्वाध्याय

४. प्रवचन में मुनिश्री जिनभूषण का पधारना।

५. ब्र. कुलभूषण को कातन्त्र रूपमाला अध्यापन।

६. ब्र. कुमार, ब्र.कुलभूषण भी प्रवचन में आते थे। आगे चलकर आप दोनों ने मुनि दीक्षा लेकर सुपार्श्वसागर एवं विनीतसागरजी कहलाए।

७. मुनिश्री ने अन्य मुनियों के लिए भी पिच्छिका बना कर भिजवायी।

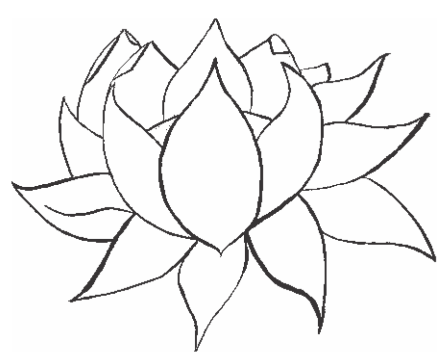

ॐ

अष्टम सोपान
सांगली चातुर्मास १९९२

जैसे सूरज बढ़ता जाता, रुकने का है काम नहीं।
वैसे मुनिवर आर्जवसागर, लेते कभी विराम नहीं॥
कोपरगाँव से श्रीरामपुर, कुन्थलगिरि पहुँचे सार।
करमाला, कुम्भोज, सद्लगा, पहुँचे सांगली करुणाधार॥ १॥

❁

इसी बीच देहगाँव व कुण्डल, दूधगाँव व बाहुबली।
इचलकरंजी जुगुल पहुँचे, सिरगुप्पी शेडवाल भली॥
मिरजगाँव से नगर सांगली, नेमिनगर का पुण्य जमा।
मिलने आये नियमसागर जी भूतबलि ले संघ जहाँ॥ २॥

❁

चतुर्मास हो संग साथ में, इसी भाव सह आये थे।
उनके जाने पर, जिन मुनि से, लोग सभी ललचाये थे॥
हे करुणाधन! ज्ञान के सागर, आर्जवनिधिवर कृपा करें।
चातुर्मास बानवै सन् का, कृपा कर स्वीकार करें॥ ३॥

❁

स्वीकृति पा मुनिराजश्री की, हुए नगर जब हर्ष विभोर।
यथा मेघ ध्वनि को सुनकर के, नर्तन करने लगते मोर॥
नेमीनाथ नगर सांगली, श्रीमुनिवर का रहा प्रवास।
नेमिनाथ जिनके चरणों में, किया स्थापित चातुर्मास॥ ४॥

❁

साधु के चक्षु हैं आगम, स्वाध्याय अंजन उपमान।
अंजन दोज का नेत्र को करता, उज्ज्वलता की दृष्टि प्रदान।
मुनिवर श्री आर्जवसागरजी, रत्नकरण्डश्रावाकाचार।
निज-पर का कल्याण सोचकर, किया पूज्यश्री ने विस्तार॥ ५॥

❁

आचार्यश्री विद्यासागर ने, मुनिवर घुटी पिलाई है।
घौंट-घौंट कर, क्रमशः क्रमशः हृदयंगम करवाई है॥
पूज्यश्री ने करी जुगाली, घण्टों बैठ पचाई है।
कई बार प्रवचन के माध्यम, धर्मसभा दुहराई है॥ ६॥

❁

अतिशयवाग्मी श्रीमुनिवर ने, श्रावकाचार के सकल रतन।
रखे श्रावकों मध्य उजागर, पुनः-पुनः करके प्रवचन।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित-सह चतुरनुयोग सकल अतिचार।
पूजा-दान-समाधि-व्रतादिक, समझाए सब सविस्तार॥ ७॥

❁

केवल सुनना नहीं जरूरी, सुना बने जीवन का अंग।
जीवन एक परीक्षा स्थल, जब भी आवें कठिन प्रसंग॥
साम्यभाव रख उन्हें संभालें, भंग नहीं हो व्रत-आचार।
हम अपना जीवन ही बनालें, रत्नकरण्डश्रावकाचार॥ ८॥

❁

श्रीमुनिवर-प्रवचनमंजूषा, श्रावक घर ले जाते थे।
बारम्बार श्रवित अंशों को, घर मिलकर दुहराते थे॥
जब तक सच्चा याद न होता, खूब लगाते थे घौटा।
श्रम, एकाग्रता आवश्यक है, पाठ बड़ा हो या छोटा॥ ९॥

❋

पूज्यपाद आचार्यश्री का, 'सर्वार्थसिद्धि' नाम का ग्रंथ।
स्वाध्याय हेतु विस्तारा, आर्जवसागरजी निर्ग्रंथ॥
उमास्वामि आचार्यश्री की, 'मोक्षशास्त्र' अनुपम रचना।
सर्वार्थसिद्धि उसकी है टीका, अति औचित्य चयन करना॥ १०॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागर की, है उत्तम प्रवचन शैली।
तलस्पर्शी ज्ञान आपका, यशः कीर्ति सब में फैली॥
सच है, नहीं फूल की खुशबू, कहीं बुलाने जाती है।
पर, भौंरों की भीड़ स्वयं ही, आकर्षित हो जाती है॥ ११॥

❋

रोज पूज्यश्री के प्रवचन में, मुनिश्री जिनभूषण आते।
अमृत पीते, नहीं अघाते, और-और मन ललचाते॥
बीच-बीच में जिज्ञासाएँ, मुनिवर रखते बारम्बार।
पाकर उत्तम समाधान को, मुनि मन हो जाता गुलजार॥ १२॥

❋

श्री ब्रह्मचारी संजय भैया, श्री कुमारजी ब्रह्मचारी।
श्री ब्रह्मचारी कुलभूषण वे, प्रवचन सुने लाभकारी॥
अन्य-अन्य बहुतेरे साधक, कई-एक जिज्ञासु जन।
नियमित आते गुरुचरणों में, सुनते श्रद्धा-सह प्रवचन॥ १३॥

❋

कातन्त्र व्याकरण रूपमालिका, लौह चनोंवत कठिन रही।
ब्रह्मचारी श्री कुलभूषण को, की अध्यापित पूज्यश्री॥
जितना चना चबाओगे तुम, मिलेगी उतनी अधिक मिठास।
यही खासियत व्याकरण की, उसे चाहिए सतताभ्यास॥ १४॥

❁

ब्रह्मचारी जी श्री कुमार ने, आगे चल मुनिव्रत धारा।
श्री सुपार्श्वसागर के नाम से, अधुना लगता जयवारा॥
श्री ब्रह्मचारी कुलभूषणजी, बने विनीतसागर महाराज।
उपाध्याय पद के अधिकारी, आर्जवनिधि जी हो गए आज॥ १५॥

❁

जैसे किसी राज्य की मुद्रा, होती है उसकी पहचान।
वैसे जैन दिगम्बर मुनि की, पिच्छी ही होती पहचान॥
जैसे श्वासोच्छवास के बिना, नहीं सुरक्षित रहते प्राण।
वैसे मोर पंख की पिच्छी जैन साधु की होती जान॥ १६ ॥

❁

चातुर्मास अनन्तर होता, सदा पिच्छिका परिवर्तन।
नवनिर्मित पिच्छिका मुनि को, देते साधक श्रावकजन॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, रखते अपना हृदय उदार।
साधु-श्रावक सभी जनों प्रति, उनके मन वात्सल्य अपार॥ १७॥

❁

श्रावक श्री बी.के. पाटिल ने, किया निवेदन आर्जवनिधि।
नव पिच्छिका देना चाहूँ, मुनि महाबल यथा विधि॥
श्रीमुनिवर ने सुना निवेदन, नई पिच्छिका निर्मित की।
पाटिल जी ने इनसे लेकर, महाबलजी अर्पित की॥ १८॥

❁

श्रीमुनिवर से प्राप्त प्रेरणा, श्रावक जन जागा उत्साह।
गुरु चरणों में दृढ़ प्रतिज्ञ हो, शुरू किया नियमित स्वाध्याय॥
माता-बहनों में रुचि जागी, देव-शास्त्र-गुरु शरणा ली।
पूजन-दर्शन-स्वाध्याय में, होगा नहीं प्रमाद कभी॥ १९॥

नवम-सोपान

श्रवणबेलगोला चातुर्मास-१९९३

१. मुनिश्री का श्रवणवेलगोल में पदार्पण।

२. भट्टारक परम्परा और दक्षिण भारत।

३. श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी द्वारा मुनिश्री की आगवानी।

४. आचार्यश्री के अन्य 4 शिष्य भी यहाँ पधारे।

५. सभी ने चातुर्मास स्थापित किया।

६. श्री गोम्मटेश बाहुबली का महामस्तकाभिषेक।

७. आर्जवसागरजी द्वारा-उभय पर्वत जिनालयों के दर्शन लाभ।

८. श्री गोम्मटेश की प्रतिमा के निर्माता चामुण्डराय।

९. श्री गोम्मटेश प्रतिमा का दर्शन लाभ।

१०. अन्य संघों की परम्पराओं का ज्ञान।

११. आहारचर्या में अन्तरायों का क्रम जारी।

१२. दावणगेरे को प्रस्थान।

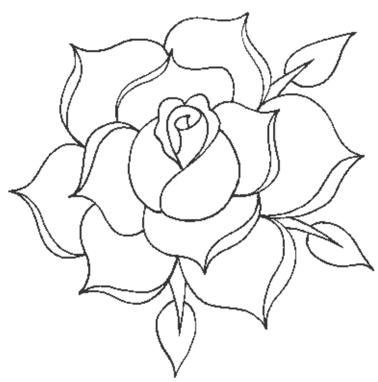

नँ

नवम-सोपान

श्रवणबेलगोला चातुर्मास-१९९३

समय नहीं चलता पैरों से, पंख लगा उड़ जाता है।
चातुर्मास व्यतीत हो गया, पता नहीं चल पाता है॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, चातुर्मास सम्पन्न हुआ।
'श्रवणबेलगुल' लक्ष्य बनाकर, पूज्यश्री का गमन हुआ॥ १॥

❋

शेष रहा था कुछ हि क्षेत्र जो, लखने उसे किया विहार।
उगार, ऐनापुर, गुण्डवाड़जा, वस्तवाड़ से तेरदाल॥
हलंगड़ी की देख गुफाएँ, यलट्टी, जमखण्डी गये।
बीजापुर सहस्रफणी से, बाबानगर के दर्शन भये॥ २॥

❋

इण्डी, दुधनी, आलंद में सु-जैनधर्म की ध्वज फहरी।
आये अन्य मती साधु भी, मुनिवर कीर्ति हुई गहरी॥
मुनिवर स्वभावसागरजी से, जब संदेश पास आया।
चलें साथ आर्जवसागर हम, दक्षिण पुण्योदय आया॥ ३॥

❋

श्रवणवेलगोला में हम सब, योगसागरादि पांच सभी।
कर चौमासा गुरुकृपा से, महाभिषेक भी लखें सभी॥
सोलापुर में अविरल पहुँचे, मुनिवर आर्जवसागरजी।
स्वभाव व सुखसागर मुनिवर, आये शुभ आगवानी की॥ ४॥

❁

कुछ वर्षों से मिलन हुआ था, श्राविका आश्रमचर्या की।
साथ हुए थे प्रवचन भी जहँ, और तत्त्व की चर्चा की॥
श्रवणवेलगोला का निश्चित, यात्रा का शुभयोग बना।
भिन्न दिशा मार्गों से पहुँचे, शताधिक साधु संयोग बना॥५॥

❁

आर्जवमुनिवर महाराष्ट्र हो, फिर कर्नाटक पधराये।
समझ मराठी कुछ-कुछ आती, कन्नड़, स्वल्प समझ पाये॥
पर जैसी आवश्यक होती, राह बना ली है जाती।
इसीलिए तो आवश्यकता, आविष्कार माँ कहलाती॥ ६॥

❁

जैसे पवन प्रवाहित रहता, रुकता है इक ठाँव नहीं।
वैसे मुनिवर आर्जवसागर, गिनते-शहर या गाँव नहीं॥
फैल रही चहुँदिश हरियाली, करती थी ए.सी. का काम।
वृक्ष श्रीफल करों में लेकर, करते स्वागत, नम्र प्रणाम॥७॥

❁

नगर-ग्राम को उपकृत करते, श्रवणबेलगुल पधराये।
आस-पास के बहु श्रावक जन, स्वागतार्थ दौड़े आये॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी श्रवणबेलगुल आये हैं।
महामस्तक अभिषेक बाहुबलि, मिलकर सभी मनाए हैं॥८॥

❁

जब आया संक्रान्तिकाल था, मुनि बनना था कार्य कठिन।
जैन धर्म की रक्षा करने, आगे आये कुछ सज्जन॥
वे ही भट्टारक कहलाये वस्त्र गेरुआ धारे हैं।
पगड़ी, गाड़ी, मठ में रहते, वैभव कुछ धन वाले हैं॥ ९॥

❁

किसी समय में धर्म-सुरक्षा, हित जलते अंगारे थे।
जान हथेली ऊपर रखकर, वस्त्र गेरुआ धारे थे॥
अनादि कालिक धर्म हमारा, हो जयवंतों सदा-सदा॥
तब दक्षिण के कर्नाटक में, आइ भट्टारक परम्परा॥ १०॥

❁

भट्टारक श्री चारुकीर्ति ने, श्री मुनिवर सम्मान किया।
चातुर्मास स्थापित करने, बारम्बार प्रणाम किया॥
आर्जवनिधि ने स्वीकृति देकर, सकलजनों की पूरी आश।
यथा समय औ यथा विधि गुरु, किया स्थापित चातुर्मास॥ ११॥

❁

विद्यासागर के उपवन में शोभित पुष्प अनेकानेक।
ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग सभी में, रखता है महत्व प्रत्येक॥
आर्जवसागर योग-स्वभाव, पवित्र-सुखनिधि यहाँ मिले।
देख परस्पर समाचार-सह, सबके मानस कंज खिले॥ १२॥

❁

पाँचों सागर एक साथ हो, श्रवणबेलगुला लहराये।
लगा सभी को जैसे पाण्डव, मुनिव्रत धार पुनः आये॥
संघ साथ ले यहाँ विराजे, वर्धमानसागर महाराज।
अन्य अनेक साधु पधारे, संघ साथ में चातुर्मास॥ १३॥

❁

रयणनिधि-पुण्यसागरजी-हितसागरजी पधराये।
संघ आर्यिका, मुनिसंघ भी, चातुर्मास करने आये॥
भट्टारक श्री चारुकीर्ति जी, गये सभी साधुओं के पास।
श्रीफल भेंट, किया निवेदन, करें यहीं पर चातुर्मास॥ १४॥

❋

गोम्मटेश श्रीबाहुबलि का, होगा महामस्तक अभिषेक।
उसे देखने पधराये हैं, साधु-संघ अनेकानेक॥
भारत के कोने-कोने से, दर्शक-भक्त भी आयेंगे।
कर अभिषेक श्रीबाहुबली का, अतिशय पुण्य कमाऐंगे ॥ १५ ॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, अक्षय पुण्य कमाया है।
चन्द्र-विन्ध्यगिरि जिन दर्शन का, दैनिक नियम बनाया है॥
शिलालेख पढ़ ग्रहण किया है, दक्षिण भारत का इतिहास।
जैनधर्म के जयकारों से, कब गूँजे धरती-आकाश॥ १६ ॥

❋

फिट सत्तावन, एक शिला की, प्रतिमा कब निर्माण हुई।
किसने-कब-यह बनवाई है, शिलालेख से ज्ञात हुई॥
धन्य-धन्य वह 'अज्जिगुल्लिका' उसकी लुटिया का वह जल।
जिसने शिख-नख ढलवाया था, बाहुबली प्रतिमा अविरल॥ १८ ॥

❋

धन्य-धन्य चामुण्डरायजी, जिनने प्रतिमा बनवाई।
जिसकी भक्तिवशात् बनी यह, धन्य-धन्य है वह माई॥
धन्य-धन्य वह शिल्पी जिसने, प्रतिमा का निर्माण किया।
धन्य-धन्य वह शिला की जिसने, गोम्मटेश का रूप लिया॥ १९ ॥

❋

कभी चन्द्रगिरि-जिन चरणों में, घण्टों ध्यान लगाते थे।
कभी विन्ध्यगिरि-बाहुबली के दर्शन कर हर्षाते थे॥
देह देवालय, मनोवेदिका, नमन द्वार से पधराकर।
पलक किवाड़ लगा लेते थे, बातें करते बैठाकर॥ २०॥

❁

एक ओर तो मुनिश्री ने, लाभ लिया अभिषेक महा।
तथा दूसरी ओर पूज्यश्री, मुनि संघों सम्पर्क रहा॥
कौन संघ की, क्या परम्परा, ज्ञात हुई उपलब्धि महान्।
मिथ्या लख भट्टारक परम्परा, का भी खण्डन किया सुजान॥ २१॥

❁

कर्नाटक के पुण्य कर्म ने, अपना जोर दिखाया है।
सालिग्राम, हासन, अडगुर के, भविजन मन ललचाया है॥
सभी जगह के लोग चाहते, मुनिवर हमें ज्ञान भर दें।
शीश नवाते नगर पधारें, मम जीवन निज सम कर दें॥ २२॥

❁

महामस्तक अभिषेक महोत्सव, गरिमामय सम्पन्न हुआ।
संघ-चतुर्विध, श्रेष्ठी, नेता, बहुसंख्या आगमन हुआ॥
जैसे पक्षी जल छोड़कर समय प्रात उड़ जाते हैं।
वैसे संघ चतुर्विध दर्शक लक्ष्य-मार्ग बढ़ जाते हैं॥ २३॥

❁

देश प्रमुख शंकरदयाल वे, आये राष्ट्रपति साहब।
सी.एम. वीर मोहली लाये, पी.एम. देवगौड़ साहब॥
बाहुबली शीश नवाया, रजत पुष्प वर्षाये थे।
सब मुनियों को सादर नमकर, मन में बहु हर्षाये थे॥ २४॥

❁

दिया आशीष श्री आर्जवनिधि, समारोह का अंत हुआ।
श्रवणबेल से श्रीमुनिवर का, हासन दिशि में गमन हुआ॥
दक्षिण भारत 'दावणगेरे' अपना लक्ष्य बनाया है।
कार्कल, मूढ़बिद्री भी जाकर, सबका मन हर्षाया है॥ २५॥

❁

कारण 'दावणगेरे' श्रावक, श्रीफल लेकर आये थे।
सादर, सविनय गुरुचरणों में, श्रद्धाविनत चढ़ाये थे॥
बोले करुणासागर मुनिवर, हम सब की यह पूरो आस।
सन् चौरानवें आपश्री का, हमें चाहिए चातुर्मास॥ २६॥

दशम-सोपान

दावणगेरे-चातुर्मास-१९९४

१. चातुर्मास की स्थापना।

२. कक्षाओं का नियमित संचालन।

३. 'जैनागम-संस्कार' ग्रन्थ प्रणमन प्रारम्भ।

४. विहार काल में रचना क्रम जारी रहा।

५. श्रावकों संतुष्टि की अभिव्यक्ति।

६. मुनिश्री का तमिलनाडु को विहार।

ॐ

दशम-सोपान

दावणगेरे (कर्नाटक) १९९४

मुनिश्री का मन परम् पारखी, जान गये सब गहराई।
कितनी प्यास लगी चातक को, अच्छी तरह समझ आई॥
स्वीकृत देकर भक्तजनों को, श्री आर्जवनिधि पूरी आस।
दावणगेरे कर्नाटक में, हुआ चौरानवै-चातुर्मास॥ १॥

❁

ब्रह्मचारी थे नरेश भैया, जिनके थे शुभ उज्ज्वल भाव।
मुझे बढ़ा दो मोक्षमार्ग में, सद्गति में बस होय पड़ाव॥
नरेश अतुलसागर क्षुल्लक हो, पायप्पा ने झुकाया शीश।
धवल वस्त्र को धारण कीना, आर्जवनिधि का पा आशीष॥ २॥

❁

भगवन् पार्श्वनाथ चरणों में, किया स्थापित चातुर्मास।
श्रावकजन कल्याण दृष्टि रख, शुभारम्भ की धार्मिक क्लास॥
रत्नकरण्डश्रावकाचार को, गुरुवर रोज पढ़ाते थे।
आत्मसात् करते थे श्रावक, आगे बढ़ते जाते थे॥ ३॥

❁

सतत ज्ञान-उपयोगी गुरुवर, आर्षग्रन्थ में रसिकपना।
जन सामान्य हितार्थ ग्रन्थ को, हिन्दी देते सरल बना॥
'दावणगेरे' चतुर्मास भी, इसी कार्य में समय दिया।
'जैनागम संस्कार' ग्रंथ का, प्रणयन मुनिवर शुरु किया॥ ४॥

❁

शिक्षण शिविर लगाने गुरुवर, प्रश्नोत्तरशैली मनहार।
कठिन विषय को कम शब्दों में, मुनिवर देते शीघ्र उतार॥
करें विषय को ग्रहण सभी जन, भाषा सरल-सुवाच्य रहे।
यही लक्ष्य दृष्टि में रखकर, मुनिश्री उत्तर पाच्य कहे॥ ५॥

❁

प्रवचन काल श्रीमुनिवर से, श्रावक-श्रोता प्रश्न किए।
सरल-सुगम भाषा में उनको, समाधान मुनिराज दिए॥
पूर्ण व्यवस्थित कर प्रश्नोत्तर, उनको दिया ग्रंथ आभार।
शिक्षण-संस्कार उपयोगी, ग्रंथ '**जैनागम संस्कार**'॥ ६॥

❁

'जैनागम-संस्कार' नाम का, यह इक केवल ग्रंथ नहीं।
अपितु समग्र जैन आगम का, मिलता रस एकत्र यहीं॥
बहुगुणमंडित रत्न अपरिमित, भरे एक विंशति अध्याय।
जो हित चाहो बन्धु स्वयं का, इसका करो सतत स्वाध्याय॥ ७॥

❁

बरगद वृक्ष न अल्पकाल में, होता है बढ़कर छायादार।
उसे चाहिए वर्षों का श्रम, तब होता पुष्पित फलदार॥
विहार काल भी अतिश्रम करके, मुनिवर किया ग्रंथ तैयार।
उनके पावन चरणकमल में, नमन हमारा बारम्बार॥ ८॥

❁

'दावणगेरे' ग्राम निवासी, फूले नहीं समाये थे।
झूम-झूम कर नाचे-गाये, रोम-रोम हर्षाये थे॥
बहुतों के नयनों से प्रकटी, स्वच्छ-शुभ्र-मोती-माला।
अहो भाग्य जो पुण्योदय से, पीने मिला धर्म-प्याला॥ ९॥

❁

साधु होते पवन स्वभावी, रुकते नहीं सदा गतिमान।
आज यहाँ अमृत बरसाते, कल वहाँ देते जीवन दान॥
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, तमिलनाडु को हुआ गमन॥ १०॥

❁

पहले पहुँचे हाबेरी से, वीरापुर शिमोग्गा जान।
वचनों के विखराये मोती, होसदुर्ग में कर व्याख्यान॥
तुमकूर में धर्म सुनाकर, बैंगलोर को गमन किया।
चन्द्रगिरि, जय, विजय वा विमानपुर में भ्रमण किया॥ ११॥

❁

होसूर हो कृष्णागिरि फिर, तिरुवन्नामलै हुआ प्रवेश।
सोमासपाडी, वरुंदलाकुण्डु, पोन्नूरमलै में किया निवेश॥
बीच-बीच श्रावक बस्ती-जैनों की थोड़ी-थोड़ी।
कर्नाटक के लोगों के सह-मारवाड़ी की थी जोड़ी॥ १२॥

❁

सबने मिलकर श्रीमुनिवर का, विहार खूब करवाया था।
डी.जी.पी. श्रीपालन ने, अतिशय पुण्य कमाया था॥
पुलिस लगाकर मुनिवर रक्षा, करते रहे रोज दिन-रात।
नये प्रदेश में आये मुनिवर, प्यासे हम मम झुकता माथ॥ १३॥

एकादश-सोपान

पोन्नूरमलै-चातुर्मास-१९९५-९६

१. भारत में तमिलनाडु की स्थिति।

२. द्रविड़ देश का अंग है तमिलनाडु।

३. भ.महावीर का समवशरण द्रविड़ देश में आया था।

४. तमिलनाडु है आचार्यों-मुनियों की जन्मस्थली।

५. बिखरे पुरातत्त्व से इसके वैभव का पता चलता है।

६. यहाँ जैनों पर क्रूरतम अत्याचार हुए।

७. अत्याचारों के पीड़ित भागे जैन ही आज के नैनार हैं।

८. अत्याचारों से पीड़ित हो बहुतों कोधर्मपरिवर्तन करना पड़ा।

९. जैन मुनियों से ही तमिलनाडु का विकास हुआ।

१०. जैन मुनियों पर उपसर्ग-बाधायें।

११. जैन शास्त्रों की होली-सी जला दी।

१२. फलस्वरूप आजकल केरल और तेलगू-आन्ध्रप्रदेश में जैन नाम मात्र-से मिलते।

१३. तमिलनाडु में जैन कहीं-कहीं है। दुर्दशा ग्रस्त प्रदेश की मुनिश्री आर्जवसागर ने खबर ली।

१४. विहार काल में यत्र-तत्र उपसर्ग हुए।

१५. पोन्नूरमलै में प्रवेश।

१६. भाषा की परेशानी, भाषाएँ सीखी ही नहीं, साहित्य भी रचा।

१७. मुनिश्री ने आचार्य कुन्दकुन्द की तप शैल गुफाओं में ध्यान किया।

१८. पोन्नूरमलै में 1995-96 के दो चातुर्मास, अभूतपूर्व प्रभावना की।

१९. सर्वार्थसिद्धि और इष्टोपदेश का स्वाध्याय कराया ।

२०. परम तपस्वी मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज।

२१. रक्षाबंधन पर्व सोत्साह मनाया गया।

२२. मुनिश्री के सन्निधान कल्पद्रुम महामंडलविधान का आयोजन।

२३. मुनिश्री के कारण क्षेत्र का विकास एवं धर्मप्रभावना।

२४. ''तिरुमलै'' में प्राप्त अतिशयकारी प्रतिमा के सन्निधान में हुआ विधान।

२५. मुनिश्री के प्रवचनों का हितकर प्रभाव।

२६. 'नैनार' मुनिश्री के प्रवचन सुनने आते थे।

२७. 'प्रतिमाजी' पंचकल्याणक।

२८. क्षुल्लकश्री सोमकीर्ति का स्थितिकरण।

२९. लेखनीय प्रसंग।

३०. यथानाम तथा गुणा: मुनिश्री।

३१. पोन्नूरमलै से विहार, पुन: पोन्नेरमलै १९९६।

नँ

एकादश-सोपान

तमिलनाडु चातुर्मास-१९९५-१९९६

रखें कमर पर हाथ, खड़े हों, बनती भारत की तस्वीर।
पैर हमारे तमिलनाडु है, माथा है जम्मू-कश्मीर॥
गल पंजाब, पेट एम.पी., दाँयी कुहनी राजस्थान।
बाँयी ओर बिहार, उड़ीसा, दिल्ली दिल, यू.पी. है जान॥ १॥

❋

इस प्रकार भारत के दक्षिण, ''तमिलनाडु'' है प्रान्त बना।
मुनिवर सन्निधि दर्शन करके, जीवन धन्य करे अपना॥
तमिल-तैलगु-कर्नाट-केरल, दक्षिण अंग कहे हैं चार।
''द्रविड़ देश'' के रूप में इनको, किया गया अब तक स्वीकार॥ २॥

❋

महावीर स्वामी का आया, द्रविड़ देश भी समवशरण।
अतः सिद्ध है महावीर से, पहले यहाँ था जैन धरम॥
महावीर निर्वाण अनन्तर, तमिलनाडु में जैन धरम।
पुष्पित-फलित रहा संतों से, यथा स्थिति रही चरम॥ ३॥

❋

चेर-चोल औ पांड्यवंश के, राजा पालें जैन धरम।
उनके संरक्षण को पाकर, धर्मप्रभावना हुई परम॥
श्रुतकेवली भद्रबाहु के, शिष्य विशाखाचार्य विहित।
बारह हजार मुनि साथ पधारे, करने आये स्वपर का हित॥ ४॥

❋

कुन्दकुन्द आचार्य की भी, तपोभूमि है यही प्रदेश।
मूल संघ की कर स्थापना, की प्रभावना धर्म विशेष॥
यहाँ विराजे शैल गुहाओं, ज्ञान-ध्यान-तप वचन आगम।
कालान्तर में कुन्दकुन्द से, भूमि बन गई महाप्रणम्य॥ ५॥

❋

जैसे उत्तर हुए तीर्थंकर, वैसे यहाँ आचार्य-मुनि।
उनके द्वारा धर्मप्रभावना, होती रही है सहस्रगुनी॥
पूज्यपाद-समन्तभद्र-अकलंक, विद्यानन्द-वादीय महान्।
श्रुत आराधना, संरक्षण-सह, दिया संस्कृति का अवदान॥ ६॥

❋

'गद्यचिन्तामणि' प्रणयनकर्ता, तार्किकसिंह आचार्य महान्।
वादीभ सिंह सूरि ने पाया, यहीं परम भेद विज्ञान॥
देह-आत्मा भिन्न जानकर, उत्तम समाधिमरण किया।
जिनका पंडितमरण हुआ है, उनने जीवन सफल किया॥ ७॥

❋

वैभवशाली पुरातत्त्व की, विपुल सम्पदा प्राप्त यहाँ।
जितना वैभव यहाँ प्राप्त है, मिलता है अन्यत्र कहाँ॥
तपोभूमि, साधना स्थल, वृहद् जिनालय वा जिनबिम्ब।
गोपुर-शिखर-गर्भगृह-मण्डप, शिलालेख वा मानस्तंभ॥ ८॥

❋

भवन खंडहर बता रहे हैं, कैसा उत्तम रहा अतीत।
वैभवशाली पुरातत्त्व को, वर्ष हजारों हुए व्यतीत॥
विपुल सम्पदा देख-देख कर, रोम-रोम हर्षाता है।
किन्तु हुए अत्याचारों को, पढ़कर दिल थर्राता है॥ ९॥

❋

है इतिहास साक्षी इसका, हुए क्रूरतम अत्याचार।
भालों की सुतीक्ष्ण नोकों से, जैनमात्र को डाला मार॥
कुछ जन प्राण बचाकर भागे, देख न पाये हाहाकार।
वे ही श्रावक बन्धु हमारे, आज कहाते हैं 'नैनार'॥ १०॥

❋

दक्षिण के लिंगायत धर्मी, पहले ये थे जैन सभी।
आन्ध्रप्रदेश 'कोमटी जाति' रहे हैं पहले जैन सभी॥
कई हिन्दु स्वीकृत करते हैं, उनके पूर्वज जैन रहे।
जैनों पर क्या बीती होगी, सब कह देते बिना कहे॥ ११॥

❋

किया धर्म परिवर्तन इनने, जैनों से हो गये अजैन।
किन्तु हैं उनके वही आचरण, जिन्हें आज पालते जैन॥
जैन-बौद्ध-वैदिक धर्मों में, बड़ा रहा संघर्ष यहाँ।
पड़े झेलने कष्ट सहस्रों, जैन जाति को तीव्र यहाँ॥ १२॥

❋

पूज्य जैन मुनि के द्वारा ही, हुआ तमिलभाषा निर्माण।
तदनन्तर उसके विकास को, किए गये प्रयत्न महान्॥
तमिल व्याकरण, पंचकाव्य भी सभी जैन मुनियों की दैन।
किन्तु विधर्मी देख सके न, जैन धर्म-जाति-सुख-चैन॥ १३॥

❋

अकलंक और निकलंक की कथा, हमको याद जुबानी है।
महावीर निकलंक के सदृश, दी लाखों कुर्बानी है॥
लाखों किया धर्म परिवर्तन, लाखों झेली तन पर मार।
लाखों जान बचा कर भागे, आज कहाते हैं 'नैनार'॥ १४॥

❋

धन्य-धन्य मुनिराजश्री हैं, जिन भाषा-साहित्य रचा।
धन्य-धन्य वे वीर हैं जिनसे, जैन धर्म अस्तित्त्व बचा॥
धन्य-धन्य महावीर जिन्होंने, धर्म सुरक्षा प्राण दिए।
धन्य-धन्य श्रेष्ठी-विद्वज्जन, जिन संरक्षण यत्न किए॥ १५॥

❋

दुष्टों के अत्याचारों की, अति ही क्रूर कहानी है।
हत!हत! श्रीमुनिराजों को, पेला तेल की घानी है॥
इसके आगे और भी सुनिये, जो भी अत्याचार किए।
जली होलिका जिनवाणी की, छै माहों तक बिना बुझे॥ १६॥

❋

जैन संस्कृति लोपित करने, हुए थे हमले पुनः-पुनः।
बने हुए हैं उनके साक्षी, खंडहर-पुरावशेष अधुना॥
किन्तु नहीं संभव हो पाया, संस्कृति लोपित कर पाना।
शेष रहा दुष्टों के हाथों, निज करनी पर पछताना॥ १७॥

❋

वनों-पर्वतों-गिरि गुहाओं, जाकर प्राण बचाये हैं।
वृक्षों के फल तोड़-तोड़ कर, अपनी क्षुधा मिटाये हैं॥
कई पीढ़ियाँ बीत चुकी हैं, किन्तु न छोड़े जैनाचार।
वे ही हैं वे वीर बन्धु जन, जिन्हें आज कहते 'नैनार'॥ १८॥

❋

धर्म-द्वेष की इस होली में, वीर बहुत से आये काम।
इसलिए तमिलनाडु में, मात्र बचा जैनों का नाम॥
केरल और तैलगू में तो, जैनों का बहु नाम नहीं।
कर्नाटक औ तमिलनाडु में, मिल जाते हैं बहुत कहीं॥ १९॥

❋

मंदिर आदि तो बड़े-बड़े, बहु मिलते न पुजारी हैं।
जगह-जगह पुरातत्त्व सम्पदा, बिखरी पड़ी हमारी है॥
चले श्री आर्जवसागरजी, करने उसकी साज-सम्हाल।
उनके पावन श्रीचरणों में, सादर सभी नमाते भाल॥ २०॥

❋

कइयक सदियाँ बीत गईं हैं, लेकिन सम्हल न पाये हम।
जितनी संख्या रही थी पहले, अब भी उससे बहुत है कम॥
मुनि-आर्यिका, साधु-संघ का, जहाँ नहीं हो सके विहार।
मुनिवर श्री आर्जवसागर ने, चीर भगाया यह अंधियार॥ २१॥

❋

सिंहवृत्ति मुनिराजश्री ने, तमिलनाडु में किया प्रवेश।
हुए उपसर्ग विहार काल में, लखकर नग्न दिगम्बर वेश॥
नगर-ग्राम से यदा विहरते, अपशब्दों की हो बौछार।
क्षमाशील, समता के सागर, मुनिवर करते शांत विहार॥ २२॥

❋

कोई उन पर कंकड़ फेके, हंसी उड़ाये, कटुक वचन।
लेकिन मुनिवर ध्यान न देते, करते जाते शांत गमन॥
विहार कराने वाले भी तो, कठिनाई से मिल पाते।
तमिल-तैलगू-मलयालम, भाषा नहीं समझ पाते॥ २३॥

❋

कहते हैं इतिहास स्वयं को, दुहराता है बारम्बार।
विहार काल मद्रास निकट में, दुर्जन आये ले तलवार॥
कारण, नग्न-दिगम्बर मुद्रा, उनने देखी नहीं कभी।
कई प्रकार के अपशब्दों की, वर्षा करने लगे सभी॥ २४॥

❋

लेकिन मुनिश्री किया न कुछ भी, तदा विद्वेषी जन प्रतिकार।
क्षमाशस्त्र को मन में धारा, बाँधा कवच पंच नवकार॥
रक्षाबंधन कथा स्मरण, तदा सभी को आया है।
मानो एक बार यहाँ फिर से, इतिहास गया दुहराया है॥ २५॥

❋

मुनिश्री का व्यक्तित्व प्रभावक, चेहरा रवि-सा दमक रहा।
लगता जैसे महापुरुष में, नूर खुदा का चमक रहा॥
मुनिवर श्री आर्जवसागरजी, हैं करुणा के कोषागार।
पुण्ययोग से दुर्जन लौटे, नमस्कार कह बारम्बार॥ २६॥

❋

कहा मुनिश्री श्रावक जन से, बाधायें तो आती हैं।
लेकिन वे हमको कुछ न कुछ, देकर के ही जाती हैं॥
मुनिवर आगे कदम बढ़ाये, करके मन में दृढ़ निश्चय।
पहुँचे नूतन सूरज बनकर, तमिल, पाण्डि पोन्नूरमलय॥ २७॥

❋

सबसे बड़ी रही थी बाधा, दक्षिण में मुनिराजश्री।
नहीं जानते ए.बी.सी.डी., तमिल-कर्नाटक भाषा की॥
सीखीं गुरुवर ने भाषाएं, समझ सके सब मन की बात।
यहाँ प्रवासी आपश्री ने, दी रचनाओं की सौगात॥ २८॥

❋

कवि हृदय मुनिराजश्री ने, भाषा तमिल रचा साहित्य।
जैनधर्म करने प्रभावना, चमक रहा बनकर आदित्य॥
त्रिंशत कविताओं का संग्रह, हुआ प्रकाशित काल तदा।
'चौबिस-ठाना' का अनुवादन, किया तमिल पठनीय सदा॥ २९॥

❋

'मलै' अर्थ होता है पर्वत, पर्वत है पोन्नूरमलै।
कर्मभूमि-सह तपोभूमि है, कुन्दकुन्द पोन्नूरमलै॥
समयसार आदिक चौरासी, पाहुड़ मुनिवर यहीं रचे।
'तिरुकुरल' इत्यादि ग्रंथ भी, पूज्यश्री ने हैं विरचे॥ ३०॥

❋

अपूर्व अतिशय सुन्दर गिरि यह, यहाँ पूज्य मुनिवर ठहरें।
कोयल गायें, बंदर नाचें, जहाँ जिनालय ध्वज पहरें॥
गुफाएँ गिरि की मन को भायीं, मुनिवर आर्जवसागर को।
फाल्गुन नंदीश्वर गुण गाया, प्रवचन भाया जन-जन को॥ ३१॥

❋

कोई कहें पाण्डि को आना, कई कहें चेन्नै आवें।
कोई कहें बंधवासी आवें, पोन्नूर न विसरावें॥
पर्व हुआ फिर पोन्नूर ग्राम, तिरुकोविल भी दर्श किया।
देसूर कर तच्चामवाड़ी, तिरुमलै है गमन किया॥ ३२॥

❋

साथी श्रावक गण दर्शाये, सड़क और वनमार्ग हैं दो।
गमन करें मुनिराज यहाँ से, पक्के सड़क मार्ग से हो॥
करते रहे विहार पूज्यश्री, सड़क मार्ग को अपना कर।
तभी हृदय ने 'लौट चलो' की, बात सुझाई श्री मुनिवर॥ ३३॥

❋

लौट चले वनमार्ग-मुनिश्री ''अरुमबलौर'' आया है ग्राम।
पता चला भू गर्भ से प्रतिमा, प्राप्त हुई अतिशय, अभिराम।
ग्राम वासियों से यह प्रतिमा, मुनिवर ने माँगी, दे दी॥
यथा समय ''पोन्नूरमलै'' पर प्रतिष्ठा हो शीघ्रवेदी॥ ३४॥

❁

श्रीमुनिवर का नाम 'आर्जव', वैसा ही है सरल हृदय।
अतिशयकारी मूर्ति ने उनको, दिखा दिया अपना अतिशय॥
महावीर स्वामी की प्रतिमा, अति ही अतिशयकारी है।
क्षेत्रोन्नति में इस प्रतिमा की, भूमिका अतिशयभारी है॥ ३५॥

❁

आर्जवनिधि के दर्शन करने, गाड़ी भर-भर जन आये।
जैन बन्धु के साथ सभी वे-जाति जन भी हर्षाये॥
तिरुमलै से आरनी करन्दै, कांची चेन्नै पधराये।
तिरुनरं वा यन्नायरमलै, पाण्डिचेरि भी कर आये॥ ३६॥

❁

चतुर्दिशा में हरियाली से, शोभित है पोन्नूरमलय।
आदि-अजित-पार्श्व-सु-वीर के, यहाँ विराजित देवालय॥
ऐलाचार्य श्री कुन्दकुन्द के, चरण सुशोभित गिरि ऊपर।
वहीं पास में बनी गुफा है, करे ध्यान मुनिश्री भीतर॥ ३७॥

❁

पौन्नूरमलै की आर्जवनिधि को, शैल गुफाएँ मन भाएँ।
इनमें ध्यान लगाते मुनिवर, ग्राम-ग्राम जाकर आयें॥
दो वर्षायोग में आपने, किये यहीं पर पुण्यप्रवास।
ज्ञान-ध्यान-तप योग साधकर, काव्य रचना वही सुवास॥ ३८॥

❁

आस-पास के गाँव मनोरम, जैनी जन करते थे वास।
एरम्बूर, आयलवाडी व, मंगलसात बंदवासी पास॥
विरदूर मुदलर, ओदलवाडी, चैय्यार, आरनी-पुदुकामूर।
तच्चामवाडी शेऊर ग्राम में, आर्जवनिधि गये कलपुडयूर॥ ३९॥

❋

गुणंवाडी, एईल करंदै, सोमासपाडी, कुरकोटैऊर।
नल्वनपलैयम, तिरुवन्मलै व, गये मुनिवर कांची, बेलूर॥
अनेक ग्राम में धर्म-पाठ की, पाठशाला थी खुलवायी।
तमिल सीखकर कई इक कविता, आर्जवनिधि ने स्व बनाई॥ ४०॥

❋

सब श्रावक जन हर्ष मनाया, मिले भाग्य से अनुपम संत।
जिनके कारण रहा यहाँ पर, षड्-ऋृतुओं में सदा बसंत॥
प्रथम किए हिन्दी में प्रवचन, भाषा सादी, भाव सरल।
धीरे-धीरे लगे बोलने, लोकल भाषा सरल तमिल॥ ४१॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, साधु समर्पित प्रति स्वाध्याय।
स्वाध्याय को कहा परं तप, रुकती है पापों की आय॥
इसीलिए गुरु आर्जवनिधिजी, स्वाध्याय नित रहते लीन।
और साथ में श्रावकजन को, रखते हैं उसमें तल्लीन॥ ४२॥

❋

सर्वार्थसिद्धि-इष्टोपदेश का, पूज्यश्री स्वाध्याय किया।
प्रात: दिन में श्रावक जन को, अति ही श्रम से ज्ञान दिया॥
यद्यपि रखते नहीं हैं दोनों, पारस्परिक भाषा पहचान।
लेकिन फिर भी श्रुताभ्यास में, हुआ न बाधक भाषा ज्ञान॥ ४३॥

❋

पर्यजन्य-वृत्ति मुनिवर तो, चाह रहे थे सब देना।
उधर रहे चातक से श्रावक, चाह रहे थे सब लेना॥
वर्ष बहुत से बीत गये हैं, आया ऐसा मेघ नहीं।
जिनको प्यास लगी हो गहरी, मिलते चातक कहीं-कहीं॥ ४४॥

❋

ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग सभी में, गुरुवर परम तपस्वी हैं।
अंतर-बाहर तपों को पालें, मुनिवर महा मनस्वी हैं॥
उत्तर-दक्षिण खान-पान में, अन्तर है अतिशय भारी।
किया स्वयं को आप तण्डुली, रहा सकल अचरजकारी॥ ४५॥

❋

रसना इन्द्रिय को जय करने, रस परित्याग किया जाता।
मुनिवर श्री आर्जवसागर को, रसनाजय में रस आता॥
ब्रह्मचर्य तब आजीवन को, नमक, शाक से लिया विराम।
क्षुल्लक पद में त्यागे काजू, खोवा, शक्कर वा बादाम॥ ४६॥

❋

श्री गुरुवर का दक्षिण भारत, वर्ष त्रयोदश रहा प्रवास।
घी-गेहूँ-आदिक को त्यागें, यथा समय करते उपवास॥
द्वाविंशति परिषह को सहकर, तन-मन को रखते हैं वश।
सदाकाल उन पर सवार हो, आवश्यक से पाते यश॥ ४७॥

❋

ज्यों चुम्बक से लोहा खिंचता, फिर होता है नहीं अलग।
त्यों श्रोता मुनिवर को सुनकर, उनसे होते नहीं विलग॥
जिसने अमृत चखा एक क्षण, पीना चाहे पुनः-पुनः।
वैसे श्रावक मुनिवर-प्रवचन, बार-बार चाहें सुनना॥ ४८॥

❋

जैसे सुमन सुगंधित होता, नहीं स्वयं का करे प्रचार।
किन्तु पवन उसकी सुगंध को, पहुँचा देती कोस हजार॥
वैसे ही श्री मुनिवर की कीर्ति, श्रोतागण पहुँचाये हैं।
कुन्दकुन्द-अकलंक ही मानों, पुनः यहाँ पधराये हैं॥ ४९॥

❋

श्रीमुनिवर की गुण गरिमा सुन, सेलम से श्रावक आये।
श्रीगुरु चरण सरोज भ्रमर बन, रोम-रोम थे हर्षाये॥
चरण-शरण मुनिवर की पाकर, किया उन्होंने वहीं निवास।
दत्तचित्त आहार कराये, वैयावृत्ति कर गुरु पास॥ ५०॥

❋

रक्षाबंधन पर्व सुअवसर, मन उत्साह समाया है।
सबने मिलकर पर्व महत्तम, सन्निधि गुरु मनाया है॥
श्रीगुरुवर ने शुभाशीष में, मंगलकारी कहे वचन।
वात्सल्य से भरा हुआ था, श्रीमुनिवर का यह प्रवचन॥ ५१॥

❋

किस प्रकार से राजा बलि ने, मुनि-संघ उपसर्ग दिया।
विष्णुकुमार मुनिराजश्री ने, कैसे उसे निवार दिया॥
सहज-सरल भाषा में मुनिवर, गद्गद् स्वर से बात कही।
करुण कथा सुन श्रोताओं के, नयनों से जलधार बही॥ ५२॥

❋

सुनकर इस उपसर्ग कथा को, पुरा कथा स्मृति आयी।
कैसे यहाँ तेल की घानी, पेले गये थे मुनिराई॥
जलती रही शास्त्र की होली, छै माहों तक बुझे बिना।
अब अन्याय न होने देंगे, दृढ़ संकल्प किया अधुना॥ ५३॥

❋

श्रीमुनिवर ने सम्बोधन में, ''वात्सल्य'' को समझाया।
गौ-वत्सवत् साधर्मी से, प्रेम परस्पर बतलाया॥
देव-शास्त्र-गुरु बिना किसी का, हो सकता उद्धार नहीं।
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको अपनों से प्यार नहीं॥ ५४॥

❋

समय प्राप्त सब ही श्रावकजन, लेकर के श्रीफल कर में।
पहुँचे चरण-शरण गुरुवर की, श्रद्धाभाव लिए उर में॥
गुरुवर हम सब चाह रहे हैं, आप सन्निधि करें विधान।
'कल्पवृक्षवत् इच्छापूरण', 'कल्पद्रुम' है उसका नाम॥ ५५॥

❋

कल्पवृक्ष मुनिराजश्री ने, दी स्वीकृति, आशीष वचन।
रक्षाबंधन-दिवस आज ही, किया गया था पात्र चयन॥
देव-शास्त्र-गुरु की साक्षी हो, उत्तम तीर्थक्षेत्र संयोग।
भाग्यवान ही पा सकते हैं, ऐसे महापुण्य का योग॥ ५६॥

❋

'पोन्नूरमलै' है क्षेत्र सुपावन, कुन्दकुन्द की तपस्थली।
उनकी परम साधना रज की, उसमें सुरभित गंध मिली॥
जंगमतीर्थ ''पोन्नूरमलै'' में, चेतन का संचार हुआ।
जब मुनिश्री आर्जवसागर का, आकर पुण्य विहार हुआ॥ ५७॥

❋

जैसे सुमन सुगंध सूंघ कर, जुड़ जाती भौरों की भीड़।
वैसे प्रतिदिन बढ़ती जाती, क्रमशः श्रोताओं की भीड़॥
कहाँ तो इक्के-दुक्के दर्शक, आते-जाते यदा-कदा।
लेकिन अब मुनविर के कारण, मेले जैसा लगे सदा॥ ५८॥

❋

''तिरुमलै'' इक तीर्थक्षेत्र है, इसके नाम अनेकानेक।
अरहंत गिरि-तिरुमलै-श्रीशैलं, आदि हन्सुगिरि इत्यादि अनेक॥
आचार्यों की तपस्थली है, है यह अतिशय क्षेत्र महान्।
चतुर्थकाल प्राचीनता लिये, यह है शान्त-रम्य स्थान॥ ५९॥

❁

'तिरुमलै' के निकट ग्राम में, प्राप्त हुई थी इक प्रतिमाजी।
सविनय लाये दिवस आज ही, पूज्य पिताश्री डी.जी.पी.॥
अतिप्राचीन रही यह प्रतिमा, उसने अतिशय बतलाया।
कहते हैं इस प्रतिमा सन्निधि, पात्र चयन बहुधन आया॥ ६०॥

❁

मुनिभक्त श्री सोहनलाल जी, ''चक्रवर्ति'' पद पाया है।
इस विधान अति आनन्द आया, रोम-रोम हर्षाया है॥
एक ओर तो महाविधान यह, दूजे सन्निधि श्रीमुनिराज।
तीजे पावन तीर्थक्षेत्र पर, चौथे मैत्री सकल समाज॥ ६१॥

❁

कल्पद्रुम मंडल विधान का, अति विस्तृत पाण्डाल बना।
उसके मध्य हुई थी अद्‌भुत, सुन्दर समवसरण रचना॥
समवसरण की चतुर्दिशा में, पूजक बैठे श्रद्धाधार।
उत्तर-दक्षिण दोनों मिलकर, पूजन-मंत्र करें उच्चार॥ ६२॥

❁

पूजन-सह प्रवचन भी होता, विषय वही जो रहे विधान।
करके श्रोता गद्-गद् होते, जिनवाणी का अमृतपान॥
समवसरण में राजित मुनिवर, उभयकाल करते प्रवचन।
लगता ऐसे जैसे मानों तीर्थंकर के खिरें वचन॥ ६३॥

❁

एक दिवस प्रवचन के मध्य में, गुरुवर मुख से खिरे वचन।
प्राप्त आय से इसी जगह पर, निर्मित होवे समवसरण॥
सेलम के श्री सोहनलालजी, पाँडीचेरी के बुधराज।
हुए संकल्पित पुण्य कार्य को, बनकर प्रतिनिधि सकल समाज॥ ६४॥

❋

महापुरुष जो कह देते हैं, वह करके दिखलाते हैं।
हस्तिदँत बाहर आकर के, भीतर कभी न जाते हैं॥
एक वर्ष के भीतर-भीतर, पूर्ण हुई सुन्दर रचना।
श्री मुनिवर आर्जवसागर, भरपूर दिया आशीष अपना॥ ६५॥

❋

चातुर्मास काल मुनिवर के, प्रवचन होते प्रति रविवार।
कई बसों से दूर-दूर के श्रोता आते बहु नर-नार॥
जिनको मिला नहीं हो पानी, मिल जाये यदि अमृत पान।
पाते वे सन्तुष्टि हृदय में, मिला पुण्य का सुफल महान्॥ ६६॥

❋

करुणासागर, सरल हृदय मुनि, वात्सल्य के पारावार।
श्रीमुनिवर के दर्शन करने, प्रतिदिन आते थे नैनार॥
अत्याचारों अन्यायों से, संभव इनने बदला वेश।
किन्तु सुरक्षित रखे आज तक, जैन धर्म संस्कार विशेष॥ ६७॥

❋

राजनीति दुश्चक्र के कारण, अथवा धार्मिक उथल-पुथल।
हुए अलग मूलधारा से, विस्थापित होकर उस पल॥
बंगाल-विहार-उड़ीसा में हैं, वे "सराक" संज्ञा पाते।
तमिलनाडु के ये विस्थापित, "श्रमण नैनार" हैं कहलाते॥ ६८॥

❋

अष्टोत्तर शत ग्रामों में ये, बन्धु हमारे वास करें।
मुनिश्री निकट बुलाकर उनको, हितकर वार्तालाप करें॥
चातुर्मास काल मुनिवर ने, जल वात्सल्य नहलाया है।
आये हमारे ही भाई हैं, पुनः-पुनः समझाया है॥ ६९॥

❁

चातुर्मास हुआ निष्ठाापित, पर्व अठाई आया है।
श्रीगुरुवर के सन्निधान में, सहउत्साह मनाया है॥
''तिरुमलै'' पथ प्राप्त प्रतिमा के, पंचकल्याणक हुए तभी।
की स्थापित गिरि के ऊपर, अवर्णनीय हैं दृश्य सभी॥ ७०॥

❁

श्री डी.जी.पी. भी पधराये, पंचकल्याणक प्रतिमाजी।
जैन संस्कृति के संरक्षक, मुनिभक्त हैं आप श्री॥
तमिलनाडु विहार काल में, अतिशय ही सहयोग रहा।
मुनिश्री के चरणकमल बने, चंचरीकवत् नाम रहा॥ ७१॥

❁

आचार्यश्री देशभूषण के, परम शिष्य जो कहलाये।
क्षुल्लकवर श्री सोमकीर्तिजी, 'चित्तामूर' मठ से आये॥
श्रीगुरुवर से किया निवेदन, रहना चाहें चरण शरण।
श्रीगुरुवर ने आगम रीत्या, किया आप स्थितिकरण॥ ७२॥

❁

वस्त्र गेरुआ धारण करना, रही परम्परा उनके साथ।
उसे त्याग कर लिया प्रायश्चित्त, सद्गुरु चरण नमाया माथ॥
धवल वस्त्र धारण करवाये, पिच्छी-कमण्डलु हाथ दिया।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर ने, शिष्य संघ में मिला लिया॥ ७३॥

❁

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
मुनिवरश्री आर्जवसागर ने, 'पोन्नूरमलै' से किया गमन॥
सब समाज मुनिराजश्री से, किया निवेदन द्वय कर जोड़।
हे भवतारक, जग उद्धारक रुकें, न जायें हमको छोड़॥ ७४॥

❁

किसके रोके रुका है सूरज, अपने पथ पर बढ़ता जाये।
किसके रोके रुका चन्द्रमा, है सब पर अमृत बरसाय॥
रमता जोगी, बहता पानी, इनका मुश्किल रुकपाना।
चलते-फिरते हैं तीरथ ये, नहीं है इनका इक ठाना॥ ७५॥

❁

अनुनय-विनय किए भक्तों ने, मुनिश्री कुछ न ध्यान दिया।
पवन सदा चलता ही रहता, उसने नहीं विराम लिया॥
श्रावक तो होते हैं मोही, बहने लगी अश्रु धारा।
लेकिन निर्मोही मुनिवर ने, किंचित् मुड़कर न निहारा॥ ७६॥

❁

नगर-ग्राम-पर्वत-वन-समतल, श्रीमुनिवर ने किया विहार।
वसुधा रही कुटुम्ब पूज्यश्री, किया सभी का सद्उपकार॥
गर्मी-सर्दी गिनी न कुछ भी, सही दिगम्बर तन बौछार।
आये जो उपसर्ग-परीषह, किए सरल समता स्वीकार॥ ७७॥

❁

जो-जो तीरथ मिले राह में, उनको लक्ष्य बनाया है।
भाव सहित दर्शन-वन्दन कर, अक्षय पुण्य कमाया है॥
पुरातत्त्व को देख आपश्री, स्वर्ण अतीत का आया ध्यान।
कैसे हो इनका संरक्षण, कैसे हो इनका उत्थान॥ ७८॥

द्वादश-सोपान

कन्नलम-१९९७, विशाखाचार्य तपो निलय-१९९८-२०००, नल्लवनपालयम-१९९९, आरनी-२००१, शिवमोग्गा-२००२, कोपरगाँव-२००३ में चातुर्मास

1. 'कन्नलम' 1997 चातुर्मास में 'तीर्थोदय-काव्य' की रचना प्रारम्भ।
2. षोडसकारण व्रत के साथ काव्य रचना।
3. प्रात: काव्य सृजन, अपरान्ह श्रावकों को सुनाना।
4. 1998 में 'विशाखाचार्य निलय' महाकाव्य पूर्ण हुआ।
5. 1999-2000-2001-2002 चातुर्मास पूर्ण कर कोपरगाँव को विहार।
6. दक्षिण भारत के चातुर्मास की उपलब्ध्यिाँ।
7. लेखनीय प्रसंग।
8. मुनिश्री द्वारा दक्षिण भारत में प्रभावना।
9. दक्षिण भारत वासियों के उद्गार।

द्वादश-सोपान

कन्नलम-१९९७, विशाखाचार्य तपो निलय-१९९८-२०००, नल्लवनपालयम-१९९९, आरनी-२००१, शिवमोग्गा-२००२ चातुर्मास

यह विचार कर श्रीमुनिवर ने, धर्म-सभा वृत सम्बोधन।
किया जागृत सब समाज को, करके जगह-जगह प्रवचन॥
प्राप्त हुआ जो पूर्व जनों से, वह प्राणों से प्यारा है।
उसका है सम्यक् संरक्षण, यह कर्त्तव्य हमारा है॥ १॥

❋

''नैनारश्रमण'' जो मिले मार्ग में, सबको हृदय लगाया है।
आओ, जुड़ो मूलधारा से, श्रीमुनिवर समझाया है॥
श्याम-श्वेत पंखों से उड़कर, वर्ष पंचानवै हुआ अतीत।
''पोन्नूरमलय'' पुनि-चातुर्मास में, सन् छियानवे हुआ व्यतीत॥ २॥

❋

तमिलनाडु के ग्राम कन्नलम, सन् सत्तानवै चातुर्मास।
हुआ स्थापित श्रीगुरुवर का, स्वाध्यायरत रहा प्रवास॥
राजा निर्मित यहाँ जिनालय, उसके पीछे है गिरिराज।
गिरवर-स्थित वृहद् गुफा है, उस में बैठे श्रीमुनिराज॥ ३॥

❋

शैल गुहा में बैठे मुनिवर, आतम ध्यान लगाते थे।
अथवा ''काव्य-तीर्थोदय'' रचना, करने में रम जाते थे॥
गुहा विराजे, ध्यान लगाते, रचना करते श्रीमुनिराज।
शोभा पाते कुन्दकुन्द ज्यों, समयसार रचते ऋषिराज॥ ४॥

❁

श्रीमुनिवर का, ग्राम कन्नलम, रहा अनूठा चातुर्मास।
किया आपने षोडसकारण, एक पारणा इक उपवास॥
श्रीमुनिवर उपवास दिवस का, प्रातः करते काव्य सृजन।
अपरान्हकाल की धर्मसभा में, उसे हि गाते श्रोतागण॥ ५॥

❁

विशाखाचार्य तपोनिलय, सन् अट्ठानवै चातुर्मास।
श्रीमुनिवर का हुआ स्थापित, रखता है महत्त्व कुछ खास॥
काव्य तीर्थोदय षोडसकारण, पूर्ण हुआ इस ही स्थान।
सन् अट्ठानवै चातुर्मास का, कह सकते उपलब्धि महान्॥ ६॥

❁

श्रीमुनिवर का काव्य-'तीर्थोदय' रत्नत्रय कारणभूत।
षोडसकारण भावन वर्णन, महाकाव्य में हुआ प्रसूत॥
श्रावक-मूलाचार शास्त्र यह, है अध्यात्म ग्रन्थों का सार।
आतम शुद्धि प्राप्ति, भव्यजन कर सकता अपना उद्धार॥ ७॥

❁

शीतकाल में हुई प्रतिष्ठा, पञ्चकल्याणक महाउत्सव।
अजितनाथ व अनन्तनाथ सह, समवसरण का था उत्सव॥
दोनों समवसरण की भी जिन, प्रतिमाएँ शताधिक थीं।
विशाखाचार्य का बिम्ब साथ में, आश्रम की उपकारक थीं॥ ८॥

❁

नल्लवन पालयम में हुआ, सन् निन्यानवै चातुर्मास।
हुआ जिनालय नव निर्मित जहँ, संस्कार मय वर्षावास॥
शीतकाल में धूमधाम से, पञ्चकल्याणक हुआ महा।
ब्राह्मी आदि बन शुभव्रत धारे, मोक्ष-मार्ग स्वीकार जहाँ॥ ९॥

❋

पोन्नूरमलै के तपोनिलय-विशाखाचार्य आश्रम में।
आप पधारे सम्मेलन उस, 'सारस्वत्' के उपक्रम में॥
उत्तर-दक्षिण विद्वत्जन का, एक जगह पर मिलन हुआ।
अनेकान्त मय वाणी सुनकर, भवि अन्तस् तम शमन हुआ॥ १० ॥

❋

विद्वत् बोले कैसे मुनिवर, उत्तर से दक्षिण आये।
कैसे प्रवचन देत तमिल में, कैसे सबके मन भाये॥
ध्यान मण्डप में ध्यान लगाते, आर्जवसागर ये मुनिवर।
विशाखाचार्य तपोनिलय के, प्रेरणास्रोत हैं ये मुनिवर॥ ११ ॥

❋

रोज पास में तपोगिरि पर, विशाख सूरि के चरणों में।
गुफा विराजें ध्यान लगाते, देर लौटते घण्टों में॥
रोज पढ़ाते व्रती लोगों को, बहिनों को प्रवचन देते।
तमिलग्रन्थ भी हिन्दी में वा, नई तमिल में कह देते॥ १२ ॥

❋

इसी तरह श्री विद्यासागर, गुरुकुल श्रुत भण्डार बना।
कवि आचार्य ज्ञानसागरजी, उदासीन आश्रम सु-तना॥
एलाचार्य कुन्दकुन्द पर, औषधालय भी बनवाया।
दयोदय नामक गौशाला से, गुरु आशीष ने रंग पाया॥ १३ ॥

❋

सम्यग्ज्ञान, सिद्धान्तभूषण, रखे पाठशाला में पढ़।
मुनिवर रचित व पूर्वाचार्यों की, कृतियों को पढ़े सुखद॥
पांच वर्ष शास्त्रों को पढ़कर, बहुतायत विद्वान बने।
कुछ तो प्रतिमाधारी बनकर, गुरुकुल के उत्थान बने॥ १४ ॥

❀

तथाहि सुगुरु आर्जवसागर से, ब्रह्मी सुश्राविका आश्रम।
तपोनिलय में बहिनों हेतु, बना स्वतः जो बिन परिश्रम॥
तमिलदेश के सत् युवकों को, हिन्दी, संस्कृत सिखलाई।
जयपुर-सांगानेर भेजकर, विद्वत्ता भी दिलवायी॥ १५॥

❀

तपोनिलय में तीन दिवस का, वृहद्ज्ञान का हुआ सुयज्ञ।
सारस्वत् सम्मिलन नाम से, जहाँ आये भारत के विज्ञ॥
विषय अहिंसा, अनेकान्त था, कुन्द-कुन्द साहित्य महान।
सुने सभी जन खुले-आमवह, बढ़े जैन धर्म का ज्ञान॥ १६॥

❀

विनयशील वे विद्वत्गण आ, आर्जव निधि के निकट वशे।
स्व-स्व लेखों को प्रस्तुत कर, गुरु वचन सुन जहाँ लसे॥
डी.राकेश, अशोक आदि वे, ब्रह्मचारी भी आये थे।
शिवचरणलाल व सिंहचन्द जहँ, जनता को सब भाये थे॥ १७॥

❀

तमिल देश के श्रीपालन व, धन्य कुमार आदि विद्वान।
तीन दिवस तक वक्तव्यों से, पाते थे जनता सम्मान॥
तमिल साहित्य भी मेरुमंदर, तिरुकुरल व नालडियार।
नीलकेशि, शिल्पधिकार, आदि सुनाया जिन वच सार॥ १८॥

❀

महावीर स्कूल भी देखो, इसी जगह खुलवाया था।
रची प्रार्थना तमिलगान में, जैन धर्म गुण गाया था॥
लौकिक सह श्री जैनधर्म की, शुल्क रहित शिक्षा पाते।
भोजन, वसन, रहवास यहीं का, छुट्टी में शिशु घर जाते॥ १९॥

❁

सन् दो सहस्र एक, आरनी-पुदुकामूर विराजे थे।
वर्षायोग की प्रभावना कर, कांचीपुरम् पधारे थे॥
तथा लौटकर वहीं आरनी, नये मंदिर में आये थे।
जिनालय पंचकल्याणक से, भविजन भाग्य जगाये थे॥ २० ॥

❁

इसी वर्ष मोटूर ग्राम व, वेलूर नगर में मंगलमय।
पंचकल्याणक मुनिवर द्वारा, हुआ पूर्ण जो गरिमा मय॥
सप्त वर्ष तक प्रवास करके, कर्नाटक लौटे मुनिराज।
बेंगलोर तक तमिल लोग सब, गाते आये गुरु-जयकार॥ २१ ॥

❁

दक्षिण भारत के प्रवास में, बीस बने प्रतिमा धारी।
ब्रह्मचर्यव्रत ले बहुतों ने, की आगे की तैयारी॥
श्रीमुनिवर से प्राप्त प्रेरणा, कईयक त्यागा निशा अशन।
हुए प्रतिज्ञाबद्ध बहुत से, करेंगे प्रतिदिन जिनपूजन॥ २२ ॥

❁

तमिलनाडु की जिन बहिनों ने, मुनिवर से प्रतिमा ली थी।
आचार्यश्री से दीक्षित होकर, दोनों हुईं आर्यिकाजी॥
कर्नाटक में दो भैयाजी, श्रीमुनिवर से प्रतिमा लीं।
यथाकाल आचार्यश्री से, उनने जिनवर दीक्षा ली॥ २३ ॥

लेखनीय प्रसंग-तमिलनाडु चातुर्मास

दक्षिण भारत के प्रवास में, लेखनीय प्रसंग अनेक।
किन्तु यहाँ न्यायतण्डुक्तवत्, उनमें से उल्लेखित एक॥
श्री गौतमचन्द गोत्र सुराणा, करते हैं निवास मद्रास।
श्रीमुनिवर से हुये प्रभावित, जीवन-सह बदला विश्वास॥ २४ ॥

❀

पूज्यश्री के दर्शन करके, मन अतिशय उमड़ा उत्साह।
पदरज धारी, आशीष पाया, अनुभव हुआ मिटी भव-दाह ॥
आजीवन ब्रह्मचर्य लिया-सह, धर्म दिगम्बर अपनाया।
यथाजात मुद्रा धारण का, परम भाव मन में आया ॥ २५ ॥

❀

विगत हजार वर्ष में जितनी, धर्म प्रभावना यहाँ हुई।
उतनी मुनि आर्जवसागरजी, सात वर्ष में ही कर दी ॥
तमिलनाडु में आपश्री जो, धार्मिक बिगुल बजाया है।
स्वर्ण अक्षरों लेखनीय वह, जो परिवर्तन आया है ॥ २६ ॥

❀

दक्षिण भारत में विहार से, श्रीमुनिवर बहुलाभ हुए।
अनेकानेक तीर्थ यात्रा के, दुर्लभ दर्शन प्राप्त हुए ॥
उत्तर से दक्षिण में जाना, सब के वश की बात नहीं।
लेकिन बिना परीषह झेले, मिलती कुछ सौगात नहीं ॥ २७ ॥

❀

वास्तुकला सह पुरा सम्पदा, शैल गुहाएँ श्रीजिनबिम्ब।
ललितकला-साहित्य-सभ्यता,साक्षात् देखा था प्रतिबिम्ब ॥
तमिल-मराठी-कन्नड़ सीखी, की रचना साहित्य पढ़ा।
हुआ सुपरिचय मुनि संघों से, समता-सह सौहार्द बढ़ा ॥ २८ ॥

❀

श्रीमुनिवर के इस विहार से, धर्म-समाज बहुलाभ मिला।
वर्षों बाद दिगम्बर मुद्रा, दर्शन का सौभाग्य मिला ॥
मुनिश्री ने नैनारों को, गले लगाया, प्यार दिया।
बिछुड़े जैन बन्धुओं, फिर से मूल रूप से जोड़ दिया ॥ २९ ॥

❁

बेंगलोर विदरे शिवमोग्गा-वर्षायोग निवेदन था।
शिवमोग्गा का भाग्य जागा जहँ, वर्षायोग सुशोभन था।
षोडसकारण पर्व मनाया, पाठशाला भी खुलवाई।
प्रथम बार के वर्षायोग से, समकित की अलख जगाई॥ ३०॥

❁

ग्राम सदलगा के भक्तों ने, आमंत्रित जब खूब किया।
आर्जवसागर की सन्निधि में, पंचकल्याणक हो ठान लिया॥
नियम सिन्धु उत्तमसागरादि-मुनिवर तथा आर्यिका भी।
वहाँ पधारे हजारों श्रावक, जागा भाग्य भारत का ही॥ ३१॥

❁

शताधिक उन पिच्छिधारी के, आगे सूरिमंत्र दिया।
विधिनायक पर आर्जवनिधि ने, महामंत्र संस्कार दिया॥
आर्जवनिधि के प्रवचन सुनकर, ध्वनि चहुँ दिशि में गूँजी थी।
मुनिवर आये उत्तर में अब, भयी आश यह पूरी थी॥ ३२॥

❁

बोरगाँव से समडोली जा, दहीगांव मुनिवर आये।
करमाला से गजपंथा कर, मांगीतुंगी पधराये॥
बारह वर्ष के अन्तराल से, नित प्रयास से मिला सुयोग।
दो सहस्र त्रि कोपरगांव को, मिला श्री मुनिवर वर्षायोग॥ ३३॥

❁

सर्वार्थसिद्धि स्वाध्याय से, तथाहि प्रवचन माला से।
भक्तों को समज्ञान दिया था, बच्चों को पाठशाला से॥
जैनाजैनों में सम्मेलन कर, रैली भी थी करवाई।
अहिंसा धर्म के शंखनाद से, त्याग शपथ भी दिलवाई॥ ३४॥

❋

सोलहकारण, दशलक्षण व्रत, मण्डलविधान भी करवाया।
नया जिनालय वेदी प्रतिष्ठा, कोकमठाण दर्शन पाया॥
जिनआलय की भूमि पूजा, जीर्णोद्धार जो हुआ महान।
फिर यवला वा नांदगांव से, एलोरा पहुँचे शुभ जान॥ ३५ ॥

❋

एलोरा की गुफाएँ लखकर, पारोला को हुआ विहार।
सिद्धचक्र मण्डल रचवाया, मोक्षमार्ग का हुआ प्रचार॥
अर्पणसागर क्षुल्लक पद पा, मुनि पद में संलग्न हुए।
सारे श्रावक मुनि संघ की, सेवा में शुभ मग्न हुए॥ ३६ ॥

❋

पारोला से बावनगज या, चूलगिरि की ओर चले।
बड़वानी रेवा तट से गये-पर्वत पर, भये दर्श भले॥
फिर सिंघाना, गये मनावर, वीर जयन्ती बाकानेर।
धर्मपुरी से धामनोद जा, मण्डलेश्वर की करली शैर॥ ३७ ॥

❋

बड़वा जाकर महान क्षेत्रजु, संग गये सिद्धवरकूट।
दो चक्री दस कामदेव जहँ, गये मोक्ष कर्मों से छूट॥
मंगल दर्शन ध्यान किया अरु, फिर बिहार हुआ इंदौर।
महानगर इंदौर में देखी, शोभा जिनमंदिर शिरमौर॥ ३८ ॥

❋

व्रती आश्रम व समवसरण लख, गोम्मटगिरि की की वंदन।
प्रवचन दे पाठशाला खुलवाईं, उपनगरों भू की चंदन॥
इन्द्रभवन व सहस्रकूट लख, तथाहि कांच मंदिर देखा।
छत्रपति, विजय नगर दर्शकर, पंचबालयति भी देखा॥ ३९ ॥

❋

पलासिया में कल्पद्रुम का, मण्डल विधान रचवाया।
तिलक नगर आदि में सबने, वर्षायोग हो गुण गाया॥
मुनिवर प्रसन्नचित्त होकर के, भक्तों का हि मन हर गये।
हाटपीपल्या के भक्तों सह, गये जहाँ भू शुभ कर गये॥ ४० ॥

❋

कुछ दिन प्रवचन देकर जन को, मोक्षमार्ग के बीज भरे।
रोका सबने वर्षावास हो, लेकिन मुनिवर अग्र बढ़े॥
सोनकच्छ, आष्टा होकर के, प्रभावना कर मुनि सीहोर।
वैराग्यसागर मुनि भी आये,-मिलने, मिलन हुआ शुभ ठौर॥ ४१ ॥

❋

यहीं विधान सिद्धचक्र शुभ, हुआ सु मुनि आशीष रहा।
यात्रा कर दक्षिण की आये, प्रभु गुरु का आशीष रहा॥
अपने गुरु विद्यासागर का, गुण गाया शुभ ज्ञान भरा।
धर्म-ज्ञान को नेक रूप में, दे जन का अज्ञान हरा॥ ४२ ॥

❋

श्रीमुनिवर के प्रवचन सुनकर, नैतिकता का हुआ प्रसार।
बालक-वृद्ध, युवक-नर-नारी, संस्कारित आचार-विचार॥
लगने लगा सभी को अपना, अब का जीवन नया-नया।
शुभता आस्रव होने से, अशुभ आचरण गया-गया॥ ४३ ॥

❋

जो भी आये गुरुवर चरणों, उनने पाया धर्म प्रसाद।
पाप-कषाये-व्यसन-अशांति, दूर भगे मन के अवसाद॥
बढ़े कदम संयम के पथ पर, यथायोग्य व्रत ग्रहण किए।
मन बैठे सन्देह बहुत से, समाधान पा शान्त हुए॥ ४४॥

❁

सौम्य-शांत व्यक्तित्व मुनिश्री, भाषा-सरल-सुबोध-सरस।
श्रोता को प्रवचन सुनने में, आने लगता अनुपम रस॥
घण्टों पीते रहते अमृत, मन में बढ़ता अति उत्साह।
मुनिवर का मुख चन्द्र देखकर, शमन करें दर्शक भव-दाह॥ ४५॥

❁

मुनिवर के सान्निध्य में हुए, पंचकल्याणक, शिविर विधान।
विद्वत् गोष्ठी, धर्म सम्मेलन, ज्ञानकेन्द्र पाया अवदान॥
पगदंडी या राजमार्ग हो, या हो पर्वत, गाँव-नगर।
धर्म अहिंसा ध्वज फहराते, पधराये भोपाल नगर॥ ४६॥

❁

मुनिवर का दक्षिण भारत में, तेरह वर्षजु रहा प्रवास।
अवर्णनीय, अनुपम, अपूर्व है, शब्द नहीं वर्णन को पास॥
क्या से क्या कर दिया, मुनिश्री, यह प्रत्यक्ष अनुभव की बात।
जिनमंदिर, गुरुकुल, गौशाला, संस्कार की दी सौगात॥ ४७॥

❁

जैन तो थे, पर नहीं था मंदिर, जिनमंदिर बनवाया है।
जीर्ण-शीर्ण-प्राचीन रहे जो, जीर्णोद्धार कराया है॥
जैन तो जैन अजैनों ने भी, निशि भोजन का त्याग किया।
वस्त्र पूत ही जल पीते हैं, अभक्ष्य भक्षण छोड़ दिया॥ ४८॥

❁

श्रीमुनिवर उपकार किया जो, हम तो भूल ना पायेंगे।
हम कृतज्ञ पीढ़ी दर पीढ़ी, गुरुवर के गुण गायेंगे॥
दृढ़ संकल्पी, परमप्रभावी, आगमचर्या निष्ठ यती।
आप सदृश संत का मिलना, महा असंभव, कठिन अती॥ ४९॥

हे गुरुवर जाते हो जाओ, दिल से जा ना पाओगे।
हर पल, हर क्षण हम भक्तों को, याद हमेशा आओगे॥
मंगलमय है पंथ आपका, हमें न तुम सम कोई मिला।
हो रत्नत्रय सफल साधना, मिले आपको सिद्धशिला॥५०॥

त्रयोदश-सोपान

श्री दि. जैन मंदिर, टीनशेड, टी.टी. नगर भोपाल

चातुर्मास-२००४

१. म.प्र. की राजधानी भोपाल।

२. मुनिश्री का मंगल नगर प्रवेश।

३. जिनालय-परिचय।

४. सेवा-परिचय।

५. प्रातःकाल में कक्षाएं एवं प्रवचन।

६. सम-सामयिक पर्वों का आयोजन।

७. एक ग्रन्थ का सम्पूर्ण मन्थन।

८. मुनिवर के मधुर प्रवचन।

९. पर्वराज पर्यूषण का भव्य आयोजन।

१०. मुख्यमंत्री आगमन, डिसेक्शन बंद, शाकाहार अहिंसा सम्मेलन, कवि संगोष्ठी, प्रशासनिक अधिकारी आयोजन।

११. विद्वत्-गोष्ठी।

१२. तीर्थोदय काव्य का विमोचन।

१३. 'उमराव दूल्हा' में पंचकल्याणक आदि।

१४. पंचकल्याणकों पर मुनिवर के प्रवचन।

१५. सम्पूर्ण जिनालयों के दर्शन।

१६. ''पंचशील नगर'' में शीतकाल-प्रवास।

१७. ''अशोका गार्डन'' में पंचकल्याणक।

१८. ग्रीष्मकाल ''अशोका गार्डन'' में प्रवास।

जैं

त्रयोदश-सोपान

श्री दि. जैन मंदिर, टीनशेड, टी.टी. नगर भोपाल

चातुर्मास-२००४

मध्यप्रदेश देश का दिल है, दिल की धड़कन है भोपाल।
बिन्ध्या की बाँहों में पल यहाँ, लहराते सागर-सम ताल॥
मंदिर-महल, स्तूप आदि स्मारक प्राचीन अनेक।
गौरवमय इतिहास का पता, चल जाता है जिनको देख॥ १॥

❁

जिसने पिया ताल का पानी, फिर वह छोड़ नहीं पाया।
झीलों-गिरियों-प्रकृति छटा ने, उसके मन को ललचाया॥
धीरे-धीरे बड़ा हो गया, इसके रहे कई कारण।
मध्यदेश की रजधानी का, इसने किया मुकुट धारण॥ २॥

❁

जैसे आम्रमंजरी स्वागत, कोयल करती कुहू-कुहू।
जैसे सूरज की अगवानी, पक्षी चहकें मुहु-मुहु॥
वैसे मुनि आर्जवसागर का, सुना आगमन मचले ताल।
स्वागत-सह अगवानी करने, दौड़ पड़ा हर्षित भोपाल॥ ३॥

❁

जगह-जगह थे गये बनाये, चौक, अल्पना-स्वागत द्वार।
द्वार-द्वार पर पग प्रक्षालन, करने श्रावक लगी कतार॥
करें आरती श्री मुनिवर की, हर्षित होते श्रावक जन।
सोत्साह जयकार लगाते, गाते श्रद्धा भरे भजन॥ ४॥

❁

सूर्यदेव ने नीलगगन से, श्रीमुनिवर के पाये दर्श।
अपने स्वर्णिम कर फैला कर, किए मुनिश्री चरणस्पर्श॥
वृक्ष हिला अपनी शाखाएँ, करते मुनिश्री अभिवादन।
मंद-मंद मलयानिल करता, श्रमस्वेद जल शीघ्र हरण॥५॥

❁

नगर स्थित सब जिनालयों में, चौक जिनालय है प्राचीन।
तदनन्तर झिरनों का मंदिर, चत्वारिंशत् हुए नवीन॥
तात्याटोपे नगर में स्थित, श्रीमहावीर जिनालय खास।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, मिला यहाँ पर चातुर्मास॥६॥

❁

आचार्यश्री विद्यासागर के, परम प्रभावक शिष्य मुनी।
ज्ञान ध्यान तप त्यागरक्त हैं, शांत-सौम्य व्यक्तित्व धनी॥
गुरु संग अर्पणसागर जी, मुनिवर का अनुगमन करें।
संयम नौका बैठ तपस्वी, भवसागर संवरण करें॥ ७॥

❁

श्रीमुनिवर ने चिन्तन करके, नियमबद्ध सब कार्य किए।
बालक-वृद्ध-युवा-सबही ने, यथायोग्य शुभ लाभ लिए॥
सूरज के जगने से पहले, सकलसंघ जग जाता था।
स्तवन-प्रतिक्रमण-सामायिक, आदिक में लग जाता था॥८॥

❁

ऐसे मुनिवर को पाकर के, फूले नहीं समाये जन।
होने लगे श्रीगुरु सन्निधि, प्रतिदिन नूतन आयोजन॥
सन्तों का सान्निध्य सभी को, बड़े भाग्य से मिलता है।
पूर्वकाल का पुण्य अपरिमित, इसी रूप में फलता है॥९॥

❁

मुनिवर का वात्सल्य अपरिमित, बालक और युवाओं पर।
भविष्य और शुभ वर्तमान है, निर्भर इनके कन्धों पर॥
यह विचार कर पूज्यश्री ने, शुरू किया धार्मिक शिक्षण।
दैनिक उपयोगी प्रश्नों का, किया श्रेष्ठतम रूप चयन॥ १०॥

❁

सरल-सरस भाषा में मुनिवर, कठिन विषय समझाते थे।
फलतः धर्मज्ञान जिज्ञासु, प्रति दिन बढ़ते जाते थे॥
प्रातः आठ बजे गुरुवर के, होते थे मार्मिक प्रवचन।
मन-मस्तिष्क लगाकर सुनते, धर्म पिपासाकुल सज्जन॥ ११॥

❁

यह जिनमंदिर सभी तरह से, रहा मुनिचर्या अनुकूल।
नहीं शोर-गुल, आना-जाना, थल एकान्त शांति का मूल॥
महावीर अंतिम तीर्थंकर वर्तमान शासन नायक।
मूल वेदिका यहाँ विराजे, परम शांति, शिवसुख दायक॥ १२॥

❁

श्री जिनालय के प्रांगण में, शोभित मान-स्तंभोतुंग।
श्रद्धालुजन दर्शन पाते, मानी पाते मानस भंग॥
संत निवास, धर्मशाला-सह, औषधआलय कूप-सजल।
मुनिसंघ सेवा में तत्पर, रहती सब समाज प्रतिपल॥ १३॥

❁

शासन वीर जयंति, मनायी, गुरु पूर्णिमा आयोजन।
रक्षा बंधन, मोक्ष सप्तमी, षोडसकारण संयोजन॥
आचार्यश्री शान्तिसागर जी, दिवस-समाधी आया है।
सभा श्रद्धाञ्जलि की आयोजित, श्रद्धा अर्घ चढ़ाया है॥ १४॥

❋

पर्वपर्यूषण हुआ समापन, ''मैत्री दिवस'' मनाया है।
बैर-विरोध भूल आपस का, सबको गले लगाया है॥
शरदपूर्णिमा दिवस सुपावन, सबके मानस हुए सरस।
आचार्यश्री विद्यासागर के, जीवन का गाया शुभ यश॥ १५॥

❋

आयोजन उपरान्त पूज्यश्री, के होते अमृत प्रवचन।
गुरुवर के मंगल प्रसाद से, मिलता गूढ़-गहन चिन्तन॥
कोई तिथि-त्यौहार अछूता, नहीं छूटने पाता था।
सम्यक्-सुष्ठु-सोत्साह, सानन्द मनाया जाता था॥ १६॥

❋

श्रीमुनिवर ने लीक से हटकर, सुन्दर-सफल प्रयोग किया।
जैन धर्म के सिद्धान्तों को, कई शीर्षकों बाट दिया॥
प्रति रविवार एक शीर्षक पर, विद्वज्जन करते संवाद।
इस प्रकार एक घण्टे में, एक विषय हो जाता याद॥ १७॥

❋

श्रीमुनिवर की नूतन शैली, सबको धार्मिक लाभ मिले।
कौन ग्रन्थ की विषय वस्तु क्या, अल्पकाल में पता चले॥
एक विद्वान एक घण्टे का, करता सम्यक् यही प्रयास।
ग्रन्थराज के सभी पहलुओं, पर पड़ जाय योग्य प्रकाश॥ १८॥

❋

रत्नकरण्डक-इष्टोपदेश का श्रावकजन को किया चयन।
सर्वार्थसिद्ध, जीवकाण्ड ये, संघमात्र में चलें पठन॥
रविवारीय प्रवचन गोष्ठी में, अंत आपका क्रम आता।
एक दिवस में एक ग्रंथ का, सार समझ में आ जाता॥ १९॥

❁

प्रवचन के उपरान्त सभी को, प्रश्न पूछने का स्वातंत्र्य।
इसके कारण पाठ्य वस्तु को, अपना लेता पाचनतंत्र॥
एक जिज्ञासु प्रश्न उठाता, लाभ सभी को होता था।
सावधान रहते सब श्रोता, कोई न इसमें सोता था॥ २०॥

❁

मुनि प्रवचन की बात न पूछो, सब के मन को भाता था।
शब्द-शब्द कर्ण-कुहरों से, आत्मसात् हो जाता था॥
सुनकर गया अकेला इक दिन, कल लौटा लेकर संग चार।
धीरे-धीरे हुआ था छोटा, जिनमंदिर प्रवचन आगार॥ २१॥

❁

सब पर्वों में महापर्व है, पर्वराज श्रीपर्यूषण।
ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग के द्वारा, साधक करते कर्मक्षपण॥
पर्वराज के शुभागमन पर, की स्वागत की तैयारी।
श्रीमुनिवर के सन्निधान में, और हुई अतिशयकारी॥ २२॥

❁

प्रात:काल से निशाकाल तक, मंदिर रहती चहल-पहल।
धर्म क्रियाएँ चलतीं रहतीं, सतत् अनवरत उस प्रति पल॥
घंटानाद पूर्वक होता, जिनवर का कलशा अभिषेक।
तदनन्तर पूजन क्रम आता, भर जाती वेदी प्रत्येक॥ २३॥

❁

यहाँ आठ बजने को होते, घड़ी बजाती टन-टन-टन।
कहती भव्यो! सभागार में, बैठो अब होंगे, प्रवचन॥
होते थे मुनिवर के प्रवचन, मोक्षशास्त्र क्रमश: अध्याय।
इसके पहले दशाध्याय का, होता था वाचन स्वाध्याय॥ २४॥

❋

मोक्षशास्त्र-तत्त्वार्थ सूत्र है, जिनवाणी का अमृत कोष।
जिसने पिया, पचाया पूरा, परम्परा से पाता मोक्ष॥
है विस्तृत आकाश सरीखा, अति गहरा सागर जैसा।
उन्नतभाव हिमालय जैसे, है मीठा मिश्री जैसा॥ २५॥

❋

अक्टूबर में शाकाहार का,-कवि सम्मेलन हुआ महान।
तीर्थोदय यह काव्य बड़ा ही, जिसमें सोलह भावन जान॥
आर्जवनिधि की अनुपम कृति यह, सप्त शतक के पद्य जहाँ।
मोक्षमार्ग दर्शाते सबको, हुआ विमोचन प्रथम यहाँ॥ २६॥

❋

मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल जी, आये विमोचन किया खुसी।
पाण्डाल में समूह ने देखा, बजीं तालियाँ हसी खुसी॥
मुनिवर के उपदेश से देखो, स्कूलों की हिंसा दूर।
हटा डिसेक्शन मुख्यमंत्री,-आश्वासन दीना भरपूर॥ २७॥

❋

मुनिवर पूर्व पिता भी आये, शिखरचंद जी सभा सु-बीच।
गुरु व मुख्यमंत्री के सम्मुख, मंगल गाथा अपनागीत॥
नितिन नांदगाँवकर ने, जैन अधिकारी बुलवाये।
गुरु समक्ष उनका परिचय दे, बीज आचरण डलवाये॥ २८॥

❋

चातुर्मास काल मुनिवर के, आयोजन की लगी झड़ी।
विद्वत् गोष्ठी का आयोजन, रही एक उपलब्धि बड़ी॥
भारत के कोने-कोने से, आये थे विंशति विद्वान्।
उनमें पहला लेखनीय है, लक्ष्मीचंद जैन का नाम॥ २९॥

❁

नगर जबलपुर से पधराये, आप गणित उद्‌भट् विद्वान्।
जैन गणित को आपश्री ने, दिये वृहत्तम कई आयाम॥
नगर बड़ौत से पधराये थे, डॉक्टर श्री श्रेयांसकुमार।
नगर मुजफ्फर से आये थे, श्रीयुत्, डॉक्टर जयकुमार॥ ३०॥

❁

"षोडसकारण भावनाओं का, रूप व्यवहारिक, दृष्टि विज्ञान।"
चयनित विषय रहा संगोष्ठी, रखा विद्वज्जन उसका ध्यान॥
दो दिवसीय रही संगोष्ठी, पाँच सत्र में पूर्ण हुई।
प्रति सत्रांत श्रीमुनिवर ने, दिया उद्बोध, समीक्षा की॥ ३१॥

❁

श्रीप्राचार्य निहालचन्द बीना, अजितकुमार पाटनी जी।
सागर विश्वविद्यालय कुलपति, श्री डॉ.डी.पी. सींग जी॥
निरंजनलाल जैन बैनाड़ा, डॉक्टर रतनचंद्र भोपाल।
संजयकुमार पथरिया वाले, डॉक्टर श्री सुधीर भोपाल॥ ३२॥

❁

श्रीपाल "दिवा", भागचन्द इन्दु, श्री सुरेश आई.ए.एस.।
जितेन्द्र जबलपुर, देवकुमार दिल्ली, अदना लालचन्द्र 'राकेश'॥
सनत जैन, लीला कटारिया, किया चित्र का अनावरण।
हुआ उन्हीं के करकमलों से, आचार्य समक्ष दीप-दीपन॥ ३३॥

❁

मुनिवर श्री आर्जवसागर ने, विद्वज्जन आशीष दिया।
श्री मनोहरलाल टोंग्या, विद्वज्जन सम्मान किया॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, रचा तीर्थोदय काव्य महान्।
डॉक्टर श्री राजेश जैन ने, किया विमोचन सह-सम्मान॥ ३४॥

❁

भोपाल नगर में एक उपनगर, बाग उमराव दूल्हा है नाम।
सब समाज एकत्रित होकर, श्रीगुरुवर को किया प्रणाम॥
जैनधर्म में चार हैं मंगल, अर्हत्-सिद्ध-साधु-जिनधर्म।
इनकी सन्निधि हों आयोजित, होते सफल सभी शुभकर्म॥३५॥

❁

पंचकल्याणक, गजरथ उत्सव, किया सुनिश्चित सकल समाज।
मुनिवर को आमंत्रित करने, श्रीफल लेकर आई आज॥
किया निवेदन योगीश्वर से, सविनय सबने जोड़े हाथ।
सन्निधान दें आयोजन को, हम पर कृपा करें मुनिनाथ॥ ३६॥

❁

शिविर हुआ था ज्ञान वृद्धि का, प्रथम रूप मुनिराज समीप।
भोपाल नगर का जगा भाग्य जब, युवाविज्ञ, मुनि आये समीप॥
सांगानेर के विद्वत् जन को, यह सौभाग्य मिला जानो।
नगर के हर कोने-कोने से, जैनी आये पढ़ने मानो॥ ३७॥

❁

यह ढाला द्रव्य संग्रह साथ में, प्रवेशिकाएँ जहाँ चलीं।
दस दिन के तीनों सत्रों में ज्ञान बढ़ाया परीक्षा ली॥
प्रमाण पत्र पारितोषक से, सम्मानित कर जन को।
प्रोत्साहित जब किया साथ में, मिला आशी गुरु का जन को॥ ३८॥

❁

आर्जवनिधि की प्रभावना से, जन फूले न समाये थे।
विद्वत् भी सम्मानित होकर, गुरुवर के गुण गाये थे॥
उसी समय से आज भी देखो, प्रति वार्षिक यह आयोजन।
गुरु संकल्प से चला आ रहा, लाभ ले रहा है जनजन॥ ३९॥

❋

दीप जले जब वीर प्रभु का, निर्वाण दिवस शुभ आया है।
आर्जवनिधि अर्पणसागर ने, भक्तिपाठ को गाया है॥
वर्षायोग का निष्ठापन कर, क्षमावाणी कह सबके बीच।
कण्ठपाठ व पिच्छि महोत्सव, गया मनाया शुभ संगीत॥ ४० ॥

❋

करुणानिधि मुनिराजश्री ने, यथाकाल फिर गमन किया।
सन्निधान श्रीमुनिवर के पंचकल्याणक शुरू हुआ॥
पंचकल्याणक महामहोत्सव, सबका करता है कल्याण।
यह ऐसा मानव मेला है, जिसमें बनते हैं भगवान॥ ४१ ॥

❋

गर्भकल्याणक पूर्व क्रिया को, मुनिवर ने अभिव्यक्ति दी।
सोलहकारण भावन भाने, से बँधती है पुण्यप्रकृति॥
गर्भअवतरण से पहले ही, होने लगती वर्षारत्न।
तथा तीर्थंकर की माताश्री, देखें सुन्दर सोलह स्वप्न॥ ४२ ॥

❋

कहा द्वितिय दिन श्रीगुरुवर ने, गर्भकल्याणक उत्तर रूप।
तीर्थंकर माता के मुख से, कोख में पाते गर्भ स्वरूप॥
नौ माहों तक माँ की सेवा, देवकुमारियाँ करतीं हैं।
शुभ-श्रेष्ठ प्रश्न पृच्छा कर, माँ मन रंजन करती हैं॥ ४३ ॥

❋

जन्म कल्याणक दिवस मुनिश्री, कहे वचन अतिशय गुणखान।
कर्म काटने निरत रहें जो, उनके ही होते कल्याण॥
तीतर जैसे पुत्र तो पैदा, करते मात-पिता सब अन्य।
जो तीर्थंकर पैदा करते, जननी-जनक वही है धन्य॥ ४४ ॥

❀

कल्याणक उनमें ही होते, सदा सोचते पर कल्याण।
जन्म-जरा मिट जाते उनके, वे पाते अंतिम निर्वाण॥
तीन लोक आनँद पाता है, जन्म तीर्थंकर होने पर।
करते हैं अभिषेक देवगण, गिरि सुमेरु पै ले जाकर॥ ४५॥

❀

भव-तन-भोग-विरागी होते, प्रबल निमित्त कोई पाकर।
गृह त्याग कर, वन में जाते, कर्मक्षय करने तप कर॥
पंच इन्द्रियों को जय करते, मन-इच्छाएँ करें निरोध।
आतम से आतम में रमते, आतम को लेते हैं रोक॥ ४६॥

❀

नष्ट आवरण के होने पर, प्रभुको उपजा केवल ज्ञान।
सब पदार्थ, सब पर्यायों सह, दर्पणतल इव होते मान॥
समवशरण में बैठ तीर्थंकर, देते हैं उपदेश तभी।
ऊँच-नीच का भेद न रहता, बैर-विरोध तज, सुनै सभी॥ ४७॥

❀

आत्मा से परमात्मा बनना, रहा जीव उद्देश्य महान्।
किन्तु धंसे आतम के भीतर, काम-वासना गहरे बाण॥
इनका ही बाहर हो जाना, पाता है संज्ञा निर्वाण।
आत्मा परमात्मा बन जाती, पाती सिद्धशिला स्थान॥ ४८॥

❀

ज्ञान कल्याणक दिन प्रतिमा को, सूर्यमंत्र देते मुनिवर।
प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान को, देते पूर्णता हैं ऋृषिवर॥
सूर्यमंत्र के बिना न प्रतिमा, प्राणवंत हो पाती है।
सूर्यमंत्र की क्रिया, दिगम्बर-मुनि से ही की जाती है॥ ४९॥

❋

पंचकल्याणक के अंतिम दिन, सम्पन्नी गजरथ फेरी।
शुभमुहूर्त में हुई परिक्रमा, लगी नहीं कुछ भी देरी॥
जैन-जैनेतर सभी ने पाये, मुनिवर के अमृत प्रवचन।
''साधु मंगल'' मंगल सन्निधि, सफल रहा यह आयोजन॥५०॥

❋

बड़े प्रभावित हो कर मुनिवर, विशुद्धसागर भी आये।
बड़े मुनिवर आर्जवनिधि के, चरण नमे हियमिल भायें॥
संघ सहित गजरथ सह रहकर, प्रवचन मन को भाये थे।
बार-बार हो मिलन आपसे, ऐसे वचन सुनाये थे॥ ५१॥

❋

सफल हुआ था शुभ आयोजन, योगीश्वर का हुआ विहार।
महानगर के जिनालयों जा, मुनिवर किया स्व-पर उपकार॥
जहाँ-जहाँ पधराते यतिवर, हो जाते पावन वे क्षेत्र।
ज्ञानशाला, जिनवच अंजन, खुल जाते अज्ञानी नेत्र॥ ५२॥

❋

मंगलवारा-चौक-शाहपुरा-नारायण-नेहरू-पिपलानी।
जहाँगीराबाद-बजरिया-सोना-स्टेशन-प्रोफेसर कॉलोनी॥
चंदन-भानपुरा-बैरागढ़-ग्रीनपार्क-पद्मनाभ नगर।
झिरनों मंदिर-कोलार-घाटी, अयोध्या-शंकराचार्य नगर॥ ५३॥

❋

नयापुरा-हबीब-शाहपुरा, ग्यारह क्वाटर-जवाहरचौक।
अशोकागार्डन-पंचशील-उमराव, टी.टी. नगर लगाई धोक॥
तीर्थक्षेत्र भोजपुर वन्दे, समश-कुराना किया प्रणाम।
सकल जिनालय मुनिवर वन्दे, यद्यपि कवि से छूटे नाम॥५४॥

❋

सभी चाहते श्रीऋषिवर का, इसी जिनालय रहे प्रवास।
आहार दान का लाभ प्राप्त हो, प्रवचन पूरी हो अभिलाष॥
बालक-युवा-वृद्ध-नर-नारी, चरण पखारे बारम्बार।
करें आरती, गगन गुंजाते, श्रीमुनिवर की जय-जयकार॥५५॥

❋

एक मोहल्ला तृप्त न होता, दूजे की लगती बारी।
द्वार अल्पना गली सजावट, होने लगती तैयारी॥
जन-जन देखें वाट इस तरह, जैसे चातक प्यास लगी।
कब आर्जवनिधि यहाँ पधारें, अमृत बरसे घड़ी-घड़ी॥५६॥

❋

पूज्य मुनिश्री बड़े पारखी, रखते हैं सब ही का ज्ञान।
जिनको जितनी प्यास लगी है, उनका उतना रखते ध्यान॥
उनके मन में लहराता है, करुणासागर अपरम्पार।
आतमहित प्रामुख्य साथ में, करते-रहते पर उपकार॥५७॥

❋

समय चक्र रुकता ना पल भर, चलता रहता दिन औ रात।
अभी-अभी थी चन्द्र चाँदनी, सूरज ऊगा हुआ प्रभात॥
चातुर्मास व्यतीत हुआ तो, शीतकाल आगमन हुआ।
संघसहित मुनिराजश्री का, 'पंचशील' को गमन हुआ॥५८॥

❋

नेमिचन्द्र आचार्य की लघु कृति, 'दव्वसंगहो' पढ़ी गई।
हुई वाचना समवसरण फिरें, विधानप्रभावना खूब भई॥
ग्रीष्मकाल मुनिराजश्री का 'अशोकागार्डन' रहा प्रवास।
इष्टोपदेश की हुई वाचना, पूज्यपाद लघुरचना खास॥५९॥

❁

चौक मंदिर बड़ा पुराना, चौबीसी की नई रचना।
जैन समाज भी बड़ी रही है, जैन गृहों की बहुरचना॥
ये ही भवि आर्जवनिधि के, चरणों में श्रीफल देने।
तव सन्निधि हो वीर जयन्ती, आयें गुरु हम कब लेने॥ ६० ॥

❁

गुरुवर आर्जवसागर ने, दिया आशीष चौक वालो।
भक्त सभी आयेंगे चहुँ से, खूब प्रभावन कर डालो॥
बड़े ठाट से रथ आदिक से, उत्सव था अद्वितीय महा।
मुनिवर प्रवचन तत्त्व भरे थे, वात्सल्य का जोर जहाँ॥ ६१ ॥

❁

भोपाल नगर का एक उपनगर, रहा ''अशोका गार्डन'' नाम।
श्रीमुनिवर के चरणकमल में, सब समाज ने किया प्रणाम॥
पंचकल्याणक, गजरथ उत्सव, है आयोजित ग्रीष्म माह।
पूज्यश्री की मंगलसन्निधि, हो सुप्राप्त यही है चाह॥ ६२ ॥

❁

जिनके मुख पर सदा खेलती, निर्मल मन की मधुमुस्कान।
जिनका हृदय क्षमा का सागर, प्राणिमात्र प्रति करुणावान॥
पर उपकार कार्य है जिनका, जिनवाणी पीयूष पियो।
श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, स्वीकृति-सह आशीष दियो॥ ६३ ॥

❁

श्रीमुनिवर आर्जवसागर जी, मंगलमूरत, मंगल धाम।
पूज्यश्री की मंगल सन्निधि, हुए सफल सब धार्मिक काम॥
मंत्री श्री उमाशंकर ने जैन धर्म गुण गाया था।
आर्जव निधि के कृपाभाव से, सफल आयोजन भाया था॥ ६४ ॥

❁

श्रुतपञ्चमी पर्व मनाया, पाठशाला सम्मेलन भी।
उत्तम विधि से धर्म प्रभावन, हुई नगर जन आये सभी॥
अशोकागार्डन बैरागढ़ से, तथा और भी नगरों से।
वर्षायोग का श्रीफल लेकर, भरे आये शुभ भावों से॥ ६५॥

❁

बीनागंज में अशोक नगर से, आये भक्त भक्ति से पूर।
आपश्री का हो चौमासा, साथ चलेंगे चाहे दूर।
बीनागंज, राधोगढ़ से, गये आरोन बजरंगगढ़।
गुना नगर में करी प्रभावन, साढ़ोरा में भीड़ उमड़॥ ६६॥

❁

संत नहीं रोके से रुकते, वे तो बढ़ते जाते हैं।
नगर-ग्राम में भवि भागन वश, वे अमृत बरसाते हैं॥
वे अनिकेत, आत्मा निर्मल, वही है उनका अपना घर।
कर विहार श्री आर्जवसागर, गुरुवर पहुँचे अशोकनगर॥ ६७॥

चतुर्दश-सोपान

अशोकनगर में चातुर्मास-२००५

१. मुनिश्री का नगर प्रवेश एवं चातुर्मास स्थापना।

२. नियमित कक्षाएँ, प्रवचन एवं पर्वों का आयोजन।

३. पर्यूषण पर्व पर मुनिश्री के प्रवचन।

४. पर्यूषण पर्व में संस्कार शिविर का आयोजन।

५. जिनालयों में पाठशाला की स्थापना।

६. बालक-युवा-सभी को धार्मिक लाभ।

७. सम्मेद शिखरजी की ओर मंगल विहार।

चतुर्दश-सोपान

अशोकनगर (म.प्र.) में चातुर्मास, सन् २००५

देव-शास्त्र-गुरु-भक्त नगर यह, धर्म-धार्मिक जन वात्सल्य।
रखे न ईर्ष्या-द्वेष परस्पर, है मन में अतिशय सारल्य॥
सरल मूर्ति, आध्यात्मिक योगी, मुनिवर श्रीआर्जवसागर।
संघ सहित हो रहा आगमन, जैनी बस्ती अशोकनगर॥ १॥

❁

नगर प्रवेश हुआ मुनिवर का, केशरिया ध्वज था आगे।
मंगलकारी वाद्य बज रहे, भाग्य सभी के थे जागे॥
द्वार-द्वार पर पग प्रक्षालन, आरति करना जयजयकार।
मान रहे थे सब नर-नारी, आज हुए सपने साकार॥ २॥

❁

''सब समाज ने किया निवेदन, गुरो! हमारी पूरें आस।
अशोकनगर में हो स्थापित, पूज्यश्री का चातुर्मास॥
अतिशय पुण्य उदय आने पर, संत समागम पाते हैं।
स्वीकृति-सह सान्निध्य प्राप्त हो, श्रीफल चरण चढ़ाते हैं''॥ ३॥

❁

श्रीमुनिवर ने देख लिया सब, द्रव्य-क्षेत्र-काल का योग।
भाव हैं निर्मल, जिज्ञासु हैं, ज्ञान-ध्यान में है उपयोग॥
'ओम' उच्चारण-सह स्वीकृति दी, दक्षिण कर आशीष दिया॥
यथायोग्य समय आने पर, स्थापित वर्षायोग किया॥ ४॥

❁

सत्य-साधना के निर्वाहक, मुनिवर चातुर्मास मिला।
अशोकनगर के नर-नारी का, शतधा मानस कमल खिला॥
लगने लगी धर्म कक्षायें, यथा समय प्रवचन का क्रम।
गुरु साक्षी में सब तिथि-उत्सव, गये मनाए सुन्दरतम॥ ५॥

❋

बड़ा बना पाण्डाल गंज में, भीड़ अपार जुड़ा करती।
ध्यान-योग के प्रवचन सुनकर, जनता गृह भला करती॥
मोक्ष सप्तमी पार्श्व प्रभो का,-मोक्ष दिवस सुखमय आया।
लाडू अर्पण गुरुवाणी सुन, प्रभु जीवन का रस पाया॥ ६॥

❋

रक्षा बंधन पर मुनिरक्षा-सूत्र सभी ने बाँधा है।
जीवघात न करें कभी भी, संकल्पित करवाया है॥
तीर्थोदय का काव्य सुनाकर, षोडस कारण भाव जगा।
कई शतकों में व्रत लेकर जन,-का मिथ्यातम दूर भागा॥ ७॥

❋

एकासन उपवासों के सह, शुद्धाहार भजन पूजन।
दान, साथ में गुरु प्रवचन सुन, तृप्त हुए थे सब जन-जन॥
षोडसकारण, दस धर्मों के, प्रवचन सुनकर धन्य हुए।
श्री जी विमान उत्सव लखकर, जिले जन अति प्रसन्न हुए॥ ८॥

❋

क्रोध-मान-लोभ-माया का, प्रबल प्रदूषण चारों ओर।
झूठ-कुशील-असंयम-ग्रह का अन्धकार छाया घनघोर॥
पाप-ताप-संताप मेटने, दश रत्नों का पहने हार।
पर्वराज पर्यूषण आया, सकल जगत् करने उपकार॥ ९॥

❋

पर्वपर्यूषण धार्मिक यात्रा, होता इसमें आत्म विकास।
ऊर्ध्वारोहण के प्रकाश से, जीवन पाता धर्मप्रकाश॥
धर्म परम संजीवन औषध, मिटते हैं असाध्यतम रोग।
मूल प्रकृति में लौट आत्मा, करती है चेतन का भोग॥ १०॥

❁

दशधर्मी मंगल यात्रा का, उत्तमक्षमा प्रथम सोपान।
धर्म देवता, क्षमाप्राण है, क्षमा धर्म की है पहचान॥
मान महाविष, शरल हलाहाल, मन को करता कलुष-कठोर।
विनय बिना प्राणी दुःख पाता, जाता नीच, नरक में घोर॥ ११ ॥

❁

मायाचारी-कुटिल-वक्रता, अवगुण महादुःख की खान।
मन-वच-काय सरलता प्रियवर, यह है आर्जव धर्म महान्॥
जहाँ सत्य है, वहीं धर्म है, जहाँ असत्य महत्तम पाप।
असत्-कटुक-निन्दक वचनों से, जन पाते अतिशय संताप॥ १२ ॥

❁

लोभ लोक में भटकाता है, पाप-कषायों के द्वारा।
मूल आपको, चतुर्गति में, फिरता जन मारा-मारा॥
संयम यम को जय करने की, श्रेष्ठकला, उत्कृष्ट विधि।
संयम नर को पूज्य बनाने-वाली है अनमोल निधि॥ १३ ॥

❁

भव से तारे, पार उतारे, उसी क्रिया का तप है नाम।
तप के द्वारा जल जाते हैं, कर्म सघन, संताप तमाम॥
औषध-शास्त्र-अभय-आहार, कहे जिनेन्द्र चतुर्विध दान।
त्यागो, दान करो, पर मन में, लाओ नहीं लेश अभिमान॥ १४ ॥

❁

ग्रंथ त्याग निर्ग्रंथ हुए हैं, शल्य ना किंचित् वे ही धन्य।
सुर-सुरेन्द्र नमते चरणों में, मुनिवर पालें आकिंचन्य॥
ब्रह्मचर्य जीवन सुखसागर, परमानन्द, शांति भण्डार।
पालन करना अतिशय मुश्किल, जैसे चलना असि की धार॥ १५ ॥

❋

श्रीमुनिवर के सरल-प्रभावी, धर्मांगों पर सुन प्रवचन।
श्रोता बोले अब तक हमने, पाया नहीं धर्म का कण॥
आज हमें निज बोध हुआ है, श्रीयतिवर के प्रवचन सुन।
क्रोधादिक तो सब विभाव हैं, क्षमा आदि हैं आतमगुण॥ १६॥

❋

पर्वराज पर्यूषण अवसर, प्राप्त प्रेरणा मुनिश्री।
शुरु हुआ संस्कार शिविर था, उत्तम रीत्या दश दिवसी॥
लगभग पंचशतक शिवरार्थी, प्राप्त शिविर में सम्यग्ज्ञान।
मन-वच-काया किया नियंत्रण, शिविर रही उपलब्धि महान्॥ १७॥

❋

शिविर अनन्तर उनका जीवन, लगता था बदला-बदला।
लगता जैसे पंचपाप का, अयस् पिण्ड कुछ तो पिघला॥
कलुष कषाय कालिमा घुलकर, मन निर्मलता आयी है।
सब ने मिलकर श्रीमुनिवर की, जय-जयकार लगाई है॥ १८॥

❋

प्रत्येक जिनालय हो पाठशाला, पूर्ण पहल की मुनिश्री।
हर परिवार भेजे बालक को, प्रातः सायं मंदिर जी॥
फलतः बढ़ी छात्र संख्या भी, मिलते थे संस्कार महान्।
दीदी-भैया ही समाज के, रहे पाठशाला विद्वान्॥ १९॥

❋

चुम्बकीय व्यक्तित्त्व मुनिश्री, युवा वर्ग भी समय दिया।
मुनिवर सन्निधि बैठ-बैठकर, संस्कार-सुज्ञान लिया॥
पढ़ने लगे सभी जन सुस्वर, शुद्ध संस्कृत भक्तामर।
हुईं कण्ठस्थ प्रार्थनाएँ, ग्रंथ-पाठ प्रथम नम्बर॥ २०॥

❋

अग्र पंक्ति में बैठें, सुनते, बालक-वृद्ध लगाकर ध्यान।
दैनिक प्रवचन में मिलते थे, प्रथमानुयोग उत्तम आख्यान॥
सबको, सब कुछ मिल जाता था, साक्षर हो अथवा विद्वान्।
सभा समापन मिलकर करते, जिनवाणी स्तुति का गान॥ २१॥

❋

अनेकानेक हुए आयोजित, सफल कार्यक्रम गुरु आशीष।
कवि संगोष्ठी, मंडल विधान-इन्द्र ध्वज सन्निधि मुनीश॥
यादगार बन गया सभी सब, प्रवचन भी जह रहे विशेष।
कण्ठपाठ प्रतियोगिता से, मिला सभी को शुभ संदेश॥ २२॥

❋

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, अशोकनगर से हुआ गमन॥
भक्तों की आँखें आंसू से, भींगी हिय को लगा बुरा।
गौशाला लख ईशागढ़ तक, चले भक्त न लौट जरा॥ २३॥

❋

ईशागढ़ में सिद्ध चक्र शुभ, मण्डल विधान रचवाया।
थोवोन, चंदेरी के दर्शन कर, खंदार, सीरोन मन भाया॥
ललितपुर में प्रवेश किया जब, प्रशान्त, निर्वेग मुनि आये।
की अगवानी मिले परस्पर, फिर समाधि सिन्धु आये॥ २४॥

❋

मंगलानंद मुनि आये आगे, सरल सिन्धु से मिले तभी।
प्रवचन, पाठशाला आदि सह, प्रभावना रत रहे सभी॥
अटा जिनालय में प्रवचन दे, बहुजन को संबोधा था।
किये सर्व जिनालय दर्शन, भविजन का मन मोहा था॥ २५॥

❁

जब टीकमगढ़ निकट हि पहुँचे, पावन सागर मुनि आये।
मिले साथ गुरुभाई सवत्सल, श्रावकजन के मन भाये॥
प्रवचन कर पाठशाला खोलीं, क्षेत्र पपोरा दर्श किया।
गौशाला पर प्रवचन दे फिर, आहार क्षेत्र लख हर्ष किया॥ २६॥

❁

छतरपुर में करी प्रभावना, खजुराहो का कीना दर्श।
पन्ना, सतना, रीवा होकर, मिर्जापुर भी गये सहर्ष॥
पीपापुल से गंगा पारी, किया बनारस प्रभु दर्शन।
भेलुपुरम् भदैनीघाट वा, सारनाथ में जिनदर्शन॥ २७॥

❁

चन्द्रपुरी में चंद्रप्रभो लख, फिर जा रफीगंज आया।
गया नगर में करी प्रभावन, राजगृही दर्शन भाया॥
कुण्डलपुर के दर्शन करके, पावापुरी को किया प्रयाण।
जल मंदिर सबके मन भाया, किया सर्व जिन मंदिर ध्यान॥ २८॥

❁

गये नवादा और गुणावा, जहाँ से कोडरमा भी गये।
सरिया, ईशुरी से होकर के, मधुवन के फिर दर्शन भये॥
बहुत दूर से देख-देखकर, जिस पर्वत को किया नमन।
प्रातः उसकी वंदन करने, चलेंगे होंगे कर्म शमन॥ २९॥

❁

सभी तीर्थ में उत्तम माना, सम्मेद गिरि सु महिमामय।
नरक पशुगति रोके भवि की, करें दर्श हम गरिमा मय॥
जो भी एक बार भक्ति सह, दर्शन वंदन करता है।
भवि वह उनन्चास भवों के, भीतर शिव को गहता है॥ ३०॥

❋

तीन माह में नगर, ग्राम, वन, पर्वत, सरिता क्षेत्र सुपार।
कर पहुँचे फिर क्षेत्र शिखरजी, स्वर्णभद्र पारस के द्वार॥
फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी को, मधुवन में पहुँचे मुनिवर।
प्रधान कोठियों के जिनवर लख, प्रथम कोठी ठहरे मुनिवर॥ ३१ ॥

पंचदश-सोपान

राँची (झारखंड) में चातुर्मास-२००६

१. विहार करते हुए मुनिश्री सम्मेदशिखर पहुँचे।

२. मुनिश्री द्वारा तीर्थ वन्दना।

३. राँची एवं अन्य नगरों के भक्तों द्वारा चातुर्मास हेतु निवेदन।

४. राँची में चातुर्मास: नगर प्रवेश एवं धर्मसभा।

५. चातुर्मास: मुनिश्री के प्रवचन।

६. वीर जयंति-गुरुपूर्णिमा, षोडसकारण पर्वों का आयोजन।

७. पर्यूषण पर्व पर मुनिश्री के प्रवचन, संस्कार-शिविर।

८. विद्वत् संगोष्ठी।

९. मोक्षसप्तमी का आयोजन।

१०. विद्यासागर सर्वोदय पाठशाला की स्थापना।

११. समवसरण मंडल विधान का आयोजन।

१२. सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन।

१३. आचार्यश्री का आचार्यपद स्थापना दिवस।

१४. सूरजमल विद्यालय में मुनिश्री के प्रवचन।

१५. सदा भक्तों के आगमन का तांता लगा रहा।

१६. अहिंसा रैली एवं शाकाहार संगोष्ठी।

१७. यह राँची का ऐतिहासिक, अपूर्व चातुर्मास रहा।

पंचदश-सोपान

राँची (झारखंड) में चातुर्मास-२००६

पूरी यात्रा की सौभागी, द्रव्य लगानी वाली जो।
धन्य पनागर की व्रतधारी, शीलरानी नायक थी वो॥
वय से भले वृद्ध लगती थीं, लेकिन चौके में युवती।
पूर्ण कार्य स्वयं सम्हालें, पुण्य के मोती थी चुगती॥ १॥

❁

साथ लायीं थीं सहेलियों को, दुर्गनगर से चुन-चुन कर।
अशोक धुर्रा व्रती साथ में, चले मित्रों सह पूर्ण डगर॥
अशोकनगर की रही मण्डली, भोपाल, तमिलनाडु से जन।
राह चले तब गांव, नगर के, चले साथ में वे सज्जन॥ २॥

❁

कहाँ तो था अशोकनगर वह, बना लक्ष्य था सम्मेद शिखर।
धर्म-प्रकृति की अनुपम शोभा, जिसके कण-कण रही बिखर॥
संघ सहित मुनिराजश्री ने, महिनों नियमित किया विहार।
और एक दिन पड़ी माननी, मंजिल को मुनिवर से हार॥ ३॥

❁

मंजिल को वे ही पाते हैं, जिन मन होता दृढ़ संकल्प।
पाँव पहाड़ी चढ़ ना पाते, मन में होता अगर विकल्प॥
यह तो रही बात साधारण, अब चर्चा है सिद्धशिला।
उसको वे ही पा सकते हैं, जिनने जीते कर्म किला॥ ४॥

❁

नगर-गाँव जो मिले मार्ग में, सबको धर्मोपदेश दिया।
दया-अहिंसा पाठ पढ़ाया, वत्सल, व्रत, आचार दिया॥
जैसे गंगा जहँ-जहँ जाती, करती जाती जीवन दान।
वैसे मुनि आर्जवसागरजी, करते गये जगत् कल्याण॥ ५॥

❋

सब तीर्थों में महातीर्थ है, सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर।
मोक्ष गये सब, सदा जायेंगे, इसी क्षेत्र से तीर्थंकर॥
अनंतानंत अन्य मुनिवर भी, इसी क्षेत्र पाया निर्वाण।
शाश्वत-पावन तीर्थक्षेत्र को, श्रीमुनिवर ने किया प्रणाम॥ ६॥

❋

जीवन तीर्थ ने, महातीर्थ की, संघ सहित वंदना की।
टोंक-टोंक पर स्तुति-वंदन, भावों सहित अर्चना की॥
शिखर-शिखर की रज सिर धारी, अतिशय भक्ति व्यंजना की।
किया समर्पण, तन-मन-कण-कण, पल-पल कर्म भंजना की॥ ७॥

❋

अति हर्षित हो वंदन की जब, स्वर्णकूट पर ध्यान किया।
नीचे आकर जिन आलय में, दर्शन कर गुणगान किया॥
स्वल्प दिनों में वंदनादिकर, पालगंज जिनगृह देखे।
ऋजुकूला सरिता को लख फिर, गिरडीह जिनगृह भी देखे॥ ८॥

❋

प्रवचन दे शुभकारी प्रभावन, धार्मिक पाठशाला खोली।
महावीर जयन्ती जलूस उत्सव, हुआ पुण्य भर दी झोली॥
उत्तर प्रदेश प्रकाश भवन के, समिति गण आये गुरु पास।
नया जिनालय प्राण प्रतिष्ठा, पंच कल्याणक होय उलास॥ ९॥

❋

किया निवेदन श्रीफल रखकर, मुनिवर की आज्ञा मांगी।
आर्जवनिधि आशीष मिला जब, थे सब गुरुपद के रागी॥
मधुवन के श्रावक भी आये, कहा गुरुजी शीघ्र आओ।
घर-घर में तब चरण पड़े बस, ज्ञान भरो हिय बस जाओ॥ १०॥

❁

रांची वाले भी आये वे, वर्षायोग निवेदन ले।
शीघ्र पधारो झारखण्ड के, राजनगर में आप भले॥
बड़ी प्रभावन से गुरुवर हम, वर्षायोग करवायेंगे।
साथ यात्रा करा आपकी, कभी भूल न जायेंगे॥ ११॥

❁

लोगों की भक्ति ने खेंचा, आर्जवनिधि का गमन हुआ।
मधुवन में फिर खुसियाँ छायीं, वाद्य बजे खुस गान हुआ॥
मंगल हुआ प्रवेश जनों की- भीड़ साथ में उमड़ पड़ी।
होंगे सफल सुमंगल उत्सव, बोले जय सब भीड़ खड़ी॥ १२॥

❁

जीवन है श्वासों की यात्रा, मुक्ति पूर्व तक परिभ्रमण।
नियति जीव की बनी हुई है, तन परिवर्तन, जन्म-मरण॥
अनादिकाल से रोग लगा यह, दुःख भोगता है प्राणी।
भव-सागर से पार उतारो, हे प्रभु पार्श्वनाथ स्वामी॥ १३॥

❁

पुष्प निकलता है बगिया से, पवन गंध ले जाती दूर।
भौरें आकर गुन-गुन करते, लेते हैं सुगंध भरपूर॥
आचार्यश्री विद्यासागर के, परम शिष्य मुनिराजश्री।
झारखण्ड में पधराये हैं, महातपस्वी, महायती॥ १४॥

❁

परम तत्त्वचिन्तक हैं ऋषिवर, युवामनीषी, गुण आगार।
आर्जवसागर नाम आपश्री, हुआ चतुर्दिक यशः प्रसार॥
झारखण्ड रजधानी राँची, सकल समाज लगाई आस।
होवे उत्तम, मंगलकारी, नगर में मुनिवर चातुर्मास॥ १५॥

❋

पंचकल्याणक चला शिखरजी, वर्षा दिन ज्यों आते थे।
त्यों-त्यों राँची से भक्तों के, जत्थे आते जाते थे॥
चरणस्पर्श, श्रीफल अर्पण, चातुर्मास करें अरदास॥
लेकिन गुरुवर, 'करो प्रतीक्षा', निर्णय रखें सुरक्षित पास॥ १६॥

❋

लेकिन जिनको प्यास है गहरी, कूप निकट जाते शतबार।
वैसे राँची नगर के श्रावक, पुनःपुनः करते अरदास॥
आया जन, सामाजिक प्रतिनिधि, सब पहुँचे सम्मेदशिखर।
चातुर्मास हित किया निवेदन, चरण सरोज श्रीगुरुवर॥ १७॥

❋

श्रीगुरुवर ने जान लिया सब, राँची साँची प्यासी है।
देव-शास्त्र-गुरुभक्ति, जाग्रति, जनसंख्या भी खासी है।
चिन्तन कर मुनिराज जी ने, कहा 'ओम्' आशीष दिया।
हर्षित होकर प्रतिनिधियों ने, मुनिश्री जय-जयकार किया॥ १८॥

❋

चले शिखर से मुनिवर जी, हुआ ईशरी भव्य प्रवेश।
प्रवचन दिया व पाठशाला भी, खोली धार्मिक देकर वेश॥
इसी रूप हजारीबाग में, दे प्रवचन व पाठशाला।
करी प्रभावन, रामगढ़ में भी, पिला धर्म का शुभ प्याला॥ १९॥

❋

आगे-आगे प्रभावना सुन, राँची जन का वह उत्साह।
हुआ चौगुना, भक्तों का भी, झुण्ड बड़ा हि पूरी राह॥
शुभ मंगल बेला में प्रातः, मुनिवर को लेने आये।
मानो पूरी राँची के जन, गुरुवर चरणों में छाये॥ २०॥

❋

नौ जुलाई का शुभ दिन आया, हुआ मुनीश्वर नगर प्रवेश।
मंगल वाद्य, ध्वजा केशरिया, स्वर संगीत, भजन परमेश॥
चरण प्रक्षालन, आरति करना, जगह-जगह मुनिराजश्री।
सी.पी.सिंह विधायक राँची, ताराचंद आगवानी की॥ २१॥

❋

मुनिश्री स्वागत पूरी राँची, सुन्दर सजी नवेली-सी।
चौक-अल्पना-वन्दनवारें-ध्वज-नारों अलबेली-सी॥
किसी संत-नेता आने पर, जुड़ी न इतनी भीड़ कभी।
जितनी मुनिश्री आर्जवसागर, के स्वागत में दिखी अभी॥ २२॥

❋

जैसे बिन्दु-बिन्दु आने से, कुम्भ पूर्ण भर जाता है।
वैसे क्रमशः जन आने से, जुलुस बड़ा हो जाता है॥
अनुपम शोभा यात्रा द्वारा, मुनिवर मंदिर किया प्रवेश।
बृहद् सभा में पूज्य मुनिश्री, दिया आशीष, धर्म उपदेश॥ २३॥

❋

सब समाज ने किया निवेदन, हुआ स्थापित चातुर्मास।
पूजन-प्रवचन-ग्रंथ वाचना, शुरू हुए आयोजन खास॥
प्रति रवि-दिन आगम संगोष्ठी, एक विषय नवनीत विचार।
प्रश्न मंच हो पुनरावत्रि, तदनन्तर मुनिश्री उद्गार॥ २४॥

❋

चातुर्मास किसे कहते हैं, उसका क्या होता उद्देश्य।
श्रीमुनिवर ने सब समझाया, यथासमय दे धर्मोपदेश॥
वर्षा ऋतु में हो जाते हैं, सूक्ष्म जीव पैदा सर्वत्र।
उनकी रक्षा करने साधु, गमन नहीं करते अन्यत्र॥ २५॥

❋

एक स्थान प्रतिज्ञा करके, चार माह तक करें प्रवास।
धर्म अहिंसा पालन करते, रुकता प्राणी प्राण विनाश॥
केवल रुकना नहीं सार्थक, ज्ञान-ध्यान-तप-आराधन।
करें, करावें श्रावक जन को, दर्शन-ज्ञान-चरित पालन॥ २६॥

❋

वीर जयंति, गुरु पूर्णिमा, रक्षाबंधन आये हैं।
गुरुवर के मंगल सान्निध्य में, सब ही गये मनाए हैं॥
'शासन वीर जयंति' के दिन, थी खिरी वीर की वाणी।
गौतम गणधर ने झेला था, प्रकट हुई थी जिनवाणी॥ २७॥

❋

माता देती मात्र जन्म है, वह तो रही अधूरी माँ।
लेकिन गुरुवर करें पूर्णता, गुरुवर होते पूरी माँ॥
बोलो अगर गुरु न होते, बालक करता कौन विकास।
इसीलिए हैं 'गुरुपूर्णिमा', गुरुवर डाला पर्व प्रकाश॥ २८॥

❋

मुकुटसप्तमी पर्व महत्तम, पार्श्वनाथ पाया निर्वाण।
किया पुण्यार्जन भव्यों ने, अर्पित कर लाडू निर्वाण॥
आचार्यश्री विद्यासागरजी सर्वोदय ज्ञान पाठशाला।
हुई स्थापित, दिवस आज, पर मुनिवर ने प्रकाश डाला॥ २९॥

❋

''पाठशालाएँ ज्ञान केन्द्र हैं, देती हैं धार्मिक संस्कार।
बिना ज्ञान के जीवन पशु-सम, ज्ञान रहा जीवन का सार॥
बिना ज्ञान सभा मध्य में, शोभा नर नहिं पाता है।
जैसे बगुला, हंस सभा में, रोता-सा दिखलाता है''॥ ३०॥

❋

श्रीमुनिवर की पावन सान्निधि, राँची नगर में पहली बार।
षोडसकारण व्रताचरण को, जन अपनाया निज आचार॥
व्रत चलता बत्तीस दिवस तक, एक पारणा इक उपवास।
प्रकृति तीर्थंकर बंध का कारण, षोडश भावन शुद्धि विकास॥ ३१॥

❋

कई भव्यजन गुरुवर साक्षी, हुए संकल्पित पूरी तौर।
षोडसवर्ष करेंगे पालन, सभी व्रतों में यह सिरमौर॥
श्रद्धा सह था गया मनाया, समाधि दिवस श्री शांतिनिधि।
उनका जीवन किया प्रकाशित, मुनि आर्जवनिधि यथाविधि॥ ३२॥

❋

पर्वराज पर्यूषण आया, लेकर दश पुष्पों का हार।
क्षमा-ब्रह्म को धारण करके, किया सभी जीवन श्रृंगार॥
प्रातः मुनिश्री प्रवचन करते, कहते दशधर्मों का सार।
और दोपहर बतलाते थे, मोक्ष-शास्त्र अनुपम भंडार॥ ३३॥

❋

सीधी सरल-सरस भाषा में, मुनिवर कहते अपनी बात।
आत्मसात् कर लेते श्रोता, जिनवाणी अनुपम सौगात॥
अब तक जो था मिला था सुनने, सब कुछ रहा बुद्धि से दूर।
अबकी बार मिला है जो कुछ, समझ में आया है भरपूर॥ ३४॥

❋

श्रावकीय संस्कार-शिविर का, भी आयोजन किया गया।
दिवस क्षमावाणी आने पर, क्षमा का अमृत पिया गया॥
अनन्त चतुर्दशी दिवस सुपावन, जिनेन्द्रदेव का हुआ विहार।
हुए विराजित भव्य रजतरथ, शोभायात्रा अति मनहार॥ ३५॥

❋

त्रिदिवसीय विद्वत्संगोष्ठी, का आयोजन किया गया।
षट्काल व्यवस्था काल परिवर्तन, आदि विषय था लिया गया॥
भारत के कोने-कोने से, आये थे उद्भट विद्वान्।
शोध परक आलेखों द्वारा, मिला सभी को सम्यक्ज्ञान॥ ३६॥

❋

प्रति सत्रांत श्रीमुनिवर के, होते थे आशीष वचन।
चार चाँद लगते संगोष्ठी, सुनकर मुनिश्री उद्बोधन॥
श्रोतागण सामूहिक स्वर में, बोले ऐसा ज्ञान प्रसाद।
प्रथमबार पाया है हमने, श्रीगुरुवर के आशीर्वाद॥ ३७॥

❋

समवशरण मंडल विधान का, हुआ भव्यतम आयोजन।
श्री प्रदीप सुयश का जिसमें, रहा सफलतम निर्देशन॥
परमपूज्य मुनिराजश्री के, प्रवचन होते समवशरण।
लगता जैसे साक्षात् ही, खिरे जिनेश्वर दिव्यवचन॥ ३८॥

❋

सिद्धचक्र मंडलविधान का हुआ, आयोजन पर्व अठाई।
हर्षोल्लास मनाया जिसमें, जय भैया ने विधि कराई॥
इस विधान से श्रीपाल का, कुष्ट रोग था दूर हुआ।
जिसने किया मिला सुख उसको, धन-वैभव भरपूर हुआ॥ ३९॥

❋

आचार्य-पदवी प्राप्ति दिवस वह, आचार्यश्री विद्यासागर।
गया मनाया सन्निधान में, मुनिवर श्री आर्जवसागर॥
षट्त्रिंशत सज्जित दीपों से, की आरती भक्त सुजन।
श्रद्धाभाव विभोर हो गुरु ने, दिये सुमंगलमय प्रवचन॥ ४०॥

❋

छोटे-बड़े पर्व जो आये, सब प्रति श्रद्धाभाव जगा।
श्रीमुनिवर की पावन सन्निधि, सबको श्रद्धा अर्घचढ़ा॥
रक्षाबंधन-स्वतंत्रता दिवस, गये मनाये-सह उत्साह।
श्रीमुनिवर के सुन्दर प्रवचन, सुनने की नित रहती चाह॥ ४१॥

❋

श्रीमुनिवर के हुए सु-प्रवचन, श्रीसूरजमल विद्यालय।
बड़े ध्यान से सुने बालगण, बोल-बोल मुनिवर की जय॥
चातुर्मास का प्रतिदिन लगता, सबको ज्यों आया त्यौहार।
मुनिवर की मंगल सन्निधि में, प्रतिदिन रहती सुखद बहार॥ ४२॥

❋

आटोरिक्सा, कभी आल्टो, कभी बोलेरो-बस आई।
ताँता कभी न टूटा जिसदिन, न हुई अतिथियों अगुवाई॥
भारत के कोने-कोने से आते रहे भक्त चुपचाप।
तमिलनाडु के भक्तों मिलकर, छोड़ी अपनी उत्तम छाप॥ ४३॥

❋

अहिंसा रैली का आयोजन-सह संगोष्ठी शाकाहार।
इतनी उत्तम धर्म प्रभावना, हुई नगर में पहली बार॥
धर्म अहिंसा से बढ़ करके, जग में कोई धर्म नहीं।
वेद-पुराण-कुरान-बाइबिल, गुरु ग्रंथों में लिखा यही॥ ४४॥

❋

महावीर निर्वाण दिवस पर, अर्पित कर लाडू निर्वाण।
तीर्थंकर महावीर के प्रति, किया प्रकट अतिशय सम्मान॥
मरण और निर्वाण युगल में, बड़ा भेद यह होता है।
मरता दीप बुझाकर जाता, निर्वाण जलाकर जाता है॥ ४५॥

❁

मीलों लम्बी रैली अंत में, परिणत होकर बनी सभा।
वाक्य सुभाषित धर्म अहिंसा, बिखरते सर्वत्र प्रभा॥
जियो और जीने दो सबको, सबको प्यारे अपने प्राण।
एक सुई तुम को दु:ख देती, अन्य को मारो नहीं कृपाण॥ ४६॥

❁

वैसे तो राँची नगरी में, हुए बहुत से चातुर्मास।
लेकिन मुनि आर्जवसागरजी, बात और वैशिष्ट्य है खास॥
जो प्रभावना हुए धर्म की, अवर्णनीय, आत्मा की प्यास।
स्मरणीय बन गया जन-जन, श्री आर्जवनिधि चातुर्मास॥ ४७॥

❁

वैसे तो सामाजिक कार्यों, रहा सदा सबका सहयोग।
किन्तु विशिष्ट रहा है उनमें, मंदिर समिति समर्पित योग॥
महावीर जी-धर्मचन्दजी-छीतरमलजी-अरुण-प्रदीप।
संजय-सुभाष-सह महिला मंडल, रखना प्रज्वलित धर्मप्रदीप॥ ४८॥

❁

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
मुनिवर श्रीआर्जवसागरजी, राँची नगर से किया गमन॥
अनुनय-विनय किए बहुतेरे, सुनी एक न मुनि निर्मोह।
कर विहार क्रम-क्रम पहुँचेंगे, आर्जवनिधि देश में सोह॥ ४९॥

❁

प्रान्त उड़ीसा निकट जहाँ जा, चाईंबासा को देखा।
उसी नगर से आये पुरलिया, वहाँ भी जिनगृह को देखा॥
श्रावकगण में भक्ति बहुत थी, बंगाली कहलाते थे।
आहार विहार में रहे समर्पित, जिन मुनिवर गुणगाते थे॥ ५०॥

❋

ऐसी शुभ नगरी में मुनिवर, दर्शन दुर्लभ होते हैं।
आर्जवसागर सुगुरु मिले हैं, उत्तम प्रवचन देते हैं॥
शीतकाल में यही रहे ये, विनती चरणों गायी थी।
प्रवचन दे पाठशाला खोली, सबके मन को भायी थी॥ ५१ ॥

❋

बंगाल देश से मुनिवर ने फिर, गमन झारखण्ड कीना।
काला पत्थर पार किया व, ईशुरी का था पथ लीना॥
रांची जन व दमोह आदि के, लोग साथ में चलते थे।
तीन जनवरी सात को मुनिवर, शिखर सम्मेद पहुँचे थे॥ ५२ ॥

❋

जहाँ क्षेत्र के भक्तगणों सह, प्रमाणमुनि लेने आये।
गले मिले आपस की वंदन, गुरु भाई लख मन भाये॥
साथ आर्यिका पूर्णमति भी, मुनिवर को लेने आयीं।
दी प्रदिक्षणा मुनिवर द्वय की, देख भीड़ सब हर्षायी॥ ५३ ॥

❋

मिलकर पहुँचे तेरा पंथी-कोठी में ठहरे विधिवत्।
आगम व यात्रा की चर्चा, करने में जो हुए हि रत्॥
कुछ रहकर एक साथ की, पर्वत वंदन सुखकारी।
आर्जवनिधि फिर ससंघ ईशुरी, आये आश्रम हितकारी॥ ५४ ॥

❋

आश्रम समिति, व्रतियों की थी, भावन शीतकाल रहना।
आये व्रतिगण मुनि को लेने, ज्ञान पूर्ण गागर भरना॥
मुनिवर शीतकाल में कुछ दिन, तीर्थोदय हि सुनाते थे।
तत्त्व विषय पर चर्चा सुन जन, फूले नहीं समाते थे॥ ५५ ॥

❁

माह फरवरी में लम्बी फिर, यात्रा की मन में ठानी।
पुन:शिखरजी वंदन की सब- सोलह हुई वंदन जानी।
राँची वाले साथ यात्रा, करवाने तैयार रहे।
भागलपुर, पावापुर जाकर, पुनः राजगृही दर्श भये॥ ५६॥

❁

पुनः मिले प्रमाण सिन्धु भी, आर्जवसिन्धु गये लेने।
राजगृही में मिलन हुआ जो, मानो सुख को भर देने॥
कुछ दिन क्षेत्र वंदना करके, गया नगर को किया विहार।
आये प्रमाण सिन्धु भेजने, मिलें शीघ्र किया स्वीकार॥ ५७॥

❁

गया प्रवेश पर अनेकान्त मुनि, लेने मुनिवर को आये।
मिले साथ वा प्रातः कालिक-प्रवचन सुनने भी आये॥
होली पर थे गया रुके अरु, प्रवचन में जन का उत्साह।
पाठशाला में भी देखा तो, बच्चों का था नित उत्साह॥ ५८॥

❁

चले बनारस को मुनिवर जब, सभी भेजने आये थे।
नहीं भरा था मन लोगों का, शीघ्र मिलें, गुण गाये थे॥
क्रमशः नगर ग्राम होकर मुनि, मुगलसराय में हुआ प्रवेश।
तथाहि गंगा पार बनारस, पहुँचे मुनिवर उत्तर देश॥ ५९॥

❁

मैदाग्नि के जिन मंदिर में, आर्जव मुनिवर ठहरे थे।
सारनाथ भी दर्शन कर वा, भैलुपुरम् दर्श गये थे॥
घाट भदैनी पुनः देखकर, तीर्थंकर कल्याणक के।
धन्य हुए दर्शन करके, तीन लोक के नायक के॥ ६०॥

❁

कुछ दिन तो वास्तव्य रहा फिर, इलाहाबाद को किया गमन।
प्रयाग दर्शन आदिनाथ के, किये, भाव सह किया नमन्॥
गंगा-यमुना-सरस्वती का, संगम देखा वट अक्षय।
आरस पारस बिम्ब देख फिर, नगर जिनालय भक्तिमय॥ ६१॥

❁

दर्शन करके प्रवचन द्वारा, प्रभावना कर किया विहार।
रीवा नगरी का समझो फिर, पुण्य उदय आया सुखकार॥
बहुत दिनों की प्रतीक्षा थी, कब मुनिवर फिर आवेंगे।
ऊँची प्रतिमा, जिनमंदिर को, देख पुनः हर्षायेंगे॥ ६२॥

❁

मंगल हुआ प्रवेश भक्तिमय, आये थे जन-जन सारे।
वाद्य साथ में ध्वजायें फहरीं, तथा लगाये जयकारे॥
राँची, मधुवन से आये थे, जो जन उनका था सम्मान।
वत्सल पूर्वक विदाई करके, तथा बढ़ाया था बहुमान॥ ६३॥

❁

पर्व निकट था वीर-जयन्ती, खूब जोरमय मनवाया।
प्रवचन दे पाठशाला खुलवाई, आर्जवनिधि सुसंघ भाया॥
ग्रीष्मकाल का प्रवास थोड़ा, लेकिन बड़ा प्रभाव हुआ।
प्रवचन सुनकर धर्म बड़ा व, धर्म क्षेत्र उद्धार हुआ॥ ६४॥

❁

सतना भक्तों की भावन से, सतना नगरी गमन हुआ।
भव्य प्रवेश, फिर ग्रीष्मकालिक, वाचन, शिविर सम्पन्न हुआ॥
पद्यानुवाद इष्टोपदेश का, इसी नगर में सम्पन्न हुआ।
वारसाणुवेक्खा का भी शुरू कर, अमरपाटन में पूर्ण हुआ॥ ६५॥

❋

मैहर जिन मंदिर को लखकर, श्रेयांसगिरि का दर्शन।
गुफा, जिनालय देख सलेहा- गाँव तरफ फिर किया गमन॥
की आगवानी आर्जवनिधिकी, रखा वर्षायोग का भाव।
उसी तरह जन आये दमोह से, चातुर्मास का लेकर भाव॥ ६६ ॥

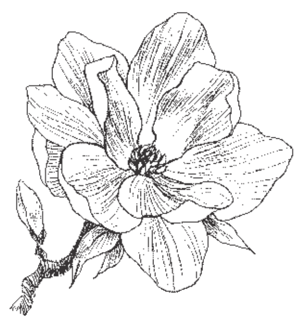

षोडस-सोपान

दमोह चातुर्मास-२००७

१. कुण्डलपुर के बड़े बाबा को प्रणाम।

२. विद्वानों और कवियों की बस्ती है दमोह

३. दमोह में ही वैराग्य के बीज पड़े।

४. मुनिश्री का दमोह नगर में प्रवेश।

५. मुनिश्री का चातुर्मास स्थापित।

६. प्रवचन शृंखला का शुभारंभ।

७. मुनिश्री के प्रभावकारी प्रवचन।

८. सभी पर्व सोत्साह मनाये गये।

९. प्रति रविवार विशेष प्रवचन।

१०. भक्तों द्वारा षोडसकारण व्रतों का पालन।

११. पर्यूषण पर्व में मुनिश्री का प्रवचन।

१२. इन्द्रध्वज महामंडल विधान का आयोजन

१३. अहिंसा विज्ञान एवं शाकाहार सम्मेलन।

१४. विद्वानों का सम्मान।

१५. कण्ठपाठ प्रतियोगिता : आयोजन एवं पुरस्कार।

१६. दावणगेरे के पद्मराज को अहिंसा-रत्न अलंकरण।

१७. जैनागम संस्कार का (कन्नड़ अनुवाद) विमोचन।

षोडस-सोपान

कुण्डलपुर म.प्र. स्थित श्री १००८ भ. आदिनाथ (बड़े बाबा) के आभामंडल से तृप्त नगर दमोह में चातुर्मास- सन् २००७

स्वल्प समय में पवई होकर, मोहनगढ़ जिन कीना दर्श।
ग्राम हटा मंदिर लख कुण्डल-पुर के मिले हि बाबा हर्ष॥
बड़े बाबा भक्त भी आये, और समिति के भी लोग।
बड़े पुण्य से कुण्डलगिरि के, दर्शन का यह बना सुयोग॥ १॥

❋

नये निर्मित मंदिर में देखा, बाबा बड़े विराजे थे।
पार्श्वभाग में पार्श्वनाथजी, खड्गासन में राजे थे॥
पूर्ण पहाड़ के जिनालयों की आर्जवनिधि ने वंदन की।
विद्या भवन में प्रवचन दीना, ज्ञान सुगन्धि चहुँ महकी॥ २॥

❋

तुमने उनकी झोली भर दी, जिनने हाथ पसारे थे।
छत्रसाल पन्ना नरेश से, भगवन् भक्त तुम्हारे थे॥
भक्तों पर जब पीर पड़ी, तब प्रभुवर हुए सहाई।
औरंगजेब-से दुश्मन हारे, भारी मुह की खायी॥
बर्रों का आक्रमण देख कर, भागा मचाता क्रंदन।
कुण्डलपुर के आदिनाथ को, कवि करता सादर वंदन॥ ३॥

❋

कुण्डलपुर के आदिनाथ जिन, का है यह अतिशयी प्रभाव।
चतुर-दिशा रहता सुवाल है, रहता कोई नहीं अभाव॥
वहीं पास में एक नगर है, जिसका सुन्दर नाम दमोह।
यहाँ के श्रावक रखें न मन में, आत्मविनाशी मद औ मोह॥ ४॥

❋

विद्वानों-कवियों की बस्ती, श्रीमंतों का यहाँ निवास।
रवि-भागेन्दु-अमृत-लहरी, सिंघई इटौरया करते वास॥
साधु-समागम विद्वत् गोष्ठी, धर्म सभा संयोजन नित्य।
आचार्यश्री विद्यासागरजी, यहाँ पधारे धर्मादित्य॥ ५॥

❋

सन् अठहत्तर, नन्हें मंदिर, धर्मसभा का संयोजन।
उच्च मंच आचार्य विराजे, अगल-बगल शेष मुनिजन॥
जैसे चुम्बक और असय् खुद, खिंच जाता है अपने आप।
वैसे 'पारस' गुरुचरणों में, खिंचे, चले, बैठे चुपचाप॥ ६॥

❋

उम्र रही बस दशक वर्ष की, दर्शन कर हर्षाया मन।
"इन जैसा ही बन कर मुझ को, करना सफल स्वयं जीवन"॥
पिता शिखर जी सुना वाक्य यह, पर विशेष न ध्यान दिया।
कर नमोऽस्तु दोनों घर लौटे, अपना-अपना काम किया॥ ७॥

❋

उत्तम-मध्यम-जघन नाम से, मनुष हैं होते तीन प्रकार।
जघन कार्य ही शुरु न करते, भय से जाते हिम्मत को हार॥
मध्यम कार्य शुरू कर देते, पर विघ्नों से डर जाते।
लेकिन उत्तम शुरू कार्य को, पूरा करके हैं दिखलाते॥ ८॥

❋

बन्धु! वही बालक दीक्षित हो, हुए मुनि आर्जवसागर।
विद्योनिधि के परम शिष्य हैं, दर्शन-ज्ञान-चारित आगर॥
झारखण्ड-महाराष्ट्र-कर्नाटक, तमिलनाडु ने माना लोह।
राँची से क्रमशः विहार कर, आये मुनि कुण्डलगिरि सोह॥ ९॥

❋

वर्षायोग का किया निवेदन, क्षेत्र कमेटी वालों ने।
दमोह जन थे सबसे आगे, बढ़ाया पुण्य निरालों ने॥
शुभ बेला में कुण्डलपुर से पटेरादिक ग्राम होकर।
आर्जव सिन्धु दमोह पधारे, आये लोग भक्ति लेकर॥ १०॥

❋

भव्य करी अगवानी गुरु की, गूँजी जय-जय ध्वनि नभ में।
घर-घर चौक पुरे दीप ले, गुरु आरति की ले कर में॥
गुण गीतों की मालायें सब, गली-गली विखरा डाली।
वर्षों हो गये आर्जवनिधि अब, मिले ससंघ हि खुसहाली॥ ११॥

❋

श्रीमुनिवर की भव्य अगवानी, जैनाजैन सभी ने की।
सोत्साह सम्पन्न हुआ फिर, मुनिश्री नगर प्रवेश तभी॥
शांत-सौम्य, जिन मुद्राधारी, श्री ऋषिवर के दर्शन कर।
हुए प्रफुल्लित सु-मन सभी के, ऐसे संतयुगल पाकर॥ १२॥

❋

जैसे सजल मेघ को लखकर, चातक बढ़ जाती है प्यास।
वैसे मुनिवर के दर्शन कर, सभी ने माँगा चातुर्मास॥
श्रीफल किए समर्पित चरणों, किया निवेदन लगा त्रियोग।
मंगल कलश स्थापनपूर्वक, हुआ स्थापित वर्षायोग॥ १३॥

❋

वर्षावास स्थापना-सभा औ, बृहत् उपस्थित जन समुदाय।
सबके मुख पर झलक रहा था, अतिशय हर्ष अमित उत्साह॥
श्रीमुनिवर ने पढ़ीं भक्तियाँ, की स्थापना यथा विधि।
दो हजार सात सन् पायी-नगर दमोह ने महानिधि॥ १४॥

❋

चातुर्मास स्थापना के सँग, बदल गया सबका जीवन।
सब कुछ हुआ व्यवस्थित क्रमशः, आया हितकर परिवर्तन॥
प्रातकाल से मंदिरजी में, बढ़ जाती थी चहल-पहल।
निशाकाल तक चलतीं रहती, धर्म क्रियाएँ भी प्रति-पल॥ १५॥

❋

श्रीमुनिवर की अनुपम रचना, काव्य तीर्थोदय, इष्टोपदेश।
वारसाणुवेक्खा आधारित, होते मुनिश्री के उपदेश॥
कुन्दकुन्द आचार्यश्री का, रत्न अमोलक प्रवचन-सार।
अपरान्ह समय में प्रवचन होते, उसे बनाकर के आधार॥ १६॥

❋

श्रीमुनिवर की प्रवचन शैली, सबका मन हर लेती है।
कल-कल करती सरिता जैसी, कर्णों को सुख देती है॥
जैसे जल को छूकर बहती, पवन पथिक करती शीतल।
वैसे मुनिवर सबै पिलाते, जिन वच रूपी गंगाजल॥ १७॥

❋

इसीलिए मुनि-धर्म सभाएँ, रिक्त कभी ना रहती हैं।
कारण उनमें अनुयोगों की, सब धारायें बहती हैं॥
बालक-वृद्ध-युवा-नर-नारी, सब पाते अपने अनुकूल।
श्रोताओं के सस्मित चेहरे, सदा खिले रहते ज्यों फूल॥ १८॥

❋

श्रावण माह शुरू होते ही, पर्वों की आयी बारात।
वीर जयंति, मोक्षसप्तमी, रक्षाबंधन की सौगात॥
माहभाद्र पद, करै भद्रता, पर्वों का अनुपम भंडार।
इसका हर दिन पर्व ही मानो, साधु-श्रावक द्वय सुखकार॥ १९॥

❋

बाहर रिमझिम पड़े फुहारें, भीतर प्रवचन अमृत-जल।
सूखा कोई रह ना पाया, चातुर्मास का मिला सुफल॥
मुनिवर श्री आर्जवसागर के, मुख पर खेले मधु मुस्कान।
हर पल-हर क्षण मुनिवर करते, अंतस् में समतामृतपान॥ २०॥

❋

प्रति रविवार श्रीमुनिवर के, होते प्रवचन मनहारी।
श्रोताओं की भीड़ उमड़ती, सोत्साह अचरजकारी॥
जैन-अजैन का भेद न रहता, सब ही लाभ उठाते थे।
अपना जीवन स्वर्ण बनाते, व्यसन छोड़ कर जाते थे॥ २१॥

❋

षोडसकारण व्रत का पालन, चातुर्मास उपलब्धि महान्।
सवा तीन सौ नर-नारी ने, किया पाल आत्मिक उत्थान॥
व्रत पालक करते थे केवल, शुद्ध कूप जल का उपयोग।
भोजन शुद्ध किया करते थे, तजा सुशक्ति भोग-उपभोग॥ २२॥

❋

पर्व पर्यूषण काल मुनिश्री, प्रवचन करते दशविध धर्म।
सरल-सरस भाषा समझाते, उत्तमक्षमा आदि का मर्म॥
तत्त्वार्थसूत्र अध्याय एक पर, क्रमशः होते थे प्रवचन।
हृदयगम कर हर्षित होते, तत्त्व कथन सुन श्रोतागण॥ २३॥

❋

श्रीमुनिवर के मार्मिक प्रवचन, षोडसकारण व्रत पालन।
मुक्तकंठ से हुए प्रशंसित, निशा सांस्कृतिक आयोजन॥
तमिल-महा.-कर्नाटक आये श्रद्धा धारे भक्त सुजन।
धार्मिक लाभ लिया सब ही ने, श्रीमुनिवर के बैठ चरण॥ २४॥

❋

कई राजनेता भी आये, मुनिश्री का पाने आशीष।
श्रीमुनिवर के पद-पंकज में, श्रद्धा सहित नमाये शीष॥
जयंत मलैया श्री राघवजी, कपूरचंद धुवाराजी।
मुखसस्मिति-सह, दक्षिणकर से, आशीष दिया मुनिराजश्री॥ २५॥

❋

इन्द्रध्वज मंडल विधान का, हुआ सुष्ठुतम आयोजन।
ब्रह्मचारी श्री जय निशांत का, रहा सफलतम संयोजन॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, सन्निधान मंगलकारी।
अहिंसा-विज्ञान सम्मेलन में, गुरुवर प्रवचन हितकारी॥ २६॥

❋

गुलाबचन्द जी 'पुष्प' टीकमगढ़, भागचन्द 'भागेन्दु' दमोह।
डाक्टर श्री सुशील मैनपुरी, प्रवचन लेते मन को मोह॥
शाकाहार में ख्याति प्राप्त है, डॉ. श्री के.एम. गंगवाल।
अहिंसा वीर चक्र सम्मानित, किए गए जिनवाणी लाल॥ २७॥

❋

करुणा कलित हृदय विद्वद्वर, सरस्वती के उन्नतभाल।
साठ सुकृतियों के शुचि सर्जक, श्री श्रीपाल 'दिवा' भोपाल॥
शाकाहार उपासना परिसंघ, 'अहिंसा-रत्न' सम्मान किया।
मुनिवरश्री आर्जवसागर जी, मंगल-शुभ आशीष दिया॥ २८॥

❋

वर्षायोग के अन्तकाल में, मंदिर दर्शन भाव भरा।
चले हि नसिया कांच जिनालय, मील जिनालय वसुंधरा॥
नेमिनगर राजीव नगर हो, डगर नगर की लख डाली।
गये जबलपुर नाका मंदिर, प्रवचन चर्या सुखकारी॥ २९॥

❋

आई दिवाली, वीर मोक्ष जब, वर्षायोग भी पूर्ण हुआ।
पढ़ी भक्तियाँ क्षमा भी मांगी, शास्त्राध्यन सम्पूर्ण हुआ॥
कण्ठपाठ प्रतियोगी जन का, था सम्मान किया पक्का।
साथ पिच्छिका परिवर्तन भी, स्कूल भूमि में था रक्खा॥ ३०॥

❋

पुस्तकस्थ जो विद्या होती, नहीं समय पर आती काम।
जो है कंठगत, वही काम की, शेष किदाविद का आयाम॥
कंठ-पाठ का कर आयोजन, स्मृतिवर्द्धन किया प्रयास।
स्वर्णपदक से हुए विभूषित, रहे विजेता जो हैं खास॥ ३१॥

❋

प्रतिदिन प्रवचन प्रात:कालिक, दीप प्रज्ज्वलन साथ हुआ।
रविवारिक प्रवचन में देखो, शास्त्र दान गुरु हाथ हुआ॥
मंगलाचरण विशेष होकर, नितप्रति अतिथि का सत्कार।
श्रीफल, तिलक आदि उनको दे, समिति मानती थी आभार॥ ३२॥

❋

पच्चीस नवम्बर, दो हजार सत, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
मुनिवर श्री आर्जवसागर के, हुए सामायिक थे प्रवचन॥
संयम का उपकरण पिच्छिका, होती अतिशय लघु-मृदुतम।
नहीं ग्रहण करती स्वेद-जल, नहीं ग्रहण करती रज-कण॥ ३३॥

❋

श्रीमुनिवर का पिच्छि ग्रहण का, श्री नरेन्द्र पाया सौभाग्य।
मुनिश्री को पिच्छी प्रदान के, चन्द्र-सुनील के जागे भाग॥
दावणगेरे पद्मराज को, मिला "अहिंसा-रत्न" अवार्ड।
गौशाला संचालन करते, करवाते मंदिर निर्माण॥ ३४॥

❋

श्रीमुनिवर की अनुपम रचना, ''जैनागम-संस्कार'' है नाम।
हुई अनूदित कन्नड़ भाषा, उसका हुआ विमोचन काम॥
सकल समाज सहयोग से, पूर्ण सफल यह वर्षायोग।
फिर भी कुछ वैशिष्ट्य लिये हैं, श्रद्धा सहित समर्पण योग॥ ३५॥

❋

विमल लहरी, संजीव-सुनील औ, पुण्य कमाते थे राजेश।
रतन-नवीन-सौरभ-अशोक जी, ताराचंद-श्रेयांस-महेश॥
अपूर्व हुआ था ऐसा उत्तम, वर्षायोग हि दमोह नगर।
गढ़ा गया इतिहास मुनि का, चर्चा चलती है घर-घर॥ ३६॥

❋

इसी सुअवसर पर देखो जो, भाव हृदय थे कई दिन से।
राँची में जो मांग करी थी, बिम्ब प्रतिष्ठा की दिल से॥
वही भाव आर्जव मुनिवर के, चरणों में फिर रक्खा था।
सिविलवार्ड में गजरथ भी हो, यही इरादा पक्का था॥ ३७॥

❋

गुरुवर ने जब देख लिया कि, उत्कण्ठा है पूर्णभरी।
वर्षायोग में भी देखो सबने, प्रभावना भी खूबकरी॥
चलो इन्हें देते हैं आशी, भव्य पंच-कल्याणक हो।
त्रय गजरथ का भाव सभी का, पुण्य बढ़ेगा महा अहो॥ ३८॥

❋

मिला आशीषजु आर्जवनिधि का, जयकारों से गूँजाकाश।
बजीं तालियाँ, श्रीफल अर्पित-इतने छूते हों आकाश॥
सभी जुटे वे सिविलवार्ड के, चन्द्रकुमार, जिनेश, संजीव।
रूपचंद व धनीराम भी, व संतोष की लगन सजीव॥ ३९॥

❋

आचार्यश्री विद्यासागरजी, का आशी भी ले आये।
पात्रचयन कर नई प्रतिमाएँ, जयपुर से भी शुभ लाये॥
अष्ट धातु की तीनों प्रतिमा, बड़ी बीच में शोभे जो।
मूलबीच में शान्तिनाथ थे, सबके मन को मोहे वो॥ ४०॥

❋

आयोजन के पूर्व मुनीश्वर, पास-नगर भी पधराये।
ग्राम सदगुवां, नगर पथरिया, गये सभी मन हर्षाये॥
वर्षायोग में आकर जन-जन, कहते थे आओ इकबार।
बचपन बीता नगर पथरिया, फिर से लख, कर दो उद्धार॥ ४१॥

❋

संयम लेकर प्रथमबार मुनि, आर्जवनिधि पधराये थे।
अर्पणसागर संग साथ में, जन-जन ने गुणगाये थे॥
भव्य हुई अगवानी मुनि की, पूर्व मित्र सब आये थे।
संजय, विजय, पदम आदि ने, नमें चरण, हर्षाये थे॥ ४२॥

❋

नगर पूर्व आये प्रधान वे, थे कमलेश और राजेश।
बांझल, सिंघई सेठ व फट्टा, नगर कराया शुभं प्रवेश॥
वाद्य आरती चौक आदिक से, मुनिवर का आदर कीना।
था पाण्डाल बड़ा प्रवचन का, मुनि प्रवचन में चित् दीना॥ ४३॥

❋

कहते थे वे मित्र साथ के, आज सुखद आनंद आया।
मेरे साथी मुनि बन आये, जन-जन को है हर्षाया॥
शाला, विद्यालय के शिक्षक, भी प्रवचन सुनने आये।
धारावाहिक प्रवचन सुनकर, उनके मन थे हर्षाये॥ ४४॥

❋

इतना ज्ञान कहाँ से आया, पारस में न देखा था।
दिया था हमने थोड़ा जिनको, बड़ा पुण्य का लेखा था॥
विद्यासागरजी ने जिनमें, ज्ञान का सागर भर डाला।
आर्जवसागर बन भारत में, तिमिर सभी का हर डाला॥ ४५॥

❋

सभी जिनालय लखकर गुरु ने, प्रवचन चर्या आदिक से।
करी प्रभावन उत्तम रीत्या, तत्त्व चर्चा आदिक से॥
दमोह नगर का महामहोत्सव, गजरथ साथ महोत्सव हो।
किया बिहार इसी कारण से, रुकना, रोको नहीं कहो॥ ४६॥

❋

नोरुग्राम में चर्या करके, दमोह नगर में किया प्रवेश।
चातक सम देखें बैठे जो, श्रावकगण का मिटा क्लेश॥
पूरी की तैयारी जिसकी, हों कल्याणक गजरथ भी।
आर्जवनिधि बस हमें मिल गये, न चाहें जग में कुछ भी॥ ४७॥

❋

आयोजन था शीतकाल में, मण्डप विस्तृत शोभा थी।
उत्तम था तहसील ग्राउण्ड, बिखरी मुनिवर आभा थी॥
गुरुवर के प्रवचन सुनकर जन, फूले नहीं समाते थे।
पूजन अरति नाटक देखें, तीर्थंकर गुण गाते थे॥ ४८॥

❋

प्रतिष्ठाचार्य गुलाबचंद जी, जय कुमार सुत साथ रहे ।
दोनों विद्वत् अमृतलाल भी, ज्ञानामृत नित देत रहे॥
पंचकल्याणक में शुभ नाटक, मंगलमय दिखलाते थे।
विरागवर्धक रोचक थे बहु, सबके मन को भाते थे॥ ४९॥

❋

अपार जनता मंत्रीगण भी, जयन्त मलैया आदि सब।
दौड़े-दौड़े आये सुनने, मुनि दर्शन वच मिल हैं अब॥
जन शैलाव मंच बड़ा है, फेरी सात हैं गजरथ की।
हम सब आगे होकर चालें, रज सर लागे जिनरथ की॥ ५० ॥

❋

लोग हजारों नयन देखते, साथ चल रहे सब श्रीमंत।
देखो गजरथ जिनेन्द्र राजे, विद्वत् पढ़ते थे जिन मंत्र॥
सबसे आगे मुनिवर चालें, संघ शोभता था ऐसा।
मानों नभ में ज्योतिष मण्डल, था समवसरण हो जैसा॥ ५१ ॥

❋

रत्नवृष्टि व जयकारों सह, ध्वजायें शुभ लहराती थीं।
रोम-रोम पुलकित होता था, अप्सरायें गुण गाती थीं॥
परिक्रमा जब हुई सप्त तब, सुन गुरु मुख से जिनवाणी।
निर्भयता से व्यसन, पाप तज, सुमार्ग लागे भवि प्राणी॥ ५२ ॥

❋

विशाल शोभा यात्रा से प्रभु-का विहार जिन मंदिर ओर।
हुआ वाद्य व दिव्य घोष से-कीर्ति फैली सब चहुँ ओर॥
शुभ मुहूर्त्त में बिम्ब स्थापन, कलश रखा व ध्वज फहरीं।
रचा गया इतिहास बड़ा ही, याद रहेगी नित गहरी॥ ५३ ॥

❋

चन्द्रकुमार, जिनेश साथ में, धनीराम व एस.के. जैन।
बाबा, नन्हा, काका, मामा, भाई, मित्र सब सुनते बेन॥
मुनिवर ने इनसे छोड़ा हो-मोह तथापि वे न दूर।
अब तो अधिक स्नेह साधु पर, पायें पुण्य सभी भरपूर॥ ५४ ॥

❋

नहीं अतिथि की तिथि है कोई, रुके एक थल नहीं पवन।
मुनिवर श्री आर्जवसागर ने, किया छतरपुर ओर गमन॥
रहे समर्पित गुरु को लाने, और प्रभावन करने को।
सेवा दान व वैयावृत्ति-से, वे भवसागर तरने को॥ ५५॥

❋

लगा निवेदन पूर्व से हि था, नगर छतरपुर ग्रामों का।
गुरु का लाभ मिले उनको भी, पुण्य जगा उन धामों का॥
शुभ दिन पर जब चले मुनीश्वर, गुरु विहार की बात सुनी।
जिनने वे सब दौड़े आये, रुके न इक पल एक सुनी॥ ५६॥

❋

स्वल्प काल में जनता का वह, जन शैलाव उमड़ आया।
अश्रुजल से विदाई देते, गुरु का जाना न भाया॥
उड़े जा रहे पंछी को हम, कैसे नभ में रोकेंगे?
नहीं भायेगा हमें जिनालय, सूना लख झुक रो लेंगे॥ ५७॥

❋

बार-बार बहु रोका गुरु को, पकड़े पद तो भी गुरुवर।
क्षमाभाव आशीष दिखाकर, बढ़ते जाते थे मुनिवर॥
चलो हि थोड़े दिन में हम सब, फिर से गुरु को लायेंगे।
पुण्य हुआ है पतला हमरा, गुरु वच पाल बढ़ायेंगे॥ ५८॥

❋

जाओ अब तो सीमा आयी, देर बहुत हो जायेगी।
घर जाने में देर लगेगी, सिरा रसोई जायेगी॥
घर वाले भी चिंतित होंगे, अतः जाओ, फिर आओगे।
मुनिवर ऐसा कहते तो भी, जन कहते कब आओगे॥ ५९॥

❋

नहीं बंधते हैं साधु कदापि, अतिथि वे कहलाते हैं।
पुण्य कमाओ, धर्म पालकर, बढ़े पुण्य, तब आते हैं॥
अगर बढ़ गया पुण्य देख लो, जल्दी हम आ जायेंगे।
गुरु मुस्कान लख लौटे जन, आओ आश लगायेंगे॥ ६०॥

❋

बड़े कष्ट से विदा हुए जन, भजन, गीत सब आये याद।
जयकारों से पुण्य कमाया, खुशी नृत्य भी आये याद॥
मुनिवर का सानंद रहा यह, परम मिला सान्निध्य हमें।
और मिलें बस इसी तरह के, ज्ञान पुण्य के लाभ हमें॥ ६१॥

❋

ऐसे मुनियों की कीर्ति हम, जीवन भर ही गायेंगे।
जायेंगे ऐसे मुनियों (गुरुओं) के, पास भूल न पायेंगे॥
चौका, सेवा, ज्ञान कला सब, सबको हम सिखलायेंगे।
कर्म क्षयोपशम बढ़ा तो इक दिन, हम भी मुनि बन जायेंगे॥ ६२॥

❋

मुनिवर पहुँचे नरसिंहगढ़ जहँ, जिन दर्शन कर जहाँ रुके।
नगर गांव से श्रावक आये, आप पधारें भाव रखे॥
बहु संख्या में ग्राम फुटेरा-कलाँ से श्रावक आये थे।
जन्मभूमि में हो विहार यह, भावन लेकर आये थे॥ ६३॥

❋

जिस पारस बालक से भूमि, जन्म हुआ तब धन्य हुई।
जिनगृह दर्शन प्रथम हुए जहँ, घर, खेती, नदि धन्य हुई॥
ग्राम फुटेरा के वे सब थल, याद सभी को आयेंगे।
भूले पारस, मुनि बन तो भी, पावन रज कर जायेंगे॥ ६४॥

❋

ग्राम फुटेरा वालों ने सब, सुपरिचितों को बुलवाया।
करी सजावट गली गृहों की, दुल्हन सम ही सजवाया॥
प्रथम बार जो संयम धरकर, इस नगरी में आयेंगे।
जन्मे थे इस पावन भू पर, हमें धन्य कर जायेंगे॥ ६५॥

❋

चले मुनि तब सुभाष, वीरु, राजेश, अमित भी थे साथ।
सुरेन्द्र, दीपक स्वागत करते, नमते जाते थे वे माथ॥
जिस घर से निकले थे पारस, वहीं जहाँ परिवार बड़ा।
उन ही ने बनवाया मंदिर, फैला जिन का नाम बड़ा॥ ६६॥

❋

दूजे दिन प्रातः बेला में, जब मुनिवर के पड़े चरण।
धन्य हो गयी पावन भूमि, हुए सभी के पाप हरण॥
दिव्य घोष व वाद्य ध्वनि से, गूँजा था सारा आकाश।
जय-जयकार व अरति करके, उमड़ा सब में बड़ा उलास॥ ६७॥

❋

पद रज पाने शीश झुकाने, सभी प्रतीक्षा करते थे।
जैसे-जैसे मुनिवर बढ़ते, भक्त नम्र हो नमते थे॥
पहुँचे मुनिवर बड़ी भीड़ से,-निकल, जिनालय द्वारे पर।
बड़ा हुआ संतोष गुरु को, जिनवर लख प्रभु द्वारे पर॥ ६८॥

❋

बैठे जब पण्डाल बीच में, आसन पर वे संघ सहित।
प्रवचन सुनकर जैन-जैनेतर, हुआ सभी का पावन हित॥
गुरु-सेवा, आहार की चर्या, कराई, देखी जिन-जिन ने।
हुआ बड़ा आनंद सभी में, तरसे सब जन गुरु मिलने॥ ६९॥

❋

पारस तो बन गये हैं मुनिवर, आर्जवसागर संत बड़े।
प्रांत तेरह प्रभाव कीना, अतः आयें श्रीमंत बड़े॥
सबके मन में एक चाह थी, कैसा होगा गांव जहाँ?
जन्में देखें ज्ञानी मुनिवर, कैसे रहते लोग वहाँ? ॥ ७० ॥

❋

बहिर् नगर से आयें अतिथि, उन सबका सम्मान हुआ।
इतनी भक्ति इस नगरी में, उन सबको यह ज्ञान हुआ॥
चाह फुटेरा नगर जनों की, ग्रीष्मकाल फिर वर्षायोग।
अंगुली हो फिर कोंचा पकड़े, बने पुण्य का उत्तम योग॥ ७१ ॥

❋

लेकिन इक दिन मात्र ठहर कर, बिना ही बोले ये मुनिवर।
शीघ्रहि निकले विहार कीना, अतिथि उत्तम थे मुनिवर ॥
नहीं पवन वह रुकता जैसे, अवसर पा वह बह जाये।
पानी रुकता कीच बने वह, यति मोही भी हो जाये॥ ७२ ॥

❋

अतिपरिचित से दूर रहें जो, राग-द्वेष वे जीत रहे।
निज गुण पावन सदा बनाने, धर्म-मार्ग के मीत रहे॥
जिनको धर्म कमाना होगा, स्वतः दौड़कर आयेंगे।
नहिं कुआ हि पास में आता, प्यासे जल ले जायेंगे॥ ७३ ॥

❋

छोड़ फुटेरा बटयागढ़ में, रात बिताई फिर प्रातःकाल।
प्रवचनचर्या आदि करके, पहुँचे केरवना शुभकाल॥
वहाँ प्रवचन चर्या कीनी, भविकों को गुरु मिला सुदर्श।
मध्यकाल में पर्वत मग से, पहुँचे नैनागिरि पर हर्ष॥ ७४॥

❋

श्रावक जन ने खुसी मनाई, गुरु सेवा में जुटे वहाँ।
सभी जिनालय समवसरण का, मंगल दर्शन किया जहाँ॥
आर्जवनिधि को पूर्व काल की, ताजी हो गई स्मृतियाँ।
पंचकल्याणक और वाचना, याद आ गयी शुभ घड़ियाँ॥ ७५ ॥

❋

द्रोणागिरि शुभक्षेत्र वंदना, हेतु गुरु ने किया विहार।
दलपतपुर शाहगढ़ भी जाकर, द्रोणागिरि पहुँचे शुभ कार॥
क्षेत्र वंदना जिनगृह दर्शन, चौबीसी व आश्रम भी।
देखे धर्म सुनाया जन को, हर्षित हो गये जन-जन भी॥ ७६ ॥

सप्तदश-सोपान

ग्वालियर नगर में चातुर्मास-२००८

१. दमोह से विहार छतरपुर में शीतकालीन प्रवास।

२. छतरपुर से सोनागिरि : वन्दना।

३. सोनागिरि की शोभा, मुनिवर की साधना।

४. ग्वालियर सहित अनेक नगरों के भक्तों द्वारा चातुर्मास हेतु निवेदन।

५. ग्वालियर में चातुर्मास : नगर प्रवेश

६. स्वर्णमंदिर में प्रवास

७. गोपाचल के दर्शन, प्रतिमा-जिनालयों की दुरावस्था देव उद्धार की संकल्प।

८. चातुर्मास की स्थापना: नयाबाजार के मन्दिर में।

९. अनेक ग्रन्थों का ज्ञान-दान।

१०. नगर में जैन पाठशाला की स्थापना।

११. सम-सामायिक पर्व मनाये गए।

१२. ''भाव-विज्ञान'' पत्रिका के चतुर्थ अंक का विमोचन।

१३. पर्यूषण पर्व पर विशेष आयोजन।

१४. जैन संस्कृति के संरक्षण की पहली बार पहल शुरू।

१५. मूर्तियों पर सीवर का पानी एवं महावीर जिनालय पर अनधिकार आधिपत्य का जमकर विरोध।

१६. क्षेत्ररक्षण हेतु कल्पद्रुम मंडल विधान का आयोजन कर संस्कृति संरक्षण हेतु प्रवचनों द्वारा प्रेरणा।

१७. ज्योतिरादित्य सिंधिया आये और संस्था समाधान का वचन दिया।

१८. जनता ने स्वीकारा कि अब तक जैन संस्कृति के संरक्षण का इतनी प्रभावक बात किसी श्रावक, श्रमण विद्वान या नेता ने नहीं की कि जितनी की मुनि आर्जवसागरजी ने की।

१९. अहिंसा-शाकाहार संगोष्ठी का आयोजन।

२०. कंठ पाठ प्रतियोगिता का आयोजन।

२१. मुनिश्री के प्रवचनों का प्रभाव : व्यसन मुक्ति।

२२. ग्वालियर रत्न कविश्री रइधू पर विद्वत् संगोष्ठी।

२३. जैसे सुमेरु पर्वत के चारों ओर प्रतिमाएँ हैं वैसे ही ग्वालियर दुर्ग के चारों ओर प्रतिमाएँ उकेरी गई है।

२४. ग्वालियर चातुर्मास का फलश्रुति।

ॐ

सप्तदश-सोपान
ऐतिहासिक नगर ग्वालियर में ऐतिहासिक चातुर्मास, सन्-2008

नगर छतरपुर प्रतिनिधि मंडल, गुरुवर चरणों आया था।
श्रीफल भेंट नमोऽस्तु अनन्तर, निज मंतव्य सुनाया था॥
परम तपस्वी, ज्ञानी, ध्यानी, मुनिवर हम पर कृपा करें।
ग्रीष्मकालीन वाचना गुरुवर, नगर हमारे यहाँ करें॥ १॥

❁

मुनिवर श्री आर्जवसागर का, दमोह नगर से चला विहार।
क्षेत्र-ग्राम सब उपकृत करते, रुके छतरपुर 'डेरा पहार'।
नाम पड़ा क्यों 'डेरा पहाड़ी', पापास्रव रोके बन ढाल।
साधु-संत साधना करते, श्रावक रहते डेरा डाल॥ २॥

❁

बड़ा मलहरा आदिक होकर पहुँचे थे गुरु छत्तरपुर।
श्रावक जन का, अगवानीकर,-भींग गया था अंतर उर॥
सबसे पहले डेरा पहाड़ी, पहुँचे आर्जवगुरु ससंघ।
मानस्तम्भ की हुई प्रतिष्ठा, शीतकाल वाचन सम्पन्न॥ ३॥

❁

सड़क किनारे बना क्षेत्र यह, छोटी एक पहाड़ी पर।
इतना सुन्दर लगता जैसे, उतर चाँद आया भू-पर॥
अजित-शांति-व वीर-बाहुबली, दर्शन कर मन झूम रहा।
खड़ा वहीं पर मानस्तंभ है, नील गगन को चूम रहा॥ ४॥

❋

शीतकाल मुनिराजश्री का, इसी क्षेत्र पर रहा प्रवास।
मानस्तंभ जिनबिम्ब प्रतिष्ठा, कलशारोहण पूरी आस॥
''काव्य तीर्थोदय'' हुई वाचना, किया सभी काव्य रस-पान।
षोडसकारण कैसे होते, सब श्रावकजन पाया ज्ञान॥ ५॥

❋

नन्दीश्वर मंडल विधान का, हुआ शुभमंगल आयोजन।
ब्रह्मचारी भैया त्रिलोक का, रहा सुरुचिकर निर्देशन॥
''श्रीमुनिवर के सन्निधान में, जो अनुपम आनंद आया।
वैसा शांत-भव्य-सुन्दरतम, कहीं दृष्टि में नहिं आया''॥ ६॥

❋

ध्यानप्रवचन पाठशाला भी-धार्मिक जहाँ पे खुलवायी।
ज्ञान, ध्यान, तप, संयम की जहँ, सौम्य सुरभि भी महकायी॥
शहर जिनालय में भी गुरु ने, धर्मलाभ दीना शुभमान।
बँधा क्षेत्र का हुआ निवेदन, किया विहार उसी दिक् जान॥ ७॥

❋

निकट धुबेला-संग्रहालय का, अवलोकन, कीना आहार।
श्रावकजन को संतुष्टि हुई, नोगांव, जतारा चला विहार।
गांव-गांव में विहार करके, शुभ बेला में बँधा प्रवेश।
मोक्ष दिवस, अभिषेक व मेला अजितनाथ का हुआ विशेष॥ ८॥

❋

बँधा क्षेत्र में प्रभावना कर, ग्राम-ग्राम में हुआ विहार।
टीकमगढ़ के भव्यों की भी, भावना सु हुई साकार॥
वीर प्रभो की जहाँ जयन्ती, शोभा यात्रा और विमान।
दीक्षा उत्सवपूर्वक उत्तम, हुआ कार्यक्रम शोभितजान॥ ९॥

❋

सब समाज ने किया निवेदन, गुरुवर! अभी बुझी ना प्यास।
ग्रीष्मकाल में करे वाचना, करें यहीं पर चातुर्मास॥
सभी जिनालय वन्दे मुनिवर, सादर-सविनय नमन किया।
नहीं अतिथि की तिथि है कोई, टीकमगढ़ को गमन किया॥ १०॥

❋

संतश्री होते अनिकेतन, उनका कोई नहीं मुकाम।
निस्पृह होकर सकल जगत के, परोपकार का करते काम॥
जीवन का संगीत सुनाते, धार्मिक बिगुल बजाते हैं।
अंतरंग में भजन भक्ति के, हरदम गाते जाते हैं॥ ११॥

❋

मांझ मंदिर नया बाजार व, बड़ा जिनालय, नंदीश्वर।
इन सब थल में प्रभावना की, प्रवचन का शिविरादिक कर॥
क्षेत्र पपोरा दर्शन कीना, बानपुर भी किया विहार।
तालबेहट फिर पावागिरि, पहुँचे गुरुवर सब सुखकार॥ १२॥

❋

दर्शन प्रवचन द्वारा पथ में, करते जाते थे उद्धार।
जन-जन सब हर्षित होते थे, और रोकते थे शुभकार॥
गुरु बवीना, झाँसी पहुँचे, क्षेत्र करगुवाँ दर्श किया।
जहाँ निवेदन चातुर्मास का, क्षेत्र समिति ने पूर्ण किया॥ १३॥

❋

उत्तम थी मुनिवर की इच्छा, अपने दीक्षा स्थल की।
शीघ्र देख लें सोनागिरि को, वंदन कर लें शुभ थल की॥
दतिया होकर संघ सहित उस, सिद्ध क्षेत्र पर पहुँच गये।
रोज वंदना की मन भरकर, तभी नयन वे तृप्त भये॥ १४॥

❁

सोनागिरि में पहुँच पूज्यश्री, चन्द्रप्रभ के दर्श किए।
जामन-मरण मेट दो स्वामी, बार-बार प्रभु नमन किए॥
गिरि मंदिर, वेदी, प्रतिमाजी, भाव सहित सिर नाया है।
मुनि दीक्षोपरांत आज फिर, दर्श आपका पाया है॥ १५॥

❁

चारों ओर प्राकृतिक शोभा, शांत-दिव्य-एकान्तिकवास।
ज्ञान-ध्यान-तप-सामायिक का, मिला योग मुनिवर को खास॥
चन्द्रप्रभ चैतन्यतेज से, उर्जस्वित रहता वातास।
साधुजनों के तपस्तेज की, दिशदिश फैली रहे सुवास॥ १६॥

❁

निरतिचार चर्या मुनिवर की, स्मृति आता चौथा काल।
अतिशय शांत-सौम्य मुखमंडल, करुणानयन, समुन्नत भाल॥
पूज्यश्री व्यक्तित्व अलौकिक, बाल-दिगम्बर रूप भला।
दर्शन कर लगता है मन को, मानो अतिशय पुण्य फला॥ १७॥

❁

श्रीमुनिवर के तपस्तेजस की, कीर्ति-कौमुदी चारों ओर।
दतिया-डबरा-झाँसी-ग्वालियर, फैली दिग्‌दिगंत के छोर॥
सभी चाहते श्रीमुनिवर का, प्राप्त हमें हो चातुर्मास।
करने लगे श्रीफल अर्पण, बारम्बार लगाकर आश॥ १८॥

❁

साधु-संत की पावन सन्निधि, पुण्यवंत ही पाते हैं।
उनमें फिर आर्जवसागर से, मुश्किल से मिल पाते हैं॥
नगर ग्वालियर की वैसे तो, कई सन्तों ने पूरी आस।
लेकिन विद्यानिधि शिष्यों का, हुआ न अबतक चातुर्मास॥ १९॥

❁

अतः ग्वालियर प्रतिनिधि मंडल, गुरुवर चरण नमाया माथ।
श्रीफल अर्पण, किया निवेदन, हो करबद्ध विनय के साथ॥
हे मुनीश! हे करुणा सागर, विद्यानिधि जी शिष्य परम।
पूज्यश्री व्यक्तित्व समाया, महावीर का जैन धरम॥ २०॥

❁

कुछ ही दिन में श्रावकजन तक, संयम सुरभि पहुँची थी।
अतः शीघ्र ही भावन लेकर, जनता गुरु तक पहुँची थी॥
एक नगर था सब नगरों में, ग्वालियर जो बड़ा प्रसिद्ध।
आये भक्त जो चतुर्मास की, लाये थे भावन सुविशुद्ध॥ २१॥

❁

श्रीफल अर्पित किये मिलन ने, नगर ग्वालियर आने को।
वर्षावास में पुण्य खजाना, मिले हमें तिर जाने को॥
देखो कहकर मुनिवर ने बस, दिलभर के आशीष दिया।
खूब बिकेगा माल पुण्य का, भक्तों से पहचान लिया॥ २२॥

❁

अतिशय-सिद्धक्षेत्र गोपाचल, नगर ग्वालियर की अभिलाष।
मंगल मूरत दर्शन होवें, हो मंगलमय चातुर्मास॥
यथासमय मुनिराज श्री ने, सोनागिरि से किया गमन।
नगर-ग्राम को उपकृत करते, हुआ 'ग्वालियर' शुभागमन॥ २३॥

❁

नगर प्रवेश हुआ गुरुवर का, पतझड़ में आ गई बहार।
दशों दिशायें लगी गूँजने, श्रीमुनिवर की जय-जयकार॥
"चतुर्थकाल चर्या के पालक, महावीर के लघुनन्दन।
नगर ग्वालियर अहोभाग्य है, पूज्यश्री के पड़े चरण॥ २४॥

❀

श्री जैन स्वर्ण मंदिर में, प्रथम आठ दिन रहा प्रवास।
नगर वंदना करी पूज्यश्री, पढ़ा गोपाचल का इतिहास॥
नेमिगिरि-सिद्धांचल वन्दे, त्रिशलागिरि सुदर्श किए।
बावनगजा-श्रीआदिनाथ जी, मंगलचरण स्पर्श किए॥ २५॥

❀

गुरुवर की मंगल सन्निधि में, सब समाज को लाभ मिला।
अतिशय-सिद्धक्षेत्र वंदन का, यह अनुपम सौभाग्य मिला॥
श्रीमुनिवर के पथ अनुगामी, बनकर चलते विद्वज्जन।
दुर्गदृष्टि पथ आया जैसे, वैसे क्रमशः करे कथन॥ २६॥

❀

विन्ध्याचल की शृंग-शृंखला, ऊपर निर्मित एक किला।
वृहत् सुदृढ-तुंग प्राचीर, अतिशय सुन्दर रूप मिला॥
जैसे मणियों की माला में, शोभित होता श्रेष्ठ मणि।
वैसे दुर्गों की माला में, 'गोपाचल' की छवि बनी॥ २७॥

❀

है अजेय-अक्षुण्ण दुर्ग यह, सदियों का देखा इतिहास।
पुराण-प्राक् महाभारत का, भी हिसाब है इसके पास॥
''ग्वालिय'' ऋषि की तप स्थली यह, मिलता है उल्लेख पुराण।
'श्रीसुप्रतिष्ठित' नाम केवली, इस भूमि पाया निर्वाण॥ २८॥

❀

सप्त अशीति गुहा समूहों, पंच है अतिशय तीर्थ महान्।
तीर्थ सिद्धांचल-त्रिशला-नेमि, बावनगजा वापिका जान॥
वर्द्धमान मंदिर बतलाते, जैनधर्म का स्वर्ण अतीत।
समय न रहता कभी एक-सा, सुख-दुःख सब जाते हैं बीत॥ २९॥

❋

दुर्ग महत्त्व न पाषाणों से, अथवा महल बने ऊपर।
किन्तु महत्ता गुहा मंदिरों, जिनमें राजित तीर्थंकर॥
मंदिर भव्य, विशाल, कलात्मक, वास्तुकला के चरम विकास।
कई मंजिला, जहाँ सुरक्षित, विस्मयकारी है इतिहास॥ ३०॥

❋

जैन दिगम्बर प्रतिमाओं का, वैभव अगर निरखना हो।
अथवा प्रतिमा-कला-कसौटी, उनकी कला परखना हो।
चलें दुर्ग की चतुर्दिशाओं, निरखें-परखें कला महान्।
पत्थर को तो मोम बनाया, जड़ में फूंक दिए है प्राण॥ ३१॥

❋

हम अतीत को साथ में लेकर, वर्तमान में आते हैं।
प्रतिमा-मंदिर देख दुर्दशा, नयन अश्रु भर आते हैं॥
तुंग-विशाल-सर्वांग मूर्तियों, मैले की धारा बहती।
जैन कहाने का भी हमको, वह अधिकार नहीं देती॥ ३२॥

❋

वर्द्धमान महावीर जिनालय जैन संस्कृति का अवदान।
अष्टशती दुर्गपाल ''आम'' ने, करवाया इसका निर्माण॥
एक शतक हस्त तुंग यह, पाँच मंजिलों वाला था।
ठोस, स्वर्ण वीर प्रतिमा का ज्ञानमयी अनमोल थे॥ ३३॥

❋

किन्तु आज प्रतिमा विहीन यह, तीन मंजिल शेष रहीं।
प्रतिमाएँ, अवशेष जिनालय, यत्र-तत्र हैं विखर रहीं॥
मंदिर-मूरत सब कुछ अपना, फिर भी कुछ ना पाते हैं।
पूजन करना रहा असंभव, दर्शन बिन रह जाते हैं॥ ३४॥

❋

क्या से क्या हो जाता मुनिवर, पड़ती यदा समय की मार।
आप पधारे, भाग्य हमारे, अब होगा इनका उद्धार॥
कुछ तो हल निकलेगा दूजा, मुनिश्री हृदय लगाई आस।
शुभभावों से श्रीमुनिवर ने किया स्थापित चातुर्मास॥ ३५॥

❋

चातुर्मास हुआ स्थापित, कम्पू के महावीर भवन।
तदनन्तर मुनिराजश्री के, हुए सरस, मंगल प्रवचन॥
चातुर्मास विषय पर मुनिश्री, आगम दृष्ट्या किया प्रकाश।
पहली बार मिला सुनने को, ऐसा मौलिक, सरल-सुवास॥ ३६॥

❋

स्थापित कलशों को लेकर शोभा यात्रा हुई शुरू।
कम्पू से नये बाजार तक, पावन सन्निधि रही गुरु॥
नये बाजार जैन मंदिर में स्थापित कलश हुए।
चातुर्मास काल इस मंदिर, गुरु विराजित यहीं हुए॥ ३७॥

❋

अभीक्षण ज्ञान उपयोगी मुनिवर, हर क्षण का उपयोग किया।
काव्य-तीर्थोदय, वारसाणुवेक्खा, इष्टोपदेश का ज्ञान दिया॥
प्रति रविवार जिनागम गोष्ठी, प्रश्नमंच-गुरुवर प्रवचन।
धर्म-रहस्य समझते श्रोता, घर जाकर करते चिन्तन॥ ३८॥

❋

वीर (शासन) जयंति-गुरु पूर्णिमा, हुए मुनिश्री के प्रवचन।
कैसे गौतम हुए सु-गणधर, वीरप्रभु के खिरेवचन॥
जैन जिनालय नया बाजार में, पाठशाला प्रारम्भ हुई।
जैन समाज ग्वालियर वासी, प्राप्ति हुई उपलब्धि नई॥ ३९॥

❁

पाठशाला संस्कार केन्द्र है, देती है जीवन-वरदान।
विना धर्म मानव जीवन, ज्ञानी कहते पशु समान॥
श्रीमुनिवर दे धर्म प्रेरणा, किया समाज महत् उपकार।
''श्रद्धा अर्घ्य समर्पण करके, किया नमोऽस्तु बारम्बार''॥ ४० ॥

❁

मोक्षसप्तमी शिवसुख पाने, लायी सबको नया विहान।
दिवस आज का अतिशय पावन, पार्श्वनाथ पाया निर्वाण॥
सहस्रों भव्य जनों सह मुनिवर, गोपाचल प्रस्थान किया।
बियालिस फुट उतुंग पार्श्वजिन, महामस्तक अभिषेक हुआ॥ ४१ ॥

❁

नगर ग्वालियर के इतिहास में, उस प्रकार का आयोजन।
प्रथम बार दृष्टि में आया, अतिशय सुन्दर संयोजन॥
इसे देखकर लगा नगर को, कैसे होते जैन मुनि।
जो प्रभावना हुई न वर्षों, हुई एक दिन सहसगुनी॥ ४२ ॥

❁

श्रीमुनिवर की पावन सन्निधि, रक्षाबंधन पर्व मना।
''साधर्मी-सह गाय-वत्स-सम, वत्सलभाव रखो अपना॥
जिनवाणी बतलाती हमको, जीवन जाये तो जाये।
लेकिन देखो ! मुनि जनों पर, किंचित् आँच नहीं आये''॥ ४३ ॥

❁

जैनधर्म है, धर्म वैज्ञानिक, जन-जन को बतलाता है।
सप्त तत्त्व, षट्द्रव्य आदि का, सम्यग्ज्ञान कराना है॥
पत्र-पत्रिकाओं का इसमें, रहता है उत्तम अवदान।
उनमें एक पत्र त्रैमासिक, सुन्दर नाम ''भाव-विज्ञान''॥ ४४ ॥

❋

भावविज्ञान के चतुर्थ अंक का, किया विमोचन भली प्रकार।
मध्यप्रदेश शासन के मंत्री, श्रीमान् मिश्रा अनूपकुमार॥
हुआ कार्यक्रम अतिगरिमामय, पूज्य मुनिश्री सन्निधान।
सम्पादक द्वय सुधी-अजित का, किया समाज हार्दिक सम्मान॥ ४५॥

❋

क्रोध-मान-माया-लोभादिक, प्रबल प्रदूषण छाया है।
मानव मन से उसे हटाने, पर्व पर्यूषण आया है॥
श्रीमुनिवर की पावन सन्निधि, श्रावक साधना शिविर लगा।
परिवर्तन आया जीवन में, सदाचरण सौभाग्य जगा॥ ४६॥

❋

धर्मांगों-तत्त्वार्थसूत्र पर, मुनिवर के होते प्रवचन।
अतिशय सुन्दर, सरल, सरस, ज्यों अमृत में हैं पगे वचन॥
ध्यान-प्रतिक्रमण-गुरुवर-भक्ति, तदा आरती क्रम आता।
विद्वत् प्रवचन, कार्य संस्कृतिक, निशाशयन क्रम पा जाता॥ ४७॥

❋

यद्यपि नगर ग्वालियर रहते, राजा-नेता-श्रावकगण।
चातुर्मास भी किए यहाँ पर, ख्याति प्राप्त बहु जैन श्रमण॥
लेकिन दुर्ग ग्वालियर अंदर, जैन संस्कृति संरक्षण।
अब तक ऐसी पहल नहीं की, की ज्यों आर्जवनिधि श्रमण॥ ४८॥

❋

हंत!हंत! सीवर का पानी, प्रतिमाओं पर गिरता है।
मानो जैन मात्र के दिल में, आघात हथौड़ा करता है॥
यद्यपि जैन अहिंसक होते, किन्तु नहीं होते कायर।
देश-धर्म हित मर-मिटने में, लगता उन्हें न किञ्चित् डर॥ ४९॥

❋

राजा तो ऐसा होता है, रखता सदा प्रजा का ध्यान।
किसी धर्म अपमान न करता, करता है सबका सम्मान॥
लेकिन यह अन्याय सरासर, होता जैन धर्म अपमान।
अत: जरूरी विरोध जताना, हो आकर्षित उसका ध्यान॥ ५० ॥

❋

अन्य बात महावीर जिनालय, पर अधिकार हमारा हो।
दर्शन-पूजन जैन कर सकें, ऐसी सुविधा वाला हो॥
मुनिश्री का व्यक्तित्व प्रभावक, हृदय आप संवेदनशील।
सिंहवृत्ति निर्भय, दवंगत्ता, क्षमा, अहिंसा, करुणाशील॥ ५१ ॥

❋

महामूर्ति दयनीय दशा लख, ढुलका नयनों मुक्ता जल।
सुकरणीय धार्मिक आयोजन, जाग्रत करने समाज सकल॥
इस उद्देश्य मुनिश्री सन्निधि, हुआ कल्पद्रुम महाविधान।
प्राप्त आय आकृष्ट करेंगी, राजा-राज्य-प्रजा का ध्यान॥ ५२ ॥

❋

कल्पद्रुम-प्रवचन के माध्यम, गुरुवर सब में फूंके प्राण।
पुष्प-निशांत-चन्दर-मनीष ने, जैन संस्कृति खींचा ध्यान॥
''निजभाषा-निजदेश-धर्मपर, है जिनको, अभिमान नहीं।
उनमें खून नहीं, पानी है, वे पत्थर, इंसान नहीं''॥ ५३ ॥

❋

ज्योतिरादित्य सिंधिया आये, मुनिश्री का लेने आशीष।
हाथ जोड़कर किया नमोऽस्तु, श्रीफल भेंट, नमाया शीश॥
करुणानिधि मुनिराजश्री ने, दक्षिण कर आशीष दिया।
''दर्शन- आशीष पूज्यश्री का, पाप मम जीवन धन्य हुआ''॥५४॥

❋

''मुनिश्री दें आदेश दास को, प्रतिमाजी अविनय ना हो।
वर्द्धमान मंदिर जैनों का, दर्शन-पूजन अवसर दो॥''
''हे मुनिराज! आपकी आज्ञा, सविनय करता हूँ स्वीकार।
कार्यपूर्ण कर ही दर्शन को, मैं आऊँगा अगलीबार''॥ ५५॥

❋

मुनिश्री सिन्धियाजी की, चर्चा रही सफल, अनुकूल।
जल सींचो पौधे को कितना, किन्तु समय पर आते फूल॥
फिर भी यह उस चातुर्मास की, प्राप्त हुई उपलब्धि महान्।
योग्य व्यक्ति तक ज्ञापन पहुँचा, मिला वचन, आकर्षित ध्यान॥ ५६॥

❋

अहिंसा शाकाहार संगोष्ठी, हुई आयोजित गरिमामय।
महावीर निर्वाण महोत्सव, निर्वाण लाडू यथा समय॥
कण्ठ-पाठ प्रतियोगिता साथ में, चातुर्मास का निष्ठापन।
यथा समय सम्पन्न हुआ था, मोर पिच्छिका परिवर्तन॥ ५७॥

❋

आष्टाह्निक का पर्व जु आया, गोपगिरि पर हुआ विधान।
सिद्धचक्र महामण्डल जो, सिद्धों का जिसमें गुणगान॥
विनयनगर के जिनमंदिर में, युगपत् ऐसा योग मिला।
आर्जवनिधि की सन्निधि में, दोनों थल का भाग्य खुला॥ ५८॥

❋

गोपगिरि पर रहा पुरातन, वर्धमान मंदिर था जो।
सुप्रतिष्ठित जहाँ केवली, मोक्ष गये थे मुनिवर वो॥
वहीं बनाया भाव प्रथम ही, आर्जवनिधि ने शुभतम भाव।
सारी जनता पहुँचे ऊपर, मने निर्वाण दिवस सह चाव॥ ५९॥

❁

पच्चीस सौ तैतीस लाडू सह, किलो बहत्तर का लाडू।
वर्धमान उस मंदिर आगे, चढ़वाया सबका लाडू॥
भारी उत्सव लोग हजारों, गोपगिरि पर पहुँचे थे।
वर्धमान वह मंदिर पाने, सपने में जो सोचे थे॥ ६०॥

❁

इसी पुण्य से इक दिन हम सब, अपना मंदिर पायेंगे।
अभी पिच्छिका परिवर्तन फिर, चौमासा करवायेंगे॥
पर्वत चोटी पर, जिनधर्म, ध्वजा बड़ी लहरायेंगी।
सिद्धक्षेत्र की जयकारें भी, जन-जन को हर्षायेंगी॥ ६१॥

❁

विद्वद्वर, कविरत्न श्रीमान्, रइधू का अनुपम अवदान।
जैनधर्म-साहित्य-संस्कृति, आप बने उत्तम पहचान॥
त्रिंशत्-पंच अपभ्रंश ग्रन्थों की, आपश्री रचनाएँ कीं।
एकलक्षग्रंथ हस्तप्रति, अखिल देश में वितरित की॥ ६२॥

❁

शती पंचदश समय कविश्री, तोमर वंश नृप राज महान्।
हस्तिविराजित कर वैभव-सह, किया आपश्री का सम्मान॥
नब्बे वर्ष दुर्ग में रहकर, मुनि-गुरुओं की सन्निधि पा।
मंदिर-मूरत करीं प्रतिष्ठा, तीर्थ गोपाद्रि इतिहास रचा॥ ६३॥

❁

ज्यों सुमेरु पर्वत की चहु दिश, शोभित हैं मनहर जिनधाम।
त्यों गोपाचल चतुर्दिशाओं, अंकित जिनप्रतिमा अभिराम॥
गोपाचल महावीर जिनालय, निकट आप साधना थल।
रहे साधनारत विद्वद्वर, किए महत्तम कार्य सकल॥ ६४॥

❋

सन्निधान मुनिराजश्री के, हुई आयोजित संगोष्ठी।
भारत के कोने-कोने से, आये विद्वत्‌गण-श्रेष्ठी॥
'रइधुजी के सकल पहलुओं, हुआ सुरीत्या उद्‌घाटन।
हुए समापन संगोष्ठी में, मुनिवर के आशीष वचन॥ ६५॥

❋

बहुत जरूरी चिन्तन करना, चातुर्मास की फलश्रुति थी।
सदातत्त्व चिन्तन परिपूरित, थे प्रवचन महाराजश्री॥
सुनने आते लोग सहस्रों, बदला बहुतों का जीवन।
छोड़ा चमड़ा, रात्रि का भोजन, मद्य-मांस-मधु-सप्तव्यसन॥ ६६॥

❋

नगर ग्वालियर की समाज ने, किया एक स्वर से स्वीकार।
इतना सफल, विशाल आयोजन, हुआ आयोजित पहलीबार॥
उसका श्रेय किसे जाता है, ''पार्श्वनाथ जी गोपाचल।
मुनिवर श्री आर्जवसागरजी, एकी भाव समाज सकल''॥ ६७॥

❋

रमता जोगी, बहता पानी, उक्ति पुरानी बतलाती।
संतचरण चलते ही रहते, नदियानित बहती जाती॥
मुनिवरश्री आर्जवसागरजी, ''वेदी प्रतिष्ठा'' देने छाँव।
नगर ग्वालियर विहार करके, क्रमशः पहुँच गये मेहगाँव॥ ६८॥

अष्टादश-सोपान

श्री दि. जैन मंदिर सोनी जी की नसिया, अजमेर चातुर्मास-२००९

१. मेहगाँव का प्रतिनिधि मंडल गुरुचरणों में।
२. मुनिश्री ने ऐतिहासिक कार्य किया।
३. मुनिश्री का मेहगाँव में आगमन।
४. मेहगाँव में वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण।
५. मेहगाँव गमन कर महावीर जी में आगमन।
६. श्री महावीर स्वामी के श्रीचरणों में मुनिश्री।
७. महावीर जी से पद्मपुरी में आगमन।
८. पद्मप्रभ भगवान को नमन।
९. पद्मपुर से जयपुर।
१०. जयपुर में रजत-स्वर्ण-रत्न जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा।
११. जयपुर से किशनगढ़।
१२. किशनगढ़ में ब्र. हरेश को क्षुल्लक दीक्षा, नाम रखा क्षु. हर्षितसागर।
१३. मुनिश्री का अजमेर में मंगल प्रवेश
१४. मुनिश्री का अजमेर में चातुर्मास स्थापित।
१५. अजमेर में पाठशाला की स्थापना।
१६. षोडसकारण विधान सम्पन्न।
१७. सामूहिक रूपेण षोडसकारण व्रत का पालन।
१८. पर्यूषण में साधना संस्कार शिविर आदि।
१९. श्री जिनेन्द्र देव का जलविहार।
२०. अजयमेर चातुर्मास की उपलब्धियाँ।
२१. नारेली ज्ञानोदय तीर्थ होते हुए नशीराबाद को विहार।

ॐ

अष्टादश-सोपान

श्री दि. जैन मंदिर, सोनीजी की नसिया चातुर्मास अजमेर, सन्-२००९

गोपाचल पर गुरु चरणों में, हुई उपस्थित सकल समाज।
सहित नमोऽस्तु, किया निवेदन कॉलोनी आवें मुनिराज॥
वेदीप्रतिष्ठा, कलशारोहण, आनंदनगर में हुआ महान।
थी हार्दिक सबकी अभिलाषा, प्राप्त हुआ गुरु सन्निधान॥ १॥

❋

हुआ ऐतिहासिक कार्य ग्वालियर, जो न अब तक हुआ कभी।
राजा-राज्य में मची खलबली, सावधान हो जाएँ सभी॥
क्या होगा परिणाम अभी तो, यह पहली अँगड़ाई है।
जबतक नहीं सफलता मिलती, चलती रहे लड़ाई है॥ २॥

❋

मुनिवर ने वह कर दिखलाया, आग लगा दी पानी में।
डाला क्रान्ति बीज सुगुरु ने, सोई हुई जवानी में॥
पद की भी इक गरिमा होती, संत न रुक सकते इक ठौर।
सब उनके हैं, सब जग उनका, उनकी बाट जोहते और॥ ३॥

❋

सुना निवेदन ''मेहगाँव'' का, श्रीमुनिवर स्वीकार किया।
यथा समय मुनिराज श्री ने, मेहगाँव को गमन किया॥
क्रमशः पहुँच गए मंजिल पर, आर्जवसागर श्रीमुनीश॥
प्रवचन दिये व पाठशाला की, शुरुआत हुई दे आशीष॥ ४॥

❋

मेहगाँव है जिला भिण्ड में, कस्बा है अच्छा नामी।
श्री दिगम्बर जैन जिनालय, राजित चन्द्रप्रभ स्वामी॥
इन्द्रसेन-सुभाषचंद द्वारा, हुई नवीन वेदी निर्माण।
शांतिलाल-धर्मेन्द्र कराया, शिखर हेतु कलश का काम॥ ५॥

❋

साधु मंगल पावन सन्निधि, हुई प्रतिष्ठा, रोहण कार्य।
पंडित मनीषकुमार टीकमगढ़, रहे प्रवीण प्रतिष्ठाचार्य॥
प्रवचन में मुनिराज श्री ने, सबको शुभ आशीष दिया।
मंदिर-वेदी-मूर्ति-कलश, का महत्व स्पष्ट किया॥ ६॥

❋

मेहगाँव से आर्जव मुनिवर, गये ससंघ वरासो क्षेत्र।
जहाँ पुरातन महावीर के, दर्शनकर शुभ हर्षे नेत्र॥
एक पहाड़ी पर जिन मंदिर, दूजा वस्ती अंदर था।
दोनों थे वे वीर प्रभु के, परिसर अतिशय सुन्दर था॥ ७॥

❋

दर्शन वंदन चर्या करके, भिण्डनगर प्रस्थान किया।
बड़ी समाज ने भावभरी उस-अगवानी का लाभ लिया॥
शीतकाल के माह गुरु की, प्रवचन माला चली महान।
परेड मंदिर, चैत्यालय में, पाठशाला भी खुली महान॥ ८॥

❋

भिण्डनगर में रोका गुरु को, फिर भी गुरु ने किया विहार।
खूबगाँव से बरही पहुँचे, वीर दर्श कर फिर आहार॥
सामायिक हुई मध्यकाल की, मुनिवर फिर गमन किया।
नेमिनाथ के जन्म स्थल का, शौरीपुर मग पकड़ लिया॥ ९॥

❋

शनैः शनैः वे ससंघ मुनिवर, आर्जवनिधि शुभ धाम वहाँ।
पहुँचे पहले गुरो वटेश्वर, अजित जिनालय रहा जहाँ॥
यमुना तट पर त्रय मंजिला, भव्य जिनालय शोभ रहा।
संतालय सह यात्री धाम भी, सबके मन को मोह रहा॥ १०॥

❋

एक कोश के अंदर देखो, शौरीपुर का जिनआलय।
सिद्धक्षेत्र पर अतिशयकारी, पुण्य भरे वह जिनआलय॥
नेमि कुमार जिस मिट्टी पर, क्रीड़ा निशदिन करते थे।
देव लोक से आकर सुरगण, अतिशय पूजा करते थे॥ ११॥

❋

एक पक्ष तक प्रभावनाकर, जन-जन को उपदेश दिया।
शौरीपुर से शिकोहाबाद व, फिरोजाबाद को गमन किया॥
जहाँ हि चन्द्रप्रभो मणी-मय, देखें आँखें तृप्त हुई।
नरेन्द्र प्रकाश प्राचार्य आये, धर्म गोष्ठी सम्पन्न हुई॥ १२॥

❋

सभी जिनालय उत्तम देखे, आतम में आनन्द हुआ।
ब्रह्मगुलाल व सेठ जिनालय, देख मनस शुभ धन्य हुआ॥
कुछ दिन रह वस मथुरा दिशि में, मुनिवर ने जब किया विहार।
लोगों की टूटी आशायें, चलते पहुँचे मथुरा सार॥ १३॥

❋

जम्बूस्वामी मोक्षधाम यह, बड़ा ही अतिशयकारी था।
भव्य जिनालय, गुरुकुल आश्रम, लगता सब सुखकारी था॥
चर्या-प्रवचन आदिक द्वारा, की प्रभावना मुनिवर ने।
संघ सहित फिर महावीरजी, विहार किया था गुरुवर ने॥ १४॥

❋

किया प्रवेश राजस्थान में, प्रथम भरतपुर में पहुँचे।
चर्या करके विहार कीना, फिर हिंडोन गुरु पहुँचे॥
कर विहार मुनिवर आर्जवनिधि, पहुँचे संघ सहित महावीर।
अतिशय तीर्थक्षेत्र यह राजित, अति 'गंभीर' नदी के तीर॥ १५॥

❋

यह अति ही रमणीय क्षेत्र है, मूरत है अतिशयकारी।
प्राप्त नहीं अन्यत्र कहीं पर, ऐसी मूरत मनहारी॥
पता नहीं कब से क्यों, कैसे, यह टीले में दबी रही।
इस ग्वाले को सपना देकर, टीले से बाहर निकली॥ १६॥

❋

अपवाद लगा दीवान साब को, इनका ध्यान लगाया है।
तीन-तीन तोप गोलों से, प्रभु ने उन्हें बचाया है॥
हुआ मंगल प्रवेश गुरुवर का, किया सकल जन अभिनंदन।
पाद प्रक्षालन, आरति करके, किया मुनिवर का अभिवादन॥ १७॥

❋

आर्जवनिधि ने संघ सहित श्री, महावीर जी में किया प्रवेश।
गौरव पूर्वक गुरु को पाया, हुआ हि दर्शन वीर जिनेश॥
वही धरा जहाँ एक दिन, ग्वाला गौ ने शुभ कीना।
गौ का क्षीर झरा था भू पर, वही धरा शरणालीना॥ १८॥

❋

महावीर जी प्रकटे अतिशय-पूर्ण विश्व में फैला था।
बना हि मंदिर विशाल सुन्दर, प्रतिमा यश का मेला था॥
मुनिवर मन में थी बहु इच्छा, कब होगा मुझको दर्शन।
पहुँचे संघ सहित हर्षित हो, किया ही वीर प्रभो दर्शन॥ १९॥

❁

कुछ दिन रहकर जिनालयों का, भाव सहित दर्शन कीना।
मुख्यमंत्री गहलोत आये जहँ, मुनिवर का दर्शन लीना॥
माननीय अशोक गहलोत जी, मुख्यमंत्री राजस्थान।
शुभआशीष लिया गुरुवर से, किया पूज्यश्री नम्र प्रणाम॥ २०॥

❁

वर्तमान शासन के नायक, वर्द्धमानश्री चरणों जा।
घण्टों बैठे रहें ध्यान में, भगवन् को मन में बिठला॥
नयन कपाट लगाकर प्रभु को, पुतली पलंग विछाते थे।
निज-पर का कुछ भेद न रहता, एकमेक हो जाते थे॥ २१॥

❁

सकल तीर्थ की करी वंदना, संघ सहित फिर हुआ गमन।
गंगापुर व लालसोट हो, पद्मपुरी में शुभागमन॥
संगमरमरी मूर्ति अतिशयी, श्वेतवर्ण, पद्मासन हैं।
कुदेवता की बाधा नशती, पद्मप्रभ का शासन है॥ २२॥

❁

पद्मप्रभ भगवन् के सम्मुख, गुरुवर बैठे करी पुकार।
भवसागर से पार उतारो, बन जाओ मेरी पतवार॥
जैसे आपश्री ने भगवन्, किये अष्टकर्म रिपु क्षार।
वैसी दे दो मुझे भी शक्ति, कर लूंगा अपना उद्धार॥ २३॥

❁

श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, पद्मप्रभु को किया नमन।
संघ सहित हुआ मुनिवर का, नगर गुलाबी शुभागमन॥
धर्मप्रभावना करते मुनिवर, सांगानेर में आये थे।
भव्य हुई अगवानी जिनकी, प्रवचन सबने पाये थे॥ २४॥

❁

आदिनाथ प्रभुदर्शन कीना, वीतराग जिन बिम्ब लखे।
प्रवचन हुए पाण्डाल लगाकर, भक्तों ने निज भाव रखे॥
पाठशाला प्रारम्भ हुई अब, वीर जयन्ती योग बने।
देखो कहकर मुनिवर बोले, पुण्य रहे संयोग बने॥ २५॥

❁

भक्तों के शुभ भावों से गुरु, गये ज्ञानोदय छात्रावास।
आर्जवनिधि ने प्रवचन दीना, ज्ञान विनय का करो प्रकाश॥
राजस्थान की जैनसभा ने, श्रीफल भेंट किये मनभर।
वीर जयन्ती नगर पधारो, जन-जन तृप्त करो गुरुवर॥ २६॥

❁

आर्जवसागर गुरुवर ने फिर, संघ सहित शुभ किया विहार।
गुलाब नगरी प्रवेश द्वार से, पहुँचे गुरु जौहरि बाजार॥
महावीर के जन्मोत्सव पर, नगर झांकिया शोभित थीं।
विशाल जुलूस व गाजे-बाजे, नृत्यगान ध्वनि मोहक थी॥ २७॥

❁

आर्जवनिधि सह अन्य साधु भी, विशाल मण्डप राजे थे।
था मैदान रामलीला का, लोग हजारों साजे थे॥
औपचारिकता पूर्ती करके, किया निवेदन गुरुवर से।
प्रवचन देकर उपकृत कीजे, आर्जवसागर समरस दे॥ २८॥

❁

धर्म अहिंसा वीर प्रभु का, सर्वोपरि माना जाता।
सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य सह, संग छोड़ जीवन भाता॥
संस्कार हो जैन धर्म का, युवा वर्ग के जीवन में।
क्रान्ति होगी पूर्ण विश्व में, ज्ञान ध्वजा पहरे जग में॥ २९॥

❋

गुरु उपदेश सुना भक्तों ने, हाथ उठा संकल्प लिये।
सदाचार से चलें नित्य हम, जैन महाध्वज सदा फिरे॥
दोपहर में गुरु दीक्षा दिन, भक्तों ने गुण गायें थे।
चरण नीर सह दीप आरती, गुरु प्रवचन मन भाये थे॥ ३० ॥

❋

प्रवचन माला चली साथ में, पाठशाला प्रारम्भ हुई।
संस्कार की गंगा को नव-पीड़ी पाकर धन्य हुई॥
गोधों मंदिर राणा नसिया, चूल गिरि के दर्श हुये।
पंचकल्याणक जयपुर में हो, जन-जन हिय शुभ हर्ष भये॥ ३१ ॥

❋

पापलियान जिन मंदिर का था, जीर्णोद्धार सम्पन्न हुआ।
पञ्चकल्याणक हेतु गुरु से, आग्रह भी सम्पन्न हुआ॥
पार्श्वनाथ भवन में ठहरे, तैयारियों की जोर चली।
मुख्य लुहाड़िया राजकुमार व, खण्डाका थे महाबली॥ ३२ ॥

❋

राजस्थान चेम्बर प्रांगण में, की प्रभावना श्री मुनिराज।
दूर-दूर के कई प्रान्तों से, भक्त आये दर्शन के काज॥
प्रतिष्ठाचार्य थे जयनिशांत जी, शोभा अति बढ़ाई थी।
मुनिसंघ ने नव युवकों में, नव ऊर्जा बिखराई थी॥ ३३ ॥

❋

रत्नों की भारी वर्षा में, राजेश सुनील का रहा सुयोग।
इन्द्रगणों व देवी ने सब, नृत्य किया शुभ मंगल योग॥
जयपुर 'पापलियान जिनालय', पधराये मुनिराज श्री।
रत्न-स्वर्ण-रजतादिबिम्बों के, पधराये थे जिनवरश्री॥ ३४॥

❋

नवीन वेदि का पंचकल्याणक, हुए विराजित श्रीजिनराज।
पावन सन्निधि रही अनवरत, आर्जवसागरजी मुनिराज।
नगर गायत्री, मानसरोवर, हुआ मुनिश्री शुभागमन।
वेदी शुद्धि बिम्ब स्थापना, शिलान्यास था संत भवन॥ ३५॥

❋

जयपुर में फिर अजमेरनगर उस, अजयमेरु से आये जन।
कृत मुनिवर के चरण कमल में, चारबार श्रीफल अर्पण॥
हे मुनिवर!हम चाह रहे हैं, पूज्यश्री का चातुर्मास।
आपश्री के सन्निधान में, करें साधना, कर्म विनाश॥ ३६॥

❋

अजयमेरु है नगर धार्मिक, करता श्रमणों का सम्मान।
निकट नवोदित क्षेत्र 'नारेली', दर्शन लाभ करें श्रीमान्॥
'सोनीजी' की नसिया सुन्दर, विद्यानिधि का दीक्षास्थल।
बोता विराग बीज दिलों में, सामायिक चलती प्रतिपल॥ ३७॥

❋

अजयमेरु प्रतिनिधि मंडल की, श्रीगुरुवर ने समझी प्यास।
दक्षिण कर आशीष साथ हो, देखो कहा बढ़ा दी आश।
भाव जगाये, अपने गुरु की, संयमस्थली को देखेंगे।
दीक्षाथल पर ध्यान करेंगे, संस्मरणों का रस लेंगे॥ ३८॥

❋

मीरामार्ग व हीरा, वरुणपथ, महावीर-नगर व कीर्तिनगर।
जयपुर के हर जैनी थल में, विहरे थे गुरु डगर-डगर॥
प्रवचन दे पाठशाला खुलवाईं, धर्म प्रभावना करी अपूर्व।
अजमेर नगर के भव्यों ने फिर, विहार करवाया सम्पूर्ण॥ ३९॥

❁

मोजमाबाद, दूदू आदि हो, किशनगढ़ की राह चले।
मूलचन्द व अशोक पाटनी, चौका लाकर साथ चले॥
मंगलवाद्यों जय-जयध्वनि सह, नगर प्रवेश कराया था।
आर्जवसागर संघ सहित का, भक्तों ने गुण गाया था॥ ४० ॥

❁

श्रीमुनिवर की मंगल सन्निधि, हुए धार्मिक कार्य अनेक।
विद्यानिधि आचार्यश्री का, दीक्षा दिवस मना सुविवेक॥
ब्रह्मचारी जी श्री हरेश की, द्वारा मुनि आर्जवसागर।
क्षुल्लक दीक्षा हुई किशनगढ़, नाम प्राप्त हर्षितसागर॥ ४१ ॥

❁

सात जुलाई दो हजार नौ, खुले नगर के भाग्य बड़े।
जब मुनिश्री आर्जवसागर के, अजयमेरु में चरण पड़े॥
चौक-अल्पना-वन्दनवारों, से सज्जित था पूर्ण नगर।
चरण प्रक्षालन, करन आरती, हुए शुभंकर डगर-डगर॥ ४२ ॥

❁

सकल मार्ग मंगल जयकारे, हर्षोल्लास रहा छाया।
सिद्ध कूट जिन सोनी नसिया, क्रमशः भव्य जुलूस आया॥
मुनिवर उच्च सिंहासन राजे, जुलूस सभा की शक्ल मिली।
मुनिश्री के मंगल प्रवचन सुन, खिली हृदय की कली-कली॥ ४३ ॥

❁

बारह जुलाई, मुनिराजश्री का, हुआ स्थापित वर्षायोग।
मंगलचरण, ध्वजा का रोहण, दीप प्रज्ज्वलन आयोजन॥
चित्र अनावरण, पादप्रक्षलन, शास्त्र भेंट भी किया गया।
दिवस आज का धर्मक्षेत्र में, स्वर्णाक्षर में लिखा गया॥ ४४ ॥

❋

मंगलकलश हुए स्थापित, रत्नत्रयादि पँच थे नाम।
मुख्य कलश का पुण्य कमाया, लेखचन्द गादिया शुभ नाम॥
टीकमचंद-प्रफुल्ल चंद गदिया, अशोक टोंग्या, त्रिलोक सोनी।
मंगल किया कनक दीदी ने, ध्वजारोहण प्रमोद सोनी॥ ४५॥

❋

प्रतिदिन प्रातः आठ-तीस पर, ध्यान-योग होते प्रवचन।
एकाग्रचित्त होकर सुनते थे, घण्टों बैठे श्रावक जन॥
श्रीमुनिवर की प्राप्त प्रेरणा, शुरू हुई पाठशाला।
इससे फैलेगा समाज में, धर्मज्ञान का उजयाला॥ ४६॥

❋

षोडसकारण पर्वराज पर, षोडसकारण हुआ विधान।
''काव्य तीर्थोदय'' षोडस भावन, मुनिवर खींचा सबका ध्यान॥
प्रवचन के माध्यम बतलाते, भावन भाने क्या फल हो।
प्रकृति तीर्थंकर बंध का कारण, मन: विशुद्धप्रतिपल हो॥ ४७॥

❋

अजयमेरु धर्मोतिहास में, अवसर आया पहली बार।
सामूहिक षोडसव्रत पालन, किया कूपजल-शुद्धाहार॥
शासन वीर जयंति मनाई, पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस।
रक्षाबंधन पर्व महत्तम, गया मनाया भाव सरस॥ ४८॥

❋

पर्वराज पर्यूषण आया, सह उत्साह मनाया है।
श्रावक-साधना-संस्कार-शिविर, यहाँ पर गया लगाया है॥
तमिलनाडु, महाराष्ट्र, कर्नाटक, एम.पी., यू.पी., राजस्थान।
भाग लिया भव्यों ने आकर, पुण्य कराया अतुल महान्॥ ४९॥

❁

श्रीमुनिवर करते थे प्रवचन, दस धर्मों का ले आधार।
स्वाध्याय चलता था दिन में, ग्रंथ ''जैन आगम संस्कार''॥
श्रावक जन करते थे प्रतिदिन, दश अध्यायों का वाचन।
श्रीमुनिवर प्रतिदिन करते थे, एक-एक अध्याय प्रवचन॥ ५० ॥

❁

संधिकाल त्रय शिवरार्थीगण, करते ध्यान, स्तोत्र पठन।
''पाठ सामायिक'' पढ़कर करते, निधत्त-निकाचित कर्म क्षपण॥
प्रातकाल जिन पूजन, होती, मधुरमय स्वर-संगीत लिए।
भक्ति प्रकट करते थे सुरगण, चँवर ढोरते, नृत्य किए॥ ५१ ॥

❁

श्रीक्षुल्लक हर्षितसागरजी, प्रतिक्रमण करवाते थे।
गुरुभक्ति में लीन जन जन, अनुपम अमृत पाते थे॥
स्थानीय विद्वज्जन करते, निशाकाल शास्त्र प्रवचन।
सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा, थे हर्षित हो जाते जन॥ ५२ ॥

❁

पर्व पर्यूषण हुआ समापन, रत्नों की प्रतिमा अभिषेक।
धर्म प्रभावना हुई अप्रतिम, श्रीजी शोभायात्रा देख॥
पर्व पर्यूषण, षोडसकारण, हुआ समापन सहित विधान।
व्रत-उपवास किए थे जिनने, उनका किया गया सम्मान॥ ५३ ॥

❁

षोडसकारण व्रत महत्त्व को, मुनिवर ने बतलाया है।
इसका सम्यक् पालन करने, का संकल्प दिलाया है॥
पर्यूषण उपरान्त सामयिक, पर्व क्षमावाणी आया।
सब समाज ने एकीभाव से, क्षमारत्न तन-मन पाया॥ ५४ ॥

❋

अजयमेरु को चातुर्मास की, प्राप्त हुईं उपलब्धि अनेक।
''काव्य तीर्थोदय'' मुनिवर मुख से, सुना उपलब्धि है नम्बर एक॥
चतुअनुयोग सह आगम पर व,, ध्यान शतक मुनिवर प्रवचन।
कर्ण कुहार में लगते ऐसे, जैसे अमृत परो वचन॥ ५५॥

❋

षोडसकारण व्रत का पालन, नहीं एक उपलब्धि महान।
स्थानीय कविगण प्रोत्साहन, सबको लगा प्रभावक काम॥
बाल-युवाजन याद किए हैं, स्तोत्र-प्रार्थना-पाठ कई।
धार्मिक कंठ पाठ प्रतियोगिता, अजयमेरु को मिली नई॥ ५६॥

❋

जहाँ धरा पर विद्यानिधि की मुनि दीक्षा; शुभ काम हुआ।
वहाँ पधारे आर्जवनिधि जी, ''दीक्षायतन'' नव नाम दिया॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, सबने शिर धारा आदेश।
पूज्यश्री के शुभाशीष से, पूरण होगा कर्म अशेष॥ ५७॥

❋

विद्यासागर गुरुवर की यह, दीक्षा भूमि निराली है।
बनी रहे यह पवित्र तो बस, गुरुवर को खुसहाली है॥
जहँ आर्जवनिधि सन्निधि में विधान व व्रतिगण सम्मान।
अशोक पाटनी, मूलचंद जहँ, आ गुरुवाणी कीनी पान॥ ५८॥

❋

गुरुआशीष ले ध्वज फहराई, मंगलचरण हुआ शुभ काल।
जन समूह ने जयकारों से, गुंजाया सब नभ पाताल॥
निश्चित ही यह दीक्षा भूमि, दीक्षायतन बन रहे अमर।
इसे जान गुरु विद्यासागर, आ डालेंगे एक नजर॥ ५९॥

नवदश-सोपान

श्री दि. जैन मंदिर, कीर्तिनगर-जयपुर चातुर्मास, सन्-२०१०

१. कुचामन में आचार्यश्री का आचार्यपदारोहण दिवस।

२. मुनिश्री के प्रवचन।

३. कुचामन से तिजाराजी पदार्पण।

४. श्री चन्द्रप्रभ चरणों में मुनिश्री का मुनिदीक्षा दिवस एवं महावीर जयंति महोत्सव।

५. तिजाराजी से रेवाड़ी, रेवाड़ी में पब्लिक स्कूल में प्रवचन।

६. रेवाड़ी से हस्तिनागपुर, श्रुतपंचमी महोत्सव।

७. 'कोटपूतली' प्रवास, भीषण गर्मी का प्रकोप।

८. मुनिश्री जयपुर की ओर विहार मुनिश्री का अतिशय।

९. जयपुर में मंगल प्रवेश एवं चातुर्मास की स्थापना।

१०. मुनिश्री आये, बरसात लाए।

११. मुनिश्री का अलौकिक व्यक्तित्त्व।

१२. जयपुर, कीर्तिनगर में पाठशाला की स्थापना।

१३. पर्यूषणपर्व में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन।

१४. जयपुर उपनगरों को मुनिश्री का सन्निधान प्राप्त हुआ।

१५. विद्वत्गोष्ठी का आयोजन, समवशरण मंडल विधान।

१६. आर्जवसागर सभागार का निर्माण।

१७. कीर्तिनगर के श्रावकों ने आचार्यश्री के दर्शनों का लाभ लिया।

१८. महावीर निर्वाण महोत्सव।

१९. चातुर्मास निष्ठापन।

२०. पिच्छिका परिवर्तन।

ॐ

नवदश-सोपान

श्री दि. जैन मंदिर, कीर्तिनगर-जयपुर चातुर्मास, सन्-२०१०

अजयमेरु से शुभ विहार कर, मुनिवर करते जगदुपकार।
सिटी कुचामन में पधराये, हुई अगवानी जय-जयकार॥
आचार्यश्री विद्यासागर का, आचार्य पदारोहण उत्सव।
श्रीमुनिवर की पावन सन्निधि, सह उत्साह मनाया सब॥ १॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, आचार्यश्री को किया प्रणाम।
किए उजागर प्रवचन माध्यम, गुरुवर के वैशिष्ट्य तमाम॥
अगर करुँ धरती को कागज, करूँ लेखनी सब वनराय।
सब सागरजल स्याहि बनाऊँ, पूरे गुरुगुण लिखे न जायें॥ २॥

❋

नांवा लूणवा प्रभावना कर, रेनवाल मुनिवर पहुँचे।
प्रवचन व पाठशाला को कर, जोबनेर गुरुवर पहुँचे॥
नगर-नगर की प्रभावना में, चोमू से अलवर जब गये।
जिनालयों के दर्शन, प्रवचन-नंदीश्वर विधान में भये॥ ३॥

❋

सिटी कुचामन आदि से होते, संघ सहित मुनिराजश्री।
नगर-ग्राम को आशिष देते, आये क्षेत्र तिजाराजी॥
अतिशयक्षेत्र तिजाराजी में, चन्द्रप्रभजी शासन है।
श्वेतवर्ण पाषाणी प्रतिमा, राजित यहाँ पद्मासन है॥ ४॥

❁

विघ्न सभी व रोग-शोक सब, प्रभु दर्शन से मिट जाते।
निधत्त-निकाचित कठिन कर्म भी, प्रभु पूजन से कट जाते॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, प्रभु के चरणों किया प्रणाम।
हे भगवन्! भवरोग मिटाकर, जगत् भ्रमण से दो विश्राम॥ ५॥

❁

द्वाविंशति वर्षो के पहले, चन्द्रप्रभ की चरण शरण।
आपश्री मुनि दीक्षा पाई, सोनागिरिजी तीर्थ श्रमण॥
श्रीमहावीर जयंति शुभ दिन, हुआ था मुनिदीक्षा संस्कार।
गये मनाये उभय साथ में, भगवन् चन्द्रप्रभ दरबार॥ ६॥

❁

वीर प्रभु की शोभा-यात्रा, नगर भ्रमण मुनिवर थे साथ।
लगता मानों महावीर ही, करते गमन हमारे साथ॥
दीक्षा उत्सव श्री मुनिवर के, पाद प्रक्षालन स्तुति की।
द्वाविंशति दीपों के द्वारा, भक्ति-मयी आरती की॥ ७॥

❁

विनयांजलि सभा के द्वारा, किया गया मुनिवर गुण गाान।
हो चिरायु मुनिराज हमारे, कृपा करें अष्टम भगवान॥
धर्मसभा में कही मुनीश्वर, महावीर जीवन गाथा।
सिद्धातों का प्रतिपादन कर, झुका दिया अपना माथा॥ ८॥

❁

प्रवचनमाला, पाठशाला से, प्रभावना की मुनिवर ने।
ज्ञान-केन्द्र खुला धर्म का, खुशी छाई थी नर-नर में॥
अभी बना यह प्रथम बार ही, ऐसा अपूर्व सुयोग जहाँ।
सुसंस्कार सागर लहराया, भूले जन तन भोग वहाँ॥ ९॥

❋

श्री चन्द्रप्रभ चरण कमल में, करके बारम्बार नमन।
अतिशयक्षेत्र तिजाराजी से, रेवाड़ी को किया गमन॥
रेवाड़ी पब्लिक स्कूल में, इकदिन थे मुनिश्री प्रवचन।
बालक रहे भविष्य देश के, निर्माता हैं शिक्षक गण॥ १०॥

❋

शिक्षा का उद्देश्य नहीं है, केवल धन अर्जन करना।
अपितु पाठशाला शिक्षा को, है जीवन में आचरण॥
श्री मुनिवर ने की प्रेरणा, केवल करना शाकाहार।
वस्तु नशीली कभी न छूना, कभी न करना मांसाहार॥ ११॥

❋

चमड़े का उपयोग न करना, सप्त व्यसन से रहना दूर।
दत्त चित्त हो पढ़ना-लिखना, ज्ञान प्राप्त करना भरपूर॥
कई छात्र-शिक्षकों ऊपर, मुनि प्रवचन ने असर किया।
अंडा-मांस-तम्बाकू-चमड़ा, जीवन भर को छोड़ दिया॥ १२॥

❋

रेवाड़ी से धारुहेड़ा, पहुँचे गुड़गाँव शुभ स्थल।
महरौली दिल्ली में थित है, शोभे अहिंसा शुभ स्थल॥
प्रकृति मनोरम विशाल परिसर, पुष्पक्यारियाँ उत्तम रंग।
सुदूर से ही विशाल प्रतिमा, दिखती, होता मन भी चंग॥ १३॥

❋

दर्शन चर्या हुई तभी फिर, ग्रीन-पार्क के जन आये।
आओ मुनिवर संघ सहित बस, इसी भाव से फल लाये॥
दिल्ली में भी पार्क बने हैं, नदी, कुआँ का है जल भी।
सुनकर मुनिवर ग्रीनपार्क में, रहे लाल मंदिर में भी॥ १४॥

❋

लाल जिनालय का दर्शन कर, कैलाश नगर भी ठहरे थे।
यमुना तट से कबूलनगर जा, वरनावा भी पहुँचे थे॥
बड़ा-गाँव वा तीनलोक लख, सरधना भी पहुँचे थे।
शनैः शनैः फिर मंगल शुभ दिन, हस्तिनागपुर पहुंचे थे॥ १५॥

❋

परम पूज्य मुनिराज श्री का, प्रथम क्षेत्र पर हुआ विहार।
हस्तिनागपुर में पधराये शान्ति-कुन्थु-अर प्रभु दरबार॥
बड़ा जिनालय क्षेत्र कमेटी, में मुनिवर का रहा प्रवास।
रक्षाबन्धन, अक्षयतृतीया, जुड़ा क्षेत्र का है इतिहास॥ १६॥

❋

वेश दिगम्बर, शुद्ध साधना, प्रवचन सुन्दर व्यक्तित्त्व सरल।
दर्शन करने दौड़ी जनता, जुड़ती गई भीड़ प्रतिपल॥
'जेठी' के मेले पर मुनिवर-प्रवचन हुआ प्रभावक था।
सरल-सरस-उद्धरणों द्वारा, जन-जन हुआ प्रभावित था॥ १७॥

❋

श्रीमुनिवर की पावन सन्निधि, श्रुतावतरण का पर्व मना।
कैसे प्रकट हुए षट्खंडागम, मुनिवर दिया प्रवचन अपना॥
क्षेत्र कमेटी आदि सभी ने, कहा कि मुनिवर पूरे आस।
श्रीफल अर्पित किए चरण में, करें यहीं पर चातुर्मास॥ १८॥

❋

जैसे मेघ न रुकते इक थल, वसुधा उनकी रही कुटुम्ब।
वैसे गुरुवर हस्तिनागपुर, छोड़ चले आगे अविलम्ब॥
जहाँ विहार गुरुवर करते थे, आ जाता था वहीं बसंत।
हर नर-नारी करे नमोऽस्तु, कहता जय हो, जय हो संत॥ १९॥

❋

मेरठ में दर्शन चर्याकर, हुआ विहार गाजियाबाद।
कविनगर में कुछ दिन रहकर, मिला जनों को प्रवचन स्वाद॥
कबूलनगर के बड़े निवेदन-से दिल्ली गुरु पधराये।
साहिबाबाद, श्याम पार्क व, दिलशाद, सादरा भी आये॥ २०॥

❋

किया था वर्षावास निवेदन, फिर भी गुरु ने किया विहार।
दरियागंज में गुरुकुल देखा, प्रवचन कर, कीना आहार॥
लोदी रोड मंदिर हो करके, अहिंसा थल गुरु पहुँचे थे।
गुड़गांव आदिक प्रभावना कर, गुरुप्रवचन जग शोभे थे॥ २१॥

❋

गुरु पूर्णिमा पर्व श्रीगुरु, ''कोटपूतली'' पधराये।
सिटी कुचामन, क्षेत्र तिजारा, दिल्ली, जयपुर जन आये॥
रैनवाल, गुड़गाँव आदि से, आये प्रतिनिधि श्रीफल ले।
करें समर्पित गुरु चरणों में, हमको चातुर्मास मिले॥ २२॥

❋

एक अनार बीमार बहुत से, चिन्तन का अवसर आया।
पुण्य बना जन जयपुर वासी, चातुर्मासिक फल पाया॥
जयपुर वालों के मुख ऊपर, हर्ष का सागर लहराया।
सबने मिलकर श्रीमुनिवर का, विहार साथ है करवाया॥ २३॥

❋

दिनमणि अपना तेज दिखाता, नभ से आग बरसती थी।
चले हवा के गर्म थपेड़े, धरती तवा-सी तपती थी॥
पशु-पक्षी थे अतिशय व्याकुल, त्राहि-त्राहि थी चारों ओर।
ऐसे गर्मी के मौसम में, हुआ गमन जयपुर की ओर॥ २४॥

❋

नगर गुलाबी जयपुरवासी, मनसि बही श्रद्धा धारा।
गुरुप्रसाद से इस गर्मी से, निश्चित होगा छुटकारा॥
''पहला अतिशय दूर चले कुछ, नभ में बादल घिर आये।
ऊपर साथ-साथ चलते थे, प्रकृति छत्र बनकर छाये॥ २५॥

❋

चलने लगी हवा भी शीतल, सौंधी-सौंधी गंध लिए।
मोर-पपीहे लगे बोलने, हरमन आनन्द चषक पिये॥
जयपुर के आस-पास क्षेत्रों में, वर्षा का मौसम आया।
श्रीमुनिवर के तपस्त्याग का, अमृतफल सबने पाया॥ २६॥

❋

एकोनत्रिंशत् माह जुलाई, गुरुवर पहुँचे जयपुर में।
रहा प्रवास आज गुरुवर का, शिवगोधो जी नसिया में॥
महावीर-गायत्री-कीर्ति, तीन नगर के श्रावक गण।
चाह रहे मिल जाय किसी विधि, चतुर्मास श्री सूर्यश्रमण॥ २७॥

❋

कीर्ति या गायत्री नगर को, चतुर्मास का पावन योग।
बिना पुण्य के मिल ना पाते, धर्मीजन उत्तम संयोग॥
अपराह्न काल गोधा नसियाँ- से मुनिवर का हुआ विहार।
लहराया अपार जनसागर, करने मुनिश्री जय-जयकार॥ २८॥

❋

जौहरी बाजार से मनिहारों तक, पूर्ण मार्ग था जाम हुआ।
प्रथमबार किसी संत जुलुस में, इतना प्रभावक काम हुआ॥
चौक-अल्पना-वन्दनवारे, द्वार सजावट अति सोहैं।
चरण प्रक्षालन, करन आरती, भजन-गीत मनको मोहैं॥ २९॥

❋

लगता जैसे तीर्थंकर का, समवसरण कर रहा विहार।
संघ चतुर्विध हो एकत्रित, करे प्रभु की जय-जयकार॥
इन्द्रदेव सम्पूर्ण जुलुस पर, लगा रहे थे बादल छत्र।
श्रीमुनिवर के चमत्कार की, एक मात्र चर्या सर्वत्र॥ ३०॥

❋

निशा भट्टारक नसिया में जहँ, श्रीमुनिवर का रहा प्रवास।
प्रातःकाल जुलुस पहुँचेगा, कीर्तिनगर जिनमंदिर खास॥
लेकिन गायत्री नगर जनों ने, हाथी सह बाजे लाये।
एक सरीखी रंग बिरंगी, पोसाखे पहने आये॥ ३१॥

❋

बीच-मार्ग तक आश लगाकर, मुनिवर से मनवारें की।
पुण्य बड़ा था जिनका गाढ़ा, कीर्तिनगर की खुशी जगी॥
मुनिभक्तों का नगर महोत्तम, जयपुर में शुभ कीर्तिनगर।
वीतराग शुभ बिम्बों के सह, रत्न सुबिम्बों का है घर॥ ३२॥

❋

प्रवचनभवन व संतभवन भी, इसी नगर की शान रही।
वर्षायोग का सुयोग मिले तो, सुवर्ण सुहागा कहें सभी॥
शुभ मुहूर्त्त में भरी सभा में, प्रवचन मण्डप गुरु आये।
जय-जयकारें गूँज उठी थीं, ध्वजसुधर्म के लहराये॥ ३३॥

❋

प्रथम कलश को पाने जन की-बोली लेने होड़ लगी।
गणेश राणा ने पाया था, किश्मत जिनकी पूर्व जगी॥
त्रिंशत् एक जुलाई प्रातः, कलश स्थापित विधि सहित।
चातुर्मास हुआ स्थापित, श्रीमुनिवर का संघ सहित॥ ३४॥

❋

चातुर्मास हुआ स्थापित, जीवन में आया बदलाव।
कीर्तिनगर-सह आस-पास के, सब लोगों पर पड़ा प्रभाव॥
जल्दी उठना, मंदिर जाना पूजन-प्रवचन लेना भाग।
सबने माना चातुर्मास से, जैनाजैन के जागे भाग॥ ३५॥

❋

जब से मुनिवर नगर पधारे, वर्षा का क्रम जारी है।
पशु-पक्षी ने जीवन पाया, वनस्पति फुलवारी है॥
जैन संत होते हैं कैसे, अजैन लोग भी मान गये।
जाते जहाँ वहाँ हो जाते, प्रतिदिन मंगल नये-नये॥ ३६॥

❋

मुनिवर का व्यक्तित्त्व अलौकिक महावीर के लघुनंदन।
जिनकी दृष्टि पड़े गुरुवर पै, करने लगते अभिवंदन॥
प्रवचन सरस, सरल भाषा में, सबको समझ में आते हैं।
एकबार जो सुन कर जाते, दश को लेकर आते हैं॥ ३७॥

❋

हुआ जन्म पाठशाला का, बालक पढ़ने आते हैं।
धार्मिक संस्कार बच्चों में, यहाँ पै डाले जाते हैं॥
जैसे एक दीप के द्वारा, जल जाते हैं दीप हजार।
वैसे एक पाठशाला से, कई बालक पाते संस्कार॥ ३८॥

❋

सूर्य दिवस को श्रीमुनिवर के, होते प्रवचन सदा विशेष।
दूर-पास के लाभ उठाते, बालक-बढ़े युवा अशेष॥
रक्षाबंधन पर्व दिवस से, षोडसकारण शुरु हुए।
शतकाधिक श्रावक नर-नारी, पालन को कटिबद्ध हुए॥ ३९॥

❋

प्रातः पूजन, प्रवचन सुनते, फिर देते गुरु को आहार।
तदनन्तर करते शुद्ध भोजन, हुआ यहाँ पर पहली बार॥
क्या है ध्यान करें हम कैसे, गुरुवर प्रवचन बतलाते।
ध्यान अग्नि में, कठिन कर्म भी, अल्प समय में जल जाते॥ ४० ॥

❋

श्रीगुरुवर की मंगल सन्निधि, हुए कार्यक्रम हैं प्रत्येक।
षोडसकारण-दशलक्षणव्रत, मैत्री-क्षमा व दिवस अनेक॥
कवि-पाठशाला सम्मेलन, हुए आयोजित यथा दिनांक।
श्रीमुनिवर की कविताएँ भी, हुई सुनी सब आद्योपान्त॥ ४१ ॥

❋

उदार चारित इन मुनिवर का, सबको शुभ आशीष मिले।
दुर्गा, मीरा, वीर, गायत्री-नगर हीरा पथ गुरु चले॥
अग्रवाल फार्म वरुण पथ हो, ''मोहन वाटिका'' रहा प्रवास।
समवसरण मंडल विधान का, हुआ आयोजन स्वर्ण-सुवास॥ ४२ ॥

❋

जैनसिद्धान्त विद्वत्संगोष्ठी हुआ यहाँ उपयोगी कार्य।
जैन सिद्धान्त प्रवेशिका में, रखा गया संशोधन कार्य॥
मंदिर समिति रही आयोजक, संयोजक श्री शीतलचन्द।
विधान सफलकर विशाल यात्रा, गाजे, बाजे की आनंद॥ ४३ ॥

❋

समवसरण मंडल विधान से, प्राप्त हुई जो आय यहाँ।
''आर्जवसागर सभागार'' का, किया गया निर्माण यहाँ॥
कीर्तिनगर से श्रावक-श्राविका, बीना-बाराह किया प्रयाण।
दर्शन-पूजन करी आरती, विद्यानिधि जो संत महान्॥ ४४॥

❋

मुनिवर रचित साहित्य वहाँ पर, आचार्यश्री को भेंट किया।
स्वयं और मुनिराजश्री को, गुरु का शुभ आशीष लिया॥
रहली-पटना, गढ़ा-पथरिया, कुण्डलपुर, मुनि क्षमानिधि।
करी वंदना, दर्शन-पूजन, भक्तिभाव से यथा विधि॥ ४५॥

❋

महावीर निर्वाण महोत्सव, गया मनाया सकल समाज।
महावीर के दिव्यचरित पर, प्रवचन दिया श्रीमुनिराज॥
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, संघ सहित हो गया गमन॥ ४६॥

विशंति-सोपान

श्री दि.जैन नसिया, रामगंज मंडी, चातुर्मास 2011

१. मुनिश्री का मालवीय नगर जयपुर में आगमन।
२. सिद्धचक्र मंडल विधान एवं आचार्यश्री का दीक्षा दिवस।
३. मुनिश्री के प्रवचन।
४. मुनिश्री का ''सांगाकान'' मन्दिर को विहार।
५. अतिशयकारी मुनिराज
६. सांगाकान में शीतयोग की स्थापना।
७. सर्वोदय पाठशाला की स्थापना।
८. सांगाकान से दाँता, दाँता में पंचकल्याणक एवं विद्वत्संगोष्ठी।
९. राणोली में ज्ञान सभा स्मारक का अवलोकन एवं पाठशाला की स्थापना।
१०. चन्द्रप्रभ नसिया में चन्द्रप्रभ मोक्षकल्याणक।
११. नसियाजी के शताब्दी वर्ष का आयोजन।
१२. ''ग्रामीण बाल विकास विद्यालय'' में मुनिश्री के प्रवचन।
१३. राणोली से रेवासा, रेवासा एक परिचय।
१४. रेवासा से सीकर, लाडनू, नागौर, व्यावर और नसीराबाद में दीक्षा-गुरु श्री आचार्य ज्ञानसागर का समाधि दिवस मनाया गया।
१५. मुनिश्री के सामयिक प्रवचन एवं अन्य कार्यक्रम।
१६. मुनिश्री का रामगंजमंडी पदार्पण-मंगल प्रवेश।
१७. मुनिश्री का अलौकिक व्यक्तित्त्व।
१८. नसियाजी में चातुर्मास की स्थापना।
१९. प्रतिदिन के नित्य कार्यक्रम एवं प्रवचन।
२०. षोडसकारण व्रत का सामूहिक पालन महोत्सव।
२१. नसियाजी में धार्मिक वातावरण अविराम रहा।

२२. पर्वराज पर्यूषण का भव्य आयोजन।
२३. समवशरण मंडल विधान का आयोजन।
२४. सर्वोदय पाठशाला की स्थापना
२५. कविसम्मेलन, पाठशाला सम्मेलन एवं अहिंसा (शाकाहार) पर विद्वत्गोष्ठी।
२६. ''ग्रीनमार्क'' शाकाहार का प्रतीक अर्हसत्य।
२७. कण्ठपाठ प्रतियोगिता का आयोजन।
२८. भक्तों ने आचार्यश्री का शुभाशीष चन्द्रगिरि जाकर प्राप्त किया।।
२९. पिच्छिका परिवर्तन।
३०. मुनिश्री का आशीष, समाज का आभार।
३१. मुनिश्री का रामगंजमण्डी से विहार।
३२. चांदखेड़ी में आचार्यश्री का 40वाँ आचार्यपदारोहण दिवस मनाया।
३३. झालरपाटन, बिजौलिया दर्शन।
३४. चित्तौड़गढ़ के कीर्तिस्तम्भ का दर्शन।
३५. भिण्डर होते हुए उदयपुर में कलशारोहण सम्पन्न।
३६. माउण्टआबु हिलस्टेशन पर जिनालय का दर्शन।
३७. फाल्गुन अष्टाह्निका तारंगाजी में।
३८. म्हेसणा, राजकोट से विहार।
३९. जूनागढ़ में रजत दीक्षा जयन्ति महोत्सव सम्पन्न।
४०. सिद्धक्षेत्र गिरनार के पाँचों टोंक का दर्शन।
४१. श्रुतपञ्चमी पर्व मनाया सि.क्षे. गिरनार पर।
४२. सि.क्षे. शत्रुञ्जय दर्शन।
४३. भावनगर, घोघा में सहस्रकूट जिनालय दर्शन।
४४. भरुच, अंकलेश्वर होते हुए सूरत की ओर विहार।

विशंति-सोपान

श्री दि.जैन नसिया, रामगंज मंडी, चातुर्मास 2011

श्री जैनमंदिर 'मधुवन' में, गुरुवर शुभ आगमन हुआ।
अल्प समय में की पाठशाला, ''नगर मालवीय' गमन हुआ॥
कई वर्षों से प्यास लगी थी, थे लालायित भक्त सकल।
जैसे चातक आश लगाता, स्वाति बूंद का है प्रतिपल॥ १॥

❋

सिद्धचक्रमंडल विधान का, रहा अष्टाह्निका आयोजन।
तदा सामायिक श्रीमुनिवर के, हुए प्रभावकारी प्रवचन॥
क्या है पर्व, महत्त्व क्या इसका, कैसे इसे मनाते हैं।
कैसे सिद्धचक्र के द्वारा, सकल रोग मिट जाते हैं॥ २॥

❋

आचार्यश्री विद्यासागर का, दीक्षा-दिवस मनाया है।
उन्तालिस दीपों के द्वारा, श्रद्धा अर्घ्य चढ़ाया है॥
मुनिवर श्री आर्जवसागर ने, गुरु व्यक्तित्त्व पर किया प्रकाश।
आचार्यश्री की समुपस्थिति का, सबको हुआ सुखद आभास॥ ३॥

❋

श्रीमुनिवर की अमृतवाणी, वात्सल्यमय मृदुव्यवहार।
शिक्षाएँ-संस्मरण आपश्री, स्मृति ओत बारम्बार॥
सभी कार्य सम्पन्न हो चुके, होना 'सांगाकान' गमन।
पंचकल्याणक विधान-सह होना है कई आयोजन॥ ४॥

❋

वर्षा झड़ी लगी कई दिन से, रुकने का था नाम नहीं।
'सांगाकान' जिनालय जाना, अब तो बनेगा काम नहीं॥
कैसे गमन करेंगे गुरुवर, कैसे होगा वहाँ विधान।
''चिन्ता की कोई बात नहीं है, कल तो होगा स्वर्ण विहान''॥५॥

❁

कल भी गुरुवर गमन पूर्व तक, वर्षा की लग रही झड़ी।
गमन हुआ जैसे ही गुरुवर, रुक गई वर्षा उसी घड़ी॥
आगे और चले कुछ ही क्षण, सूरज उग-खिलखिला उठा।
गुरुवर के प्रति सब के मन में, श्रद्धा का सागर उमड़ा॥ ६॥

❁

पहुँचे हुए संत हैं मुनिवर! अति ही अतिशयकारी हैं।
शांत-सौम्य-व्यक्तित्त्व धनी के हम जाते बलिहारी हैं॥
शहर चौकड़ी, मोदीखाना, शोभा यात्रा किया प्रवेश।
सकल जिनालय हुई वन्दना, पद प्रक्षालन किए अशेष॥ ७॥

❁

हुए कार्य निर्विघ्न सभी थे, अतिशय धर्म प्रभावना-सह।
श्रीमुनिवर के मार्मिक प्रचवन, सुने सभी ने शांत हृदय॥
शीतकाल हितकिया निवेदन, मुनिवर अति अनुकम्पा की।
पूर्वापर सब चिन्तन करके, श्रीगुरुवर ने स्वीकृति दी॥ ८॥

❁

श्रीगुरुवर की चरण सन्निधि, हुआ स्वाध्याय का क्रम जारी।
करने लगे सुधीजन अपने, शुभ भविष्य की तैयारी॥
श्रीमुनिवर के शीतयोग की, रही एक उपलब्धि महान।
सर्वोदयी पाठशाला की, हुई स्थापना 'सांगाकान'॥ ९॥

❁

पढ़ने लगे शताधिक बालक, पाते जैनधर्म संस्कार।
अष्टमूलगुण पालन करके, करेंगे जीवन का उद्धार॥
अतिशय हर्ष-उमंग साथ में, पाया श्रद्धा-ज्ञानाचार।
इतनी उत्तम धर्म प्रभावना, यहाँ है पहली बार॥ १०॥

❋

सांगाकान से चूलगिरि रह, फिर पहुँचे 'दांता' स्थान।
पंचकल्याणक महामहोत्सव, रहा आप मंगल सन्निधान॥
'अहिंसा एवं शाकाहार' पर, विद्वद्गोष्ठी आयोजन।
हुआ यहाँ पर, पधराये थे, उच्चकोटि के विद्वज्जन॥ ११॥

❋

महामहोत्सव में कलकत्ता, से आये थे पिता बने।
कल्याण झांझरी व इन्द्र प्रमुख,-निर्मल झांझरी जहाँ बने॥
व्रती जिनेश व नरेश ने भी, महोत्सव सुविधि करवाई।
हेलीकाप्टर से कुबेर ने, झड़ी पुष्प की लगवाई॥ १२॥

❋

'दांता' से मंगल विहार कर, ''राणोली'' पधराये हैं।
दादा गुरु ज्ञानसागर को, सविनय शीश झुकाए हैं॥
''राणोली'' रत्नों की भूमि, उपजे रत्न अनेकानेक।
श्री आचार्यज्ञानसागरजी, श्रेष्ठ रत्न उनमें से एक॥ १३॥

❋

''राणोली'' में रहते क्षत्रिय, 'राणा' था उनका उपनाम।
उनकी रही प्रचुरता इसमें, रखा गया ''राणोली'' नाम॥
जहाँ पंडित भूरामल रहते, पूज्य हो गया वह स्थान।
घर-मकान संज्ञा से उठकर, आज हुआ वह तीर्थ महान॥ १४॥

❋

संघ सहित श्री आर्जवनिधि ने, किया स्मारक अवलोकन।
आचार्यश्री ज्ञानसागर को, सादर-सविनय किया नमन॥
''सर्वोदयी पाठशाला'' का, हुआ वहाँ पर स्थापन।
यहाँ ज्ञान के दीप जलाने, किया एक दीप प्रज्वलन॥ १५॥

❁

चत्वारिंशत बाल-बालिका, करते हैं संस्कार ग्रहण।
जैनधर्म अनुकूल चलेंगे, दिया सभी संकल्प वचन॥
चन्द्रप्रभजी की नसिया में, पूज्यश्री पधराये हैं।
श्रीमुनिवर की पावन सन्निधि, मोक्षकल्याणक मनाए हैं॥ १६॥

❁

पर्वअष्टाह्निका पूज्यश्री के, सन्निधान सम्पन्न हुआ।
श्रीमुनिवर के प्रवचनामृत का, सकल भव्यजन पान किया॥
चन्द्रप्रभ जी की नसिया का, वर्ष शताब्दी आया है।
सबने मिलकर गुरुवर सन्निधि, सह-उत्साह मनाया है॥ १७॥

❁

ग्रामीण बाल विकास विद्यालय, रखे गये मुनिवर प्रवचन।
किया नमोऽस्तु हाथ जोड़कर, पूज्यश्री को बालकगण॥
''स्वर्णकाल विद्यार्थी जीवन, है जीवन की नींव समान।
आलस त्याग करो विद्यार्जन, बन जाओगे व्यक्ति महान्॥ १८॥

❁

नहीं भाग्य को लिखने वाला, होता कोई विधाता है।
किन्तु व्यक्ति ही अपने श्रमसे, अपना भाग्य बनाता है॥
तुम जो चाहो बन सकते हो, किन्तु चाहिए निश्चित लक्ष्य।
पूरी शक्ति लगा दो उसमें, पा जाओगे सकल प्रत्यक्ष॥ १९॥

❁

मद्य-माँस-मधु-नशा-व्यसन से, तुम रखना अपने से दूर।
जीवन उन्नति पाओगे, जितनी चाहोगे भरपूर॥
माता-पिता-गुरु-स्वजनों का, सदाकाल रखना तुम ध्यान।
इनकी सेवा सदा ही करना, हैं जीवन के भेद महान॥ २०॥

❋

श्रीमुनिवर के प्रवचन सुनकर, किया प्रकट आभार सभी।
''जीवन-सूत्र'' दिए जो गुरुवर, भूलेंगे हम नहीं कभी॥
गगन-चूमते मानस्तम्भ का, महामस्तक अभिषेक हुआ।
तदनन्तर मुनिराज श्री ने, रेवासा को गमन किया॥ २१॥

❋

श्रीमुनिवर का सब समाज को, अतिशय ही वात्सल्य मिला।
अल्प समय ही दिया पूज्यश्री, सबके मन में रही गिला॥
हुए उदास सकल नर-नारी, श्रीमुनिवर का देख गमन।
लेकिन सूरज रुका न करता, कोई हर्षे, करे रुदन॥ २२॥

❋

''रेवासा'' है तीर्थ पुरातन, ''रतिवास'' अतीत का नाम।
अरावली की दीर्घशृंखला, करती है किरीट का काम॥
आदिनाथ वृहद् जिनालय, शोभित है अतिशय प्राचीन।
'सुधासिन्धु' के सुप्रयास से, उसने धरा रूप नवीन॥ २३॥

❋

आर्जवसागर श्रीमुनिवर का, हुआ रेवासा शुभागमन।
आदिनाथ मंदिर-नसियाजी, जाकर प्रभु को किया नमन॥
मुनिवर की पावन सन्निधि में, मंगलमय आशीष तले।
हुए विविध सुष्ठु आयोजन, सकल असाता कर्म टले॥ २४॥

❋

रेवासा की सीकर नगरी, आर्जवनिधि ने किया विहार।
भारी जनता प्रवचन भी सुन, रोका मुनि को दे आहार॥
रुके न मुनिवर विहार कीना, सुजानगढ़ का दर्शन सार।
प्राचीन जिन मंदिर देखे, जहाँ लाडनू नेक निहार॥ २५॥

❁

अतिशय सुन्दर पाषाणों में, चतुर्थकालिक झाकी है।
वीतरागमय मनोज्ञ मूरत, जाय न कीमत आँकी है॥
एक सेठ ने धवल मार्बल, में नसिया जी बनवाई।
विद्या, औषध आलय, जल के, कूप से नगरी सजवाई॥ २६॥

❁

जैनधर्म का नाम बड़ा है, नगर लाडनू ख्यात रहा।
सदा दिगम्बर साधु जनों से, संस्कार विख्यात रहा॥
श्वेताम्बर की विश्वभारती, भी मुनिवर ने अवलोकी।
साधु व भक्तों ने सुविनय की, तव मुनिवर ने है देखी॥ २७॥

❁

कुछ दिन रहकर धर्मपाठ की, पाठशाला भी खुलवाई।
प्रवचन देकर जन मानस में, धर्म बहाया सुखदायी॥
वर्षायोग निवेदन कीना, लेकिन मुनिवर गये नागौर।
जिनमंदिर व श्रुतागार लख, फिर व्यावर जन आये दौड़॥ २८॥

❁

गये पिसांगन नारेली भी, बाद नसीराबाद गये।
श्री नसियाजी हुआ पदार्पण, लिखे इतिहास के पृष्ठ नये॥
पाठकवृन्दा! यही वह स्थल, जहाँ दादा गुरु हुई समाधि।
आचार्य श्रीज्ञानसागर की आधि-व्याधि-रहित उपाधि॥ २९॥

❁

समाधि दिवस श्री ज्ञाननिधि का, गया मनाया सहउल्लास।
जुलुस प्रभातफेरी के द्वारा, गूंजे द्वय धरती-आकाश॥
आगत बहुविद्वान् मनीषी, रखे सामयिक हृदयोद्गार।
''विद्यानिधि से गुरु को देकर, जग का किया महा उपकार॥ ३०॥

❁

दादागुरु श्रीज्ञाननिधि-सह, विद्यानिधि के संस्मरण।
मुनिवर श्री आर्जवसागर ने, बतलाए अपने प्रवचन॥
गुरु-शिष्य के सम्बन्धों की, उज्वलता का ओर न छोर।
गद् गद् स्वर से श्रोताओं को, किया मुनीश्वर भाव विभोर॥ ३१ ॥

❁

नसियाजी के भव्य जिनालय, मूल श्रीजी शांति जिनेश।
गये मनाये पंचकल्याणक, सब समाज उत्साह विशेष॥
श्रीमुनिवर के सन्निधान में, हुई प्रभावन अभूतपूर्व।
हुआ पाठशाला सम्मेलन, बजा ज्ञान-अहिंसा तूर्य॥ ३२ ॥

❁

डेराटू अरु मोराझड़ी के, अतिशयकारी प्रभु देखे।
बघेरा व टोड़ारायसिंह, तथा सांखना जिन लेखे॥
राजस्थानी पगड़ी पर, लोगों में था सद् व्यवहार।
कलगी शिखायुत मयूर देखे, अगणित शोभे वन गृह द्वार॥ ३३ ॥

❁

केशवराय पाटन व कोटा, आर्जवनिधि जहँ पधराये।
वर्षायोग का किया निवेदन, दादाबाड़ी जन आये।
विज्ञान-नगर आदिक जगहों के, जिनवर देखे सब साकार।
सभी निवेदन पीछे छूटे, पूर्व निवेदन कर स्वीकार॥ ३४ ॥

❁

रामगंजमंडी के श्रावक, कोटा पहले आये थे।
मुनियोग्य थी चर्या सुविधा, गुरु को सब बतलाये थे॥
शहरों में वह कूप नीर व, जंगल दुविधा है होती।
छोटे कस्बे में यह सुविधा, प्रायः होती विधि धोती॥ ३५ ॥

❁

आर्जवनिधि ने कोटा छोड़ा, नसिया जी से किया विहार।
'रामगंजमंडी' पधराये, नगर-ग्राम करते उपकार॥
जहाँ चरण पड़ते मुनिवर के, आ जाता था चौथाकाल।
मन-वच में निर्मलता आती, प्राणिजगत् होता खुशहाल॥ ३६॥

❁

जुलाई अठारह सन् ग्यारह को, प्रातः काल घड़ी आयी।
सब समाज मंगलवाद्यों सह, की मुनिवर की अगुवाई॥
एक पंचाशत तोरण द्वारों, गया सजाया पूर्ण नगर।
चौक, अल्पना, पदप्रक्षालन, करी आरती डगर-डगर॥ ३७॥

❁

शांत-सौम्य व्यक्तित्त्व मुनीश्वर, पिछी-कमण्डलु धारें कर।
नग्न दिगम्बर-वीतराग छवि, लगते थे अतिशय मनहर॥
पढ़ते कभी पुराणों में जो, आज यहाँ देखा सबने।
हो श्रद्धा के वशीभूत सब, लगे नमोऽस्तु थे करने॥ ३८॥

❁

सकल नगर निज भाग्य सराहा, सकल पंथ के हर्षित जन।
सबने मुनिवर के स्वरूप में, पाये इष्टदेव दर्शन॥
जैनी कहते महावीर हैं, मुस्लिम कहते पैगम्बर।
हिन्दू भाई शिवजी कह कर, गगन गुँजाते जय-जय कर॥ ३९॥

❁

धर्म प्रभावना कर, जुलूस का, शान्ति जिनालय हुआ प्रवेश।
धर्म सभा में श्रीमुनिवर का, मंगल प्रवचन हुआ विशेष॥
जैसे त्रिफला के सेवन से, देह रोग मिट जाते हैं।
वैस रत्नत्रय पालन से, जन्म-मरण नश जाते हैं॥ ४०॥

❋

नगर के बाहर श्री नसियाजी, नामक स्थित धर्मस्थल।
धर्म-प्रकृति की गंगा-युमना, कल-कल करती है प्रतिपल॥
आत्मसाधना इच्छुक जन को, यह स्थल अतिशय अनुकूल।
बीचों-बीच जिनालय शोभित, ज्यों तड़ाग में शोभित फूल॥ ४१॥

❋

मंगल वाद्य-ध्वजा केशरिया, वृहत् जुलुस शोभाकारी।
मुनिवर पधराये नसियाजी, सकल कर्म कल्मषहारी॥
जैसे चातक स्वाति बूंद की, बारम्बार जताता प्यास।
वैसे रामगंज मंडी जन, चाहें मुनिवर चातुर्मास॥ ४२॥

❋

श्रीमुनिवर के चरणकमल में, सकल समाज ने की अरदास।
हे गुरुवर! हम चाह रहे हैं, पूज्यश्री का चातुर्मास॥
हे करुणाधन! करुणा करके, पूरण करें हमारी आस।
हम चातक हैं, आप मेघ हैं, करें प्रशान्त हमारी प्यास॥ ४३॥

❋

बीस जुलाई दो हजार ग्यारह को, हुआ स्थापित चातुर्मास।
शांति जिनालय नसियाँजी में, हुआ स्थापन उत्सव खास॥
होने लगी धर्म की वर्षा, लगे भीगने भव्य सुजन।
श्रोताओं की संख्या वृद्धि, आशातीत बढ़ी प्रतिदिन॥ ४४॥

❋

ऐसा कोई दिन न जाता, धर्म प्रभावना हुई नहीं।
ऐसा कोई दिन न होता, मुनिश्री प्रवचन दिए नहीं॥
हर प्रवचन का श्रोता मन पर, पड़ता हितकर अमित प्रभाव।
आये तहसीलदार शरण वे, हनुमानसिंह बदले भाव॥ ४५॥

❁

माह अगस्त में बत्तिस दिवसी, हुए शुरू षोडसकारण।
श्रीगुरुवर महिमा बतलाई, प्रकृति तीर्थंकर में कारण॥
द्वासप्तति नर-नारी मिलकर, व्रत धारण हित नियम किया।
बागड़िया परिवार ने दूसरा, मंगलकारी कलश लिया॥ ४६॥

❁

इसने ही नसिया के प्रांगण, हुआ हि मंदिर जब निर्माण।
करी विराजित सकल वेदियाँ, शांति प्रदाता श्रीभगवान॥
ध्वजा और कलशारोहण भी, आपश्री का ही है योग।
चक्रेश और आदित्य ने किया, चंचल लक्ष्मी सद् उपयोग॥ ४७॥

❁

प्रात:काल से निशाकाल तक, धर्म की गंगा बहती है।
पूजन-प्रवचन-फिर अहारचर्या की हलचल रहती है।
सामायिक-कर रत्नकरण्डक की कक्षा का आता क्रम।
गुरुभक्ति-विद्वज्जन प्रवचन, होते धार्मिक आयोजन॥ ४८॥

❁

समयचक्र गतिमान रहा फिर, पर्व पर्यूषण आये हैं।
मोक्षशास्त्र, धर्म दशलक्षण गुरुवर ने समझाये हैं॥
शिविर साधना संस्कार का, हुआ सफलतम आयोजन।
प्रोफेसर श्री अमरचन्द्र जी किया कलश का स्थापन॥ ४९॥

❁

समवसरण मंडल विधान का, हुआ भव्यतम आयोजन।
समवसरण के मध्य विराजित, मुनिवर के होते प्रवचन॥
लगता जैसे समवसरण में, राजित तीर्थंकर भगवान।
देह-आत्मा भिन्न-भिन्न का, करवा रहे भेद-विज्ञान॥ ५०॥

❋

अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी मुनिवर, जहाँ कहीं भी जाते हैं।
धार्मिक-ज्ञान पाठशाला का, उज्ज्वल दीप जलाते हैं॥
संस्कारवान बनती समाज है, धार्मिकता के खिले सुमन।
श्रीमुनिवर की सन्निधि उनका, हुआ यहाँ पर सम्मेलन॥ ५१ ॥

❋

मुनिवर श्री आर्जवसागरजी, उच्चकोटि के महाकवि।
'काव्यतीर्थोदय उत्तम रचना' मुक्तकण्ठ से कहें सभी॥
आपश्री की मंगल सन्निधि, कवि सम्मेलन धर्माधार।
नवरस वर्षाए कवियों ने, जनता ने माना आभार॥ ५२ ॥

❋

करुणा कलित हृदय मुनिवर का, सदाजीव रक्षा के भाव।
शाकाहार प्रचार अहिंसा, मनमें रहता हरदम चाव॥
नसिया प्रांगण हुआ आयोजित, गोष्ठी अहिंसा-शाकाहार।
उच्चकोटि के विद्वानों ने, प्रस्तुत किए श्रेष्ठ उद्गार॥ ५३ ॥

❋

इन्दौरस्थ हुकमचन्द सांवला, प्रखर प्रवक्ता थे श्रीमान्।
''ग्रीनमार्क'' का अंकन होना, शाकाहार की है पहचान।
पर, इसमें भी हिंसक मैटर, पाया जाता कहता लेख।
ई नम्बर-एनीमल अंकित, रहता है, रैपर पर देख॥ ५४॥

❋

''ग्रीनमार्क'' की सच्चाई को, जान गये सब श्रोतागण।
रेडीमेड खाद्य पदार्थ का, त्याग किया कईयक सज्जन॥
श्रीगुरुवर के चरण-शरण जा, किया त्याग संकल्प महान।
शाकाहार-अहिंसा गोष्ठी, की यह भी उपलब्धि जान॥ ५५ ॥

❋

पाठ कण्ठस्थ होता जो जनको, उसका भी महत्त्व है खास।
काम समय पर वह आता है, जो होता है अपने पास॥
ज्यों पर देश गमन करने पर, काम बनाता अण्टी दाम।
वैसे ही कण्ठस्थ पाठ भी, मौके पर आता है काम॥ ५६॥

❋

पाठ कण्ठस्थ प्रतियोगिता हुई, भाग लिया बहु नर-नारी।
सुना दिए विनती-स्तोत्र कई, ग्रन्थ बड़े-छोटे-भारी॥
हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत-भाषा, अपनी-अपनी रुचि अनुसार।
बालक-और बालिका भी, किए पाठ कण्ठ उच्चार॥ ५७॥

❋

आचार्यश्री विद्यासागरजी, रहे विराजे चन्द्रगिरीश।
द्वात्रिंशत्‌जन गुरु चरणों जा, प्राप्त किया गुरुवर आशीष॥
महावीर निर्वाण महोत्सव, सह-उत्साह मनाया है।
बन्धन मुक्ति प्रतीक रूप में, निर्वाणलाडु चढ़ाया है॥ ५८॥

❋

चलते-चलते सुई समय की, माह कार्तिक पर आयी है।
मुनिश्री ने मोरपंख से, पिच्छी नई बनाई है॥
संयम की उपकरण रही यह, जैन साधु की है पहचान।
इसको वे ही है धारणकरते, जिनके हों निर्मल परिणाम॥ ५९॥

❋

होड़लगी देने वालों की, मुनिवर पिच्छी लेगा कौन।
जिनके पुण्य उदय में होगा, व्रत-संयम पालेगा जोन॥
श्रीनिरंजन-कैलाश टोंग्या, अमर-जीतमल उत्तम जन।
सपत्नीक दम्पति युगलों से, हुआ पिच्छिका परिवर्तन॥ ६०॥

❁

सभाअंत मुनिराजश्री के, हुआ सुमंगलमय प्रवचन।
''रत्नत्रयात्मक मोक्षमार्ग पर, चलते रहें सभी सज्जन॥''
सभी सुखी हों, सभी निरोगी, सबका हो कल्याण सदा।
इस धरती पर दु:ख का भागी, कोई होवे नहीं कदा॥ ६१ ॥

❁

सब समाज ने हाथ जोड़ कर, श्रीमुनिवर को किया नमन।
क्षमा करें अपराध हमारे, क्षमासिन्धु हे करुणाधन॥
वर्षा गई, शरद ऋतु आई, शुष्कधरा, है स्वच्छ गगन।
यथा समय मुनिराजश्री का, संघ सहित हो गया गमन॥ ६२ ॥

❁

यथा रामजी चले नगर से, अयोध्यावासी किया रुदन।
तथा विलखने लगे भक्तजन, जब मुनिवर ने किया गमन॥
बहता पानी रुके न इक थल, हो राह भले-ढेढ़ी-मेढ़ी।
कर विहार मुनिराज पधारे, अतिशय क्षेत्र चाँदखेड़ी॥ ६३ ॥

❁

राजस्थान प्रान्त में स्थित, ''झालावाड़'' है एक जिला।
उसके नगर खानपुर सन्निधि, तीर्थक्षेत्र यह कमल खिला॥
ध्वजा-शिखर-जिन भवन मनोहर, मन हर लेते हैं सबका।
दर्शन बस वे ही कर पाते, पुण्योदय होता जिनका॥ ६४॥

❁

यहाँ भौंयरे में राजित हैं, श्रीश्री आदिनाथ भगवान।
मनहर-सुन्दर प्रतिमाजी में, फूंके कलाकार ने प्राण॥
लाल पाषाणी प्रतिमाजी पर, जब मुनिवर के नयन पड़े।
स्तम्भित-अपलक-मंत्रित से, बहुत देर तक रहे खड़े॥ ६५ ॥

❋

बैठ गये कर जोड़े मुनिवर, झुका दिया चरणों में शीश।
धन्य हुआ मेरा यह जीवन, दर्शन प्राप्त हुए जगदीश॥
धन्य हुई है रसना मेरी, करके प्रभुवर का गुणगान।
कहते-कहते लीन हो गये, परमातम-आतम का ध्यान॥ ६६ ॥

❋

जब से मुनिवर यहाँ पधारे, बढ़ी क्षेत्र पर चहल-पहल।
श्रद्धा गागर धारे उर में, आयें भक्त जनों के दल॥
हैं गुरुवर जीवित तीर्थंकर, सिद्धपुरुष हैं सिद्धि निवास।
सकल सिद्धियाँ तप करतीं हैं, नित इनके चरणों के पास॥ ६७ ॥

❋

चालीस वर्ष पहले भू-पर उतरा था उज्ज्वल ध्रुवतारा।
आचार्यश्री विद्यासागर, उन्हें जनता जग सारा॥
चत्वारिंशत्तम् आचार्यदिवस, यहाँ मनाया सह-उत्साह।
श्रद्धा का सागर उमड़ पड़ा, जिसकी नहीं थी कोई थाह॥ ६८ ॥

❋

मुनिवर श्री आर्जवसागर जी, किये सामयिक थे प्रवचन।
आचार्यश्री के चरण कमल में, किए समर्पित भक्ति सुमन॥
क्षेत्र कमेटी प्रतिनिधि मंडल, श्रीमुनिवर से ही अरदास।
हे गुरुवर! इस तीर्थक्षेत्र पर, शीतकाल में करें प्रवास॥ ६९ ॥

❋

शीतकाल में आर्जवनिधि ने, तीर्थक्षेत्र की वंदन का।
भाव बनाया पहले देखा, मंदिर झालरपाटन का॥
क्षेत्र कैथुली पार्श्वनाथ लख, फिर बिजौलिया गुरु पहुँचे।
पार्श्वनाथ की केवल भूमि, समवसरण लखने पहुँचे॥ ७० ॥

❁

क्रम क्रमशः गुरु बड़ी कलायुत, चित्तौड़गढ़ के किले गये।
संघ आर्यिका सुप्रकाश वा, जन आये गुरु साथ भये॥
चर्या प्रवचन आदिक से भी, प्रभावना हुई चारों ओर।
कलात्मक जिन मंदिर देखे, नाचा था मुनि मन का मोर॥ ७१॥

❁

रुके न रोके जन से मुनिवर, पहुँचे भिण्डर नगर महान।
मंदिर क्षेत्र सभी लखकर के, शीतकाल में ध्यान प्रधान॥
समझाया था ध्यान विषय जब, सबने चाहा और प्रवास।
लेकिन मुनिवर गये उदयपुर, लोगों की थी उत्तम प्यास॥ ७२॥

❁

क्षेत्र पार्श्व का दर्शन कीना, लखे अनेकों जिनमंदिर।
वाद्यध्वनि व जन जयकारों, से गूँजा पुर जिनमंदिर॥
उदासीन आश्रम में मुनिवर, रुके संघ के साथ महान।
कुन्थुकुमार, राहुल अरु टाया, आदिक ने सेवा की जान॥ ७३॥

❁

विधान मंडल पंचकल्याणक, कलशारोहण हुआ सुजान।
प्रवचन ध्यान व पाठशाला से, हुई प्रभावना सम्यक् जान॥
ऋतुविलास आदिक मंदिर, तथाहि झीलों को देखा।
चिड़िया घर को देखा बोले-छूटे पशु बंधन रेखा॥ ७४॥

❁

वाणी सुनने की चाहत थी, विद्वानों को भी रोज।
उदयचंद विद्वत् आते थे, प्राकृत में होती थी खोज॥
अधिक समय का लाभ हमें हो, रहा निवेदन सबका था।
मुक्ताकाश समवसरण लख, तारंगा जी जाना था॥ ७५॥

❋

सभी दर्शकर मुनिवर जी ने, संघ सहित फिर किया विहार।
नगर सिरोही आदिक होकर, माउण्टाबू पहुँचे सुखकार॥
हिलस्टेशन ठण्डे मौसम, का इक अनुभव भी पाया।
तीन जिनालय प्रकृति छटालख, ख्यात स्थल मन को भाया॥ ७६ ॥

❋

पर्व फाल्गुन अष्टाह्निका में, तारंगा जी पहुँचे थे।
शंभव जिनवर लखे व कोटि-सिद्ध शिला पर पहुँचे थे॥
पर्व दिनों में भक्तिपाठ सह, गुफाओं में शुभध्यान किया।
लखा तपोवन, तीर्थंकर वन, ऊर्जयन्त प्रस्थान किया॥ ७७॥

❋

शंभवजिन प्रभु के पद-पंकज, करके बारम्बार नमन।
श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, सकल संघ-सह किया गमन॥
म्हेसाणा व राजकोट के, मंदिर क्रमशः नमते पार।
इक दिन पहुँचे नेमिनाथ की, मोक्ष स्थली श्रीगिरनार॥ ७८॥

❋

नगर म्हेसाणा में मंदिर-दर्शन, चर्या प्रवचन भी।
हुए, चले फिर राजकोट को-क्रमशः चले भक्तजन भी॥
राजकोट में चर्या प्रवचन, प्रभावना के अंग बने।
चलते-चलते जूनागढ़ में, गुरुचरण सत्संग बने॥ ७९॥

❋

भव्य हुई अगवानी गुरु की, आर्जवसागर संघ मिला।
कई प्रान्तों से भक्त पधारे, रजत जयन्ती रंगखिला॥
सूरत, दिल्ली दमोह जयपुर, चेन्नै, भोपाल आदिक से।
दीक्षा दिवस मनाने आये, तृप्त हुए दानादिक से॥ ८०॥

❋

संयम रत्न सम्हाले बीते, श्रीमुनिवर को पच्चिस वर्ष।
संयम रजत जयंति उत्सव, गया मनाया, सहअति हर्ष॥
भारत के कोने-कोने से, आये भक्त किया सहकार।
गूँजा मुनिश्री जयकारों से, पावन तीर्थ क्षेत्र गिरनार॥ ८१॥

❋

ब्रह्मचारिणी बहनों द्वारा, मंगलाचरण सम्पन्न हुआ।
नरेश-कनु-अरविन्द-भरत ने, मुनिश्री पदप्रक्षाल किया॥
भक्तों से की गई आरती, पंचविंशति दीप जला।
विद्वत् उद्बोधन करने का, अजित जैन सौभाग्य मिला॥ ८२॥

❋

जूनागढ़ में प्रथम हि गुरु ने, नेमिनाथ जिन दर्श किए।
अपलक नयन निहारा प्रभु को, मुख छवि अमृत चषक पिये॥
पुनः-पुनः कर चरण वन्दना, प्रभु से मांगा अक्षय कोष।
संयम-पथ पर बढ़ता जाऊँ, निरतिचार-निर्मल-निर्दोष॥ ८३॥

❋

सकल उपस्थित भक्तजनों ने, क्रम-क्रम से अभिव्यक्ति दी।
''युगों-युगों तक जियें पूज्यश्री, प्रभु से हार्दिक विनती की॥
कहा सभी ने श्रीमुनिवर की, संयमनिधि वृद्धिंगत हो।''
बारम्बार सब किया नमोस्तु, मुनिवर के चरणों नत हो॥ ८४॥

❋

श्रीगिरनार हि क्षेत्र महत्तम, उर्जयंत भी इसका नाम।
बहत्तर कोड़ि, सात सौ मुनिवर, प्राप्त यहाँ से शिवपुर धाम॥
मुनिवरश्री आर्जवसागरजी, की वन्दना संघ सहित।
टोंक-टोंक पर मस्तक टेका, किया पूज्यश्री आतम हित॥ ८५॥

❁

प्रथम टोंक पर प्रथम नेमिप्रभु, अविचल ध्यान लगाया है।
टोंक पाँच पर कर्मक्षपण कर, परम मोक्षपद पाया है॥
द्वितीय टोंक अनिरुद्धकुंवर ने, तप करके पाया निर्वाण।
तृतिय-चतुर्थ से शम्भु प्रद्युम्न ने पाया अविचल शिवपुर धाम॥ ८६॥

❁

मार्ग वन्दना श्रीमुनिवर मन, आये शुभतम-उच्चविचार।
तीर्थक्षेत्र का संरक्षण हो, हो जिनमंदिर जीर्णोद्धार॥
हम रहें या कि न रहें भले ही, किन्तु हमारे क्षेत्र रहें।
नेमिनाथ की जयकारों से, गुंजित क्षिति-आकाश रहे। ८७॥

❁

अहो! अन्य-मतवाले देखो! टोंक-टोंक पर बैठे हैं।
अर्थ प्रलोभन की मदिरा पी, अहंकार में ऐंठे हैं॥
शासन भी तो उदासीन है, करता नहीं न्याय की बात।
कैसे संस्कृति संरक्षित हो, प्राप्त पूर्वजों की सौगात॥ ८८॥

❁

आठ हजार से ऊपर सीढ़ी, राजुल गुफा व शेषावन।
प्रथमटोंक पर मंदिर देखे, द्वितीयादिक पर बने चरण॥
चतुर्थटोंक है बिन सोपानों-से ऊँची जानी जाती।
द्वयचरण व प्रतिभाशोभे, गुफा भी जहँ देखी जाती॥ ८९॥

❁

पंचम टोंक है सबसे ऊँची चरण बिम्ब के दर्श भये।
चन्द्रगुफा में धरसेन स्वामी, अंगों-ज्ञाता जहाँ भये॥
पुष्पदन्त व भूतबली ने, जहाँ लिया षट्खण्डागम ज्ञान।
उनकी गुफा शांतिप्रदायी, देखी; हरती है अज्ञान॥ ९०॥

❋

ग्रीष्मकाल का योग रहा था, गिरि तलहटी में जानो।
नेमि जिनालय बण्डीलाल की- धर्म सुशाला में जानो॥
महावीर की जहाँ जयन्ती, श्रुतपंचमी पर्व महा।
दोनों पर्व व श्रुतका वाचन, विधान आदि का योग जहाँ। ९१॥

❋

परम पूज्या माँ जिनवाणी का, पर्व अवतरण आया है।
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी शुभ दिन, सादर गया मनाया है॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, सन्निधान था मंगलमय।
सभागार था रहा गूँजता, ''जिनवाणी माता की जय''॥ ९२॥

❋

''बंधु! यही उर्जयन्तगिरि है, जहाँ जुड़ी थी धर्म सभा।
श्रीधरसेनाचार्य गुरुजी, यहीं विखेरी ज्ञान विभा॥
पुष्पदन्त और भूतबली को, मिला यहीं पर गुरु से ज्ञान।
जिनने गूंथे प्राप्त ज्ञान से, षट्खंडागमग्रन्थ महान''॥ ९३॥

❋

गुरुभक्त - धर्मअनुरागी - श्रीनरेश सूरत वासी।
तीर्थ सुरक्षा-संत सभागण-जिनवचनामत अभिलाषी॥
कहे माह से आप साथ रह, करा रहे मुनिसंघ विहार।
चतुर्मास भी सूरत में हो, रखते हैं मन पुण्य विचार॥ ९४॥

❋

जैन समाज प्रतिनिधि मंडल ले, आप गये मुनिराज शरण।
किया निवेदन सूरत को ही, बढ़े पूज्यश्री युगल चरण॥
श्रीफल अर्पित हैं चरणों में, पूर्ण करें गुरु अभिलाषा।
सन् बारह का 'सूरत' में हो, पूज्यश्री का चौमासा॥ ९५॥

❋

सभा अंत में श्रीमुनिवर ने, मंगलमय आशीष दिया।
श्रावकजन ने योगत्रय से, ''स्वाध्याय'' संकल्प लिया।
तीर्थ सुरक्षा के बारे में, रहीं प्रेरणा मुनिवर खास।
देकर प्राण करेंगे रक्षा, मुझको है पूरा विश्वास॥ ९६॥

❋

श्रुतपंचमी पर्व अनंतर, एक बार फिर पूज्यश्री।
दो दिवसों में पूर्णक्षेत्र की, भाव सहित वन्दना की॥
नेमिनाथ के श्री चरणों में, करके बारम्बार नमन।
श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, तीर्थक्षेत्र से किया गमन॥ ९७॥

❋

यद्यपि अन्यानेक नगर से, प्रतिनिधि मंडल आये हैं।
चतुर्मास हित किया निवेदन, श्रीफल चरण चढ़ाये हैं॥
श्रीमुनिवर ने समझ लिया सब, किसे लगी है गहरी प्यास।
किया सुनिश्चित, सन् बारह का, हो 'सूरत' में चातुर्मास॥ ९८॥

❋

भव्यों को भी क्षेत्र दर्श व, मुनि सेवा का योग मिला।
ज्ञान बढ़ाया पुण्यार्जन भी, अंतस् में सुख कमल खिला॥
पाण्डव मोक्ष जहाँ ऐसे उस-शत्रुञ्जय को गुरु चले।
दर्शन करते समुद्र पहुँचे, भाव-नगर, घोघा सु मिले॥ ९९॥

❋

सहस्रकूट जिनालय देखा, श्रीपाल की याद भली।
खोले थे वे वज्रपाट वे, धन्य रहे वे महाबली॥
भरुच से अंकलेश्वर पहुँचे, प्रतिमा अतिशयकारी थी।
तथा सजोत की मूरत देखी, जन-जन की मनहारी थी॥ १००॥

❋

जैसे मेघ भेद ना करते, नगर-ग्राम-गिरि-विपिन विचार।
वैसे मुनिवर चले मार्ग में, जन-जन का करते उपकार॥
धर्म अहिंसा ध्वज फहराया, दिया वीर का शुभ सन्देश।
यथा समय पर हुआ पूज्यश्री, सूरत नगर में भव्य प्रवेश॥ १०१ ॥

औद्योगिक एवं धार्मिक नगरी सूरत के आहुरानगर, श्री शांतिनाथ जिनालय में चातुर्मास-२०१२

१. आहुरानगर में सन् २०१२ का चातुर्मास स्थापना।

२. मुनिश्री के सान्निध्य में सम्पन्न कार्यक्रम।

१. गुरु पूर्णिमा। २. वीर शासन जयन्ति।

३. रक्षाबन्धन।

४. तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ निर्वाण दिवस।

५. आचार्य शांतिसागरजी समाधि दिवस।

३. पाठशाला की स्थापना।

४. मुनिश्री द्वारा रचित कृतियों का विमोचन।

५. आहुरानगर में विराजित सभी प्रतिमाओं को

१. आ.श्री विद्यासागरजी ने सूरत में एवं

२. मुनिश्री आर्जवसागरजी ने भोपाल में सूर्यमंत्र दिया।

६. षोडसकारण व्रत महोत्सव : मुनिश्री की विशेषता।

७. मुनिश्री के सान्निध्य में पर्यूषण।

८. पर्यूषण में साधना-संस्कार शिविर।

९. पर्यूषण पर्व अनन्तर श्री जी की शोभायात्रा निकली।

१०. श्री १००८ समवशरण विधान सम्पन्न।

११. अ.भा. कवि सम्मेलन।

१२. पाठशालाओं का सम्मेलन।

१३. चातुर्मास काल में कण्ठपाठ प्रतियोगिता का आयोजन।

१४. भ. महावीर का निर्वाण दिवस।

१५. मुनिश्री का पिच्छिका परिवर्तन।

१६. सम्मेद शिखर की यात्रा को आशीष।

१७. मानस्तम्भ का अभिषेक।

१८. चातुर्मास की दैनिकचर्या।

१९. साधना शिविर कार्यक्रम।

२०. चातुर्मास का निष्ठापन।

२१. मुनिश्री का विहार।

२२. सिटी जिनालय दर्शन।

२३. महुआ एवं पावागढ़ सिद्धक्षेत्र दर्शन।

आहुरानगर सूरत में चातुर्मास २०१२
मुनिदीक्षा रजत जयंति वर्ष, २५ वाँ रजत पावन वर्षायोग

गुर्जनप्रान्त, नगर औद्योगिक , सूरत है जिसका शुभ नाम।
आज उसी सुन्दर नगरी से, हमको है अति धार्मिक काम॥
कारण धर्मप्रभावक मुनिवर, परम पूज्य श्री आर्जवनिधि।
चातुर्मास दो हजार बारह, हुआ स्थापित यथाविधि॥ १॥

❋

छै जुलाई, ईसा सन् बारह, हुआ संघ का नगर प्रवेश।
तोरण द्वार-अल्पनाओं से, हुआ सुसज्जित सकल प्रदेश॥
जैनधर्म के जयकारों से, रहे गूंजत धरा-गगन।
चलती रही आरती प्रतिपल, हुए प्रक्षालित साधु चरण॥ २॥

❋

अष्ट जुलाई मंगल बेला में, हुआ स्थापित चातुर्मास।
सूरत नगर आहुरा पाया, वर्षाऋतु का साधु प्रवास॥
भारत के कोने-कोने से, जुड़े भक्तगण आशातीत।
अतिशय भव्य हुआ आयोजन, हुआ न पहले पूर्व अतीत॥ ३॥

❋

'रजत कलश' पाया नरेशजी, धर्मप्रभावना मंगलाबेन।
''वात्सल्य'' का पुण्य कमाया, भाई श्री फोजमल जैन॥
चातुर्मास स्थापित होते, कार्यक्रमों की झड़ी लगी।
बालक-वृद्ध-युवा नर-नारी, धर्म आचरण ज्योति जगी॥ ४॥

❋

जो मंदिर सूने रहते थे, लगी उमड़ने भीड़ अपार।
मंदिर-मंडप लगी गूंजने, शांतिनाथ की जय जयकार॥
मुनिवर का व्यक्तित्त्व अप्रतिम, हर जन होता उनका दास।
जो भी एक बार आ जाता, श्रीमुनिवर चरणों के पास॥ ५॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागर के, पाद प्रक्षालन का सौभाग्य।
पाया श्री जयंतिभाई, मफत भाई भी जागे भाग॥
शास्त्रजी भेंट किये मुनिवर को, माणकचन्द-नाथा भाई।
अखंड ज्योति का किया प्रज्वलन, मोहनलाल-हर्षद भाई॥ ६॥

❋

रामगंजमंडी से आये, गुरु भक्त चक्रेशकुमार।
अपना जीवन सफल बनाया, मुनिवर की आरति उतार॥
पूज्य ऋषि उत्तम लेखक हैं, आगम सम्मत प्रवचनकार।
कई कृतियों का हुआ विमोचन, शान्तिनाथ, जिनके दरबार॥ ७॥

❋

शासन वीर जयंति आयी, गुरुवर प्रवचन हुये अमोल।
दिवस आज थी महावीर की, वाणी दिव्य खिरी अनमोल॥
गुरुपूर्णिमा, मोक्षसप्तमी, रक्षाबंधन मन भाया।
गये मनाये सोत्साह सब, जब जिसका है क्रम आया॥ ८॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, मंगलमय सान्निध्य रहा।
तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का, निर्वाण दिवस सम्पन्न हुआ॥
श्रावण शुक्ला पूरणमासी, दिवस सभी विध मंगलकार।
सात शतक मुनियों की रक्षा, की मुनिवर श्री विष्णुकुमार॥ ९॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागर से, प्राप्त प्रेरणा सकल समाज।
पुण्यतिथि थी गई मनाई, श्रीशांतिसागर महाराज॥
पूज्यश्री ने दिगम्बरत्व की, भंगशृंखला जीवित की।
मानो बुझती यज्ञ हुताशन, घृतसमिधायुत् आहुति दी॥ १०॥

❋

आचार्यश्री शांतिसागरजी, आयु रही चौरासी वर्ष।
पूज्यश्री उत्कृष्ट तपोधन, किए उपवास अट्ठावन वर्ष॥
शास्त्रोक्त मुनि मार्ग प्रवर्तक, सिंह-निष्क्रीड़नव्रत कर्त्ता।
घोरोपसर्ग विजेता गुरुवर, दिगम्बरत्व रक्षण कर्त्ता॥ ११॥

❋

ऋजुता हिमगिरि, जिनशासन रवि, व्रतोपवास सम्मेदशिखर।
आध्यात्मिक चिन्तन सुमेरु हैं, जिनभक्ति स्रोत अमर॥
करुणासागर, श्रमण शिरोमणि, अद्वितीय समाधिकरण।
सिद्धक्षेत्र श्रीकुन्थलगिरि पर, किया समाधि श्रेष्ठ मरण॥ १२॥

❋

योगीन्द्र तिलक, रत्नत्रयधारी, पूज्यपाद, प्रतिभाशाली।
सम्यक्त्व निलय, मोक्ष दिग्दर्शक, प्रज्ञा-साहस-बलभारी॥
ऐसे अनुपम ऋषिराज के, ऋणी रहेंगे सभी श्रमण।
आचार्य श्रीशांतिसागर को, सबका बारम्बार नमन॥ १३॥

❋

श्रीमुनिवर हैं उत्तम चिंतक, जैन संस्कृति के स्तम्भ।
प्राप्त प्रेरणा पूज्यश्री की, हुई पाठशाला प्रारम्भ॥
जैसे एक दीप के द्वारा, होते प्रज्वलित दीप अनेक।
वैसे सहस्र-दीप जल जाते, संचालित पाठशाला एक॥ १४॥

❋

बालक-वृद्ध-युवा-नर-नारी, लाभ शताधिक लेते हैं।
इसी नगर के विद्वत्-विदुषी, मानद, शिक्षण देते हैं॥
आज का पौधा कल्पवृक्ष बन, विद्या-ज्ञान के फल देगा।
बहुत क्या कहें? यह ज्ञानामृत, जन्म-मृत्यु दुःख हर लेगा॥ १५॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, दी प्रेरणा पाठशाला।
अतिउपकार किया गुरुवर ने, दे ज्ञान का उजयाला॥
उनके इस परमोपकार को, हम तो कभी न भूलेंगे।
सदा-सर्वदा याद रखेंगे, खूब फलेंगे फूलेंगे॥ १६॥

❋

''दाम बनाये काम'' कहावत, यद्यपि है अतिशय प्राचीन।
लेकिन सदाकाल प्रासंगिक, अतः रहेगी सदा नवीन॥
जयंतिलाल-चन्दू भाई था, एक लक्ष का दान किया।
अतः प्रथमतः उसके द्वारा, ज्ञान यज्ञ यह शुरु हुआ॥ १७॥

❋

दूर दृष्टि रखते हैं मुनिवर, आगे कथं चलेगा काम।
प्रतिवर्ष हो कलश स्थापन, उत्तम ज्ञानवीर के नाम॥
शान्ताबेन, डाह्या भाई ने, सन् बारह का लिया कलश।
चार लक्ष का फण्ड बना सब, श्रावक अर्जित किया सुयश॥ १८॥

❋

नगर आहुरा के जिन मंदिर, राजित जितनी प्रतिमाजी।
सूरत में की करी प्रतिष्ठित, आचार्यप्रवर विद्यानिधिजी॥
मानस्तम्भ आठ प्रतिमाएँ, प्रश्न आप मन आये अगर।
आर्जवसागर मुनिवर, दीना, सूर्यमंत्र भोपाल नगर॥ १९॥

❋

श्रीमुनिवर के चातुर्मास का, वैशिष्ट्य महा विस्मयकारी।
षोडसकारण व्रत का पालन, है अनुपम, अतिशयकारी॥
यह वैशिष्ट्य कहीं ना देखा, केवल आर्जवनिधि के पास।
द्वात्रिंशत् दिन सतत् साधना, एक पारणा, इक उपवास॥ २०॥

❋

षोडसकारण पर्व मनाया , किसी ने इक भुक्ति-उत्साह।
बिन विघ्न-बाधा सम्पन्ना, पर्व महोत्सव पूरे माह॥
लगभग दो सौ नर-नारी ने, गुरु चरणों संकल्प लिया।
मुनिवर आशिष विधि-विधान, शक्ति देख सम्पन्न किया॥ २१॥

❋

कुएँ का पानी, घर का आटा, हरी-रसी-त्याग करना।
पूजन-स्वाध्याय-सामायिक, धर्म आचरण रत रहना॥
लगभग दौ-सौ नर-नारी ने, तन साधा, मन बांध लिया।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर की, प्राप्त प्रेरणा पुण्य किया॥ २२॥

❋

षोडसकारण व्रत क्या होते? इसका उत्तर सुन लो भ्रात।
सोलह प्रकार भावनाओं का, मन से जपन करो दिन-रात॥
सहित भावना व्रताचरण से, प्रकृति तीर्थंकर होता बंध।
करके नष्ट अष्टकर्मों को, आत्मा हो जाती निर्बंध॥ २३॥

❋

जिन-जिन ने इस व्रत को पाला, कुछ के नाम गिनाते हैं।
इससे एक दरिद्रा कन्या, सीमंधर बन जाते हैं॥
वैयावृत्ति की श्रीषेण ने, शांतिनाथ का पद पाया।
श्रीकृष्ण-रावण का इससे, तीर्थंकर का क्रम आया॥ २४॥

❋

अहो! अहो! मुनिराजश्री का, है हम पर अनुपम उपकार।
सन्निधि और प्रेरणा देकर, धर्मप्रीति का खोला द्वार॥
मुनिवर अगर आप न आते, ना होती प्रभु से पहचान।
आप वंद्य हैं, पूजनीय हैं, गुरुवर तुमको कोटि प्रणाम॥ २५॥

❋

पर्व पर्यूषण के आने पर, सब हो जाता नया-नया।
चारों ओर दिखाई देता, धर्म प्रकाश है फैल गया॥
सबके तन-मन आचरण का, जाग गया अतिशय उत्साह।
प्रात:काल से मध्यरात्रि तक, रहती धर्मामृत की चाह॥ २६॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागर की, पावन सन्निधि प्राप्त हुई।
उनके कल्याणी प्रवचन से, मिली स्फूर्ति नई-नई॥
धर्म एक, दशलक्षण उसके, यह दशरंगी गुलदस्ता।
जिनके सदाचरण से मानव, मोक्षमहल तक जा सकता॥ २७॥

❋

अहो! धर्म के दशलक्षण क्या? जिन गंगा के दस हैं घाट।
नीर एक अनुपम धर्मामृत, अतिशय गहरा-विस्तृत पाट॥
जो भी सच्चे मन से इसमें, बूड़मबूड़ सनहाते हैं।
इसमें है सन्देह नहीं कुछ, अन्त परमपद पाते हैं॥ २८॥

❋

अहो!भाद्रपद व्रत रत्नाकर, करता है सबका कल्याण।
प्राय: सकल महाव्रत, उत्सव, इस ही माह विराजे आन॥
दिन प्रत्येक व्रतों का दिन है, पालनकर्ता हैं बड़भाग।
भद्र परिणामी हो जाते हैं, जो जितना अपनाते त्याग॥ २९॥

❋

उत्तम-क्षमा-मार्दव-आर्जव, सत्य-शौच-संयम-तप-त्याग।
आकिंचन्य-ब्रह्मचर्य-धर्मदश, जो इनसे रखते अनुराग॥
ऐसे भव्य सुजन इस जग में, यश: कीर्तिधन पाते हैं।
उनके गुण समूह अपनाकर, नर भवदधि तर जाते हैं॥ ३०॥

❋

परमपूज्य मुनिराजश्री की, पावन सन्निधि लगा शिविर।
संस्कार-सह शिक्षण पाया, लगभग दो सौ युवक प्रवर॥
छै:काय की रक्षा करना, जयकरना पंचेन्द्रिय-मन।
मुनिवर सन्निधि किया आचरण, शुचि-सम्यक् शिविरार्थिजन॥ ३१ ॥

❋

अब तक चातुर्मास काल का, हुआ उद्घाटित पहला पृष्ठ।
साधना शिविर, पर्व पर्यूषण, अब किंचित् करते स्पष्ट॥
प्रातः साढ़े चार बजे सब, शिविरार्थी जग जाते हैं।
हो निर्वृत्त आवश्यक कृत्यों, स्तोत्रप्रभाती गाते हैं॥ ३२॥

❋

तदन्तर जाग्रत मन करते, सामायिक-सह आतम-ध्यान।
दासोऽहं से बढ़ते-बढ़ते, चढ़ते अहं, अहं सोपान॥
जिनवर के कलशाभिषेक का, तदनंतर आता है क्रम।
जय-जय भगवन्तों के स्वर से, गुंजित होते धरा-गगन॥ ३३॥

❋

शुद्ध वस्त्र, शिर मुकुट बँधे हैं, युगकर कलशा धारण कर।
करते हैं अभिषेक इन्द्र ज्यों, क्षीरोदधि से जल लाकर॥
सामूहिक करते जिनपूजन, अष्टकर्म क्षय होते हैं।
भक्ति-गीत-संगीत मेल से, पाप कालिमा धोते हैं॥ ३४॥

❋

आठ बजे मुनिराजश्री के, होते आध्यात्मिक प्रवचन।
दश धर्मों का सार श्रवण कर, प्रमुदित होते श्रोतागण॥
सीधी-साफ-सरल भाषा में, श्रीमुनिवर के प्रवचन सुन।
आत्मसात् कर लेते श्रोता, पुनः-पुनः शब्दों को गुन॥ ३५॥

❋

शुद्धाहार-ध्यान-सामायिक, जैनागम संस्कार पठन।
फिर होता अपराह्न काल में, तत्त्वार्थ सूत्र मूल वाचन॥
तीन बजे मुनिराजश्री के, होते प्रवचन मंगलमय।
हो तल्लीन श्रवण करते सब, करते कठिन कर्म का क्षय॥ ३६॥

❋

तत्त्वार्थ सूत्र जैन आगम का, संस्कृत-सूत्री ग्रंथ प्रथम।
गागर में सागर लहराता, जैनागम प्रकाश मरम॥
कुन्दकुन्द के शिष्य प्रवर श्री उमास्वामि का ग्रंथ महान।
रत्नत्रयात्मक मोक्षमार्ग का, किया पूज्यश्री ने व्याख्यान॥ ३७॥

❋

दश अध्याय, तीन सौ त्रेपन, सूत्रों वर्णित तत्त्व-पदार्थ।
मुनिवर श्री आर्जवसागर ने, किया स्पष्ट सभी का अर्थ॥
''अबतक खूब सुने थे प्रवचन, लेकिन पल्ले पड़ा न कुछ।
पर कमाल आर्जवसागरजी, घोल पिलाया है सब कुछ''॥ ३८॥

❋

''यह तो रहा गगन-सा विस्तृत, गहरा है सागर जैसा।
अणु-सा सूक्ष्म, पवित्र ग्रंथ यह, हितकारी अमृत जैसा॥
जिसने पिया, जिया जीवन में, वह पा लेगा मुक्ति नगर।
तत्त्वार्थसूत्र के एक सूत्र में, भरे हुए हैं कई सागर''॥ ३९॥

❋

प्रतिक्रमण, गुरुभक्ति अनन्तर, कविता पाठ का क्रम आता।
भजन-आरती मंगल प्रवचन, सबको शिक्षा दे जाता॥
धार्मिक-साँस्कृतिक कार्यक्रमों का, होता सुन्दर आयोजन।
यही समाप्त होता दैनिक क्रम, करने जाते सभी शयन॥ ४०॥

❋

पर्वपर्यूषण दिवस अनन्तर, शोभायात्रा श्री जी की।
धूमधाम से, महाप्रभावक, नगर भ्रमण करने निकली॥
अश्वारोही सब से आगे, जिनशासन ध्वज फहराते।
मंगलवाद्य भक्तगण मिल कर, श्रीजिनवर के गुण गाते॥ ४१॥

❋

ध्वजा-पताका-तोरण द्वारों, से सज्जित था मार्ग सकल।
मंगलघट, अल्पनाओं की, शोभा दर्शनीय अविरल॥
तीनलोक के नाथ जिस किसी, द्वारे आज पधारे हैं।
मंगल दीप सजा प्रभु आगे, आरती खूब उतारे हैं॥ ४२॥

❋

''जैनं जयतु शासनं'' के सह,अखिल विश्व का हो कल्याण।
मंगलमयी भावना प्रेरित, रचा गया 'समवसरण' विधान॥
यह विधान अतिशयी प्रभावी, रोग-शोक हरने वाला।
सुख-सन्तोष-शांति पा जाता, भाव सहित करने वाला॥ ४३॥

❋

पाप-कषायें नश जाती हैं, होता मन में दया प्रसार।
जो जन 'समवसरण' में आकर, करते जयजिनेन्द्र उच्चार॥
श्रीमुनिवर की पावन सन्निधि, हुआ महत्तम आयोजन।
आत्मविशुद्धि-सह प्रभावना, फलश्रुति पायी सब जन॥ ४४॥

❋

यह विधान तो स्वयं प्रभावी, फिर गुरुवर सन्निधि-आशीष।
मंगलमूरत, धर्मप्रभावक, आर्जवसागर महामुनीश॥
सबके द्वारा अनुभव आया, समवसरण का महाप्रभाव।
बैर-विरोध रहा न किंचित् हर मन आये निर्मलभाव॥ ४५॥

❋

समवसरण की अद्‌भुत शोभा, सबके मन को भाती है।
द्वादश कोठों श्रोताओं की, पूर्ण झलक मिल जाती है॥
उच्चसिहांसन धर्म सभा में, मध्य विराजे तीर्थंकर।
मानो दिव्य ध्वनि खिरती है,जब करते प्रवचन मुनिवर॥ ४६ ॥

❋

चन्द्र कुमार 'चन्दर' ग्वालियर, रहे प्रतिष्ठाचार्य कुशल।
उनके दोष रहित निर्देशन, हुए कार्यक्रम पूर्ण सफल॥
सदाकाल मुनिवर की सन्निधि, प्राप्त रहा शुभ आशीर्वाद।
लेशमात्र भी आ नहीं पाये, विघ्न-विपत्ति या अवसाद॥ ४७॥

❋

अखिल भारती कवि सम्मेलन, दिवस-निशा सम्पन्न हुआ।
श्री मुनिवर की पावन सन्निधि, कविगण कविता पाठ किया॥
जैसे कि भोपाल ताल है, बड़ा देश के तालों में।
वैसे चन्द्रसेन जी कवि हैं, कविता करने वालों में॥ ४८॥

❋

चन्द्रसेन भोपाल पधारे, श्री डॉक्टर नरेन्द्र कुमार।
दोनों भ्राता राम-लखन से, करते हैं कविता सुकुमार॥
कैलाश ''तरल'' उज्जैन निवासी, जबल अहिंसा अजयकुमार।
दोनों ने कविता के माध्यम, छोड़ी धार्मिक शांति फुहार॥ ४९ ॥

❋

फूलचन्द जी 'योगिराज''-सह, झाँसी के कवि छोटे लाल।
मुनिवर आर्जवनिधि के चरणों, श्रद्धा सहित नमाया भाल॥
लालचन्द्र 'राकेश' ने रचा, श्रीमुनिवर पर काव्य महान।
उसमें आये कुछ पद्यों से, किया मुनीश्वर स्तुति-गान॥ ५०॥

❋

मध्यदेश के भक्तगणों ने, अति उत्तम शुभ भाव किया।
आर्जवनिधि पर रचे, काव्य को, छपवाने सहयोग दिया॥
लोग हजारों गुरुवर की यह, गाथा पढ़कर गायेंगे।
उनके गुरु सह संस्मरणों को, जीवन में अपनायेंगे॥ ५१॥

❋

जैसे प्यासा चातक रखता, स्वाति बूँद पीने की चाह।
वैसे श्रोता ताक रहे थे, मुनिवर के प्रवचन की राह॥
श्रीगुरुवर आर्जवसागरजी, दिया प्रथमतःशुभ आशीष।
फिर रसमय कविताओं द्वारा, किया लाभन्वित श्रीमुनीश॥ ५२॥

❋

जैसे मंदिर के बनने पर, होता है कलशारोहण।
वैसे पायी सभा पूर्णता, सुनकर गुरुवर के प्रवचन॥
श्रीमुनिवर की कविताओं में, बही शांतरस की धारा।
जिसमें डूबे श्रोताओं ने, तोड़ी पाप-तमस् कारा॥ ५३॥

❋

यह तो रहा दिवस का आलम, हुआ रात्रि फिर सम्मेलन।
रहा पूर्ववत् चन्द्रसेनजी, मनहर-उत्तम संचालन॥
समय-समय पर सकल रसों की, बरसी सुरमित काव्य फुआर।
सभा सुमण्डप रहा गुंजता, करतल ध्वनि से बारम्बार॥ ५४॥

❋

रहा सार्थक कवि सम्मेलन, सभी जैन, चारित्र धनी।
सब रचनाएँ धार्मिक, नैतिक, भक्तिभाव से पूर्ण सनी॥
कभी किसी ने पिया न पानी, जिनवाणी का दौर चला।
अर्धरात्रि तक अप्रमत्त रह, श्रोता सोता नहीं मिला॥ ५५॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, जहाँ-जहाँ भी रहा प्रवास।
वहाँ-वहाँ पर किया पूज्यश्री, ज्ञानदीप का परम प्रकाश॥
बतलाया सब विद्यालय मिल, किसको कितना आता है।
मात्र एक चावल के परखे, पूर्ण ज्ञान हो जाता है॥ ५६॥

❋

शाकाहार ही सर्वोत्तम है, श्री डॉक्टर अजित-सुधीर।
बतलाया सब छात्र-शिक्षकों, पियो सदा छानकर नीर॥
हरा-लाल सिंब्बल क्या होता, क्या है उसकी सच्चाई।
विद्वज्जन हर बात शोधयुत्, सम्मेलन में बतलाई॥ ५७॥

❋

नृत्य-गीत-नाटक के माध्यम, सबने अपनी बात कही।
गई सराही हर इक प्रस्तुति, हिन्दी-संस्कृत छात्र रखी॥
छोटे बालक जो कह जाते, बड़े न कहने पाते थे।
सुनकर बूढ़े मन मसोस कर, पछताते रह जाते थे॥ ५८॥

❋

अगर आज हम बालक होते, रोज पाठशाला जाते।
गुरुवर चरणों बैठ-बैठ कर, फल रत्नत्रय पा जाते॥
जीवन धन्य हमारा होता, करते संस्कृत स्तुति गान।
पी जाते भवनाशी अमृत, पढ़कर जिनसिद्धान्त-पुराण॥ ५९॥

❋

धर्मप्रभावक श्रीमुनिवर ने, सबको शुभ आशीष दिया।
सकल समाज पूर्ण श्रद्धा-सह, गुरु प्रवचन पीयूष पिया॥
ज्ञान दीप यह रहे प्रसारित, श्रीगुरुवर जयवंत रहें।
सभा अंत में सबने मिलकर, जयजिनेन्द्र के शब्द कहे॥ ६०॥

❋

नरेश भाई दिल्ली वाले व, सुरेश भाई, नवनीत जहाँ।
ओमप्रकाश, संजय गदिया सह, भाई राजा, कमलेश वहाँ॥
गुरुआशी, सेवा पाने को, चर्या, प्रवचन हेतु सभी।
पूरे सूरत से आते थे, नहीं भेद था कहीं कभी॥ ६१॥

❋

जो कुछ है कण्ठस्थ आपको, समझो वहीं आपका ज्ञान।
स्वयं हस्तगत है धन जिसके, होता है वह ही धनवान॥
इसीलिए गुरु आर्जवनिधिजी, कण्ठपाठ पर देते ध्यान।
गर कण्ठस्थ नहीं है विद्या, उसे न कह सकते विद्वान॥ ६२॥

❋

कंठ-पाठ प्रतियोगिता का, हुआ आयोजन चातुर्मास।
हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत भाषा, रहीं पाठ की माध्यम खास॥
तत्त्वार्थसूत्र-करण्ड-छहढाला, श्रीभक्तामर-इष्टोपदेश।
मेरी-बारह-गोम्मटेशथुदि, रहे आकर्षणकेन्द्र विशेष॥ ६३॥

❋

इससे लाभ मिले प्रतियोगी, कर्म-पापक्षय, ज्ञान विकास।
यह अमृत वे ही पी पाते, हो पुण्योदय जिनके पास॥
जिन्हें चाहिए आत्मिकशांति, सुख-सन्तोषमयी जीवन।
प्रतिदिन पान करें, जिनवाणी, भवविनाशिनी संजीवन॥ ६४॥

❋

कार्तिककृष्ण अमावस्या को, वीर प्रभु पाया निर्वाण।
लाडू किया समर्पित प्रातः, गुरुवर आर्जवनिधि सन्निधान॥
गौतमगणधर पूज्यश्री ने, सायं पाया केवलज्ञान।
दीप जलाकर बाहर-भीतर, गया मनाया पर्व महान॥ ६५॥

❋

दिवस आज ही श्रीमुनिवर ने, किया निष्ठापित चातुर्मास।
पढ़ी भक्तियाँ पूज्यश्री ने, तोड़े बाँधे बन्धन पाश॥
महाव्रती तो पूज्य अतिथि हैं, गमनागमन न पूर्व विचार।
रहा न बन्धन चातुर्मास का, अब कर सकते कभी विहार॥ ६६॥

❋

चातुर्मास स्थापना कलश, वितरित हुए आज के दिन।
मंगल वाद्य सहित पहुँचाये, प्राप्त हुए थे जिन सज्जन॥
प्रतिष्ठाचार्य महोदय द्वारा, किए विराजित गृह जाकर।
हर क्षण मंगल की वर्षा हो, शुभाशीष आर्जवसागर॥ ६७॥

❋

गर असंयमी देह बदलता, दीप बुझाये जाते हैं।
अगर संयमी देह त्यागता, दीप जलाये जाते हैं॥
अत:बन्धुवर! संयम पालो, पा-लो अरु भवोदधि छोर।
संयम बिना तिरा न कोई, संयम है शिवपुर की डोर॥ ६८॥

❋

जैन दिगम्बर पूज्य मुनीश्वर, पूर्णतया होते निर्ग्रंथ।
रखें न तिल-तुषमात्र परिग्रह, फिर भी रखे ज्ञानहित ग्रंथ॥
शौच उपकरण रखे कमण्डलु, दया पालने पिच्छिमयूर॥
रखें साथ में काल सर्वदा, करते नहीं पिच्छिका दूर॥ ६९॥

❋

मुनिवर मोर पिच्छिका मृदुत्तम, लघु अत्यंत, न चींटी मार।
करती ग्रहण न धूली-जलकण पूर्ण अहिंसामयी विचार॥
एक वर्ष जीर्णता पाती, करें नियम से परिवर्तन।
देते-लेते भव्य आत्मा, करने व्रत-संयम पालन॥ ७०॥

❁

अत: दिवस पच्चीस नवम्बर, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर-सह क्षुल्लक हर्षित प्रमुदित मन॥
रही होड़ लेने वालों में, जीर्ण पिच्छिका पावें हम।
नूतन पिच्छी देने में भी, था उत्साह रहा उत्तम॥ ७१॥

❁

पिच्छि ग्रहण के इच्छुक, भाई नरेन्द्र मेहता जी।
गांधी अरविन्द जैनी की भी, सेवा में तत्परता थी॥
प्रधान आहुरा समाज के वे, हर्षद्‌भाई मेहता थे।
गुरुभक्ति में लगे हुए जो, भूपेन्द्र भाई मेहता थे॥ ७२॥

❁

जिस गृह जीर्ण पिच्छिका जाती, हर क्षण देती 'व्रत' सन्देश।
रहती मौन, ग्रहणकर्त्ता को, याद दिलाती संयम वेश॥
घर को पावन, करते-रहते, पिच्छी के परमाणु प्रवर।
टँगी पिच्छिका समझा देती, यह तो रहा संयमी घर॥ ७३॥

❁

धर्मप्रभावक, ज्ञान दिवाकर, आर्जवसागर श्रीमुनीश।
धर्मसभा को सम्बोधित कर, दिया पूज्यश्री शुभ आशीष॥
मोरपिच्छिका के महत्त्व को, श्रीगुरुवर ने समझाया।
स्वत: त्यक्त मोर पंखों से, रूप पिच्छका ने पाया॥ ७४॥

❁

जैसे कोई चिन्ह या मुद्रा, शासन की रहती पहचान।
बिन मुद्रा आदेश राज्य का, पाता नहीं किसी का मान॥
तथा पिच्छिका जिनशासन की, रखती है विशिष्ट पहचान।
बिना पिच्छिका नग्न दिगम्बर, रूप न पाता गुरु का मान॥ ७५॥

❋

दया-अहिंसा-कोमलता की, शिक्षा देती पिच्छि मयूर।
सब जीवों को अभयदान दे, रहती है दुर्गुण से दूर॥
रजकण, जलकण ग्रहण न करती, रहे सदा गुरुत्त्व के साथ।
दिगम्बरत्त्व-सह देख पिच्छिका, झुक जाते देवों के माथ॥ ७६॥

❋

शांतिनाथ जिनमंदिर प्रांगण, भव्य सुशोभित मानस्तम्भ।
रवि-शशि-तारे करें आरती, मान करें मानी का भंग॥
अट्ठाइस नवम्बर शुभदिन, सन्निधान मुनिराज प्रवर।
सकल समाज की उपस्थिति में, हुआ आयोजन जगहितकर॥ ७७॥

❋

मानस्तम्भ अष्टप्रतिमाजी, हुआ महामस्तक अभिषेक।
अत्यानंदित हुये सकल जन, प्रथमबार आयोजन देख॥
रत्नादिक कलशों के द्वारा, इन्द्रों ने अभिषेक किया।
जो जितनाधिक ले सकता था, उसने उतना पुण्य लिया॥ ७८॥

❋

सबके मन उत्साह रहा अति, उत्सव अंत नहीं आया।
ऐसा हाथ बचा न कोई, न जिसने प्रभु को नहलाया॥
हर सूरत में सूरत के जन, चाह रहे करना अभिषेक।
एक कलश से तोष न पाते, चाहें ढारें कलश अनेक॥ ७९॥

❋

बावन फुट उत्तुंग सुशोभित, कल नक्कासी मानस्तम्भ।
तीर्थंकर श्रीशान्तिनाथ जिन, अठ प्रतिमाजी श्वेत सुरंग॥
जैनाजैन सभीजन आकर, प्रभु को शीश झुकाते हैं।
दर्शनकर श्रीशांतिनाथ के, शांतिसम्पदा पाते हैं॥ ८०॥

❋

परमपूज्य आध्यात्मिक योगी, धर्मप्रभावक श्रीमुनिराज।
आर्जवनिधि के मंगल प्रवचन, हुआ लाभान्वित सकल समाज॥
सभा अंत में शांतिनाथ की, जय से गूँजे धरा-गगन।
सदा काल ही रहे प्रशंसित, परमपूज्य मुनिवर प्रवचन॥ ८१॥

❋

बड़ी प्रभावना चातुर्मास व, पर्व दिनों की पुण्यभरी।
फ्री टिकिट सम्मेदशिखर को, जैनी जन ने रेल करी॥
सूरत वासी दिगम्बरों ने, इस यात्रा की ठानी थी।
चौदह सौ लोगों को गुरु की, कृपा बनी कल्याणी थी॥ ८२॥

❋

शुद्ध भोज सह, भजन व शिक्षण, कक्षा धर्म की सभी चली।
डिब्बे भले हि दिखें भिन्न थे, लेकिन अन्दर एक गली॥
मिलते-जुलते खाते-पीते, सभी भक्त इक साथ गये।
शाश्वततीर्थ वंदना कीनी, झुकते नमते माथ गये॥ ८३॥

❋

एक बार वंदे जो कोई, सम्मेदशिखर हि क्षेत्रमहान।
सिद्धों की हो भाव वंदना, तो हो जाता फिर कल्याण॥
ऐसी आतम नारक पशुगति, नहीं पाय इस जीवन में।
वह उनचास भवों के भीतर, शिव पाती मुनि जीवन में॥ ८४॥

❋

श्रेष्ठी जनों ने धन व्यय कीना, आर्जवनिधि आशीष लिया।
प्रवचन दे शाश्वत तीरथ का, महत्त्व जाहिर बड़ा किया॥
एक डोर तो तोड़े कोई, रस्से को न तोड़ सके।
सदा एकता में बल होता, एक रहे जो सौख्य चखे॥ ८५॥

❋

सम्मेद शिखरजी सदा शुद्धता, कायम हमको रखना है।
मधुवन के आगे गिरि पर, नहीं खरीदी करना है॥
अगर लोग वे खाद्य वस्तु को, गिरि पर जा मोल लेंगे।
जमघट होगा अन्य जनों का, हड़पगिरि हमसे लेंगे॥ ८६॥

❋

व्यसनी होंगे द्रव्य कमाने, अण्डा-मुर्गी पालेंगे।
कटेगा जंगल कुटियों कारज, नहीं मार्ग छाया देंगे॥
पैर जलेंगे तपी धूम में, फिकनिक जैसी बू होगी।
पाऊच, पैकिट पग-पग होंगे, बाटल की बदबू होगी॥ ८७॥

❋

आर्जवनिधि ने दिया सभी को, दृढ़ संकल्प यही जानों।
मधुवन से ही खाद्य वस्तुएँ, गिरि ले जायेंगे मानो॥
हाथ उठाकर भव्यों ने जब, अपना दृढ़ निश्चिय कीना।
दोनों कर ऊपर कर गुरु ने, निज आशीष तभी दीना॥ ८८॥

❋

मुनिवर श्री आर्जवसागर के, सकल कार्यक्रम चिंतन फल।
पहले ही निश्चित हो जाते, कौन कार्यक्रम होना कल॥
पावन वर्षावास काल पर, एक नजर क्रमशः डालें।
ज्ञान बहारों, भक्ति फुहारों, का समुचित परिचय पालें॥ ८९॥

❋

दैनिकचर्या के अन्तर्गत, ब्रह्ममुहूर्त्त उठें गुरुवर।
स्तोत्रपाठ करते हैं पूज्यवर, प्रतिक्रमण-सामायिक कर॥
प्रातः काल संघ मिलकर के, गुरुभक्ति में होता लीन।
शौचक्रिया जा, देववंदना, फिर हों प्रवचन नित्य नवीन॥ ९०॥

❋

प्रवचन का वैशिष्ट्य रहा यह, होता नहीं पिष्टपेषण।
सम-सामयिक विषयों, ऊपर, शोधपूर्ण होते प्रवचन।
बालक-युवा, अशिक्षित-शिक्षित, सबके लिए सुपाच्य रहें।
सरल, सरस, रुचिकर होने से, पूरी तरह सुवाच्य रहें॥ ९१॥

❋

धार्मिक कक्षा लगे अनन्तर, क्रम आता चर्या आहार।
दृश्य मनोहर पड़गाहन के, स्वामि नमोऽस्तु के उच्चार॥
नवधाभक्ति की विधि पूर्वक, गुरु करते आहार ग्रहण।
छयालीस दोष टालते गुरुवर, करने हेतु तपोवर्धन॥ ९२॥

❋

दिन में, एक बार ही केवल, मुनिवर लेते पाणि-आहार।
सात्विक, शुद्ध, सुकुल श्रावक गृह, स्थित, नीरस, समता धार॥
अन्तराय यदि आ जाता है, स्वीकृत करते प्रमुदित मन।
पूर्वोपार्जित दुष्कर्मों का, उचित सामयिक पूर्ण क्षरण॥ ९३॥

❋

फिर होती ईर्यापथ भक्ति, सामायिक तदनन्तर क्रम।
आत्मसरोवर भीतर डूबे, श्रीगुरुवर को पाने हम॥
पूज्यपाद की उत्तम रचना, सर्वार्थसिद्धि होता स्वाध्याय।
जिज्ञासा-सह-समाधान से, होती सम्यग्ज्ञानी आय॥ ९४॥

❋

प्रतिक्रमण, गुरुभक्ति अनन्तर, बालक पाते ज्ञान का राज।
बालबोध कक्षायें लेतीं, बहिनें व क्षुल्लक महाराज॥
बालक-युवा-वृद्ध नर-नारी, भजन-आरती गाते हैं।
ध्यानमग्न-चिन्तन के द्वारा, आतम में रम जाते हैं॥ ९५॥

❋

कालचक्र चलता ही रहता, लेता कभी विराम नहीं।
संत चरण न रुके एक थल, आज यहाँ कल और कहीं॥
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
मुनिवर श्री आर्जवसागर का, संघ सहित हो गया गमन॥ ९६॥

❋

आर्जवनिधि की प्रभावना लख, सूरत के उपनगरों की।
जनता चाहे कब आयेंगे, पद रज मिलेगी गुरुवर की॥
गुरुवर के शुभ विहार से वे, भटार वाले धन्य हुए।
अगवानी मुनि सेवा करके, प्रवचन सुने प्रसन्न हुए॥ ९७॥

❋

पाठशाला हुई प्रारम्भ जहाँ पर, जिज्ञासायें पूरी हुईं।
गुरु चरणों में पड़ने से गृह-गलियाँ भी धन्य हुईं॥
प्वाइंट पार्ले वालों ने भी, ऐसा लाभ उठाया था।
इसी तरह का लाभ हि माडल-टाउन ने भी पाया था॥ ९८॥

❋

सर्व जिनालय दर्शन करके, महुआ जी के दर्श हुए।
पार्श्वनाथ का दर्शन करके, नयन, हृदय में हर्ष हुए॥
बालू पत्थर की मूरत है, चमक रहा कण-कण जान।
वीतरागता टपक रही है, आकर्षण की छवि महान॥ ९९॥

❋

मढ़ी गाँव में विधान पूजा, सभागार का लोकार्पण।
हुआ, मुनीश्वर क्रमशः पहुँचे, पावागढ़ करने दर्शन॥
लव-कुश आदिक मुनीश्वरों ने, पाया था निर्वाण विशेष।
सप्तजिनालय पर्वत ऊपर, राजे जिनमें पूज्य जिनेश॥ १००॥

❋

सूरत वाले बस भर-भरकर, आये थे दर्शन लेने।
मेरे गुरुवर कहाँ मिलेंगे, दक्षिणा आये हम देने॥
कोई नियम अब बाकी हो तो, मुझे बता दें प्रवचन में।
जहाँ जाओंगे हम आयेंगे, आशीष लेने जीवन में॥ १०१॥

❋

प्रवचन सुनकर आर्जवनिधि के, क्षेत्र व गिरि की वंदन की।
लव-कुश मुनियों की गाथा सुन, संकल्पित हो शिक्षा ली॥
हुआ हि मंगल विहार गुरु का, दाहोद होकर इंदौर।
सूरत वाले रहे समर्पित, साथ चले गुरु मिलें न और॥ १०२॥

एकविंशति-सोपान

मुनिश्री आर्जवसागर का व्यक्तित्त्व

1. विशेषताओं के सागर।
2. व्यक्तित्त्व के दो पक्ष।
3. बाह्य व्यक्तित्त्व।

   (अ) बाल्यरूप

   (ब) कौमार्य काल।

   (स) ब्रह्मचर्यव्रती।
4. कलियुग में महाव्रती होना एक आश्चर्य।
5. मुनिश्री का बाह्य व्यक्तित्त्व।
6. मुनिश्री का अंतरंग व्यक्तित्त्व।
7. मुनिश्री के अंतरंग व्यक्तित्त्व की एकशतअष्टोतर विशेषताएँ।
8. मंगल मूरत-मंगल सूरत-मंगलधाम मुनिश्री
9. वैयावृत्ति परक साधु।
10. सदा जीवन-उच्चविचार के आदर्श।

एकविशंति-सोपान

आध्यात्मिक संत मुनिश्री आर्जवसागर का व्यक्तित्त्व

गुरुवर श्री आर्जवसागर का, चतुर्मुखी व्यक्तित्त्व महान।
चन्द्रोपम मुख मंडल ऊपर, क्रीड़ा करती मधु मुस्कान॥
ह्रदय सरल, मक्खन-सा मुदुतम, दयामूर्ति, करुणा अवतार।
वह थल तीरथ बन जाता है, मुनिवर करते जहाँ विहार॥ १॥

❁

मिलनसार है प्रकृति पूज्यवर, निश्च्छल, निर्मल, शुचि व्यवहार।
अनेकान्त, आगम से सम्मत, रखते हैं निष्पक्ष विचार॥
भावपूर्ण मुद्रा से देते, सकल जगत को शुभ आशीष।
जो आता सम्पर्क आपके, नत करता गुरु चरणों शीश॥ २॥

❁

व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व पूज्यश्री, महिमामंडित, शब्दातीत।
सूरज बनकर चमक रहे हैं, गुरु अध्यात्म गगन के बीच॥
विकसित मानव में संभावित, हो सकती है जो ऊँचाई।
उसकी गणधर जैसी गुरुता, भक्तों ने तुम में पायी॥ ३॥

❁

जहाँ चरण पड़ते गुरुवर के, हो जाता है तीर्थ महान।
धर्मरूप जल से जनजीवन, हो जाता रसमय गुणवान॥
धर्मसाधना के सुमनों से, भर जाता जीवन उद्यान।
बहुत क्या कहें, सन्त समागम-पहुँचा देता शिवपुर थान॥ ४॥

❁

पृथ्वी जैसी क्षमाशीलता, निर्मलता जैसी आकाश।
चन्द्र सदृश शीतल स्वभाव है, सुन्दर सम्यग्ज्ञान प्रकाश॥
उच्चादर्श हिमालय जैसे, जलनिधि-सी गहराई है।
इस कारण आर्जवनिधि ने, संत श्रेष्ठता पाई है॥ ५॥

❋

सागर कहाँ, कहाँ मैं बालक, बिना शक्ति का किये विचार।
कूद पड़ा स्तुति सागर में, श्रद्धा की लेकर पतवार॥
जिसने ज्वार दिया सागर को, वह ही पार लगायेगा।
कुछ भी हो 'राकेश' न अब तो, पीछे कदम हटायेगा॥ ६॥

❋

सकल गुणों के सम्मिश्रण का, नाम कहाता है व्यक्तित्त्व।
बाहर-भीतर सब पक्षों के, उसमें रहे समाहित तत्त्व॥
लेकिन मुझ में शक्ति नहीं है, सबका सब कुछ कह पाना।
कहे लेखनी रहा असंभव, गुरु गुण गरिमा लिख पाना॥ ७॥

❋

सर्व प्रथम हम श्रीमुनिवर के, बाह्य पक्ष का करें बखान।
जिसे देखकर के अंतर का, होजाता है सद्यनुमान।
प्रथम दृष्टि पड़ती मुनिवर पर, हो जाते हैं धन्य नमन।
उतरा देव धरा पर कोई, पाया गुरुवर रूप नयन॥ ८॥

❋

देख मुनीश्वर वर्तमान को, बचपन का होता अनुमान।
कुछ शब्दों में अंकित करते, बाँकी झाँकी करके ज्ञान॥
वैसे तो हर बालरूप में, सुन्दरता का होता वास।
पर, नर तन की बात और है, मिलता नहीं और के पास॥ ९॥

❋

गौर वर्ण, पुष्ट तन बालक, अंग-अंग सौन्दर्य निधान।
कमलोपम मुख-नयन, नासिका, पाती है चम्पक उपमान॥
कर-पग-कंज सदृश अतिकोमल, तल नव पल्लव से छविधाम।
लगता ऐसे जैसे आया, सुन्दर बालरूप धर काम॥ १०॥

झलक रहा है मुख मंडल पर, एक अलौकिक दिव्य प्रकाश।
मुख की सुन्दरता में होता, बाल सुधाकर का आभास॥
आँखे नीलकमल-सी सुन्दर, छोटी-सी अलकें मृदुतम।
अंग-अंग से फूट रही है, सुन्दरता-शोभा अनुपम॥ ११॥

आगे बढ़े कुमार हुए जब, फूटे अंग-अंग से तेज।
मानो विधि ने सुन्दरता को, इनके तन में रखा सहेज॥
जैसे सूरत की आभा से, हो सबको पूर्वानुमान।
ब्रह्मतेज को ''पारस'' तन में, ब्रह्मतेज से रक्षित जान॥ १२॥

तपः पूत संयम से शोभित, मुख छवि बनी दिव्यता धाम।
भव-तन-भोग-विरागी मन है, वाणी मीठी, शब्द ललाम॥
गौर वर्ण, गुरुभक्त समर्पित, सुन्दर शुभ्र वसन धारी।
सबका मन आकर्षित करते, 'पारस' बाल ब्रह्मचारी॥ १३॥

ब्रह्मचारी-क्षुल्लक फिर ऐलक, क्रम-क्रम से सोपान चढ़े।
प्राप्त सफलता वे ही करते, जिनके क्रमशः कदम बढ़े॥
सोनागिरि मुनि-दीक्षा धारी, मन में आया अतिशय हर्ष।
कलियुग में मुनि दीक्षा लेना, भाव विशुद्धि अति उत्कर्ष॥ १४॥

मन को विस्मित करने वाले, दुनिया में आश्चर्य अनेक।
उनमें पंचमहाव्रत धारण, अद्भुत अचरज नम्बर एक॥
सूरज ही ला सकता केवल, भू-पर सुखकर स्वर्ण प्रभात।
वैसे जैन मुनीश्वर होना, नहिं सबके बूते की बात॥ १५॥

❋

इस कलियुग में जहाँ नहीं है, नैतिकता का नाम निशान।
शाकाहारी, शुद्ध सात्विक, मिलता दुर्लभ भोजन-पान॥
वातावरण विसंगतियों से, दूषित-विद्रपित सब ओर।
हिंसा-झूठ-कुशील-परिग्रह, ताण्डव करते चारों ओर॥ १६॥

❋

प्रेम और भाईचारे का, हुआ विलोपित सद् व्यवहार।
हृदयहीन, शून्य संवेदन, लिप्सा-स्वार्थवृत्ति-अनुदार॥
ऐसे में जिनमुद्रा धारण, सिंहवृत्ति-समता-रसपान।
ज्ञान-ध्यान-तप-आत्मलीनता, है अतिशय आश्चर्य महान॥ १७॥

❋

आचार्यश्री विद्यासागरजी, आश्यर्चों आश्चर्य महान।
मुनिवर आर्जवसागर उनके, उत्तम शिष्यों की पहचान॥
विंशति पंचवर्ष से मुनिवर, पाल रहे चर्या अम्लान।
की आपने भ्रमित जगत को, नैतिकता की दृष्टि प्रदान॥ १८॥

❋

देहयष्टि मुनिवर की ऐसी, ज्यों संगमरमरी मूरत।
अंग-अंग आदेय सुग है, आश्चर्य मनहर सूरत॥
सुन्दर-सम चतुरस्र-प्रभावक, नामकर्म शुभ उत्तमसृष्टि।
बाह्यरूप लख भक्तजनों की, झुक जाती श्रद्धा दृष्टि॥ १९॥

❋

उन्नत भालपट्ट मुनिवर का, भाग्योदय का रहा प्रतीक।
धन्वाकृति भौहों को लखकर, निकट न आती काम अनीक॥
करुणावरसी नयन हैं करते, प्राणिमात्र को अभयप्रदान।
वात्सल्य निरझरिणी बहती, संत हृदय अतिशय अम्लान॥ २०॥

❁

नासा-अग्र टिकी मुनि दृष्टि, करती आशा का वर्जन।
वीतराग छवि भेदज्ञान का, करती है प्रत्यक्ष कथन॥
धर्म अहिंसा ही सर्वोत्तम, युगल अधर मिल करें बखान।
जन्म-मरण नष्ट करता है, जिनवाणी का अमृत-पान॥ २१॥

❁

अहो! दिगम्बर जैन संत तो, देह सजाते नहीं कभी ।
मंजन-न्हवन-तेल का मर्दन, तिलक लगाते नहीं कभी॥
किन्तु नाम ने मुनिश्री माथे, तिलक प्राकृतिक लगा दिया।
विजयी होंगे मोक्षमार्ग में, मानों यह उद्घोष किया॥ २२॥

❁

कायोत्सर्ग करें जब मुनिवर, अप्रमत्त रह खड्गासन।
दिव्य, अलौकिक, वीताराग छवि, के होते अनुपम दर्शन॥
लेश न अम्बर, परम दिगम्बर, समता क्षमता का साम्राज्य।
हुए आपके पावन दर्शन, सचमुच धन्यभाग्य हम आज॥ २३॥

❁

श्रीमुनिवर का चित्तप्रभावक, अपलक नयन निहारे मन।
नीरस-शुष्क-उदास हृदय भी, पाजाते हैं संजीवन॥
मुखचन्द्र से छलक चाँदनी, आलोकित करती वातास।
मुक्तकंठ की हँसी बताती, अंतस् में निर्मलता वास॥ २४॥

❁

गुरुवर चित्त प्रभावक अतिशय, फिर गुरुवर कैसे होंगे।
कब, कैसे सौभाग्य मिलेगा, गुरुवर के दर्शन होंगे॥
पुण्यवान ही पा सकते हैं, सच्चे गुरु की चरण-शरण।
बिना गुरु के नहिं मिट सकता, जग जीवों का भव भ्रमण॥ २५॥

❋

अंतरंग व्यक्तित्त्व मुनिश्री, मन-वच-तन ऋजुता का वास।
सम्यग्दर्शन की विशुद्धता, मोक्षमार्ग अनवरत प्रयास॥
भव-तन-भोग विरागी मन में, प्राणिमात्र प्रति मैत्रीभाव।
समता-क्षमता के नन्दनवन, राग-द्वेष-मद मोह अभाव॥ २६॥

❋

परम पूज्य मुनिराजश्री के, मुख पर खेले मधु मुस्कान।
अन्तस् की आनन्द सम्पदा, का होता उससे अनुमान॥
जबतक हो आनन्द न भीतर, बाहर कैसे आयेगा।
जल से रितु कलश का पानी, क्या बाहर आ पायेगा॥ २७॥

❋

चन्द्रोज्ज्वल मुखमंडल राजित, शोभा का जो अनुपम ज्वार।
आँखें बंद करें या खोलें, तृप्ति न होती किसी प्रकार॥
मुनिवर का व्यक्तित्त्व अनन्वय, बाहर-भीतर एक समान।
जितना सुन्दर बाह्य रूप है, उतना उज्ज्वल भीतर जान॥ २८॥

❋

कविता-सा व्यक्तित्त्व मनोरम, महाकाव्य-सा जीवन है।
ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग-निस्पृहा, से अंतस् शुचि-पावन है॥
चरण हैं मंगल शरण, भव्यजन-कर आलम्ब दुखी दुखहार।
मुख से सदा प्रवाहित होती, जिनवाणी-गंगा सुखकार॥ २९॥

❋

जैसा नाम आपका मुनिवर, वैसे ही हो आप सरल।
बाहर-भीतर लहराता है, ऋजुता का सागर अविरल॥
कोई अंत न पा सकता है, ऐसे आप है संत महान।
वात्सल्य-स्नेही, निर्झर, संत रहता है गतिमान॥ ३०॥

❁

मुनिवर के व्यक्तित्त्व उदधि में, रहें समाहित रूप अनेक।
गुरु-यति-साधु-ऋषी-दिगम्बर, योगी भिक्षु-श्रमण विवेक॥
ज्ञानी-ध्यानी-तपी-संयमी, महाव्रती-निर्ग्रंथ-गुणी।
सरल-स्वभावी-वत्सलमूरत, तत्त्व सुचिंतक-महामुनि॥ ३१॥

❁

आत्माराधक-लोकोद्धारक, रत्नत्रय के मंगल धाम।
जिनवर धर्म प्रभावक, साधक, शिवमुखमार्गी, जगत अकाम॥
समताधारी, समताकारी, करुणासागर महाकवि।
अक्ष विजेता, शुधउपयोगी, सौम्यमूर्ति सुज्ञान रवि॥ ३२॥

❁

विषयातीत-अहिंसामूरत, रहित परिग्रहारंभ यती।
सत्भाषी-गंभीर स्वभावी, आवश्यक रत, महाव्रती॥
करपात्री-पदयात्री-साधु, एकाहारी, हृदय उदार।
विनयी शिष्य, अतिथि, जगशोभा, क्षमामूर्ति, प्रवचन हितकार॥ ३३॥

❁

परिषह-सह, उपसर्गविजेता, सत्पथदर्शन, सुजन, मती।
सिंहवृत्ति-आगम पथ-गामी, पापभीरु-स्वाधीनमती॥
मंगलकारी संतविरागी, पर उपकारी मनोजयी।
गुरुगामी-जिनवाणी-गायक, जगद्वंद्यअविपाकक्षयी॥ ३४॥

❁

रहें अभीक्ष्णज्ञान योगरत, मोक्षभिलाषी, सद्उपदेश।
धर्मप्रभावक-शिष्य सुपालक, धारें यथाजात शुचिवेश॥
आध्यात्मिक-क्षेमंकर साधु, सृष्टा हैं उत्तम साहित्य।
बालब्रह्मचारी-मनोज्ञमुनि, तेजप्रकाशित ज्यों आदित्य॥ ३५॥

❋

चलते-फिरते तीर्थ आप हैं, जंगल में मंगल करते।
परम सहिष्णु-धार्मिक नेता, समता-धैर्य सदा धरते॥
मुनिपद के आदर्श आप हैं, मन-मुख रहे प्रसन्न सदा।
वचनामृत देते हैं सबको, कटुक वचन नहिं कहें कदा॥ ३६॥

❋

शिवतरणी के कर्णधार हैं, दु:ख हर्त्ता, भवतारक हैं।
समकित धारी, निस्पृह साधु, संवेगी, सुखकारक हैं॥
श्रीजिनवर की फोटो कॉपी, शीलरत्नमंजर महान।
धर्म अहिंसा के उद्घोषक, भवदधि तारकहित जलयान॥ ३७॥

❋

करुणाकलित हृदय हैं मुनिवर, प्राणिमात्र के हितकारी।
अभयप्रदायी, चर्यापालक, शुभाशीष मंगलकारी॥
अष्टाविंशति मूलगुणों को, निरतिचार करते पालन।
मंगलमूरत रहें विराजे, गुरुवर सदा हमारे मन॥ ३८॥

❋

मुनिवर का व्यक्तित्त्व अनोखा, रहा जादुई सम्मोहन।
ज्ञान-साधना-त्याग-तपस्या, अधिक बनाते मनमोहन॥
शान्त-सौम्य मुद्रा को लखकर, दर्शक होता पाप गमन।
मिल जाये सान्निध्य अगर तो, प्राणी करते पाप वमन॥ ३९॥

❋

प्रणिमात्र कल्याण कामना, मुनिवर वाणी रही प्रसूत।
हुई प्रवादित रचनाओं में, बनकर धर्म अहिंसा दूत॥
मौलिकता सर्वत्र सुशोभित, नहीं पिष्टपेषण का काम।
तलस्पर्शी ज्ञान आपका, ज्ञानदेवता तुम्हें प्रणाम॥ ४०॥

❋

हो दृढ़ता वैराग्य भाव में, हो संयम निर्मल-निर्दोष।
धर्मध्यान नित वृद्धिंगत हो, अक्षय बने ज्ञान का कोष॥
केवलज्ञान प्राप्त करने में, है समर्थकारण स्वाध्याय।
इति अभीक्ष्ण ज्ञान-भोगरत, रहते मुनिवर मन-वच-काय॥ ४१॥

❋

साधुश्री आर्जवसागरजी, वैयावृत्ति रहे तत्पर।
दिव-रात्रि का भेद न करते, बाधा हर लेते सत्वर॥
विद्याकाल में अगर किसी को, आये काँटों की बाधा।
आर्जवनिधि का दिल दुख जाता, घायलसाधक से ज्यादा॥ ४२॥

❋

निकट पहुँच करके साधक को, सम-सन्तोष पिला देते।
मीठी वाणी मन बहलाने, काँटा झट निकाल देते॥
क्षण आता विश्राम काल का, खुद विश्राम नहीं करते।
पीड़ित-दुखित-रुग्ण-साधुकी, वैयावृत्ति किया करते॥ ४३॥

❋

रात्रिकाल यदि पीड़ा होती, क्षण भर देर नहीं करते।
जुट जाते हैं परिचर्या में, घण्टों वहीं लगे रहते॥
जब तक पीड़ा दूर न होती, रुकते नहिं आर्जवसागर।
पूरी रीती कर देते हैं, अर्पण, वत्सल की गागर॥ ४४॥

❋

वैयावृत्त मोक्ष का साधन, वात्सल्य का सूत्रप्रथम।
मैत्रीभाव-समर्पण-सेवा, रोग-हरण औषध उत्तम॥
मन-वच-काय सम्हाल आपकी, करें संघ की वैयावृत्त्य।
गुणी-सुपात्र की सेवा करके, हो जाते मुनिवर कृतकृत्य॥ ४५॥

❋

गर कोई निर्बल साधु हो, उसके बल बन जाते हैं।
करें सहायता साथ में जा, चर्या-आहार कराते हैं॥
हर साधक के पास में जाकर, लेते उनकी खोज-खबर।
कोई छूट न पाना, रहते-सेवा में सबकी में तत्पर॥ ४६॥

❋

हृदय आपका मक्खन जैसा, पीड़ा देख पिघल जाता।
तन तो रहा बर्फ का टुकड़ा, पर सेवा में लग जाता॥
वचन आपके मधुर-रसीले, करते प्रमुदित सबका मन।
प्रकृति तीर्थंकर बन्ध हेतु यह, सम्यक् वैयावृत्त्य करण॥ ४७॥

❋

हर प्रकार सेवा-सुश्रूषा, करते हैं अपने कर से।
धन्य-धन्य आर्जवसागरजी, कहते सभी एक स्वर से॥
क्षमता-मृदुता-ऋजुता-शुचिता, के संगम थल हैं मुनिराज।
हार्दिक साधुवाद देती है, तुमको मिलकर साधु समाज॥ ४८॥

❋

मन-वच-काय ऋजुता जो, मूर्तिमान अवतारी हैं।
मंगलमूरत, मंगलसूरत, सन्तत मंगलकारी हैं॥
मंगलवास किया आकर के, श्रीगुरुवर के चरणकमल।
इसीलिए श्रीगुरुवर दर्शन, करता है सबका मंगल॥ ४९॥

❋

निश्चित ही उनके जीवन में, शतधा मंगल आते हैं।
जो मुनिवर के चरण कमल में, श्रद्धाशीश झुकाते हैं॥
श्रीगुरुवर आशीष प्रबल है, अशुभ कर्म का करता नाश।
सकल सफलताएँ जीवन में, आकर करती सदा निवास॥ ५०॥

❋

जो जन गुरु के चरण कमल में, बैठ तत्त्व चिन्तन करते।
चंचल मन को भक्ति डोर से, बाँध सुदृढ़वश में करते॥
भौंरे जैसा गुण सुगन्ध का, लोभी हो करता गुणगान।
निश्चित उनके अशुभ दिनों का, अचिरकाल होता अवसान॥ ५१ ॥

❋

गुरुवर का व्यक्तित्त्व अनोखा, चुम्बकीय वैशिष्ट्य लिए।
वात्सल्य सरिता अवगाहन, भविजन करते खिंचे हुए॥
एक बार गुरु चरणों आकर, वापस लौट न पाते हैं।
भक्ति डोर में बँधे हुए वे, गुरुवर के हो जाते हैं॥ ५२ ॥

❋

ताम-झाम से दूर मुनीश्वर, सादा जीवन उच्च-विचार।
होते कार्यक्रम आयोजित, पूर्ण सुचिंतित विधि अनुसार॥
व्यर्थ दिखावा, अर्थव्यवस्था, रात्रिजागरण असदाचार।
कभी नहीं आयें जीवन में, जिनवाणी माँ के दरबार॥ ५३ ॥

❋

मुनिवर श्री आर्जवसागरजी, ज्ञान-योगरत रहते हैं।
भव-तन-भोग-विरक्त तपस्वी, संयम पालन करते हैं॥
आगम का अवगाहन करके, लाते हैं जो तत्त्वरतन।
भव्यों को वितरित कर उनका, करते विशुद्ध सम्यग्दर्शन॥ ५४॥

❋

रत रहते स्वाध्याय निरन्तर, करें समय का सद्उपयोग।
आचार्य प्रणीत आर्ष ग्रन्थों में, मुनिवर करते उद्योग॥
आप तरें औरों को तारें, स्वाध्याय तरणी द्वारा।
नाश हेतु उद्यत रहते हैं, मिथ्या-मोह तमस्कारा॥ ५५॥

❋

सैद्धान्तिक ग्रन्थों का अध्ययन, करें मुनीश्वर दृढ़ अवगाह।
तृप्ति नहीं, अनुभव करते हैं, और-और पढ़ने की चाह॥
मुनिवर कहते शतक पढ़ो मत, पढ़ो एक को सौ-सौ बार।
पुनः-पुनः मंथन करने पर, मक्खन मिलता है हर बार॥ ५६॥

❋

बालरूप गोपालों में भी, प्रतिभा होती बड़ों समान।
पर, उनको वात्सल्य चाहिए, हो अवसर भी उन्हें प्रदान॥
गुरु उनको प्रोत्साहन देते, रचना करने, कहने को।
देते हैं आशीष हृदय से, आगे-आगे बढ़ने को॥ ५७॥

❋

मुनिवर श्री आर्जवसागरजी, उत्तम लेखक प्रवचनकार।
काव्यविद्या रुचिवंत श्री का, रखते हैं पूरा अधिकार॥
जैन कवि सम्मेलन होते, कवि लोकल, बाहर के हों।
सबको समुचित अवसर मिलता, बाल-युवा या बूढ़ा हो॥ ५८॥

❋

सम्मेलन होता है दिन में, मुनिवर सन्निधि पूरे काल।
जैन विषय, कविगण सुविचारी, प्रस्तुति सुन्दर सभा विशाल॥
बार-बार जनता कृत आग्रह, मुनिवर कविता पाठ करें।
मानो स्वर्ण शिखर मंदिर पर, मणि से निर्मित कलश धरें॥ ५९॥

❋

कभी पाठशाला, अधिवेशन, कवि सम्मेलन, कभी विधान।
विद्वद्गोष्ठी, शिविर प्रशिक्षण, पंचकल्याणक अनुष्ठान।
पावन सन्निधि श्रीमुनिवर की, रहता हार्दिक आशीर्वाद।
कार्य सफल होते गरिमामय, अतिशय धर्मप्रभावना साथ॥ ६०॥

द्वाविशंति-सोपान

मुनिश्री का व्यक्तित्त्वः सृजित साहित्य एवं धार्मिक अनुष्ठान का सन्निधान।

१.	धर्म भावना शतक-	१९९१
२.	जैनागम संस्कार-	१९९४ (हिंदी-तमिल, कन्नड-मराठी)
३.	तीर्थोदय काव्य-	१९९७
४.	मोक्ष तरु दसधर्म-	१९९७ (तमिल)
५.	त्रिंशत् कविता संग्रह-	१९९७ (तमिल में भी)
६.	चौबीस ठाणा-	१९९९ (तमिल में)
७.	परमार्थ साधना-	२००४ (प्रवचन संग्रह भोपाल)
८.	नेक जीवन-	२००४ (भोपाल)
९.	बचपन का संस्कार-	२००४ (प्रवचन संग्रह-पारोला)
१०.	पर्यूषण पीयूष-	२००५ (अशोक नगर प्रवचन)
११.	जैन धर्म में कर्म व्यवस्था-	२००६ (प्रवचन)
१२.	वारसाणुवेक्खा एवं इष्टोपदेश पद्यानुवाद-	२००७ (सतना, अमरपाटन)
१३.	सम्यक् ध्यान शतक-	२००८ (ग्वालियर)
१४.	आर्जव वाणी-	२००६
१५.	आर्जव कविताएँ-	(तमिल में भी)
१६.	आर्जव कविताएँ-	(हिन्दी में भी)

१७.	जीवन संस्कार–	२०११
१८.	गोम्मटेशथुदि–	हिन्दी पद्यानुवाद
१९.	आर्जववाणी	(सूक्तियों से संग्रहीत)

२०. ''भाव विज्ञान'' त्रैमासिक पत्रिका शुभाशीष प्रकाशित साहित्य साधना अनवरत गतिमान है।

२१. व्यावहारिक धार्मिक कार्यों में आशीष एवं सान्निध्य

१. पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव–	२५
२. पूजा–विधान–	२१
३. वेदी प्रतिष्ठाएं–	
४. संस्कार शिविर–	१८
५. विद्वत्गोष्ठियाँ–	३
६. अहिंसा शाकाहार सम्मेलन–	५
७. डॉक्टर्स सम्मेलन–	५

२२.	तीर्थ वन्दना आदि हेतु विहार–	१३ प्रान्त
२३.	चेतनकृतियों का वर्णन	२३

द्वाविशंति-सोपान

मुनिश्री का कृतित्त्वः साहित्य-सपर्या एवं सन्निधान व अनुवाद (सैद्धान्तिक ग्रन्थ, महाकाव्य, कविताएँ, शतक, प्रवचन, प्रवचनांश इत्यादि)

श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, विस्तृत है रचना संसार।
गद्य-पद्य-कविता-प्रश्नोत्तर, प्रवचन आदिक विविध प्रकार॥
बन्धु! नहीं संख्या को देखें, गुणवत्ता का रक्खे ध्यान।
है उत्तम साहित्य मुनीश्वर, काव्य आत्मा रस, गुणवान॥ १॥

❁

जैसे एक वाटिका भीतर, कई क्यारियाँ होती हैं।
सुन्दर बहुरंगी पुष्पों से, अतिशय शोभित होती हैं॥
वैसे ही मुनिराजश्री की, साहित्य-वाटिका अति मनहार।
कविता-प्रवचन-लेख आदि के, सुमन खिले हैं विविध प्रकार॥ २॥

❁

श्रीमुनिवर आर्जवसागर की, ''धर्मभावना शतक'' कृति।
दशलक्षण धर्मों का वर्णन, हुआ है इसमें सुष्ठु अति॥
किसने इससे लाभ उठाया, किसका इन बिन बिगड़ा काज।
भाषा सरल, सरस शैली में, सम्यक् बतलाया मुनिराज॥ ३॥

❁

रचना का वैशिष्ट्य अनन्वय, पद्यबद्ध मनहारी है।
पौराणिक उद्धरणों द्वारा, महक रही फुलवारी है॥
इसमें फिर अंतस् की शुचिता, मुनिवर ने मिश्री घोली।
जिसने इसको हृदय उतारा, उसने कर्म कीट धोली॥ ४॥

❁

कोपरगाँव के चतुर्मास में, मुनिश्री ने यह रचना की।
दशधर्मों की पूज्यश्री ने, अतिसुन्दर अभिव्यक्ति दी।
मुनिवर की स्मृति आती जब, पर्व पर्यूषण आता है।
सब समाज ऋषिवर चरणों में, विनयांजलि चढ़ाता है॥ ५॥

❋

''जैनागम-संस्कार'' आपकी, उत्तम रचना जग हितकार।
प्रश्नोत्तर शैली में वर्णित, सरलतया जैनागम सार॥
जिनके मन में लगन लगी हो, ज्ञानप्राप्ति-सह शुद्ध विचार।
उन्हें चाहिए उक्त ग्रन्थ की, करें वाचना बारम्बार॥ ६॥

❋

मानव जीवन एक चित्र है, संस्कार हैं रंग समान।
संस्कारित जीवन ही जग में, पाता है हर पल सम्मान॥
श्रीमुनिवर का ग्रंथ रत्न यह, संस्कारों का है भंडार।
आत्महितैषी सज्जन इसकी, करें वाचना बारम्बार॥ ७॥

❋

कर्नाटक में ''दावणगेरे'', नामक एक नगर है खास।
सन् चौरानवै इसी नगर में, हुआ मुनिश्री चातुर्मास॥
धर्म-सभा में भव्य जनों ने, रखे प्रश्न जो आद्योपान्त।
आगम सम्मत उत्तर देकर, मुनिवर की जिज्ञासा शान्त॥ ८॥

❋

उन्हीं प्रश्न-उत्तर को मुनिवर, बद्धक्रम लिपिबद्ध किया।
''जैनागम-संस्कार'' नाम का, एक ग्रन्थ तैयार हुआ॥
''जैनागम-संस्कार-शिविर भी, किया गया इसका उपयोग।
हुए और आगे भी होंगे, लाभान्वित रचना से लोग॥ ९॥

❋

बरगद वृक्ष न अल्पकाल में, होता है बढ़कर तैयार।
उसे चाहिए वर्षों का श्रम, तब होता छाया-फलदार॥
विहार काल भी अतिश्रम करके मुनिश्री ग्रंथ किया तैयार।
श्रीमुनिवर के चरणकमल में, नमन हमारा बारम्बार॥ १०॥

❋

शिक्षण-शिविर, पाठशाला-सह, श्रावक-साधु-श्राविकाएँ।
करें अगर स्वाध्याय निरन्तर, सम्यक्ज्ञान लाभ पायें॥
भाषा सरल, मनोहर शैली, पाठ्यवस्तु जीवन सुखकार।
यह रचना कर, श्रीमुनिवर ने, किया जगत् अतिशय उपकार॥ ११ ॥

❋

जैनागम-संस्कार नाम का, यह इक केवल ग्रंथ नहीं।
अपितु समग्र जैन आगम का, मिलता रस एकत्र यहीं॥
बहुगुण मंडितरत्न अपरिमित, भरे एक विंशति अध्याय।
जो हित चाहे बन्धु! स्वयं का, इसका करो सतत स्वाध्याय॥ १२ ॥

❋

महामंत्र-तीर्थंकर दर्शन, पूजा विधि-जैनी पहचान।
रत्नत्रय-षड्द्रव्य-तत्त्वसत्, तीनलोक, दर्शनविधि ज्ञान॥
नवधाभक्ति, मरणसमाधि, कर्म-पर्व-गुणथान विचार।
उपयोग त्रय-अनेकान्त-व्रत, नैतिकता-श्रावक आचार॥ १३ ॥

❋

रचना प्रथम हुई हिन्दी में, हुई प्रकाशित ''तमिल'' प्रथम।
तदनन्तर हिन्दी-कन्नड में आया ग्रंथ प्रकाशन क्रम॥
हुआ मराठी गुजराती में शीघ्र प्रकाशन तत्परता।
होती ज्ञात इसी से इसकी, उपयोगी-लोकप्रियता॥ १४॥

❋

मुनिवर श्रीआर्जवसागर का, है ''तीर्थोदय-काव्य'' महान।
मोक्षमार्ग में उन्नति करने, इससे वर्णित षट्सोपान॥
षोडसकारण भावना सहित, मुनि-श्रावक आचार-विचार।
गुणस्थान-मार्गणाओं का, हुआ विवेचन सहविस्तार॥ १५॥

❋

सप्त शतक पद्यों में गूंथा, मुनिवर ने यह काव्य महान।
दस-छन्दालंकार-काव्यगुण, भाषा-शैली सरस विधान॥
सरल-सरस भाषा के द्वारा, यद्यपि कठिन सिद्धान्त कथन।
पर, जिनको प्रावीण्य प्राप्त है, उन्हें सरल हैं सभी वचन॥ १६॥

❋

इस तीर्थोदय महाकाव्य का, अनुपम यह वैशिष्ट्य रहा।
षोडसकारण भावन वर्णन, षोडसकारण समय रचा॥
यही नहीं मुनिराजश्री ने, षोडसकारण व्रत पाले।
सप्त शतक पद रचे आप श्री, अतिशय भावविशुद्ध वाले॥ १७॥

❋

तमिलनाडु इक ग्राम ''कन्नलम, द्वितीय विशाखाचार्य निलय''।
शुभारम्भ-सम्पूर्ण हुआ, यह काव्य वहाँ के जिन आलय॥
लिखना-पढ़ना चला संग-संग, श्रावक संघ किया रस पान।
छन्दज्ञानोदय, सन् अठानवै, पूर्ण हुआ यह काव्य महान॥ १८॥

❋

द्रव्य-क्षेत्र-काल आदिक का, मनस्थिति पर पड़े प्रभाव।
जितने ये पावन होते हैं, उतने उत्तम बनते भाव॥
ग्राम 'कन्नलम' के जिनमंदिर, निकट गिरि तप पुण्य गुहा।
'ज्ञानातिशयी' में बैठे मुनिवर, वहीं काव्य प्रारम्भ हुआ॥ १९॥

❋

अगले वर्ष का चतुर्मास था, विशाखाचार्य तपोनिलय।
विशाखाचार्य तपो गिरि ऊपर, स्थित एक गुहा आलय॥
षोडसकारण व्रत के चलते, पूर्ण हुआ यह काव्यक हार।
सप्तशतक पद्य-पुष्पों में, फैला है इसका विस्तार॥ २०॥

❁

विविध आर्ष ग्रंथों को मथकर, गया निकाल श्रुतनवनीत।
षोडसकारण भावन वर्णन, पुष्ट किया है उससे सींच॥
मुरज बंध पद्यों के भीतर, बिन्दु में सिन्धु समाया है।
ऐसा काव्य अलौकिक गुरुवर, भाषा 'सरल' बनाया है॥ २१॥

❁

श्रीमुनिवर ने एक-एक पल, का उत्तम उपयोग किया।
रिक्त समय में उपवासी रह, आतमहित उद्योग किया॥
दस से बारह प्रात: उस दिन, करते थे रचना का कार्य।
पद्य बीस तक बन जाते थे, क्रमश: हुआ ग्रंथ तैयार॥ २२॥

❁

प्रात:काल हुई जो रचना, सुनी श्रावकों ने अपरान्ह।
आम्नाय स्वाध्यायी द्वारा, हुआ परिष्कृत काव्य महान॥
भक्ति महासागर में डूबे, वक्ता-श्रोता लेते रस।
इक्षु-आम को जितना चूसा, उतना ही देते हैं रस॥ २३॥

❁

महामोह मिथ्यात्व विखंडन, रूढ़िवाद करना निरसन।
साधु-श्रावक व्रत-आवश्यक, करते वे निरतिचार पालन॥
साधु-समाधि त्याग-तपस्या, पंचकल्याणक समवसरण।
जैनधर्म की हो प्रभावना, सब करें प्राप्त सम्यग्दर्शन॥ २४॥

❁

जिसने अमृत पिया एकदा, मुहुर्मुहु: पीना चाहें।
एक बार में तृप्ति न मिलती, पुन:-पुन: मन अवगाहें॥
भव्य सृजन जो सम्यग्दर्शन, चाहे भाव विशुद्धि कर।
वे तीर्थोदय-काव्य को पढ़ें, रचित मुनि आर्जवसागर॥ २५॥

❋

षोडसकारण व्रत पवित्रतम, एक पारणा इक उपवास।
इन्द्रिय जय, मन निर्मल करने का, उपाय यह वर्णित खास॥
यह सर्वोत्तम पुण्यप्रकृति जो, तीर्थंकर पद का साधन।
श्री मुनिवर आर्जवसागर ने, किया उसी का आराधन॥ २६॥

❋

श्रीमुनिवर ने यह ''तीर्थोदय'', मात्र कलम से नहीं लिखा।
लेकिन इसका शब्द-शब्द, उनकी चर्या में सबै दिखा॥
अन्तः बाहर भेद न कोई, अतः प्रभावकता आयी।
उसे पढ़ा जिसने भी उसने, इसकी चर्या अपनायी॥ २७॥

❋

पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है, चर्या ढालें उसे सहर्ष।
आत्मसात् जो करेंगे सम्यक्, पायें जीवन में उत्कर्ष॥
महाव्रती बन, गुणस्थान चढ़, कर्मशृंखला काटेंगे।
परम्परा से जगत-मोक्ष की, गहरी खाई पाटेंगे॥ २८॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, उत्तमवक्ता, प्रवचनकार।
वस्तुतत्त्व प्रतिपादित करते, देते सबके हृदय उतार॥
जो प्रवचन मुनिराजश्री ने, दिए कन्नलम वर्षायोग।
''**मोक्ष तरुं दस धर्म**'' नाम से, हुए प्रकाशित सबके योग॥ २९॥

❋

कवि हृदय मुनिराजश्री ने, भाषा तमिल रचा साहित्य।
जैनधर्म करने प्रभावना, चमक रहा बनकर आदित्य॥
त्रिंशत् कविताओं का संग्रह, हुआ प्रकाशित काल तदा।
''**चौबिस ठाणा**'' का अनुवादन, किया तमिल पठनीय सदा॥ ३०॥

❁

तमिल-मराठी-कन्नड-प्राकृत-हिन्दी-संस्कृत आदि अनेक।
बहुभाषाविद श्रीमुनिवर को, प्राप्त निपुणता है प्रत्येक॥
विहार हुआ जिन-जिन प्रान्तों में, उन-उन भाषा रचना की।
कविता द्वारा पूज्यश्री ने, भावों को अभिव्यक्ति दी॥ ३१॥

❁

झीलों-ताल-तलैयों वाला, सुन्दर है भोपाल नगर।
दो हजार चार ईस्वी सन्, चातुर्मास हुआ मुनिवर॥
समय-समय पर हुए आपश्री, हितकारी मंगल प्रवचन।
उनका हुआ संकलन सुन्दर, '**परमार्थ-साधना**' नामांकन''॥ ३२॥

❁

''**बचपन का संस्कार**'' महत्तम, पारोला प्रवचन अनमोल।
शब्द-शब्द मणि-मुक्ता जैसे, वचन हितैषी अमृत घोल॥
बचपन के संस्कार व्यक्ति के, काम आजीवन आते हैं।
व्यसन-वासना, कलह-कुसंगति, नहिं पास फटकने पाते हैं॥ ३३॥

❁

अशोकनगर जैनों की बस्ती, जिनालयों का शहर महान्।
पर्यूषण में अमृत वर्षा, सकल समाज किया रस पान॥
''**पर्यूषण-पीयूष**'' नाम से, प्रवचन हुए प्रकाशित हैं।
भाषा सरल, भाव सुन्दरतम, सकल रूपप्रतिभासित हैं॥ ३४॥

❁

''**जैनधर्म में कर्म व्यवस्था**'' राँची की रचना अनमोल।
कम शब्दों में मर्म कर्म का, पूर्णतया देती है खोल॥
जड़ है कर्म, आतमा चेतन, रखें न उनसे कोई गिला।
हम चाहें तो उन्हें नष्ट कर, पा सकते हैं सिद्धशिला॥ ३५॥

❋

सतना नगर श्रेष्ठ, अति सुन्दर, जिनमंदिर शोभा पाता।
शांति-कुन्थु-अरनाथ जिनेश्वर देते सबको सुख-साता॥
दो हजार सात सन् ग्रीषम, दिया नगर गुरु आशीर्वाद।
वारसाणुवेक्खा, इष्टोपदेश का, किया मुनिवर हिन्दी अनुवाद॥ ३६॥

❋

''**वारसाणुवेक्खा**'' लघु रचना, कुन्दकुन्द आचार्यश्री।
प्राकृत भाषा में निबद्ध है, भव-तन-भोग विरागकरी॥
जो जन उसका चित्त लगा कर, रोज-रोज स्मरण करें।
धन्य भाग्य मोक्षार्थी सज्जन, धर समाधि सु-मरण करें॥ ३७॥

❋

पूज्यपाद आचार्यश्री सुन्दर लघु कृति ''इष्टोपदेश''।
एक पंचाशत् संस्कृत पद्यों, गूँथा मुनिवर ग्रंथ अशेष॥
पुद्‌गल-जीव भिन्न हैं दोनों, जिनवाणी का इसमें सार।
जो कुछ और कहा आगम में, उसी सार का है विस्तार॥ ३८॥

❋

प्राकृत-संस्कृत भाषाओं के, मुनिवर हैं उद्‌भट विद्वान।
सरल-सरस हिन्दी भाषा में, किया पद्यअनुवाद सुजान॥
मूलभाव भासना होती, पढ़कर सुष्ठु युगलनुवाद।
बारम्बार नमोऽस्तु कर हम, मुनिश्री देते साधुवाद॥ ३९॥

❋

दो हजार आठ ईसा सन् हुआ ग्वालियर चातुर्मास।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर की, रही यहाँ उपलब्धि खास॥
प्रतिमाओं के संरक्षण हित, मुनिवर ने छोड़ा अभियान।
जैन समाज को किया जाग्रत, गोपाचल पर किया विधान॥ ४०॥

❋

''**नेक-जीवन**'' अत्युत्तम कृति है, मुनिवर आर्जवसागर की।
सिन्धु सदृश विस्तार समाया, रचना छोटी गागर-सी॥
इसमें श्री मुनिराज प्रवर ने, प्रस्तुत किये पंच सोपान।
जिन पर चलकर हम जीवन में, पा सकते इच्छित उत्थान॥ ४१ ॥

❋

रोज करें जिनवर के दर्शन, हो नैतिकता, शिष्टाचार।
पालें नियम, पढ़ें स्तुतियाँ, हो शाला जीवन-आधार॥
करें अहिंसा धर्म का पालन, रखें भक्ष्याभक्ष्य विवेक।
संयम के सौरभ से महकें, बनें हमारा जीवन-नेक॥ ४२ ॥

❋

''**सम्यक् ध्यान शतक**'' कृति मुनिवर, कर्मक्षपण हित अग्नि समान।
क्या है ध्यान, कहाँ, कब, कैसे- का देती कृति सम्यग्ज्ञान?
साधक-बाधक तत्त्व ध्यान के, ध्यान-धारणा ध्यान-प्रकार।
किया सुष्ठु उद्घाटित मुनिवर, पूर्वाचार्यों के अनुसार॥ ४३ ॥

❋

मुनिवर प्रवचन हुए प्रकाशित, समाचार पत्रों में खास।
''**आर्जव-वाणी**'' हुई प्रकाशित, अलवर-रांची चातुर्मास॥
बहु भाषाओं में भावों को, काव्यरूप जो दिया गया।
''**आर्जव-कविताओं**'' के नाम से, उन्हें प्रकाशित किया गया॥ ४४ ॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागर की, कविताएँ अत्यन्त सरल।
तत्क्षण भाव भासना होती, मन मिश्री घुलती अविरल॥
लोकप्रिय इन कविताओं का, हुआ प्रकाशन व अनुवाद।
हिन्दी के सह अन्य सभी ने, पाया सरस काव्य का स्वाद॥ ४५ ॥

❋

मुनिश्री मनोज्ञान के ज्ञाता, देते हैं बच्चों को प्यार।
छोटी कविता की टॉफी में, भी देते अनमोल विचार॥
बड़े चाव से बालक पढ़ते, कर लेते हैं याद सभी।
पुनः-पुनः आवृत्तिकारण, विस्मृत करते नहीं कभी॥ ४६॥

❋

प्राप्त प्रेरणा श्री मुनिवर की, कृति निकली ''**जीवन-संस्कार**''।
शालाओं में अध्यापन हित, रची गयी खंड हैं चार॥
बाल्यकाल में जो आवश्यक, पाठ्यअंश संग्रह इसमें।
अबतक ऐसी मिली न पुस्तक, एक साथ सब हो जिसमें॥ ४७॥

❋

जैनधर्म में सुप्रसिद्ध है, चरित गोम्मटेश बाहुबली।
उनकी अतिशय सुन्दरस्तुति, प्राकृत में ''गोम्मटेस थुदि''॥
''**गोम्मटेस थुदि**'' का मुनिवर ने, हिन्दी पद्यनुवाद किया।
रहे अपरिचित जो प्राकृत से, उनका अति उपकार किया॥ ४८॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, विस्तृत है रचना संसार।
अति उत्कृष्ट सूक्तियाँ उसमें, रक्षित रत्नों का भंडार॥
रचना ''**श्रीआर्जव-वाणी**'' में, किया संकलन भव्य सुजन।
मिलते हैं चिन्तन के बिन्दु, उनका संतत करें मनन॥ ४९॥

❋

लिखे आप अष्टक अनेक हैं, देव-शास्त्र-गुरु स्तुतियाँ।
शाश्वत तीर्थक्षेत्र सम्बन्धी, जब-तब आयीं स्मृतियाँ॥
पर्व पर्यूषण या अष्टाह्निका, आये अक्सर यथा समय।
आशु कवित्व प्रतिभा के द्वारा, रच दी रचना उसी समय॥ ५०॥

❁

श्रीगुरुवर का कार्य महत्तम, जगत किया उजयाला है।
पत्र त्रिमासिक सर्वोपयोगी, ''**भाव-विज्ञान**'' निराला है॥
शुद्ध, सुवाच्य, सर्वतः सुन्दर, आगम-सम्मत विषय सभी।
धर्म-विज्ञान-गणित-प्रश्नोत्तर, उत्तम कविता-लेख-सभी॥ ५१॥

❁

श्रीमुनिवर की सब रचनाएँ, लिखी गयी हैं स्वान्त-सुखाय।
या फिर झलक रहा है उनसे, रची गयी हैं शिष्य हिताय॥
'आत्महितं कर्त्तव्यं पहले', फिर करणीय जगत कल्याण।
श्रीमुनिवर प्रत्येक कार्य में, रखते मूल मंत्र को ध्यान॥ ५२॥

❁

एक ग्रंथ का लिखना ऐसा, जैसे इक मंदिर निर्माण।
उसमें राजित है जिनवाणी, यथा देह में राजित प्राण॥
मंदिर या कि धर्मशाला का, पुण्य कार्य करना निर्माण।
एक ग्रंथ लिखना उससे भी, उत्तम हैं कहते धीमान॥ ५३॥

❁

मुनिवर रीति स्व-पर कल्याणी, जो पाया, हो जन कल्याण।
पुनि-पुनि पढ़ा, किया परिमार्जन, अनुपम रत्न धर्म का ज्ञान॥
खोदे-खोदे पानी निकले, घोके विद्या होती याद।
देर-अबेर हो फल की प्राप्ति, करें न बुधजन हर्ष-विषाद॥ ५४॥

❁

कर प्रवचन सब तक पहुँचाते, पर कुछ क्षण ही वचन प्रभाव।
लेकिन मुद्रित रचनाओं को, बहा न सकता काल बहाव॥
श्रीमुनिवर से संग्रहीत जो, लिखित रूप ज्ञान का कोष।
करें भव्यजन उसे प्रकाशित, करने जिनवाणी जय घोष॥ ५५॥

❁

जो जिनवाणी करें प्रकाशित, उनका मिथ्यातम हो नाश।
ज्ञान-भानु उनके घर उगता, कर्मबंध का होता नाश॥
जो जिनवाणी पढ़े, पढ़ावे, वे पा जाते स्व-पर प्रकाश।
दया धर्म का पालन करके, पाते अक्षय सुख की राश॥ ५६॥

❁

हैं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगरत, मुनिवर आर्जवसागरजी।
सुन्दर-सुन्दर कृति- सुमनों से, माँ जिनवाणी पूजा की॥
जैसे गंगा कभी न रुकती, प्रवहमान रहती अविराम।
तथा लेखनी श्रीगुरुवर की कभी नहीं लेगी विश्राम॥ ५७॥

❁

किन्तु सतत् बढ़ती जायेगी, जब-तक रवि-शशि-तारें हैं।
तब तक रहे निरोग चिरायु, गुरु महाराज हमारे हैं॥
तब-तक अमर रहे इस भू पर, मुनिवर का उत्तम साहित्य।
तब-तक करे मोक्ष-पथ दर्शन, बनकर सुखद, प्रखर आदित्य॥५८॥

❁

अब तक बात हुई कृतियों की, अब हम आगे बढ़ते हैं।
सिद्धान्तों की चर्चा करके, व्यवहार सु- सीढ़ी चढ़ते हैं॥
पंचकल्याणक गजरथ उत्सव, श्रीमुनिवर आशीष दिया।
पंचविंशति आयोजन का, सन्निधान दे सफल किया॥ ५९॥

❁

पंचकल्याणक गजरथ उत्सव, महिमामय आयोजन हैं।
आतम को परमात्म बनाना, उसका खास प्रयोजन है॥
श्रीमुनिवर के सन्निधान से, आती इसमें अतिशयता।
साधु स्वयं मंगल स्वरूप हैं, सर्वत्र अत: मांगल्य दिखा॥ ६०॥

❋

जहाँ विहार होता मुनिवर का, नव प्रभात हो जाता है।
रुका काम सदा हो जाता, बिगड़ा भी बन जाता है॥
जहाँ-जहाँ मुनिराज के हुए, वर्षायोग आदि विश्राम।
पुण्य प्रेरणा प्राप्त वहाँ पर, हुए कल्याणक, गजरथ काम॥ ६१ ॥

❋

शाहपुरा-बासौदा-केसली, नैना-गोटे-सिरोंज स्थान।
गुरु सह नरसिंहपुर भी जानो, मुक्तागिरि में भी हुई जान॥
श्रवणवेलगोल प्रतिष्ठा, तमिलनाडु में अष्ट सुमान।
सद्लगा, बाग, गार्डन, सम्मेद, दमोह, जयपुर, दांता थान॥ ६२ ॥

❋

पूजा और विधानों का है, श्रावक-जीवन बड़ा महत्व।
इनके आयोजन से होते, संवर और निर्जरा तत्त्व॥
अशुभ निवृत्ति, शुभे प्रवृत्ति, श्रावक जन की होती है।
श्रावक अर्जित पाप कालिमा, जिनवर पूजा धोती है॥ ६३ ॥

❋

विंशति एक विधानों को है, श्रीमुनिवर आशीष दिया।
अपने मंगल सन्निधान से, अति मंगलमय बना दिया॥
वेदी प्रतिष्ठाओं का क्या कहना, उनका नहीं है कोई जोड़।
ये आयोजन श्रावक मन को, अशुभ से शुभ में देते मोड़॥ ६४ ॥

❋

पर्व पर्यूषण जब आते हैं, लाते हैं संस्कार शिविर।
अब तक अष्टादश शिविरों को, सम्पन्न कराये श्रीमुनिवर॥
अहिंसा सम्मेलन, विद्वत् गोष्ठियों, दिया मुनिश्री शुभ आशीष।
डाक्टर्स के सम्मेलन भी सन्निधान में हुए ऋषीश॥ ६५ ॥

❋

जैसे गगन में ऊपर-नीचे, चलते रहते काल सदा।
जैसे प्रवहमान रहता है, प्राणप्रदायक पवन सदा॥
जैसे गंगा बहती रहती, करने को निज-पर उपकार।
वैसे गुरुवर चलते रहते, करने आतम का उपकार॥ ६६॥

❋

पंच समितियाँ पालन करते, दिन-प्रासुक मग करें गमन।
वह भी धर्मकार्य आवश्यक, अथवा तीर्थ क्षेत्र दर्शन॥
विंशति पंच वर्ष संयम के, श्रीमुनिवर ने किया विहार।
भारत के तेरह प्रान्तों में, किया पूज्यवर धर्मप्रसार॥ ६७॥

❋

उत्तर-मध्य-महा-कर्नाटक, तमिलनाडु-पांडीचेरी।
बंगाल-बिहार-झारखंड-दिल्ली, गुजरात प्रांत-राजकेरी॥
हरियाणा भी श्री मुनिवर ने- यात्रा, तीर्थ वन्दना की।
तमिल-मराठी-कन्नड सीखी, उत्तम धर्म प्रभावना की॥ ६८॥

❋

मुनिवर श्री आर्जवसागरजी, विघ्नविनाशक मंगल धाम।
पूज्यश्री के चरण कमल में सविनय बारम्बार प्रणाम॥
सागर में तो नीर बहुत है, भर पाया आधी गागर।
मन मंदिर में सदा विराजें, श्रीमुनिवर आर्जवसागर॥ ६९॥

त्रयोविंशतितम् सोपान

मुनि श्री आर्जवसागरजी द्वारा चारित्रसर्जना एवं धर्मप्रभावना

1. अचेतनकृतियों के साथ चेतन कृतियों के सर्जक
2. श्री गौतमचन्द सुराणा ने दिगम्बर जैनधर्म स्वीकारा।
3. श्री सोमकीर्ति क्षुल्लक भट्टारक का स्थितिकरण।
4. नैनारों को वात्सल्य दिया।
5. अनेक पंचकल्याणक-विद्वत्गोष्ठियाँ, अहिंसा सम्मेलन, शिविर हुए एवं पाठशालाएँ स्थापित की।
6. सर्वत्र धर्म की प्रभावना की।
7. मंदिरों का निर्माण, जीर्णोद्धार करवाया।
8. लोगों ने मद्य-मांस-मधु, सप्तव्यसन-नशा एवं चमड़े की वस्तुओं का त्याग।
9. महिलाओं ने हिंसक प्रसाधन छोड़े।
10. महायति के महाकर्म।

त्रयोविंशतितम् सोपान

चारित्र सर्जना एवं धर्मप्रभावना

मात्र अचेतन कृतियों के ही सर्जक नहीं श्रीमुनिराज।
लेकिन चेतन कृतियों के भी, सर्जक हैं आर्जवगुरुराज॥
पच्चीस वर्ष संयमी जीवन, आये व्यक्ति अनेकानेक।
स्वतः याकि गुरु प्राप्त प्रेरणा, धारे नियम-व्रतादि अनेक॥ १॥

❋

दक्षिणभारत के विहार में, बीस बने प्रतिमा धारी।
ब्रह्मचर्यव्रत ले बहुतों ने, की आगे की तैयारी॥
श्रीमुनिवर से प्राप्त प्रेरणा, कईयक त्यागा निशाअशन।
हुए प्रतिज्ञाबद्ध बहुत से, करेंगे प्रतिदिन जिन-दर्शन॥ २॥

❋

तमिलनाडु की दो बहिनों ने, श्रीमुनिवर से प्रतिमा लीं।
आचार्यश्री से दीक्षित होकर, हुईं आर्यिका माताजी॥
कर्नाटक के दो भैयाजी, श्री मुनिवर से प्रतिमा लीं।
यथाकाल आचार्यश्री से उनने जिनवर दीक्षा लीं॥ ३॥

❋

दक्षिण भारत के प्रवास में, लेखन योग्य प्रसंग अनेक।
लेकिन यहाँ न्याय तण्डुलवत्, उनमें से उल्लेखि एक॥
श्री गौतम चन्द गोत्र सुराणा, करते हैं निवास मद्रास।
श्रीमुनिवर से हुए प्रभावित, जीवन-सह बदला विश्वास॥ ४॥

❋

पूज्यश्री के दर्शन करके, मन अतिशय उमड़ा उत्साह।
पदराज धारी आशिष पाया, अनुभव हुआ मिटी भव-दाह॥
आजीवन ब्रह्मचर्य लिया सह, धर्म दिगम्बर अपनाया।
यथाजात मुद्राधारण का, परमभाव मन में आया॥ ५॥

❋

आचार्यश्री देशभूषण के, परम शिष्य जो कहलाये।
क्षुल्लकवर श्री सोमकीर्तिजी, 'चित्तामूर' मठ से आये॥
श्रीगुरुवर से किया निवेदन, रहना चाहें चरण शरण।
श्रीगुरुवर ने आगम रीत्या, किया आप स्थितिकरण॥ ६॥

❋

वस्त्र गेरुआ उसे त्यागकर, गुरुवर से प्रायश्चित्त लिया।
क्रमशः क्षुल्लक ऐलक मुनि पद, दे सुभद्रसा. नाम दिया॥
धवलवस्त्र धारण करवाये, पिच्छी-कमण्डलु हाथ दिया।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर ने, शिष्य संघ में मिला लिया॥ ७॥

❋

श्रीमुनिवर के उस विहार से, धर्म-समाज बहुलाभ मिला।
वर्षों बाद दिगम्बर मुद्रा, दर्शन का सौभाग्य मिला॥
श्रीमुनिवर ने "नैनारों" को, गले लगाया, प्यार दिया।
विछुड़े जैन बन्धुओं फिर-मूल रूप से जोड़ दिया॥ ८॥

❋

मुनिवर के सान्निध्य में हुए, पंचकल्याणक-शिविर-विधान।
विद्वत्गोष्ठी, धर्मसम्मेलन, ज्ञानकेन्द्र पाया अवदान॥
पगदंडी या राजमार्ग हो, या हो पर्वत-गाँव-नगर।
धर्म अहिंसा ध्वज फहरायी, दी देशना डगर-डगर॥ ९॥

❋

श्रीमुनिवर के प्रवचन सुनकर, नैतिकता का हुआ प्रसार।
बालक-वृद्ध-युवक-नर-नारी, संस्कारित आचार-विचार॥
लगने लगा सभी को अपना, अबका जीवन नया-नया।
शुभता का आस्रव होने से, अशुभ-आचरण गया-गया॥ १०॥

❋

जो भी आये गुरुवर चरणों, उनने पाया धर्मप्रसाद।
पाप-कषायें-व्यसन अशांति, दूर भगे मन के अवसाद॥
बढ़े कदम संयम के पथ पर, यथा योग्य व्रत ग्रहण किये।
मन बैठे सन्देह बहुत से, समाधान पा शान्त हुए॥ ११॥

❋

श्रीमुनिवर ने दक्षिण भारत-की प्रभावना काल प्रवास।
अवर्णनीय, अनुपम-अपूर्व है, शब्द नहीं वर्णन को पास॥
क्या से क्या कर दिया मुनिश्री, यह प्रत्यक्ष अनुभव की बात।
जिनमंदिर-गुरुकुल-गौशाला, संस्कार की दी सौगात॥ १२॥

❋

जैन तो थे, पर नहीं था मंदिर, जिनमंदिर बनवाया है।
जीर्ण-शीर्ण-प्राचीन रहे जो, जीर्णोद्धार कराया है॥
जैन तो जैन, अजैनों ने भी, निशि भोजन का त्याग किया।
वस्त्रपूत ही जल पीते हैं, अभक्ष्य- भक्षण छोड़ दिया॥ १३॥

❋

मद्य-मांस-मधु त्याग किसी ने, जीवन सफल बनाया है।
सप्तव्यसन का त्यागी बनकर, स्वच्छमार्ग अपनाया है॥
किसी ने आकर तजी तमाखू, किसी ने त्यागे सभी नशा।
अंडा-मछली त्यागे कइ-यक-मन में शाकाहार बसा॥ १४॥

❋

कइयक ने गुरुचरणों आकर, चमड़े जूते त्याग किए।
चप्पल-बेल्ट-पर्श-फर टोपी, वहीं उतारे छोड़ दिए॥
हिंसक जो श्रृंगार प्रसाधन, त्याग कर दिये महिलागण।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर के, सुनकर सारभूत प्रवचन॥ १५॥

❋

विगत हजार वर्षों में जितनी, धर्मप्रभावना यहाँ हुई।
उतनी मुनि आर्जवसागर जी, सात वर्ष में ही कर दी॥
तमिलनाडु में आपश्री जो, धार्मिक बिगुल बजाया है।
स्वर्ण अक्षरों लेखनीय वह, जो परिवर्तन आया है॥ १६॥

❋

श्रीमुनिवर उपकार किया जो, हम तो भूल ना पायेंगे।
हम कृतज्ञ पीढ़ी-दर-पीढ़ी, गुरुवर के गुण गायेंगे॥
दृढ़ संकल्पी, परमप्रभावी, आगम चर्यानिष्ठ यती।
आप सदृश संत का मिलना, महा असंभव, कठिन अती॥ १७॥

❋

हे गुरुवर! जाते हो जाओ, दिल से जा न पाओगे।
हर पल, हर क्षण हम भक्तों को, याद हमेशा आओगे॥
मंगलमय हो पंथ आपका, हमें न तुमसे कोई गिला।
हो रत्नत्रय सफल साधना, मिले आपको सिद्धशिला॥ १८॥

चतुर्विंशतितम् सोपान

गुरुवरश्री आर्जवसागरजी के सृजित साहित्य का भाव व कला पक्ष

१. काव्य एवं कला पक्ष दोनों का महत्त्व है।

२. मुनिश्री के काव्य में दोनों पक्षों का सन्तुलन।

३. शांत एवं करुणरसों की प्रधानता।

४. काव्य गुणों का समुचित प्रयोग।

५. गद्य-पद्य दोनों पर समान अधिकार।

६. सहज अलंकारों से अलंकृत काव्य।

७. सरल-सरस स्वाभाविक भाषा।

८. आकर्षक एवं सरस शैली

९. धर्म सभा सदा ऊर्जावंत एवं जयवंत रहती है।

१०. गेय एवं सुन्दर ज्ञानोदय छन्द का प्रयोग।

चतुर्विंशतितम् सोपान

सृजित साहित्य का भाव-पक्ष एवं कला-पक्ष।

अगर काव्य को पुरुष कहें तो, भाव-पक्ष है उसका प्राण।
भाषा-शैली कला पक्ष को, हम कह सकते देह समान॥
यद्यपि मुख्यता सदा प्राण की, फिर भी आवश्यक है देह।
श्रीमुनिवर का काव्य निकष पर, खरा उतरता निस्संदेह॥ १॥

❋

भाव-कला दोनों पक्षों का, पूर्ण सन्तुलन स्पृहणीय।
सभी रसों का सुन्दर वर्णन, यथा समय मिलता कमनीय॥
लेकिन फिर भी शान्त करुण रस, उभर सामने आये हैं।
प्रभु की भक्ति, प्राणि दया में, मुनिवर चित्त रमाये हैं॥ २॥

❋

जिसको प्राप्त सहज सुन्दरता, उसे अलंकारों से क्या काम।
श्रीमुनिवर की काव्य कौमुदी, छिटकी रहती आठों याम॥
रसवंती कविता मुनिवर की, कला-पक्ष से है भर पूर।
भाषा-अलंकार से शोभित, लेकिन दोष क्लिष्टता दूर॥ ३॥

❋

जैसे शरदकाल का झरना, कल-कल करता है संगीत।
अथवा जैसे मधुरऋतु में, कोयल मीठे गाती गीत॥
वैसे श्रीमुनिवर की कविता, निसृत हृदतंत्री के तार।
रोम-रोम पुलकित कर देती, करती धर्ममयी झंकार॥ ४॥

❋

श्रीमुनिवर की काव्य कला में, गुण प्रसाद-माधुर्य मिला।
सरल-सरस भाषा से सज्जित, उसका मनहर रूप खिला॥
गुणों पिरोये पुष्प जिस तरह, बनजाते हैं अनुपम हार।
तथा गुणालंकृत गुरु कविता, देती खोल हृदय के द्वार॥ ५॥

❋

गद्य-पद्य दोनों के ऊपर, गुरुवर का अधिकार समान।
इसीलिए भाव अभिव्यक्ति आता नहीं कभी व्यवधान॥
भावदेवता के आते ही, भाषा रहती है तैयार।
गद्य-पद्य जिसमें गुरु चाहें, करते अपने प्रकट विचार॥ ६॥

❋

केवल पढ़ा नहीं गुरुवर ने, चिन्तन-मनन दिया विस्तार।
एक तथ्य में घण्टों रमते, तब उद्घाटित करते सार॥
जिसको कहा पुरा शैली में, करके नूतन करे बखान।
कविता-कथा-कहानी द्वारा, ग्राह्य बना देते आख्यान॥ ७॥

❋

शैली है व्यक्तित्त्व मनुज की, शैली रही व्यक्ति पहचान।
शैली देख समझ में आता, लेखक कितना प्रतिभावान॥
मुनिवर शैली अत्याकर्षक सरल-सरस पहने परिधान।
शब्दाडम्बर लेश नहीं है, भाव-भासना रहे प्रधान॥ ८॥

❋

प्राय: करे धर्मसभा में, कुछ श्रोता सो जाते हैं।
कारण, वक्ताओं के प्रवचन, उन्हें समझ न आते हैं॥
जिनके प्रवचन नीरस होते, अथवा होते बहुत कठिन।
उनमें श्रोता सो जाते हैं, शुरू हुए जैसे प्रवचन॥ ९॥

❋

लेकिन मुनिवर आर्जवनिधि की, धर्मसभा रहती जयवंत।
कोई श्रोता सो न पाता, सब ही रहते ऊर्जावंत॥
कारण, मुनिवर प्रवचन होता, द्रव्य-क्षेत्र-काल-उपयुक्त।
सरल-सरस, भाषा-शैली में, कविता अलंकार संयुक्त॥ १०॥

❁

श्रीमुनिवर के प्रवचन रहते, यथायोग्य चारों अनुयोग।
बालक-वृद्ध-अशिक्षित-शिक्षित, सबका लग जाता उपयोग॥
जो मुनिवर के प्रवचन सुनते, निद्रा उन्हें न आती है।
पूरी बात समझ में आती, भीतर तक भिद जाती है॥ ११॥

❁

कठिन विषय को सरल बनाना, सबके वश की बात नहीं।
सरस बना देना नीरस को, वह भी मिलता कहीं-कहीं॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, युगपत् युगशैली निष्णात।
श्रोता तक पहुँचा देते हैं, नीरस-कठिन कोई हो बात॥ १२॥

❁

बहुयामी व्यक्तित्त्व आपका, कवि-लेखक- पटु प्रवचनकार।
अन्य-अन्य उद्धरणों द्वारा, करते पुष्ट व्यक्त उद्‌गार॥
पूर्ण समन्वय रहता उनका, आर्ष प्रणीत ग्रंथ प्राचीन।
कथन पुराने आचार्यों के, लेकिन शैली सुष्ठु नवीन॥ १३॥

❁

मुनिवर श्री आर्जवसागरजी, प्रतिभाशाली सुष्ठु कवि।
भाव और भाषा दोनों का, रहता नहीं अभाव कभी॥
किसी क्षेत्र-दर्शन को जाते, कविता रच देते मुनिराज।
नगर छतरपुर 'डेरा पहाड़ी', जूनागढ़ नेमि गिरिराज॥ १४॥

❁

भाषा रही शुद्ध साहित्यिक, परिमार्जित संस्कृत अनुरूप।
सुगठित वाक्य देखने मिलते, प्रवचन, गद्यविधा के रूप॥
हिन्दी भिन्न शब्द यदि मुनिवर, यदा-कदा उपयोग किया।
उससे भाव प्रवणता आयी, भावभासना योग दिया॥ १५॥

❋

वृद्धों साथ ही युवा, बालकों, पर है मुनिवर ध्यान विशेष।
रचा बालसाहित्य आपश्री, कविता सुष्ठु कथा परिवेश।
पाठशाला के हेतु रचा है, अति रुचिकर साहित्य महान्।
हिन्दी इंग्लिश के मिश्रण से, दे आकर्षण का वरदान॥ १६॥

❋

भाषा पर अधिकार अनोखा, शब्दकोष की कमी नहीं।
सहजरूप रचना कर देते, हैं कृत्रिमता कहीं नहीं॥
माँ जिनवाणी सरस्वती की, भक्तों कृपा रहीं भरपूर।
मुनिवर उसके एक उदाहरण, और कहाँ जाते हो दूर॥ १७॥

❋

श्रीमुनिवर की कविताओं में, अलंकार का हुआ प्रयोग।
किन्तु सहज ही वे आये हैं, नहीं कृत्रिमता का उपयोग॥
यथा अलंकारों से सज्जित, शोभा पाती है नर देह।
तथा अलंकृत मुनिवर कविता, पाती पाठकगण स्नेह॥ १८॥

❋

शब्द रत्न को भाव मुद्रिका, जड़ते मुनिवर सोच-विचार।
कौन शब्द उपयुक्त कहाँ है, करता अधिक भाव उजयार॥
सुगठित वाक्य, मनोहर भाषी, शब्द चयन सुन्दर अनुकूल।
लगते वंशी वादन करते, यथा कृष्ण यमुना के कूल॥ १९॥

❋

मुनिवर श्रीआर्जवसागर को, अनुपम छन्दशास्त्र का ज्ञान।
कौन छन्द उपयुक्त कहाँ है, रखते इसका पूरा ध्यान॥
भाषा-गुण-छन्दों को पाकर, कविता रूप निखरता है।
भाव हृदय के भीतर भिदता, रस-पीयूष बिखरता है॥ २०॥

पंचविंशतितम-सोपान

रजत जयंति वर्ष, पच्चीस वर्ष की पच्चीस उपलब्धियाँ

श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, जीवन स्वच्छ महा आकाश।
रवि-शशि-ग्रह-नक्षत्र-तारका; गुणगान करते विमल प्रकाश॥
श्रीमुनिवर के रजत-वर्ष पद, उनमें से लेकर पच्चीस।
अल्प-बुद्धि से वर्णन करता गुरुवर चरण नमाकर शीश॥ १॥

❋

मुनि-जीवन सौवर्ण्य सुसगन्धि, बालब्रह्मचारी अनगार।
है विराग भीतर से उपजा, स्वतः सुदृढ़ संकल्प-विचार॥
ज्यों गम्भीर सरित की धारा, क्रमशः बढ़ती जाती है।
त्यों मुनिवर की संयम सरिता, क्रमशः उन्नति पाती है॥ २॥

❋

मुनिवर का वैशिष्ट्य अप्रतिम, निरतिचार व्रत का पालन।
हरक्षण अप्रमत्त रह करते, अष्टबीस गुण को धारण॥
निशि-वासर, गर्मी या सर्दी, वर्षा अथवा हो तूफान।
मुनिवर चर्या में दृढ़ रहते, डिगें न किंचित् अचल समान॥ ३॥

❋

है वैशिष्ट्य अनन्वय मुनिवर, पंचेन्द्रिय-मन वश करना।
मीठा-नमक-तैलादि तज, घण्टों बैठ ध्यान करना॥
वर्ष-माह-दिन मौनी बाबा, स्वाध्याय एकान्त भला।
पढ़ना-लिखना-चर्वण करना, जिनवच-पाचन श्रेष्ठ कला॥ ४॥

❋

कवि हृदय मुनिराजश्री हैं, काव्य-कला में परम प्रवीण।
मन-मर्कट को बांधे रखतीं, पंचसमिति, गुप्तियाँ तीन॥
घण्टों बैठे लिखते रहते, अथवा पढ़ते रहते ग्रंथ।
श्रीमुनिवर आर्जवसागर से, होते हैं विरले निर्ग्रन्थ॥ ५॥

❁

बहुयामी व्यक्तित्त्व मुनिश्री, उत्तम लेखक, प्रवचनकार।
महाकवि, सम्बोधनकर्त्ता, चिन्तक शिक्षक जगउपकार॥
अभीक्ष्णज्ञान योगरत रहते, लिखें-पढ़ें या करें विचार।
अतः आज मुनिवर सुकृतियाँ, पहुँची द्वादशसंख्या पार॥ ६॥

❁

गुरुवरश्री आर्जवसागरजी, ताम-झाम से रहते दूर।
फिर कभी नहीं भक्तों की, प्रवचन भीड़ रहे भरपूर॥
भौतिकसाधन, चन्दा-चिट्ठा, करें न प्रेरणा देते हैं।
ऐसे सरल हृदय संतों को, सभी समादर देते हैं॥ ७॥

❁

हैं वैशिष्ट्य महत्तम मुनिवर, आप बनाया एक गुरु।
पद लालच न लक्ष्य आपका, संयम वृद्धि कुरु-कुरु॥
आचार्यश्री विद्यासागर के, आपश्री हैं भक्त परम।
पूर्ण समर्पित गुरु चरणों में, जैसे हनुमत-रामवरण॥ ८॥

❁

ज्ञानोपयोगी पूज्यश्री हैं, श्रावक जन करते उपकार।
ज्ञान केन्द्र पाठशालाएं खोलीं, सब समाज लेकर सहकार॥
भैया-दीदी पाठ पढ़ाते, ज्ञान रहा जीवन का सार।
बिना ज्ञान के जीवन अंधा, अन्धे का जीवन निस्सार॥ ९॥

❁

प्रकृतिदत्त वैशिष्टय आपका, अत्युत्तम व्यक्तित्त्व मिला।
साक्षात् जिनवर लघुनंदन, शांत-सौम्यमुख कमल खिला॥
मोहशान्त से भाव-विशुद्ध, सहज सरलता पाते हम।
श्रीमुनिवर मुखचन्द्र से सदा, खिरती वाणी अमृत-सम॥ १०॥

❋

मुनिवर जब प्रवचन करते हैं, रखते समता के परिणाम।
छोटे-बड़े, धनी-निर्धन सब, उनको दिखते एक समान॥
नहीं व्यक्तिगत नामोच्चारण, आपश्री करते हैं कभी।
उदार चरित पुरुषों की होती, कुटुम्बरूप वसुधैव सभी॥ ११॥

❋

साधु का मन स्थिर रहता, चलते रहते चरण सदा।
रमता जोगी, बहता पानी, ही पाता है उज्ज्वलता॥
पूज्यश्री आर्जवसागरजी, तेरह प्रान्तों किया विहार।
नगर-ग्राम-तीर्थों पर पहुँचे, करते निज-पर का उपकार॥ १२॥

❋

पूज्यश्री मुनिवर के मन में, सदा एक चलता चिंतन।
मिथ्या-मोहरहित हो प्राणी, प्राप्त करें सम्यग्दर्शन॥
वीतरागता पर आधारित, करने पूज्यश्री प्रवचन।
सच्चे देव-शास्त्र-गुरु ऊपर, श्रद्धा लाते श्रावकगण॥ १३॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, परोपकार का क्षेत्र विशाल।
अन्य मतावलम्बियों का भी, मुनिवर रखते पूरा ख्याल।
जैनधर्म संस्कार में ढलें, करें प्रेरणा वे पुरजोर।
छोड़े सप्तव्यसन-निशिभोजन, अनगलपानी देते घोर॥ १४॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागर का, पावन रजत जयंति वर्ष।
अखिल देशजन मना रहे हैं, सहअतिश्रद्धा, अतिशय हर्ष॥
श्रीमुनिवर के गुण-मणियों से, गूंथा है यह स्तुति हार।
अर्पित है गुरुवर चरणों में, करके कृपा करें स्वीकार॥ १५॥

❋

मात्र अचेतन कृतियों के ही, सर्जक नहीं श्रीमुनिराज।
लेकिन चेतन कृतियों के भी, सर्जक हैं आर्जवऋषिराज॥
कई ब्रह्मचारी भैया-दीदी, क्षुल्लकजी को दीक्षा दी।
उनमें से कुछ आगे बन गये, मुनि-आर्यिका महाव्रती॥ १६॥

❋

तीर्थों के दर्शन करने से, नश जाते चिर संचित पाप।
उनकी रज मस्तक धारण से, मिट जाते भव-भव संताप॥
श्रीमुनिवर आर्जवसागर जी, की यात्राएँ तीर्थ अनेक।
सबके दर्शन-अर्चन करके, की परिक्रमा मस्तक टेक॥ १७॥

❋

हर साधु के पत्र निकलते नामांकित छपता साहित्य।
बट जाता है बिना मूल्य का, दिवस पूर्व छिपता आदित्य॥
लेकिन मुनिवर देते उनको, जो लेता है कोई नियम।
पर इन ग्रन्थों को पढ़ेंगे जब तक, नियमबद्ध होते हैं हम॥ १८॥

❋

नगर ग्वालियर गोपाचल पर, होती अविनय प्रतिमाजी।
किया विरोध प्रभावी ढंग से, ज्योतिसिंधिया-आर्जवजी॥
झुके सिन्धिया गुरुचरणों में, समाधान का वचन दिया।
किया नहीं जो कार्य किसी ने, श्रीगुरुवर वह कार्य किया॥ १९॥

❋

श्रीमुनिवर की दक्षिण-यात्रा, गांव-गांव महाराष्ट्र प्रदेश।
कर्नाटक, तमिलनाडु भी, भ्रमण किया मुनिराज अशेष॥
जहाँ-जहाँ थे नहीं जिनालय, दी प्रेरणा बनवाये।
''नैनारों'' से मिले इस तरह, जैसे राम स्वयं आये॥ २०॥

❁

तमिलनाडु मुनिराजश्री ने, धार्मिक बिगुल बजाया है।
समन्तभद्र-अकलंकदेव, इतिहास आप दुहराया है॥
भाषा-भोजन भिन्न-भिन्न सब, नहीं परम्परा का कुछ ज्ञान।
फिर भी मुनिवर की प्रभावना, मुनिवर कार्य महत्तम जान॥ २१॥

❁

पंचकल्याणक-गजरथ उत्सव, श्री मुनिवर सन्निधान दिया।
सिद्धचक्र-कल्पद्रुम जैसे, श्रावक गणों विधान किया॥
इसके भीतर श्रीमुनिवर का, हिता छिपा उद्देश्य महान।
सुख-शांति हो पूर्ण विश्व में अखिल जगत् होवे कल्याण॥ २२॥

❁

षोडसकारण व्रत सामूहिक, पालन करना बात नई।
'काव्य तीर्थोदय'- सह मुनिवर की, यह समाज को देन रही॥
भोजन शुद्ध, कुएँ का पानी, द्वात्रिंशत् दिन व्रताचरण।
कर्म तीर्थंकर-प्रकृति बंध हो, होय असाता कर्म क्षरण॥ २३॥

❁

पर्व-पर्यूषणकाल पूज्यश्री, शिविर-साधना आयोजन।
पाते हैं संस्कार धर्म के, उनमें सहस्रों श्रावकगण॥
बिन संस्कार धर्म का पालन, नहीं पूर्णता पाता है।
धर्म-आचरण संस्कार-सह स्वर्ण सुगंधी लाता है॥ २४॥

❁

परमपूज्य मुनि आर्जवसागर, आडम्बर से दूर बहुत।
न्यून वस्तु उपकरणों द्वारा, करते निज-पर आतम हित॥
विषयाशा वश नहीं पूज्यश्री, आरम्भ-परिग्रह रहित गुणी।
चतुर्थकाल में होते जैसे, वैसे ही हैं आप मुनि॥ २५॥

❋

पूज्यश्री आर्जवसागरजी, चौका एक जब जाते हैं।
हो अलाभ यदि लौट के आते, नहीं दूसरे जाते हैं॥
विरले ही होते हैं ऐसे, वृत्तिपरिसंख्यानी महामुनी।
हो अलाभ समता रस पीते, करें निर्जरा सहस्रगुनी॥ २६॥

❋

श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, अनियत करते सदा विहार।
आप अतिथि हैं, कभी न करते, गमन-आगमन पूर्व प्रचार॥
भारत के कोने-कोने में, तेरह प्रदेश में गमन किया।
कहाँ और कब हम जायेंगे, किंचित् नहिं संकेत दिया॥ २७॥

❋

विद्वज्जन हो किसी क्षेत्र के, होते ज्ञान के अक्षय कोष।
उनको पाकर श्रीगुरुवर मन, पाता है अतिशय सन्तोष॥
सन्निधान देते हैं मुनिवर, विद्वत्गोष्ठी आयोजन।
कवि-अहिंसा-पाठ-डॉक्टर, करवाते हैं सम्मेलन॥ २८॥

❋

अभीक्ष्ण-ज्ञान उपयोगी मुनिवर, स्वाध्यायरत रहें सदा।
श्रावक जन उपदेश भी देते, करते नहीं निराश कदा॥
कविता-लेख-आदि भी लिखते, रहते हैं बहुभाषा ज्ञान।
होता है साहित्य प्रकाशित, श्रुतकेवली-भावविज्ञान॥ २९॥

❋

पंचसमिति अश्वों के ऊपर मुनिवर रहते सदा सवार।
अतः सदा सूरज-प्रकाश में, ही करते हैं गुरु विहार॥
कुएँ का पानी ही चर्या में, पूज्यश्री करते उपयोग।
परम अहिंसाव्रत का पालन, करते महाव्रती के योग॥ ३०॥

❁

शास्त्र-कमण्डलु-मोर पिच्छिका, महाव्रती उपकरण हैं तीन।
जीर्णपिच्छिका त्याग वर्ष में, करते मुनिवर ग्रहण नवीन॥
ब्रह्मचारी या संयमधारी, से ही पिच्छिका लेते हैं।
और तथा ही योग्य पात्र को, जीर्ण पिच्छिका देते हैं॥ ३१॥

❁

बुन्देली की इस माटी पर, जन्में थे आर्जवसागर।
कुल परम्परा पायी निर्मल, गुरु मिले विद्यासागर॥
गुरु सेवा निर्दोषीचर्या, भरी ज्ञान की शुभ गागर।
प्रदेश तेरह विहार कीना, बहुभाषा अनुभव आगर॥ ३२॥

❁

किलोमीटर हजार पन्द्रह से, चले ऊपर आर्जवसागर।
सहस्रादिक जन षोडसकारण , व्रत ले भरी पुण्य-गागर॥
सम्यग्दृष्टि मोक्षमार्गी, अगणित तुमरे साथ जुड़े।
सूर्य चाँद सम सदा रहें हे! आर्जवनिधि गुरु बने बड़े॥ ३३॥

प्रशस्तिः

श्रीमुनिवर आर्जवसागरजी, श्रमणश्रेष्ठ, आध्यात्मिक संत।
मुखमंडल पर छवि बिखराता, अन्तरंग का विमल बसंत॥
भोपाल नगर, टिनशैड जिनालय, पूरी भव्यजनों की आश।
दो हजार चार सन् हुआ, पूज्यश्री का चातुर्मास॥ ३४॥

❁

विद्वत्गोष्ठी के माध्यम से, श्रीमुनिवर के दर्शन कर।
लगा कि जैसे विराजमान हैं, साक्षात् ही तीर्थंकर॥
उठी भावना कवि के मन में, रचूँ आपश्री चरित उदार।
किन्तु समय की वाट जोहता, सुप्त रहा यह सुष्ठु विचार॥ ३५॥

दर्शन पुनः हुये मुनिवर के, 'रामगंज' के चातुर्मास।
'दो हजार ग्यारह' में स्मृति, ली अंगड़ाई पा वातास॥
बीज जाग्रत हो जाता है, पाकर वायु-ऊष्मा-नीर।
वैसे बन गये स्रोत प्रेरणा, श्री दिवाजी-अजित-सुधीर॥ ३६॥

दो हजार बारह सन् आया, संयम रजत-जयंती वर्ष।
किया समर्पित गुरु करकमलों, उर धारण कर अतिशय हर्ष॥
है पच्चीस प्रसूनों वाला, रचित-सुवर्ण सुनिर्मित हार।
मुनिवर श्री आर्जवसागरजी, कृपया इसे करें स्वीकार॥ ३७॥

सुकाल पा पुरुषार्थी बन यह, कवि-कविता का योग बना।
गुरुपद पंकज नमन समर्पित, की प्रारम्भ काव्य-रचना॥
मन-मंदिर में रहें विराजित, गुरुवर हर क्षण आठों याम।
एक वर्ष तक दत्तचित्त हो, की ऋषिवर की भक्ति ललाम॥ ३८॥

आचार्य पद की प्राप्ति आ.सीमंधरसागर द्वारा

1. कर्नाटक में बेलगाँव के, हलगे में था जन्म लिया।
साह मलप्पा पिता, मात उन-पद्मावती को धन्य किया॥
नाम 'जिनप्पा' पाकर गृह में, धार्मिक सुख में लगा सुमन।
सरल स्वभावी, समताधारी, सीमंधर आचार्य नमन॥

2. बाल ब्रह्मचारी रह करके, भव भोगों को त्याग दिया।
कार्तिक शुक्ला दोज सोम दिन, इस जग से मुख मोढ़ लिया॥
सन् उन्निस सौ त्रेपन में ही, देवरसिंगी किया गमन।
वीरसागराचार्य शरण पा, ब्रह्मचर्य में किया रमण॥
(सरलस्वभावी.......)

3. इन्हीं गुरु से क्षुल्लक पद धर, ऐलक पद भी तब पाया।
शांति, वीर की परम्परा के, सुपार्श्वसूरि को जब पाया॥
नगर जालना ऐलक पद ले, कुंथलगिरि जा किया नमन।
सुपार्श्व सूरि से सन् अंठावन, मुनि पद पर था किया गमन॥
(सरलस्वभावी.......)

4. चारितचक्री परम्परा में, सीमंधर विख्यात हुए।
सीमंधरसागर की छबिलख, अनेक भव्य भी साथ हुए॥
पावन प्रवचन, आचारों का, पालन इन्द्रिय किया दमन।
सुबाहुसागर, सु-सिद्धसागर, आदि संघ से सजे श्रमण॥
(सरलस्वभावी.......)

5. उन्निस सौ चौहत्तर सन् में, फाल्गुन शुक्ला एकम को।
विहार देश के त्रिलोकपुर में, पाया गुरु पद उत्तम को॥
चउविध संघ समक्ष आपको, महाचार्य पद मिला श्रमण।
शुभ मुहूर्त्त में जयकारों से, सबने गुरु को किया नमन॥
(सरलस्वभावी.......)

6. कई प्रान्तों में विहार करके, प्रकाश धर्म का फैलाया।
तीर्थक्षेत्र भी सर्व देखकर, जिन महिमा को दर्शाया॥
शिखर सम्मेद व ऊर्जयन्त के, किये अनेक हि शुभ दर्शन।
बहुत व्रतों व उपवासों से, किये आपने कर्मक्षपण॥
(सरलस्वभावी.......)

7. दीक्षा देकर शिष्य गणों का, अनुग्रह तुमने बहुत किया।
सुमति सु-सागर, नेमीसागर, दे दीक्षा हि साथ लिया॥
मल्लि सु-सागर, सिद्ध सु-सागर, इनको मुनिपद दिया परम।
सुशीलमति वा राजमति को, दिया आर्यिका नियम धरम॥
(सरलस्वभावी.......)

8. जीवन के नब्हे वर्षों में, सल्लेखन ली बारह वर्ष।
शक्कर, नमक रसों के त्यागी, निद्रा-विजयी तप में हर्ष॥
ऐसे सीमंधराचार्य को, पद प्रदान का आया मन।
विद्यासागर सूरि शिष्य वे,- आर्जवसागर भाये श्रमण॥
(सरलस्वभावी.......)

9. माघ शुक्ल षष्ठी के शुभ दिन, दो हजार पन्द्रह सन् में।
मध्य देश इंदौर नगर के, निकटोद्यान सु-परिसर में॥
चिर दीक्षित आर्जवसागर को, सूरि पद कीना अर्पण।
जयकारें भक्तों की गूंजी, कहते तव जीवन दर्पण॥
(सरलस्वभावी.......)

10. मुनिवर संघ व श्रावक जन को, सेवा भाग्य मिला सबको।
नवाचार्य आर्जवसागर ने, मार्गदर्श दीना जन को॥
फाल्गुन कृष्णा तृतिया को शुभ, दो हजार पंद्रह था सन्।
उपवासों सह सल्लेखन हुई, सीमंधर गये स्वर्गश्रमण॥
(सरलस्वभावी.......)

11. स्वर्गलोक से विदेह में जा, तीर्थंकर का दर्शन हो।
हम सबका भी नमन जहाँ पर,- पहुँचे, यह भव सुमरण हो॥
जयवन्तो जय, जयवन्तो जय, सर्व भक्त हैं करें नमन।
आर्जवमय इस मोक्षमार्ग से, जग प्रकाश मय होय चमन॥
(सरलस्वभावी.......)

-प्रस्तुति-आचार्य आर्जवसागर संघ

(समय-आ.सीमंधरसागर जी के प्रथम समाधि दिवस पर ता.25-2-2016 को बड़नगर (म.प्र.) के बड़े मंदिर (तेरापंथी)में आ. आर्जवसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में प्रस्तुति का सुअवसर)

परिचय
पं. लाल चन्द्र जैन 'राकेश'

नाम	: लाल चन्द्र जैन 'राकेश'
पिता का नाम	: श्री कालू राम जैन
जन्म तिथि	: 01/07/1934, सिलगन
पूर्ण पता	: पं. लालचन्द्र जैन 'राकेश' 36, अमृत एन्क्लेव, अयोध्या वायपास रोड, भोपाल (म.प्र.) पिन : 462041
मोबाइल नं.	: 94253-72740, 9893072575
योग्यता	: एम.ए. (हिन्दी-संस्कृत), बी.एड., शास्त्री, साहित्य रत्न
जीवन-निर्वाह	: प्रायवेट एवं म.प्र. के शासकीय उच्चतर (माध्यमिक विद्यालयों में 40 वर्ष का अध्यापन।) प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त।
अभिरुचि	: विद्यार्थी जीवन से ही उत्कृष्ट साहित्य पढ़ने, सृजन करने, प्रवचन करने, प्रवचन श्रवण करने में रुचि
साहित्य सेवा	
तीर्थंकर साहित्य	: श्री पार्श्वनाथ चारितम्
महाकाव्य	: 1 सदलगा के संत,

2 संस्कृति प्रहरी : मुनि सुधा सागर
3 गणनी ज्ञानमती महाकाव्य
4 कलातीर्थ : सांगानेर
5 आध्यात्मिक संत आर्जवसागर
6 अनेकान्त ज्ञान मंदिर काव्य-सहस्री

मुनि जीवनी (गद्य) : गुणों के आगर, ज्ञान के सागर

विद्वत् परिचय : 1 आत्मवृत्तम्
2 गीता-ज्ञान-आराधना काव्य
3 ज्योतिषाचार्य पं. हरदास जी एक परिचय

शतक साहित्य-4 : 1 आचार्यश्री ज्ञानसागर शतक
2 शास्त्रि परिषद् का सुनहरा सफर
3 श्री सहजानन्द शतक
4 गुलाल-कर्पूर-मंजरी

संस्कृत पद्य से हिन्दी पद्यानुवाद : 1 श्री भक्तामर स्तोत्र
2 श्री विद्यासागराष्टम्
3 श्री महावीराष्टकम्
4 श्री दृष्टाष्टक स्तोत्रम्

हिन्दी गद्य से हिन्दी पद्यानुवाद

क्षेत्र परिचय काव्य : 1 सेरौन- सुषमा
2 कोनी-दर्शन
3 सिरोंज के जैन मंदिर
4 नैनागिरि-वैभव
5 पावन-पावागिरि-दर्शन

6 गंजबासौदा : एक परिचय
7 तीर्थ क्षेत्र ईशुरवारा
8 भोपाल के जैन मंदिर

विधान : 1 श्री सुमतिनाथ विधान

पूजन-आरती-चालीसा : 1 श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र सेरौनजी
2 श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र पटेरा, गढ़ाकोटा
3 श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र विजौलिया पारसनाथ
4 श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र सांगानेर
5 श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र रेवासा
6 श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र सांची
7 श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र बड़ागाँव धसान
8 श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र गंजवासौदा
9 श्री दि.जैन अतिशयक्षेत्र जवाहर चौक, भोपाल
10 श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र पावागिरि
11 श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र खजुराहो

विविध : सम-सामायिक 500 से अधिक कविताएँ, शोधालेख, कहानियाँ, ग्रंथ समीक्षाएँ, सम्पादकीय, आद्यवचन इत्यादि।
साहित्य-साधाना का क्रम अभी अनवरत चालू है।

प्राप्त पुरस्कार : 1 आचार्यश्री सूर्यसागर स्मृति श्रुत संवर्धन पुरस्कार
2 श्रीमती स्व. चन्दारानी जैन स्मृति विद्वत् महासंघ 2002

3 महाकवि आ. ज्ञानसागर त्रयोदश पुरस्कार 2002

4 त्रिलोक शोध संस्थान जम्बूद्वीप पुरस्कार 2005

5 अ.मा.ब.दि. जैन शास्त्रि परिषद पुरस्कार-2008

6 श्री सहजानन्दवाणी पुरस्कार-2009

7 अ.भ. दि. जैन गोपालदास वरैया स्मृति विद्वत् परिषद् पुरस्कार-2010

8 सकल दि. जैन समाज ललितपुर द्वारा विशेष सम्मान निधि से सम्मनित-2008

उपाधियाँ :1 धर्म दिवाकर-श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक एवं त्रयगजरथ महोत्सव समिति सांची (रायसेन) (म.प्र.)

2 सधांशु-श्री नाभिनंदन दि. जैन हितकारिणी सभा बीना (सागर) (म.प्र.)

गुरु श्री आर्जवसागराष्टकम्

1. हे श्रेष्ठ श्रमण! हे महाव्रती, हे रत्नमयी के भागीरथ ।
तुमने जगती को दर्शाया शिवपुर जाने का सच्चा पथ ।।
हे निर्विकार निर्लेप संत, हे महावीर के लघुनन्दन ।
आर्जव गुरुवर को वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

2. हे ग्राम फुटेरा के पारस, मंडल दमोह के महारतन ।
श्री शिखरचन्द -मायादेवी की, कोख हुई तुमसे पावन ।।
बचपन में ग्राम पथरिया की, माटी को आप किया चन्दन।
आर्जव गुरुवर को वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

3. जग उपवन के सुमन सभी, चुन लेता यमरूपी माली।
यह सत्य पा लिया बचपन में, एक दिन झड़ना जीवन डाली ।।
कालबली से लड़ने को, आरूढ़ हुए संयम स्यंदन ।
आर्जव गुरुवर को वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

4. आचार्य श्री विद्यासागर से, जीवन में गौरव आया।
क्रमशः संयम सोपानों चढ़, सोनागिरि में मुनि पद पाया।।
श्री गुरुवर आशीष दिया, आर्जवनिधि नाम किया अंकन।
आर्जव गुरुवर को वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

5. गुरु विद्यानिधि के चरणों में, जिनवाणी पीयूष पिया ।
ज्ञान-ध्यान-तप के द्वारा, जीवन को कुन्दन बना लिया।।
सूरज-सम दक्षिण गमन किया, चढ़ा शीष गुरु रज चंदन ।
आर्जव गुरुवर को वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

6. तमिल, कर्नाटक, महाराष्ट्र को, तेरह वर्षों सान्निध्य दिया ।
'संस्कार जैनागम' का दे, वापस उत्तर आगमन किया ।।
प्रासुकाश्रु गुरुपद धोये, बारम्बार किया वन्दन ।
आर्जव गुरुवर को वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

7. हे जिनवाणी माँ के सपूत, हे विद्वानों के धर्म-पिता ।
तुमने मिथ्यात्व नशाया है, बनकर के स्याद्वाद सविता ।।
साहित्य मंजरी मुनिवर की, सुरभित आतम मलयज चंदन ।
आर्जव गुरुवर को वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

8. सागर-सी गहराई संग में, मुश्किल हिमगिरि-सी ऊँचाई।
श्री मुनिवर में रहते हैं, दोनों बनकर भाई-भाई ।।
हे गुणसुमनों के नन्दनवन, शत-शत प्रणाम शत-शत वंदन ।
आर्जव गुरुवर को वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

पं. लालचंद ''राकेश''